Reg. No. A629.

# सम्मेलन पत्रिका

## हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की

### मुखपत्रिका।

भाग २ } अश्विन संवत् १९७१ { अङ्क १

विषय सूची।

पृष्ठ



वार्षिक मूल्य १) ] [ एक संख्या =)

साहित्य सम्मेलन कार्य्यालय से बा० नरेन्द्रनारायण सिंह द्वारा प्रकाशित।

# सम्मेलन के उद्देश्य

(१) हिन्दी साहित्य के अंगों की उन्नति का प्रयत्न करना।

(२) देवनागरी लिपि का देश भर में प्रचार करना और देश व्यापी व्यवहारों और कार्यों के सुलभ करने के लिये हिन्दी भाषा को राष्ट्र-भाषा बनाने का प्रयत्न करना।

(३) हिन्दी को सुगम, मनोरम और लाभदायक बनाने के लिये समय समय पर उसकी शैली के संशोधन और उसकी त्रुटियों और अभावों के दूर करने का प्रयत्न करना।

(४) सरकार, देशी राज्यों, पाठशालाओं, कालेजों, विश्व-विद्यालयों और अन्य संस्थाओं, समाजों, जनसमूहों तथा व्यापार, ज़मींदार और अदालतों के कार्यों में देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा के प्रचार का उद्योग करते रहना।

(५) हिन्दी के ग्रन्थकारों, लेखकों, पत्रसंपादकों, प्रचारकों और सहायकों को समय समय पर उत्साहित करने के लिये पारि-तोषिक, प्रशंसापत्र, पदक, उपाधि आदि से सम्मानित करना।

(६) उच्च-शिक्षा प्राप्त युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने के लिये प्रयत्न करना।

(७) जहां आवश्यकता समझी जाय वहां पाठशाला, समिति तथा पुस्तकालय स्थापित करने और कराने का उद्योग करना तथा इस प्रकार की वर्त्तमान संस्थाओं की सहायता करना।

(८) हिन्दी-साहित्य के विद्वानों को तैयार करने के लिए हिन्दी की उच्च परीक्षाएं लेने का प्रबन्ध करना।

(९) हिन्दी भाषा के साहित्य की वृद्धि के लिये उपयोगी पुस्तकें तैयार करना।

(१०) हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के उद्देश्यों की सिद्धि और सफलता के लिए अन्य जो उपाय आवश्यक और उपयुक्त समझे जांय उन्हें काम में लाना।

# सम्मेलन-पत्रिका का उद्देश्य

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता करना, और साहित्य-प्रेमियों से इसीके लिये उपदेश लेना।

# सम्मेलनपत्रिका।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति
की ओर से प्रतिमास प्रकाशित।

भाग २ } आश्विन संवत् १९७१ { अङ्क १

## नये वर्ष में पदार्पण।

लीजिये पाठक अनेक बिघ्न बाधाओं को पार करके आज आप की सम्मेलन पत्रिका नये बर्ष में पदार्पण करती है। संसार का कोई ऐसा पदार्थ नहीं है जो दोष रहित न हो, कुछ न कुछ दोष अवश्य ही होता है। केवल दोष रहित परमात्मा है। संसार के इस अटल नियम से "पत्रिका" भी मुक्त नहीं है, हम यह मानते हैं कि "पत्रिका" में भी अनेक दोष हैं, अनेक त्रुटियां हैं। पर आपका और हमारा कर्त्तव्य है कि त्रुटियों को दूर करने की चेष्टा करें न कि त्रुटियों से घबड़ा कर "पत्रिका से मुंह मोड़ लें। एक चतुर वैद्य वार वार रोगी को उसके रोग की न याद दिला कर रोग के दूर करने की चेष्टा करता है। "पत्रिका" के प्रेमियों को भी चतुर वैद्य के समान ही "पत्रिका" की त्रुटियों से न घवड़ा कर त्रुटियों को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये। दुर्बल हृदय में केवल आशा ही वलका सञ्चार करती है, संसार आशाही पर खड़ा है। बड़े बड़े सङ्कट आ जाने पर एक आशा ही डूबते को तिनकेके सहारे का काम देती है। गत वर्ष "पत्रिका" अपना यथोचित कर्त्तव्य पालन न करने पर भी आज केवल आशा के भरोसे हो नवीन वर्ष में पदार्पण करती है। "पत्रिका" को आशा है और यह दृढ़ आशा है कि उसके प्रेमी पाठक उसकी त्रुटियों पर ध्यान न देकर उसको अपने कर्त्तव्य

पालन में सहायता देंगे। क्योंकि गत वर्ष हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कारण हिन्दीका विशेष प्रचार हुआहै। जिसका विवरण,सम्मेलन के मन्त्री द्वारा लखनऊ में सम्मेलनका जो आगामी अधिवेशन होगा उसमें उपस्थित किया जायगा। इस वर्ष हिन्दी में कई दैनिक और साप्ताहिक पत्र निकले हैं। हिन्दीके लिये यह शुभ लक्षण है। हिन्दी के अनेक नये और पुराने सहयोगी सम्मेलन पत्रिका के परिवर्त्तनमें दर्शन देते रहे हैं। इसलिये गतवर्ष अपना यथोचित कर्त्तव्य पालन न करने पर भी आज "पत्रिका" केवल आशा के भरोसे ही नवीन वर्ष में पदार्पण करती हुई, भगवान से यही प्रार्थना करती है कि गतवर्ष की अपेक्षा इस वर्ष वह हिन्दी भाषा भाषियों की विशेष रूपसे सेवा करने में समर्थ हो।

पिछली बार हम कह चुके हैं कि इस वर्ष हम ने "पत्रिका" को विशेष मनोरञ्जक बनाने के लिये बहुत सी बातें सोची हैं। समय समय पर पाठकोंको हमारी स्कीम का पता लगेगा ही पर यहां पर केवल एक बात कह देना चाहते हैं कि इस वर्ष हम उन लेखकों के लेख "पत्रिका" में छापने का विचार रखते हैं जिनकी लेखनी के बल से सहस्रों मनुष्योंकी रुचि हिन्दी पढ़नेकी हुई है। जिनके लेखों को पढ़ने के लिये पाठक चातक की भांति बाट लगाये रहते हैं। इसके अतिरिक्त हमने एक और भी बात सोची है कि स्वतन्त्र समालोचनाओं का हिन्दी संसार में अभाव रहता है। इस वर्ष पत्रिका में विविध भांति के ग्रन्थों की समय समय पर समालोचनाएं हुआ करेंगी। हिन्दी भाषा के विद्वान लेखकों द्वारा समालोचनाएं लिखायी जावेंगी। जिससे हिन्दी साहित्य में समालोचना करने की जो घृणित प्रणाली प्रचलित है, दूर हो। कहने का साराँश यह है कि हमारे हृदय में पत्रिका को सर्वाङ्ग सुन्दर बनाने की बड़ी भारी लालसा है, उस लालसा को पूरा करना न करना हिन्दी प्रेमियों के हाथ है। इस विषय में जो कुछ हम पिछली बार प्रार्थना कर चुकेहैं उस से अधिक इस बार कुछ कहना नहीं चाहते हैं। पर देखना यही है कि मातृभाषा की उपासना करने के लिये हिन्दी प्रेमी कहां तक तैयार हैं, देखना चाहते हैं कि मातृ भाषा की उपासना के लिये कितने हिन्दी प्रेमी एक एक रुपया वार्षिक न्यौछावर कर सकते हैं जो हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन हिन्दी भाषा भाषियोंकी एक मात्रसंस्था है उस संस्था की मुख्य पत्रिका के कितने हज़ार ग्राहक होते हैं?

# हिन्दी संसार।

## भरतपुर राज्य में उर्दू

राजपूताने में भरतपुर राज्य इतिहास प्रसिद्ध स्थान है। समय समय पर भरतपुर राज्य के जाट अपनी वीरता का अनुपम परिचय देते आए हैं। भरतपुर में राजपूताने के अन्यान्य स्थानों की भांति बैसबाड़ी, मारवाड़ी आदि मिश्रित हिन्दी न बोली जाकर, विशुद्ध ब्रजभाषा बोली जाती है। भरतपुर नरेश ब्रजेन्द्र कहलाते हैं। पूर्व समय में वहां ब्रजभाषा के कई नामी कवि होगये हैं और काशी नागरी प्रचारिणी सभा वहाँ के सुप्रसिद्ध कवि सूदनकृत—"सुजान चरित्र" भी प्रकाशित कर चुकी है। पर दुख के साथ कहना पड़ता है कि वहां सर्व साधारण में हिन्दी का विशेष प्रचार होने पर भी राजकीय कार्य्यों में उर्दू का डंका बज रहा है। यद्यपि वहां पिछलेदो तीन वर्ष से हिन्दी साहित्य सभा स्थापित है और उसके द्वारा सर्व साधारण में हिन्दी का प्रचार खूब होरहा है, किन्तु राजकीय कार्यों में उर्दू का डंका बज रहा है। हमारी सम्मति में भरतपुर राज्य की रेजेन्सी कौंसिल को भी मारवाड़ की रेजन्सी कौंसिल तथा राजपूताने के चीफ कमिश्नर की आज्ञा का अनुकरण करके समस्त हिन्दी प्रेमियों की विशेषतः भरतपुर राज्यके हिन्दी भाषा भाषियों की हार्दिक लालसा को पूर्ण करना चाहिये।

*　　*　　*　　*

## शोक!!

हमें यह जान कर अत्यन्त शोक हुआ कि काशी के "भारत जीवन" पत्र और प्रेस के स्वामी, बाबू श्रीकृष्ण वर्मा का देहान्त हो गया। बाबू श्रीकृष्ण वर्मा, स्वर्गीय बाबू रामकृष्ण वर्मा के भतीजे थे बाबू रामकृष्ण वर्मा की मृत्यु हो जाने के पीछे आपही भारतजीवन समाचार पत्र और प्रेस चलाते थे। बीच में कुछ दिनों के लिये 'भारत जीवन" समाचार पत्र बन्द हो गया था, परन्तु यूरुप में युद्ध छिड़ जाने से बाबू श्रीकृष्ण वर्मा ने इन दिनों भारत जीवनको

दैनिक कर दिया था। जो अब उनकी मृत्यु हो जाने के कारण बन्द हो गया है। हमारी बाबू श्रीकृष्णवर्मा के कुटुम्बियों के प्रति इस दुःख में हार्दिक सहानुभूति है। एक समय "भारत जीवन" ने हिन्दी की बहुत सेवा की थी। क्या काशीवासियों में ऐसा कोई हिन्दी प्रेमी नहीं है, जो भारत जीवन पत्र को जीवित रखने की चेष्टा करे।

### शुद्ध साहित्य समिति—अल्मोड़ा।

अल्मोड़ा से श्रीयुत हरीदत्त सनवाल सूचित करते हैं कि श्रीयुत सत्यदेव जी ने मार्च सन् १९१२ में यहां एक हिन्दी पुस्तकालय स्थानीय बालकों की भलाई के लिये खोला था। इस वर्ष इसकी बड़ी भारी प्रतिष्ठा इस नगर में हुई है। इस समय इसमें प्रायः १७ साप्ताहिक और मासिक पत्र आते हैं। इसके अतिरिक्त वहां इस समिति से हिन्दी का विशेष प्रचार हुआ है। और वहां के नवयुवकों को इस समिति से विशेष लाभ पहुंचा है"। हमारी सम्मति में भारतवर्ष के प्रत्येक स्थान के नवयुवकों को अल्मोड़ा की भांति शुद्ध साहित्य का प्रचार करना चाहिये।

### पं० प्रताप नारायण मिश्र।

ऐसे बहुत कम हिन्दी प्रेमी होंगे कि जो स्वर्गीय पं० प्रताप नारायण मिश्र के नाम से परिचित न हों, भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के साथ साथ मातृ भाषा के जिन भक्तों ने हिन्दी साहित्य की सेवा की थी उनमें से एक पं० प्रताप नारायण मिश्र भी थे। पं० प्रताप नारायण मिश्र हिन्दी के अद्भुत कवि और लेखक थे। उन्हों ने वर्षों हानि सहकर "ब्राह्मण" नामक एक मासिक पत्र निकाला था। और हिन्दी साहित्य की अच्छी सेवा की थी। स्वर्गीय बाबू बालमुकुन्द गुप्त और स्वर्गीय पं० प्रभुदयालु पांडे दोनों ने हिन्दी में गद्य पद्य मय लेख लिखना उक्त मिश्र जी से ही सीखा था। अबकी बार आश्विन कृष्ण १० को बांकीपुर की हिन्दी साहित्य सभाने भारतेन्दु जयन्ती के समान उक्त मिश्रजी की भी जयन्ती मनाई थी। बांकीपुर—खड्ग विलास प्रेस के स्वामी बाबू रामरणविजयसिंह ने पं० प्रताप नारायण मिश्र के सम्बन्ध में एक सारगर्भित लेख पढ़ा था। हिन्दी के विषय में इस भांति चर्चा होना जागौनी का लक्षण है।

# पत्र सम्पादन कला।

लेखक-पं० नन्दकुमार देव शर्मा।

## महत्व और जन्म।

अन्य कलाओं की अपेक्षा पत्र-सम्पादन कला का विशेष महत्व है। आज कल सभ्य देशों में पत्र सम्पादन कला का विशेष आदर है। अङ्गरेजी के प्रसिद्ध लेखक—टोमस कारलाई का कहना है—"The Journalists are your true kings and clergy" अर्थात् समाचार पत्र लेखक तुम्हारे सच राजा और धर्मोपदेशक हैं। इसमें सन्देह नहीं है कि पत्र सम्पादन का कार्य कठिन है, एक राजा भय दिखला कर अपनी प्रजा को काबू में लाता है पर एक सम्पादक अपनी स्पष्टवादिता और निर्भीक् लेखनी से सर्वसाधारण के हृदय पर स्वतः ही अधिकार प्राप्त कर लेता है। जैसे डाक्टर रोगों का इलाज करता है, वैसे ही सम्पादक, एक जाति और देश की स्थिति सुधारने की चेष्टा करता है। डाक्टर के हाथ में एक रोगी की मृत्यु और जीवन है वैसे ही सम्पादक के हाथ में एक जाति और समाज का जीवन और मरण है। अमेरिका के प्रसिद्ध विद्वान् बेडंल फिलिप्स का कहना है कि मुझे समाचार पत्र की रचना करने दो, मुझे इस बात की चिन्ता नहीं है कि कौन धर्म अथवा नियमों की रचना करता है। एक और विद्वान का कहना है कि समाचार पत्र भी उच्च शिक्षा का कार्य करते हैं। सच पूछिये तो वर्त्तमान समय में किसी देश की शिक्षा और सभ्यता जाननी हो तो देखना चाहिये कि उस देश में समाचार पत्रों का कितना प्रचार है? जिस देश में समाचार पत्रों का अधिक प्रचार है उस देश में ही लोकमत की जागृति है। लोक शिक्षा के विस्तार करने तथा लोक मत के जागृत करने में समाचार पत्र बड़ा काम करते हैं। राजा और प्रजा के बीच में समाचार पत्र वकील का काम करते हैं। देश और समाज में किस समय किस विषय की आवश्यकता है देश की स्थिति सुधारने के लिये किन किन बातों का प्रयोजन है? संसार में क्या हो रहा है किस किस देश के बीच में समराग्नि प्रज्वलित हुई है? कौन से देश में व्यापार की कैसी दशा

है और उसका हमारे देश पर क्या प्रभाव पड़ेगा, इन सब विषयों के जानने का सुलभ साधन समाचारपत्रों के अतिरिक्त और कोई नहीं है अमेरिका, इङ्गलेण्ड आदि देशों में वृद्धि बनिता आबाल सभी समाचार पत्र बड़े चाव से पढ़ते हैं। शोक है। कि हमारे देश में समाचार पत्रों का उतना प्रचार नहीं हुआ है, जितना होना चाहिये।

सब से प्रथम समाचार पत्रों का जन्म किस देश में हुआ है? इस विषय में निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता है किसी किसी का मत है कि पहले पहल चीन देश की राजधानी पेकिन से पेकिन गज़ट निकला था पीछे अन्य देशों ने भी समाचार पत्रों को अपनाय लिया, बहुमत इस ओर झुका हुआ है और ठीक भी प्रतीत होता है कि पहले पहले पन्दरवीं शताब्दी में यूरोप के कई देशों में समाचार पत्रों का जन्म हुआ था। अमेरिका में सन् १६ ९० ई० से समाचार पत्रों का प्रचार हुआ है, और सन् १७७५ ई० में अमेरिका की अखबार संख्या केवल १३ थी। सन् १८०० में लग भग सौ के हुई सन् १९०० में करीब १८ अठारह हज़ार बढ़ी। अब वहां इस समय केवल दैनिक पत्र तेईस हजार हैं, जिनके पाठक अगणित हैं। अमेरिका में कितने ही समाचार पत्र ऐसे हैं जिनका प्रधान कार्यालय न्यूयार्क में है और उनके कार्यालय की शाखाएँ पेरिस तथा लण्डन में भी हैं। अमेरिका में दैनिक पत्रों की इतनी उन्नति का कारण यह भी प्रतीत होता है कि वहाँ के शासन सम्बन्धी कार्यों का घनिष्ट सम्बन्ध सर्वसाधारण से है। वहां कोई बंश परम्परागत राजा नहीं होता है, वहां के सर्व साधारण मिलकर प्रेज़ीडेन्ट को चुनते हैं। वहां का शासन प्रजाकी सम्मति बिना नहीं होता है इसलिये वहां दैनिक अखबारों की विशेष वृद्धि है। वहां पर अखबारों को पढ़ने के लिये अमीर से लेकर ग़रीब तक सब लालयित रहते हैं। स्त्रियाँ और बच्चे तक अखबार पढ़ते हैं। मज़दूर मज़दूरी करने जारहा है, पर एक अख़बार उसके हाथमें ज़रूर है। मेहतर झाड़ू देता है और साथ ही अख़बार पढ़ता है, केवल इन घटनाओं से ही ज्ञात होता है कि वहां के निवासी अपने देश के कार्यों में कितना भाग लेते हैं।

फ्राँस में भी समाचार पत्रों का जन्म लगभग सन् १६३१ के हुआ है। सुना जाता है कि वहां के निवासियों को भी समाचार पत्रों के

पढ़ने की विशेष रुचि है। वहां के प्रसिद्ध टाइम्स और जनरल दोनों पत्रों की ग्राहक संख्या पन्द्रह पन्द्रह लाखसे कम नहीं है। जर्मनी के अकेले बर्लिन नगर में क़रीब पच्चास दैनिक पत्र निकलते हैं। लन्दन से भी कितनेही अच्छे दैनिक पत्र निकलते हैं, रानी एलीजावेथ के समय से इङ्गलैंड की काया बहुत कुछ पलटी है जभी से वहां समाचार पत्रों का प्रचार हुआ है। लन्दन के "टाइम्स" अखबार का बड़ा ही मनोरंजन इतिहास है, जो फिर कभी पाठकों को सुनावेंगे। डेली टेलीग्राफ़, डेली मेल, डेलीन्यूज़, डेली क्रानिकल, मैंनचेस्टर गार्जियन आदि कितने ही दैनिक समाचार पत्र निकलते हैं इनके पढ़नेवालेभी लाखों हैं इनमेंसे कितने ही समाचारपत्रों के कार्यालयों की शाखाएं पेरिस आदि में हैं। इन में से कई पत्र ऐसे हैं जो पहले बहुत थोड़ी पूंजी से निकले थे। पर आज उन के दफ़्तरों को देखकर स्वप्न में भी अनुमान नहीं हो सकता कि इतनी थोड़ी पूंजी से भी इतने टाटबाट से अखबार निकल सकते हैं। इन अख़बारों के दफ्तरों में टेलीफ़ोन, टेलीग्राफ़ वग़ैरह का भी प्रवन्ध तुरन्त ही समाचारों के पहुंचाने का कर रक्खा है। सुना जाता कि इङ्गलैण्ड के निवासी अखबारों के पढ़ने के लिये बड़े ही उत्सुक रहते हैं। जब कभी पार्लीमेंट आदि की बैठक तथा और कोई देशसे सम्बन्ध रखने वाला कार्य होता है, तब तो पढ़ने वालों की अखबारों के दफ़्तरों के सामने भीड़ की भीड़ इकट्ठी हो जाती है। क्यों न हो जहां के निवासी "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी", इस मूल मन्त्र के तत्व को समझते हैं, वहां समाचारपत्रों का अधिक प्रचार होना स्वभाविक ही है।

### भारतवर्ष में समाचार पत्र।

यह तो सब को एक मत से स्वीकार करना पड़ेगा कि भारतवर्ष में समाचार पत्रों का जन्म अङ्गरेजों के समय से ही हुआ है। इस विषय में अङ्गरेज़ हमारे गुरू हैं। क्योंकि हमने अङ्गरेजोंकी देखा देखी अखबार निकालना सीखा है। सुना जाता है, सब से पहिले राजा राममोहनराय ने बंगाल में श्रीरामपुर के ईसाई पादरियों को उत्तर देने के लिये अखबार निकाला था। पीछे और भी अखबार निकले। यदि हम भूलते नहीं तो कह सकते हैं कि भारतवर्ष में इस समय सब से पुराना समाचार पत्र "इण्डियन डेली न्यूज" है, देशी

भाषाओं के समाचार पत्रों में हमारा अनुमान है कि "मुम्बई समाचार" सब से पुराना है। शोक है कि भारतवर्ष में अन्य देशों के समाचार पत्रों की दशा देखते हुए समाचार पत्रों का सन्तोषजनक प्रचार नहीं है। इसके अन्य कारणों में से एक कारण यह भी है कि इस देश में पत्र सम्पादकों को देश सम्बन्धी कार्यों की आलोचना करने के लिये जितनी स्वतन्त्रता चाहिये, उतनी नहीं है। इस देश में समाचार पत्रों को अपनी प्रारम्भिक अवस्था से ही स्वतन्त्रता नहीं रही है। यहां समाचार पत्रों की प्रारम्भिक अवस्था में ही एक यूरोपियन सम्पादक को जिसका नाम स्यात् मिस्टर डेन था, देश निर्वासन का दण्ड मिला था। फिर पीछे सन् १८३५ में चार्लस मेटकाफने समाचार पत्रों को स्वाधीनता प्रदान की थी। फिर कुछ दिनों पीछे सन् १८५७ में सिपाही विद्रोह हुआ, उस समय समाचार पत्रों की स्वाधीनता हरण होगई थी। फिर सन् १८७८ में लार्ड लिटन ने "अमृत बाज़ार पत्रिका" के कारण "वर्नेक्यूलर प्रेस एक्ट" बनाया था जिसके कारण बङ्गभाषा के "सहचर" "सोम प्रकाश" "सुलभ समाचार" जैसे प्रभावशाली पत्र बन्द होगये थे। जब स्वर्गीय बाबू लालमोहनघोष ने विलायत में जाकर विशेष आन्दोलन किया, तब कहीं लार्ड रिपन के समय में यह प्रेस एक्ट रद्द हुआ था। जून सन् १९०८ में एक एक्ट और भी बना। और सन् १९१० से जो नया प्रेस एक्ट बना है उस से तो छापे खानों की स्वतन्त्रता बिलकुल हरण होगई है। जिसके कारण समाचार पत्र और सामयिक पुस्तकों की उन्नति में भारी रुकावट है।

## सम्पादन कार्य्य।

कवि और सम्पादक में विशेष अन्तर होता है। कवि की भांति सम्पादक को भी प्रतिभा की आवश्यकता अवश्य होती है क्योंकि बिना प्रतिभा के कोई कार्य नहीं होता है पर सम्पादक को केवल एक प्रतिभा के भरोसे ही, कवि की भाँति सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। सम्पादन कार्य करनेवाले को अगाध ज्ञान की आवश्यकता होती है। जिस भांति एक कवि की अश्लील कविता से, चित्रकार के अश्लील चित्र से, मनुष्यों की रुचि बिगड़ने की सम्भावना रहती है। उसी प्रकार एक सम्पादक के लेखों से बुरे प्रभाव की सम्भावना रहती है। जो सम्पादक बिना समझे बूझे देश की

स्थिति को बिना पहचाने अपनी सम्मति देता है, वह लाभ के बदले उलटी हानि पहुंचाता है। प्रभावशाली वक्ता की भांति सच्चे सम्पादक का भी मुख्य कर्तव्य है कि वह जिस विषय पर सम्मति दे, उस पर खूब सोच विचार कर अपना मत प्रकट करें। जिस विषय पर क़लम उठावें उस विषय की पूरी जानकारी हो। देश देशान्तरके इतिहासोंसे परिचय होना बहुत ज़रूरी है। भूगोल अर्थ शास्त्र समाजशास्त्र तथा साहित्यकी विज्ञता प्राप्त करना भी बहुत जरूरी है। समाचारपत्रोंके कार्यालयोंमें एक अच्छा पुस्तकालय होना चाहिये सम्पादक को क़ानूनका जानना भी आवश्यक है। यदि कोई सम्पादक चित्रकारीसे परिचित हो तो वह और भी अच्छा है। समाचार पत्र का सम्पादन करना खिलवाड़ नहीं है। बड़ी टेढ़ी खीर है, पराधीन देशों में तो समाचारपत्रों का सम्पादन करना तलवार की कठिनधार पर चलना है। ऊपर कहा जा चुका है कि अमेरिकादि देशों में समाचार पत्रों का विशेष प्रचार है। पर वहाँ स्कूल व कालेज से निकलतेही कोई सम्पादक नहीं बनजाता है। वहां पर पत्र सम्पादन कला को सिखलाने के लिये विशेष प्रबन्ध है। सम्पादन-कला को सिखलाने के लिये विद्यालय बने हुए हैं। फिर वर्षों किसी सम्पादकीय विभाग में संबाददाता तथा सहकारी सम्पादक रहकर प्रधान सम्पादक होते हैं। पर भारतवर्ष में विशेषता हिन्दी समाचार पत्र-सम्पादकों में यह बात नहीं है यहां अनेक व्यक्ति अनुभव प्राप्त किये विना ही सम्पादक होजाते हैं। बिना अनुभव प्राप्त किये भलेंही सम्पादक होजाय, पर उनमें से कितने हैं जो अपनी स्वतन्त्र सम्मति किसी विषय पर देसकें, यों दूसरों के सिर पर त्यौहार मनाना जुदी बात है। देखिये अमेरिका में इस कला का कैसा महत्व समझा जाता है। वहां के एक विश्वविद्यालय में इस कला के सिखलाने के लिये जो शिक्षालय हैं उसका संक्षिप्त वृत्तान्त नीचे दिया जाता है:—

इलोनीयस-विश्वविद्यालय।

अमेरिका के इलोनीयस (Illionois) विश्वविद्यालय में पत्र सम्पादन कला का एक शिक्षालय है। इस कला के सीखनेवाले विद्यार्थी को चारवर्ष तक उक्त शिक्षालय में शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती है। अङ्गरेज़ी साहित्य, विदेशी भाषाएं, सम्पत्ति शास्त्र, राज

सम्बन्धी विषय समाज शास्त्र और दर्शन शास्त्र का तो अध्ययन करनाही पड़ता है पर इसके अतिरिक्त सम्पादन कला का व्यवहारिक ज्ञान विशेष रूप से प्राप्त करना पड़ता है। सब से प्रथम रिपोर्टर अर्थात् संबाददाता का काम सीखना पड़ता है। विद्यार्थी को बतलाया जाता है किस प्रकार का समाचार, कहाँ से और किस भांति संग्रह करना चाहिये। जब देखा जाता है कि वह इस कार्य में निपुण होगया है तब उसे संबाददाता के बड़े बड़े काम, जैसे बड़ी सभाओं के कार्य की रिपोर्ट करना अथवा * किसी बड़े नेता किसी विद्वान तथा किसी शासक से मिल कर किसी विषय पर सम्मति लेना और उसको अपने पत्र में छापना आदि सौंप दिये जाते हैं। इन कार्य्यों को विद्यार्थी अपनी इच्छानुकूल स्वतन्त्रता पूर्वक करता है। जिससे उसकी मानसिक शक्तियों का विकास होता है और उसको समाचार संग्रह करने का चसका भी पड़ जाता है। नियत समय में जबःएक विद्यार्थी इस क्रिया में निपुण होजाता है, तब उसके लिखे हुए समाचार पत्रादि पर विद्यार्थियों के सामने विचार किया जाता है। विद्यार्थियों में परस्पर उसके लिखे हुए समाचारादि पर वादविवाद होता है और जहां कहीं संशोधन की आवश्यकता होती है, वहां संशोधन कर दिया जाता है। अध्यापक प्रत्येक विद्यार्थी से उस विद्यार्थी के लिखे हुए समाचार तथा "इन्टरव्यू" के सम्बन्ध में पूछता है कि समाचार ठीक ठीक संग्रह किये गये हैं या नहीं "इन्टरव्यू" में प्रश्न करने तथा उत्तर लिखने का ढङ्ग ठीक है या नहीं। इस ढंग से प्रश्नोत्तर करने से अन्यान्य विद्यार्थियों को कार्य करने में सुविधा होती है।

इस भांति जब एक विद्यार्थी उपर्युक्त कार्य्यों को सीख जाता है, तब उसको गैली प्रेस के उठाये हुए प्रूफ पढ़ने को दिये जाते हैं। इससे उसको प्रूफ संशोधन ता आता ही है पर साथ ही उसको यह बात सिखलाई जाती है कि कहाँ पर कौनसा टाईप रहना चाहिये, कौन से स्थान पर किस टाईप की कमी है।

* इसको "इन्टरव्यू" कहते हैं पत्र सम्पादन कला का आवश्यक अङ्ग है।" रिव्यू आफ़ रिव्यूज़" के स्वर्गीय सम्पादक, मिस्टर डबल्यू० टी० स्टीड ने "इन्टरव्यू" की रीति प्रचलित की थी "इन्टरव्यू" से समाचारपत्रों के पाठकों को बड़ी सुविधा रहती है।

इन सब बातों के आ जाने पर उसको सम्पादकीय लेख और सम्पादन-कार्य्य सिखलाया जाता है। यह सिखाते समय इस पर विशेष ध्यान दिया जाता है कि किस विषय पर किस भांति की सम्मति देनी चाहिये, पढ़नेवालों के हृदय पर कैसे लेखों का प्रभाव हो सकता है। शिक्षक विद्यार्थी के लिखे हुए लेखके एक एक पैरे को अत्यन्त सावधानी से देखता है। जहां कहीं कोई प्रकार की त्रुटि होगई हो, उसको समझाता है। वहां पर पत्र-सम्पादन-कला के विद्यार्थियों को "समाचार पत्रों के इतिहास" का भी अध्ययन करना पड़ता है। पुराने समाचार पत्रों और मासिक पत्रिकाओं की फ़ाईल भी विद्यार्थियों को पढ़नी पड़ती हैं। जिससे पत्र सम्पादन कला के विद्यार्थियों को यह पता लग जाता है कि पहले समाचार पत्रों की क्या दशा थी ? फिर उनमें क्या परिवर्तन होता रहा और इस समय उन की स्थिति क्या है ?

पत्र-सम्पादन-कला के सम्बन्ध में सब से अन्तिम विषय-सम्पादकीय प्रबन्ध सिखलाया जाता है, जिसमें पत्र की नीति स्थिर रखना, लोकमत को जागृत करना, संबाददाताओं का तथा सम्पादकीय कार्य्यों का संगठन करना तथा पत्र सम्बन्धी सब प्रबन्ध करना सिखलाया जाता है। समझे पाठक ! जहाँ इस भाँति सम्पादक होते हैं, वहाँ समाचार पत्रों का आदर होना स्वाभाविक ही है। शोक है कि हमारे देश में इस कला के सम्बन्ध में भिन्न अवस्था है। हिन्दी बिचारी तो दूर रही, अङ्गरेज़ी भाषा के सम्पादकों के लिये इस देश में कोई स्कूल नहीं है। हमारे देश में से अगणित नवयुवक प्रति वर्ष इङ्गलैण्ड और अमेरिका जाते हैं। क्या अच्छा हो कि वे पत्र सम्पादन कला को सीखकर यहां आवें और इस देश में समाचार पत्रों को उन्नतावस्था में लाने का उद्योग करें जिससे भारतवर्ष में भी लोकमत प्रबल हो। यह कार्य तब ही हो सकता है। जब अङ्गरेजी की उच्च शिक्षा प्राप्त नवयुवक इस ओर ध्यान दें।

---

## किन्डरगार्टन बक्स।

जापानादि देशों में किन्डरगार्टन शिक्षा प्रणाली का विशेष प्रचार है। बालकों के लिये यह प्रणाली लाभदायक है क्योंकि इसके

सहारे बालक बहुतसी बातें खेल कूद में सीख लेते हैं। अनेक जानने योग्य बातें बालकों को खेल कूद में आजाती हैं। अब तक हिन्दी में इस विषय के सामान और पुस्तकें न थी। हर्ष है कि पं० देवीदत्त शर्मा ने इस अभाव को दूर करने की चेष्टा की है। उन्होंने हमारे पास अपना बनाया हुआ किन्डरगार्टन बक्स भेजा है। साथ में एक पुस्तक भी भेजी है। पुस्तक में बक्स में सामान से नागरी, उर्दू, अङ्गरेजी, गुजराती, सराफी और मरहटी के अक्षरों के बनाने की बिधि लिखी हुई है इसके अतिरिक्त बक्स के सहारे ड्राइङ्ग की भी कई शक्ले बनाई जासकती हैं। मूल्य एक रुपया—मिलने का पता—पं० देवीदत्त शर्मा—महरागांव डा० ख० भुवाली—जि० नैनीताल।

---

## परीक्षा समिति का दूसरा अधिवेशन।

संयोजक की पूर्व सूचनानुसार समिति का दूसरा अधिवेशन भाद्र कृष्ण ७ गुरुवार सं० १९७१ को आठ बजे प्रारम्भ हुआ। जिस में निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे:—

| | |
|---|---|
| बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन | पं० रामजी लाल शर्मा |
| पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल | बाबू रामदास गौड़ |

संयोजक ने गत अधिवेशन की कार्य्य वाही का सारांश पढ़ा जो सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

अलीगढ़ के पं० विनोदी लाल उपाध्याय और लखनऊ के बाबू पुत्तनलाल विद्यार्थी के पत्र अलीगढ़ और लखनऊ को भी परीक्षा स्थान बनाने के विषय में पढ़े गये। निश्चय हुआ कि वे स्थान भी परीक्षा स्थान बनाये जांय।

बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन के प्रस्ताव पर निश्चित हुआ कि संयोजक सायंकाल में बैठने वाली स्थायी समिति में यह प्रस्ताव उपस्थित करे कि परीक्षाओं के सम्बन्ध में जो कुछ इस वर्ष व्यय होगा उसके लिये परीक्षा समिति को स्थायी समिति १००) देना स्वीकार करे।

संयोजक के प्रस्ताव पर निश्चित हुआ कि १९७२ की प्रथमा परीक्षा और मध्यमा परीक्षा ११ अगस्त सन् १९१५ से ७ बजे

सबेरे से प्रारम्भ हो और इन परीक्षाओं के लिये आवेदन पत्र भेजने की अन्तिम तिथि ३१ मई, १६१५ रक्खी जाय।

संयोजक के प्रस्ताव पर निश्चत हुआ कि उत्तर-पुस्तकें परीक्षार्थियों को बनी बनाई दी जांय, आकर डबाल क्रौन अठपेजी हो, आवरण पत्र श्वेत रंग का हो और आश्विन कृष्ण प्रतिपदा के बाद ही उचित संख्या में उनके बनवाने का प्रबन्ध किया जाय तथा प्राप्ति-स्वीकार पत्र और प्रमाण पत्र भी छपवाये जांय।

यह भी निश्चित हुआ कि १६७२ को परीक्षाओं का विवरण पत्र संयोजक शीघ्र ही छपवा कर प्रकाशित करें।

परीक्षाओं के सम्बन्ध में स्थायी रूप से यह नियम स्वीकृत हुए। * * * *

(जो नियम स्वीकृत हुये स्थानाभाव से उन्हें यहां नहीं दे सकते उपर्युक्त मन्तव्यानुसार विवरण पत्रिका में वह सब नियम उपनियम तथा और सब विवरण छप गये हैं जो महाशय चाहें -)॥ का टिकट (जिसमें डांक महसूल शामिल है) सम्मेलन कार्य्यालय में भेज कर मगवा लें। उसमें १६७२ और १६७३ परीक्षाओं का भी विवरण है।

इन नियमों की सूचना में इतना समय लग गया कि सांझ के पांच बज गये। अतः निश्चय हुआ कि समिति का कार्य्य शनिवार तक के लिये स्थगित रक्खा जाय, तथा समिति शनिवार को चार बजे से फिर बैठे और १६७१ की प्रथमा और मध्यमा और १६७३ की मध्यमा परीक्षाओं के लिये पत्र पाठ्यग्रंथ और विषयों का निश्चय करे।

शनिवार भाद्र कृष्ण ६ सं० १६७१ को

चार बजे पूर्व निश्चयानुसार फिर समिति की बैठक हुई पूर्वोक्त सदस्यों के अतिरिक्त आज के अधिवेशन में पं० इन्द्र नारायण जी द्विवेदी भी उपस्थित थे और उन्होंने पुस्तकों के चुनने में बड़ी सहायता दी।

निश्चय हुआ कि १६७२ की प्रथमा परीक्षा के लिये प्रश्न पत्र, विषय और पाठ्यग्रन्थ नीचे लिखे अनुसार हों।

सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि मध्यमा परीक्षा के लिये यह विषय रक्खे जांय।

| प्रश्नपत्र | विषय। | पाठ्यग्रन्थ। |
|---|---|---|
| १—पठित और अपठित पद्य जिस में पिंगल और अलङ्कार विषयक प्रश्न होंगे। | पठित पद्यों के भावार्थादि के अतिरिक्त पठित छन्दों के नाम, लक्षण, यतिज्ञान, गणभेद, छन्दप्रभाकर ( भानु ) छन्दोऽर्णव ( दास ) या और किसी पिङ्गल-ग्रन्थ के अनुसार पठित पद्यों के भावार्थादि के अतिरिक्त उपमा, प्रतीक रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, ब्याज और साधारण अनुप्रास और उनके साधारण रूप का ज्ञान। इनमें किसी ग्रन्थ के अनुसार-भाषाभूषण, वा अलङ्कार प्रकाश ( सेठ कन्हैयालाल पोद्दार रचित वेंकटेश्वर प्रेस) वा शिवराज भूषण वा पद्माभरण। | १-हमीरहठ ( चन्द्रशेखर कवि ) नागरी प्रचारिणी सभा काशी से प्राप्य।<br>२-मुद्राराक्षस। (हरिश्चन्द्र)<br>३, ऊजड़ ग्राम ( पं० श्रीधर पाठक, लूकरगञ्ज, प्रयाग से प्राप्य )।<br>४, रामचरित्रमानस ( राम जन्म से अयोध्याकांड के अंत तक )<br>२, शिवावावनी ( भूषण ) साहित्य परिषद् कलकत्ता से प्राप्य। |

अलङ्कार उपयुक्त।

| | | |
|---|---|---|
| | अलङ्कार उपयुक्त । | |
| २—पठित और अपठित गद्य जिसमें विशेषतः व्याकरण और अलंकार के भी प्रश्न होंगे । | व्याकरण में भाषाभास्कर अथवा अन्य कोई व्याकरण ग्रन्थ । | १—सौ अजान और एक सुजान । ( पं० बालकृष्ण भट्ट लिखित और पं० महादेव भट्ट अहियापुर प्रयाग से प्राप्य )<br><br>२—हिन्दी अखबार । बाबू बालमुकुन्द लिखित (गुप्त-निबन्धावली, भारत-मित्र कार्यालय कलकत्ता से प्राप्य । ) |
| ३—लेख जो परीक्षार्थी को दिये हुए विषयों में किसी पर लिखना होगा । | यदि परीक्षार्थी चाहे तो दिये हुए विषयों पर पद्य लेख भी लिख सकता है किन्तु गद्य लिखना आवश्यक होगा । | |

| प्रश्न पत्र। | विषय। | पाठ्यग्रन्थ। |
| --- | --- | --- |
| ४—भारत का इतिहास। | | पंडित हरिमङ्गल मिश्र एम० ए० लिखित ( भारत का इतिहास, खड्गविलास प्रेस, बांकीपुर से प्राप्य। |
| ५—भूगोल साधारण एवं प्राकृतिक। | (१) भौगोलिक शब्दों की परिभाषा, भारतवर्ष के मुख्य नगर, प्रदेश, पहाड़ नदी, झील, बन्दर, समुद्र, तीर्थ, आरोग्यस्थान और देशी रजवाड़ों की साधारण जानकारी तथा राजकीय व्यवस्था का साधारण ज्ञान।<br>पृथ्वी के देशों मुख्य नगरों, पहाड़ों नदियों, झीलों, समुद्रों और द्वीपों का स्थूल विवरण और उनकी विशेषता।<br>हिल, चक्रवर्ती लिखित भूगोल प्रथम और द्वितीय भाग अथवा अन्य किसी भूगोल ग्रन्थ से। [ कमिश्नरियों के ज़िलों के रटने की आवश्यकता न होगी। ]<br>(२) पृथ्वी का सूर्यमंडल से सम्बन्ध, ग्रहण देशान्तर रेखा, अक्षांश रेखा, ऋतुओं का परिवर्तन, मेघ, वर्षा, कुहरा, ओस और उपलवर्षा का विवरण और उनके कारण, समुद्र धाराएं, और ज्वारभाटा। | |

| | | |
|---|---|---|
| | पं० लक्ष्मीशंकर रचित प्राकृतिक भूगोल चन्द्रिका वा हिल लिखित भूगोल तीसरा भाग वा अन्य किसी प्राकृतिक भूगोल के ग्रन्थ से। | |
| ६—आरम्भिक विज्ञान और स्वास्थ्य-रक्षा। | आरम्भिक विज्ञान, विज्ञान प्रवेशिका से और स्वास्थ्यरक्षा (१) उस पुस्तक से जो वर्नाक्यूलर फाइनल में पढ़ाई जाती है वा (२) पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल रचित 'भारत में मंदाग्नि' से (ग्रन्थकार दारागंज, प्रयाग से प्राप्य) अथवा (३) अन्य किसी ग्रन्थ से। | विज्ञान प्रवेशिका (मंत्री, विज्ञान परिषत् प्रयाग से प्राप्य।) |
| ७ गणित। | त्रैराशिक व्याज तक। | |

( १ ) साहित्य, जिसमें ४ पत्र होंगे।

( २ ) इतिहास, जिसमें दो पत्र होंगे।

( ३ ) गणित
( ४ ) दर्शन
( ५ ) विज्ञान
( ६ ) धर्म शास्त्र
( ७ ) अर्थ शास्त्र
( ८ ) ज्योतिष
( ९ ) संस्कृत से अनुवाद
(१०) इंग्लिश से अनुवाद

} जिनमें प्रत्येक में एक एक पत्र होगा।

और यह कि इन में साहित्य और इतिहास परीक्षार्थी को अवश्य ही लेना पड़ेगा और इन दोनों को साथ साथ शेष सात विषयों में से कोई तीन विषय अवश्य लेने होंगे।

सर्व सम्मति से यह निश्चय हुआ कि निम्न लिखित प्रश्न पत्र, विषय और पाठ्य ग्रंथ १९७२ और १९७३ की प्रथमा और मध्यमा परीक्षा के लिये नियत किये जायं—

| प्रश्न पत्र | विषय | पाठ्य ग्रन्थ |
|---|---|---|
| १ पठित और अपठित पद्य | इस में पिंगल और अलंकार सम्पूर्ण समाविष्ट समझा जायगा जिनका अध्ययन इन ग्रन्थों से किया जायः—<br>छन्द प्रभाकर, कण्ठाभरण ( दूलह ) काव्य निर्णय ( दास ) जगद्विनोद ( पद्माकर ) तथा चित्र चन्द्रिका ( काशीराज ) | १—विहारी की सतसई।<br>२—पद्मावत जायसी कृत।<br>३—विनय पत्रिका।<br>४—जगद्रथवध (इण्डियन प्रेस प्रयाग)<br>५—शिवराज भूषण। |
| २ पठित और अपठित गद्य | सम्पूर्ण अलंकार तथा व्याकरण। | १—सौन्दर्यपासक (बाबू ब्रजनन्दन सहाय द्वारा रचित )<br>२—गद्य काव्य मीमांसा ( पं० अम्बिकादत्त व्यास रचित नागरी प्रचारिणी सभा काशी।<br>३—निबन्ध माला दर्श ( पं० गङ्गा प्रसाद अग्निहोत्री वैकुण्ठ पुर पेंडरा रोड )<br>४—नाटक (बाबू हरिश्चन्द्र भारतजीवनप्रेस<br>५—मिश्र बन्धु विनोद (हिन्दी ग्रन्थ प्रसारक मण्डली खंडवा )<br>६—अंकों और नागराक्षरोंकी उत्पत्ति (द्वितीय सम्मेलनका) वार्षिक विवरण दूसराभाग |

| प्रश्न पत्र | विषय | पाठ्य ग्रन्थ |
|---|---|---|
| ३ लेख | गद्य लेख किसी दिये हुए विषय पर (पद्य-रचना वैकल्पिक)। | |
| ४ भाषा और लिपि का इतिहास | हिन्दी की लिपि और भाषा के इतिहास विषयक अन्य ग्रन्थ भी यथा सम्भव पढ़े जायं और पाठ्य ग्रन्थों के साथ उनकी आलोचना पर ध्यान रहे। | उपर्युक्त दूसरे प्रश्न पत्रकी पुस्तकें संख्या (४) (५) और (६) |
| ५ इतिहास पहिला पत्र | भारत का सम्पूर्ण इतिहास। | १—भारतवर्ष की सभ्यताका इतिहास (रमेशचन्द्रदत्त ना० प्र० सभा काशी)<br>२—आर्य चरितामृत<br>३—भारत का अर्वाचीन इतिहास (हिन्दी ग्रन्थ प्रसारक मंडली खंडवा) |
| ६ इतिहास दूसरा पत्र | इतिहास तत्व तथा यूरोप का इतिहास। | १—इतिहास (नागरी प्र० सभा काशी)<br>२—यूरोपका संक्षिप्त इतिहास और वर्तमान परिस्थिति (सुदर्शन प्रेस प्रयाग)। |
| गणित १ पत्र | सम्पूर्ण वीज गणित, रेखा गणित ४ अध्याय | (१) वीज गणित २ भाग (बापू देव शास्त्री |

| | | |
|---|---|---|
| | | मान परिस्थिति (सुदर्शन प्रेस प्रयाग)। |
| गणित १ पत्र | सम्पूर्ण वीज गणित, रेखा गणित ४ अध्याय और त्रिकोणमिति। | (१) वीज गणित २ भाग (बापू देव शास्त्री कृत गणपतिदेव सिद्धेश्वरी गली काशी से प्राप्य)।<br>(२) सरल त्रिकोणमित लक्ष्मीशङ्कर मिश्र चन्द्रप्रभा प्रेस काशी<br>(३) रेखा गणित ४ अध्याय। |
| दर्शन १ पत्र | यूरोपीय दर्शनों का सार कुछ वेदान्त और तर्क शास्त्र। | (१) यूरोपीय दर्शन ना० प्र० स० काशी<br>(२) भगवद् गीता।<br>(३) तर्क शास्त्र (ना० प्र० स० आरा का अनुवाद)<br>(४) श्वेताश्वेतरोपानिषत् (भीमसेन शर्मा इटावा)। |
| विज्ञान १ पत्र | भौतिक, रसायन और जीव विज्ञान का साधारण ज्ञान। | (१) पदार्थ विज्ञान विटप (च० प्र० प्रेस काशी)।<br>(२) जीव विज्ञान विटप।<br>(३) वनस्पति शास्त्र (महेशचरण सिंह गुरुकुल काङ्गड़ी) |

| प्रश्न पत्र | पाठ्य ग्रन्थ | विषय |
|---|---|---|
| धर्मशास्त्र १ पत्र | × | ( १ ) मनुस्मृति का अनुवाद<br>( २ ) कर्तव्याकर्तव्यशास्त्र ( ना० प्र० स० काशी । |
| अर्थ शास्त्र १ पत्र | | सम्पत्ति शास्त्र (इण्डियन प्रेस प्रयाग )। |
| ज्योतिष १ पत्र | खगोल सम्पूर्ण । | ( १ ) सूर्य्य सिद्धान्त का अनुवाद । श्री-वेङ्कटेश्वर प्रेस बम्बई ।<br>( २ ) गोल प्रकाश पं० वंशीधर पुस्तकालय आगरा । |
| संस्कृत से अनुवाद १ पत्र | | |
| अङ्गरेज़ी से अनुवाद १ पत्र | | |
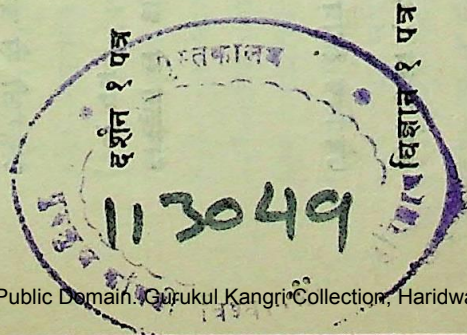
२१०—यवन राज वंशावली मुन्शी देवी प्रसाद ,, =)
२११—दृष्टान्त समुच्चय पं० ज्वालादत्त जी जोशी

| | | | |
|---|---|---|---|
| २१०—यवन राज वंशावली | मुन्शी देवी प्रसाद | ,, | =) |
| २११—दृष्टान्त समुच्चय | पं० ज्वालादत्त जी जोशी | ,, | ।) |
| २१२—कालिदास की निरङ्कशता | पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी | ,, | ।। |
| २१३—कर्त्तव्य शिक्षा | पं० ऋषीश्वर नाथ भट्ट | ,, | १) |
| २२१—दुर्गासप्तशती | | ,, | =।।) |
| २१५—गुप्तचर | बाबू गोपालराम गहमूर | भारत मित्र प्रेस | ।।।) |
| २१६—सतीसुखदई | पं० अमृतलाल चक्रवर्ती | भारत मित्र प्रेस | ≡) |
| २१७—विभक्ति विचार | पं० गोविन्द नारायण मिश्र | गोवर्द्धन प्रेस | ।) |
| २१८—भारतवर्ष का आर्य इतिहास | बाबू व्रजबासीलाल शर्म्मा | | ।) |
| २१९—भाग्य का फेर | बाबू पुरुषोत्तमदास | यूनियनप्रेस | ।) |
| २२०—प्राणघातक माला | पं० कृष्णाकान्त मालवीय | अभ्युदय प्रेस | ।।।) |
| २२१—जैन धर्म का महत्व | श्रीसूरजमल जी | जैनमित्र कार्यालय | ।।।) |
| २२२—अमरीका दिग्दर्शन | श्रीयुक्त सत्यदेव | देवनागरी प्रेस कलकत्ता | ।।।) |
| २२३—दुखिया | श्रीराजेन्द्रनाथ बन्ध्योपाध्याय | अभ्युदय प्रेस, प्रयाग | ।=) |
| २२४—धर्म समीक्षा | श्रीहरिदास खंडेलवाल | ,, | =) |
| २२५—ध्रुवनाटक | | ,, | ≡) |
| २२६—अमर सन्त का चेला | पं० शारदा चरण पाण्डेय | ,, | ।।) |
| २२७—फूलों का हार | पं० कृष्णाकान्त मालवीय | ,, | ।-) |

# "सम्मेलन पत्रिका" के नियम ।

१—"सम्मेलन पत्रिका" हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन कार्य्यालय प्रयाग, से प्रतिमास प्रकाशित होगी ।

२—इसका वार्षिक मूल्य १) इसलिये रक्खा गया है कि सर्व-साधारण इसके ग्राहक होसकें ।

३—इस समय इसमें प्रतिमास कुल २४ पृष्ठ ही रहा करेंगे। परन्तु आवश्यकता होने पर कभी कभी पृष्ठ संख्या बढ़ा भी दी जाया करेगी। आगे चलकर यदि इसकी सेवा साहित्यसेवियों को रुचिकर हो, और इसके ग्राहकों की यथोचित संख्या होजाय तो यही पत्रिका अधिकतर पृष्ठ-संख्याओं में और अधिकतर उन्नत दशा में प्रकाशित की जायगी ।

४—इसके प्रबन्ध-विभाग के पत्र—ग्राहक बनने के लिये आवेदन, विज्ञापन-सम्बन्धी पत्र, मनीआर्डर इत्यादि—मन्त्री, साहित्य-सम्मेलन कार्य्यालय, जानसेनगंज प्रयाग, के नाम भेजे जाने चाहियें ।

५—सम्पादक के नाम की चिट्ठियां, बदले के समाचार-पत्रादि समालोचना की पुस्तकें, पत्रिका में प्रकाशित होने के लिये लेखादि भी ऊपर ही के पते से भेजे जाने चाहियें ।

# विज्ञापनदाताओं के लिये नियम

१—"सम्मेलनपत्रिका" में अश्लील विज्ञापनों को स्थान न मिलेगा।

२—विज्ञापन साधारणतः पूरे और आधे पृष्ठ से कम स्थान के लिये स्वीकृत न होंगे।

१—पृष्ठ का मासिक मूल्य ... ४॥) होगा

२—आधे पृष्ठ का ... २॥) होगा

३—जो लोग १२ संख्याओं में विज्ञापन छपवाने का मूल्य पहले साथ भेज देंगे, उनका विज्ञापन एक संख्या में बिना मूल्य छाप दिया जायगा, अर्थात् १२ की जगह १३ बार उनका विज्ञापन छापा जायगा।

४—किसी दशा में पेशगी मूल्य बिना मिले कोई भी विज्ञापन नहीं छापा जायगा।

५—विक्रयार्थ पुस्तकों के विज्ञापनों पर ऊपर दिये हुए मूल्य से कम मूल्य न लिया जायगा।

१ पृष्ठ का मूल्य १ मास के लिये ३॥) और

आधे " " २) होगा।

६—अदालतों में लेखकों की नौकरी, अध्यापक-अध्यापिकाओं की नौकरी, इत्यादि हिन्दी-प्रचारार्थ नौकरियों के विज्ञापन एक बार बिना मूल्य छाप दिये जायंगे। दूसरी बार और अधिकबार के लिये ऐसे विज्ञापनों का मूल्य केवल १) प्रतिमास होगा। विज्ञापन ८ पंक्तियों से अधिक न हो।

मन्त्री, हि० सा० स० कार्य्यालय, प्रयाग।

पं० ओंकारनाथ बाजपेयी के प्रबन्ध से ओंकार प्रेस प्रयाग में छपा

Reg. No. A629.

# सम्मेलन पत्रिका

## हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की
## मुखपत्रिका।

भाग २ | पौष और माघ संवत् १९७१ | अङ्क ४-५

## विषय सूची



वार्षिक मूल्य १) ] एक संख्या =)

हिन्दी साहित्यसम्मेलन से बाबू नरेन्द्र नरायण सिंह द्वारा प्रकाशित

# सम्मेलन के उद्देश्य

(१) हिन्दी साहित्य के अङ्गों की उन्नति का प्रयत्न करना।

(२) देवनागरी लिपि का देश भर में प्रचार करना और दे-
व्यापी व्यवहारों और कार्यों के सुलभ करने के लिये हिन्दी भा-
को राष्ट्र भाषा बनाने का प्रयत्न करना।

(३) हिन्दी को सुगम, मनोरम और लाभदायक बनाने के लि-
समय समय पर उसकी शैली के संशोधन और उसकी त्रुटियों औ-
अभावों के दूर करने का प्रयत्न करना।

(४) सरकार, देशी राज्यों, पाठशालाओं, कालेजों, विश्व-
विद्यालयों और अन्य संस्थाओं, समाजों, जनसमूहों तथा व्यापार-
ज़मींदार और अदालतों के कार्यों में देवनागरी लिपि और हिन्द-
भाषा के प्रचार का उद्योग करते रहना।

(५) हिन्दी के ग्रन्थकारों, लेखकों, पत्रसंपादकों, प्रचारकों
और सहायकों को समय समय पर उत्साहित करने के लिये पारि-
तोषिक, प्रशंसापत्र, पदक, उपाधि आदि से सम्मानित करना।

(६) उच्च-शिक्षा प्राप्त युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्पन्न
करने और बढ़ाने के लिये प्रयत्न करना।

(७) जहाँ आवश्यकता समझी जाय वहां पाठशाला, समिति
तथा पुस्तकालय स्थापित करने और कराने का उद्योग करना तथ-
इस प्रकार की वर्त्तमान संस्थाओं की सहायता करना।

(८) हिन्दी-साहित्य के विद्वानों को तैयार करने के लि-
हिन्दी की उच्च परीक्षाएं लेने का प्रबन्ध करना।

(९) हिन्दी भाषा के साहित्य की वृद्धि के लिये उपयोग-
पुस्तकें तैयार करना।

(१०) हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के उद्देश्यों की सिद्धि औ-
सफलता के लिए अन्य जो उपाय आवश्यक और उपयुक्त सम-
जांय उन्हें काम में लाना।

# सम्मेलन-पत्रिका का उद्देश्य

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायत-
करना, और साहित्य-प्रेमियों से इसी के लिये उपदेश-लेना।

# सम्मेलनपत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति
की ओर से प्रतिमास प्रकाशित।

भाग २ | पौष और माघ संवत् १९७१ | अङ्क ४-५


# हिन्दी संसार।

## लखनऊ में पञ्चम सम्मेलन

मार्ग शीर्ष शुक्ला ९। १० और ११ संवत् १९७१ अंगरेज़ी तारीख़ २६, २७ और २८ नवम्बर सं० १९१४ को लखनऊ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का पञ्चम अधिवेशन बड़ी सफलता से हुआ। सम्मेलन से पूर्व हिन्दी भाषा भाषियों में परस्पर सम्मेलन के समय के सम्बन्ध में जो आन्दोलन होरहा था, उससे यह सम्भावना होती थी कि शायद मातृभाषा के कुछ अनन्य भक्त इस बार सम्मेलन में योग न देसकेंगे। परन्तु सम्मेलन के समय के सम्बन्ध में आन्दोलन करनेवालोंने अपनी उदारता का परिचय दिया, असुविधाएं रहने पर भी उन्होंने सम्मेलनमें पधारने की कृपा की।

इस बार सम्मेलन में दूर दूरसे प्रतिनिधि पधारे थे। ऐसा कोई प्रान्त न था जहां से प्रतिनिधि न आये हों बम्बई, मध्यप्रदेश,पंजाब, बिहार, प्रान्त बङ्गाल और संयुक्तप्रान्त, आदि सभी प्रान्तोंसे प्रतिनिधि गण पधारे थे। प्रतिनिधियों की संख्या ४९५ थी, जिनमें से लगभग ८९ स्थानीय थे।

प्रतिनिधियों के अतिरिक्त दर्शकों की भी बहुत अधिक संख्या थी। लगभग चार पांच हज़ार मनुष्यों से सभास्थल खचाखच भरा रहता था। क्या दर्शक, क्या प्रतिनिधि सभी के मुखों पर मातृ भाषा हिन्दी के प्रति उत्साह की अपूर्व ज्योति झलक रही थी स्वेच्छा सेवकों का उत्साह प्रशंसनीय था। सभास्थल में सुशोभित सज्जनों का उत्साह कैसा था इसका अनुमान केवल इतने सेही किया जा सकता है कि जब परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थियों की नामावली सुनाई गई तब आगामी परीक्षा में उत्तीर्ण होनेवाले विद्यार्थियों को रजत और सुवर्ण पदक प्रदान करनेवालों के इतने नाम आये थे, कि जो पढ़कर सुनाये नहीं जासके।

वक्तृताओं के विचार से भी पञ्चम सम्मेलन बहुत अच्छा हुआ। स्वागतकारिणी सभा के अध्यक्ष तथा सम्मेलन के सभापति के सुललित व्याख्यान तो हुए ही थे, किन्तु राय देवीप्रसाद (पूर्ण) बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन, श्रीयुक्त हरिश्चन्द्र विद्यालङ्कार, पं० दुर्गाप्रसाद श्रीब्रह्मचारी इन्द्रवेदालङ्कार, श्रीयुक्त सत्यदेव बाबू श्यामसुन्दर दास पं० रामनारायण मिश्र, तथा बांदाके वकील कुँवर हरप्रसादसिंह की अच्छी वक्तृताएं हुईं। पूर्ण कविजीकी हृदयग्राही कविता तथा प्रभाव शालिनी वक्तृतासे श्रोतागणको विशेष आनन्द प्राप्त हुआ। आगरेके पं० सत्यनारायण कविरत्नकी कविता भी ओजपूर्ण थी। पं० माधव शुक्ल तथा पं० जीवानन्द काव्यतीर्थ के मधुर गान से भी श्रोताओं को बड़ी प्रसन्नता हुई। अवध प्रान्त के अनेक ताल्लुकदारों और वकीलों ने आगे से अपने यहां के कार्य्यों को हिन्दी में करने की प्रतिज्ञा की थी। अन्त में सब से बढ़कर सम्मेलन को यह सफलता प्राप्त हुई कि पंजाब की राजधानी लाहौर से आगामी वर्ष के लिये निमन्त्रण आया सम्पूर्ण वृतान्त आगे दिया जाता है।

---

## सभापति का आगमन।

सम्मेलन के अधिवेशन के एक दिन पूर्व अर्थात् मार्गशीर्ष शुक्ला ८ संवत् १९१४ गत २५वीं नवम्बर सन् १९१४ को सम्मेलन के सभापति पं० श्रीधर पाठक पञ्जाब मेल से लखनऊ पहुंचे। स्टेशन

पर आपके स्वागत के निमित्त पण्डित गणेश विहारी मिश्र, बाबू श्याम दास बी० ए०, बाबू पुरुषोत्तम दास टण्डन, ताल्लुकदार पंडित चन्द्र भाल बाजपेयी, करवी के श्रीयुक्त बादा साहब मोरेश्वर बलवन्त जोग, पं० अम्बिका प्रसाद बाजपेयी, बाबू भगवान दास हालना प्रभृति अनेक सज्जन उपस्थित थे। मुहर्रम के कारण जुलूस की व्यवस्था नहीं हो सकी। सभापति महोदय के स्टेशन पर पहुंचने पर सभापति की जय, हिन्दी भाषा की जय से स्टेशन गूंज उठा।

गत २५वीं नवम्बर को सन्ध्या को स्थायी समिति का भी एक अधिवेशन हुआ जिस में सम्मेलन सम्बन्धी कई आवश्यक विषयों पर विचार किया गया।

## प्रथम दिन।

### मार्ग शीर्ष शुक्ल ६

कालीचरण हाईस्कूल में जहाँ बहुत से प्रतिनिधि ठहराये गये थे वहीं पर सभा मंडप बनाया गया था। सभा मंडप भव्य, सुन्दर और सुहावना था। अनेक स्थानों में बेल बूटों से सजाया गया था। मञ्च पर स्वागत कारिणी समिति के सभापति राजा रामपालसिंह सी आई० ई० ठाकुर सूर्य्यबक्ससिंह, पंडित चन्द्र भाल बाजपेयी, पंडित गोकर्णनाथ मिश्र, बाबू श्याम सुन्दर दास, पं० गणेश विहारी मिश्र, प्रभृति और साहित्य सेवी ताल्लुकदार बैठे हुए थे।

लगभग साढ़े बारह बजे के सभापति पं० श्रीधर पाठक सभा मंडप में पधारे, उनके पधारते ही तालियों की ध्वनि से सभा मंडप गूंज उठा। जनसमूह से सभापति की जय, हिन्दी भाषा की जय, राष्ट्र भाषा की जय इत्यादि ध्वनि हुई। आरम्भ में पं० माधव शुक्ल ने स्वरचित बन्देमातरम् का श्रोताओं को आकर्षण करने वाला सुन्दर गीत हारमोनियम पर गाया। इस गीत को सुन कर श्रोतागण बहुत प्रसन्न हुए। इसके पश्चात् तीन पंडितों ने वेद मन्त्रों द्वारा मङ्गलाचरण किया।

राजारामपालसिंह के मंत्री ठाकुर तिलक सिंह ने बाबू मैथिली शरण गुप्त की कविता पढ़ कर सुनाई, तत्पश्चात् स्वागतकारिणी सभा के सभापति राजा रामपालसिंह ने अपना विवेचना पूर्ण व्याख्यान पढ़ कर सुनाया, उन्होंने आरम्भ में आगुन्तक सज्जनों का स्वागत करते हुए, अवध के साहित्यसेवियों का भी प्रसङ्ग वश कुछ वर्णन किया था। इस व्याख्यान से अवध के प्राचीन और नवीन साहित्यसेवियों के प्रति उनकी भक्ति, प्रेम और सहानुभूति का परिचय मिलता है, हिन्दी के पद्यकाव्य के सम्बन्ध में आपने जो सम्मति दी थी, वह प्रत्येकसाहित्य सेवी के विचार के योग्य है। आप ने कहाः—"......हिन्दी के पद्य-काव्य की अवस्था आज कल शोचनीय हो रही है। विधिवत् गुरु से पढ़ साहित्य समुद्र मथन कर काव्य करने की रीति उठ गई है। जिसके जी में आया, वही तुकबन्दी करने लगा। काव्य शास्त्र के ज्ञाता अच्छे कवियों की आज भी कमी नहीं है, परन्तु खेद का विषय है कि सामयिक पत्रों में कविता प्रकाशित कराने वाले हमारे अधिकांश कवि हिन्दी को कलङ्कित कर रहे हैं और यदि यही क्रम रहा तो हिन्दी-साहित्य को बड़ी हानि पहुंचने की सम्भावना है। काव्य के विशेषज्ञों को चुपचाप यह अनर्थ न देखना चाहिये। बाबू मैथिली शरण गुप्त आदि की भांति यदि लोकप्रिय विषयों पर वे कविता प्रारम्भ कर दें तो बहुतेरे स्वयं सिद्ध कवि कपूर हो जांय और कविता करने की इच्छा रखने वालों को काव्य शास्त्र पढ़ना ही पड़े।"—

जो लोग यह कहते हैं कि अवध प्रान्त की भाषा उर्दू है, उनको मुंहतोड़ जवाब स्वागतकारिणी सभा के सभापति ने सरकारी रिपोर्टों के आधार पर यह दिया हैः—"मनुष्य गणना के गत विवरण से पता चलता है कि अवध के १२०५१८०० अधिवासियों की भाषा हिन्दी, ४८४६१९ की उर्दू है। शेष २१५८५ अवधवासी अन्य आर्य्य एवं अनार्य भाषाएं बोलते हैं। हिन्दी भाषियों की संख्या अपेक्षाकृत अत्यधिक होते हुए भी अङ्गरेजी काल में ४३। ४४ वर्ष तक अदालतों में उर्दू का ही रङ्ग जमा रहा और हिन्दी बहिष्कृत रही। यह जानकर अवध के भावी निवासियों को चकित होना पड़ेगा।"

इसके आगे उन्होंने माननीय पण्डित मदनमोहन मालवीयजी के उद्योग और सर ऐण्टनी मेकडानेल्ड की कृपा से अदालतों में जो नागरी अक्षरों को अधिकार मिला है उसका जिक्र करते हुए कहा:—"घोर लज्जा का विषय है कि अवधवासियों ने भी युक्त प्रान्त के अन्य स्थानों के हिन्दी भाषी निवासियों की भांति इस आज्ञा से कोई लाभ नहीं उठाया। सम्मेलन की स्थायी समिति तथा दो एक नगरों की स्थानीय नागरी प्रचारिणी सभाओं के उद्योग से अब कुछ जिलों में कुछ कुछ अदालती कार्य्य नागराक्षरों में भी होने लगा है परन्तु हम अवधवासियों के कानों पर अभी तक जूं नहीं रेंगी। मेरे वकील मित्रगण मुझे क्षमा करें। यदि मातृभाषा के प्रति, जननी जन्म भूमि के प्रति अपना दायित्व समझ कर वे कटिवद्ध हो अपना कर्तव्य पालन करते तो बहुत कुछ सफलता प्राप्त हो सकती थी। भविष्य में भी हिन्दी भाषी वकीलगण अपने कर्त्तव्य की इसी प्रकार अवहेलना करते रहेंगे, यह आशा नहीं है।"

• •

स्वागत कारिणी सभा के सभापति महाशय ने अवध में हिन्दी और उर्दू के प्रचार के सम्बन्ध में और भी बहुत सी बातें कही थी गत मनुष्य गणना—विवरण के सम्पादक की आपने निम्न उक्ति उद्धृत की थी:—" In practice, the Persian is still the court script and undoubtedly this makes a difference, causing it to be the more popular." अर्थात् वास्तव में, अदालतों में अभी तक फ़ारसी अक्षरों का ही साम्राज्य है और इसी कारण जनता इन अक्षरों का अधिक आदर करती है। प्रयागीय विश्व विद्यालयों में हिन्दी को स्थान न मिलने पर दुःख प्रकट करते हुये प्रारम्भिक शिक्षा पुस्तकों की भाषा के सम्बन्ध में अनेक युक्तियों से बतलाया कि उनकी भाषा कैसी होनी चाहिये। आपने कहा:—"पिगट कमेटी के निर्णय पर विचार कर गत २९वीं अगस्त के प्रादेशिक गज़ट में प्रारम्भिक शिक्षा-विषयक युक्तप्रदेश की सरकार का मन्तव्य प्रकाशित हुआ है। इस मन्तव्य में सरकार ने इस बात पर बल दिया है कि प्रारम्भिक शिक्षा सामान्य भाषा जिसे सरकार हिन्दुस्थानी या उर्दू कहती है द्वारा ही होना आव-

श्यक है। युक्त प्रान्त के छोटे लाट सर जेम्स मेस्टन महोदय की सम्मति है कि युक्त प्रान्त के शिक्षित समुदाय की यही भाषा है। शिक्षित मुसलमानों की यही भाषा हो सकती है। परन्तु शिक्षित हिन्दू मात्र की भाषा उर्दू है, यह विश्वास करने के योग्य नहीं। बाद के लिये यदि यह स्वीकार भी कर लिया जाय कि युक्त प्रान्त के शिक्षित हिन्दुओं की भाषा उर्दू है, उनकी भाषा वही है जिसमें वे शिक्षित मुसलमान भाईयों से बातचीत करते है या आवश्यकता पड़ने पर सरकारी कर्मचारियों से वार्तालाप करते हैं तो भी प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू भाषा में ही देने की उपयोगिता सिद्ध नहीं होती।

गत मनुष्य गणना विवरणके अनुसार युक्त प्रान्तके ४८०१४०८० अधिवासियों में त, म तथा Dog कहने वालों को मिलाकर भी शिक्षितों की संख्या केवल १६१८ ४६५ है। इनमें १३४०१४३ हिन्दू और २२४२ ८८ मुसलमान हैं और शेष अन्य जातियों के मनुष्य हैं अशिक्षितों की संख्या बहुत बड़ी है। १६१८४६५ शिक्षित को लज्जित करने के लिये ४५५६३५७६ अशिक्षित युक्तप्रान्त में वर्तमान हैं। गणना विवरण में ४३७६६६५६ हिन्दी भाषी स्वीकार किये गये हैं और ४०६५७२८ उर्दू या हिन्दुस्थानी—भाषियों की संख्या बतायी गयी है। सरकारी अङ्कों के अनुसार ही अशिक्षितों में हिन्दी भाषियों का ही प्राधान्य है और उर्दू भाषियों की संख्या नहीं के बराबर है। एक बात यह भी विचारणीय है कि जिस भाँति नगरों के रहने वाले अधिकांश शिक्षित हिन्दी उर्दू बोलते हैं उसी भांति ग्रामीण अशिक्षित मुसलमान सब हिन्दी ही बोलते हैं। इस अवस्था में मुट्ठी भर पढ़े लिखों की बोल चाल की भाषा की कोटियों हिन्दी भाषियों पर बलपूर्वक लादना कहां तक युक्ति संगत है, यह शासक वर्ग स्वयं विचार लें"। अन्त में पंडित श्रीधर पाठक को सभापति करने का प्रस्ताव उपस्थित किया। इस भाँति युक्ति और तर्क पूर्ण—स्वागत कारिणी सभा के सभापति का भाषण था।

स्वागतकारिणीसभा के सभापति की वक्तृता के पश्चात् पंडित अयोध्या सिंह उपाध्याय और पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी ने श्रीयुक्त पं० श्रीधर पाठक जी के सभापति करने के प्रस्ताव का अनुमोदन और समर्थन किया। पं० श्रीधर पाठक जी ने सभापति

का आसन ग्रहण किया। और मंडप तालियों की आनन्द ध्वनि से गूंज उठा।

सभापति महाशय अस्वस्थ्य थे, अतएव उनकी वक्तृता बाबू श्याम सुन्दर दास बी० ए० महोदय ने पढ़ कर सुनाई, सभापति महाशय की वक्तृता विद्वत्ता पूर्ण थी। उसमें साहित्य निर्माण सम्बन्धी काव्य नाटक उपन्यास दृष्टान्त संग्रह आदि कई विषयों पर अच्छा विचार किया गया है। लेख शैली कैसी होनी चाहिये, क्रिया लिङ्ग, कारक, सम्बन्धी विषय परभी उन्होंने अपनी सम्मति प्रकटकी। पिछले वर्ष हिन्दी साहित्य में जो जो नूतन ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं उनके सम्बन्ध में भी आपने अपनी सम्मति प्रकट की थी। सभापति के व्याख्यान में कहीं कहीं राष्ट्रीयताकी भी झलक थी। इसके आगे सभापति महोदय ने खड़ी बोली और ब्रजभाषा के सम्बन्धमें अपने विचारप्रकट किये थे,ब्रजभाषाके सम्बन्धमें आपने कहा—"ब्रजभाषा सरीखी रसीली वाणीको कविता क्षेत्रमें वहिष्कृत करनेका विचार केवल उन हृदयहीन अरसिकोंके ऊषर हृदयमें उठना सम्भवहै जो उस भाषा के स्वरूप ज्ञान से शून्य और उसकी सुधा के आस्वादन से विलकुल बञ्चित हैं। जिस सुकवि हंसालिसंसेवित सारस्वत सरोवर से सूर तुलसी प्रभृति सूरि सम्राट सत्पद्य-पीयूष के अक्षय स्रोत प्रवाहित कर गये हैं उसे रुद्धद्वार कर देने की कामना या चेष्टा कहां तक सहृदयता से अनुमोदित होसकती है केवल सहृदय ही अनुमान कर सकते हैं? आपने साहित्य की श्रीवृद्धि के लिये उद्यान सम्मिलन, सान्ध्य सम्मिलन तथा दूसरे प्रकार की छोटी छोटी गोष्ठियों की प्रथा की अनुमति दी थी। आशा है हिन्दी साहित्य सेवी, सभापति महाशय के परामर्श के अनुसार साहित्य की श्रीवृद्धि के लिये कार्य करेंगे।

सभापति का व्याख्यान लगभग एक घण्टे में समाप्त हुआ। इसके पश्चात् बाबू श्यामसुन्दर दास ने युक्त प्रदेश के छोटे लाट सरजेम्स मेस्टन, माननीय पं० मदनमोहन मालवीय पं० बदरीनारायण चौधरी तथा अन्य सज्जनों के सहानुभूति के तार पढ़ सुनाये पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय ने "उलाहना" नामक अपनी कविता पढ़ी जो अन्यत्र प्रकाशित है ब्रजेश कविने हिन्दी कवियों के सम्बन्ध

में अपनी कविता और पं० माधव शुक्ल ने बाबू मैथिली शरण गुप्त की कई कविताएं पढ़ सुनाईं। लगभग सन्ध्या के चार बजे आजका कार्य्य समाप्त हुआ। रात्रि को सात बजे विषय निर्वाचन समिति बैठी और रात्रि के १२ बजे तक अनेक मन्तव्यों पर विचार होता रहा।

---

## दूसरा दिन

मार्गशीर्ष शुक्ल १०

आज अनुमान १२ बजे के कार्य्य प्रारम्भ हुआ। सभा स्थल खचाखच भरा हुआ था। प्रथम प्रस्ताव यूरोप के वर्त्तमान युद्ध और सम्राट की विजय कामना के सम्बन्ध में था सभापति ने यह प्रस्ताव उपस्थित किया और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ। दूसरा प्रस्ताव भी सभापति द्वारा उपस्थित किया गया और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ। यह प्रस्ताव इस वर्ष जिन हिन्दी हितैषी लेखकों और सहायकों की मृत्यु हो गई हैं, उनके सम्बन्ध में था।

## टंडनजी की वक्तृता।

उपर्युक्त दोनों प्रस्तावों के स्वीकृत होजाने के पश्चात् बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन नोटों और सिक्कों पर हिन्दी को स्थान दिलाने के प्रस्ताव को उपस्थित करने को खड़े हुए। आपकी वक्तृताका साराँश यह है:—"आजकल भारत में राष्ट्रीयता की आवश्यकता बतलाई जा रही है परन्तु इसकी प्राप्ति के लिए जो वास्तविक साधन हैं उन पर पूरा ध्यान नहीं दिया जाता। दुःखसे कहना पड़ता है कि हमारे नेताओं में आत्मिक बल की कमी है। हम अपने सन्मुख उपस्थित किसी विषय पर अच्छी तरह और न्याय के साथ विचार भी नहीं करते। सार्वजनिक आन्दोलनो में छोटे छोटे गिरोहों को बाँधकर हम लोग खड़े होते हैं और अपने अपने प्रान्तों की बात को आगे करते हैं। राष्ट्रीयता के सम्पादन के लिये भाषा ही सब से बड़ा सूत्र है। परन्तु हमारी राष्ट्रसभा काँग्रेस में मुख्य प्रश्न सदा छोड़ दिये जाते हैं। मैं हिन्दी का पक्ष केवल हिन्दू होने की दृष्टि से नहीं वरन् राष्ट्रीयता की दृष्टि से करता हूं। यह स्पष्ट है कि भाषा

होसे जाति पहिचानी जाती है। परन्तु आजकल हम क्या देखते हैं? हिन्दू युवक अंगरेज़ी पढ़ लिखकर प्रायः उसी विदेशी भाषा में चिट्ठी पत्री तक लिखने लगते हैं। मैं ने स्वयं कुछ थोड़ीसी अङ्गरेज़ी पढ़ी है मैं अङ्गरेज़ी पढ़ने का विरोधी नहीं हूं। यह लक्षण उसी जाति का हो सकता है जो गिरती हुई हो और जिसमें कुछ भी स्वाभिमान न हो।

हम सब को यह समझ लेना चाहिये कि राष्ट्रीयता की प्राप्ति के लिए हमें कुछ स्वार्थत्याग अवश्य करना पड़ेगा। यह उचित है कि हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सब मिलकर इस प्रश्न पर विचार कर और एक ऐसी भाषा को निर्धारित करें जो हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा होसकती है। इस विषय में हिन्दी की उपयुक्तता बड़े २ विद्वानों ने स्वीकार कर ली है। हिन्दी-साहित्य की उच्चता भी प्रसिद्ध भाषाशास्त्रज्ञों को माननी पड़ी है। श्रीयुत राजेन्द्रलाल मित्र की सम्मति में किसी इतर देशी भाषा का साहित्य हिन्दी के साहित्य से श्रेष्ठ नहीं है। बीम साहब ने भी अपनी 'Comparative Grammar" में यही बात कही है। ऐसी अन्य बहुतसी साक्षियां दी जा सकती हैं।

सचमुच हिन्दी का प्रश्न हमारे लिये प्रधान प्रश्न है। हिन्दीकी शिक्षा का प्रभाव कितना हितकर होता है इसका प्रमाण मेरा यह अनुभव है कि जहां जहां हिन्दी के माध्यम से शिक्षा दी गई है वहाँ बालकों का चरित्र अन्य स्थानोंकी अपेक्षा अधिक अच्छा पाया गया है। हमारी हिन्दी एक तरह से इस समय भी हिन्दुस्तान की 'Lingua Franca' ( राष्ट्रभाषा ) है। मद्रास को छोड़कर नागरी अक्षर चारों ओर फैले हुये हैं और स्वयं मद्रास में भी संस्कृत के प्रचार के कारण लोगों को नागरी अक्षरों से परिचय है। महान् आश्चर्य का विषय है सरकार ने इन्हीं नागरी अक्षरों को नोटों से उठा दिया है! मेरे कानों में कई बार यह आवाज़ पड़ चुकी है कि नोटों पर नागरी न रहने के कारण बेचारे गाँववालों को धोखा हो गया और वे यह न जान सके कि नोट का मूल्य क्या है। अस्तु, मैं उन लोगों से सहमत नहीं हूं जो कहते है कि इस विषय में अब हमें सरकार से व्यर्थ प्रार्थना न करनी चाहिये। मेरा विश्वास है

कि गवर्नमेन्ट प्रबल लोकमत की बहुत दिनों तक उपेक्षा नहीं कर सकती। यदि हमारी शिकायतें लगातार सरकार तक पहुंचती रहेंगी तो उसे झखमारकर नोटों पर नागरी को स्थान देना पड़ेगा।

सीतापुर के पं० दुर्गाप्रसाद बी० ए० एल० एल० बी० के अनुमोदन और कालाकांकर के श्रीयुत देवदत्त के समर्थन करने पर यह प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

चौथा प्रस्ताव पंजाब और प्रयागके विश्वविद्यालयोंमें हिन्दीको स्थान देनेके सम्बन्धमें था। इस प्रस्तावको लखीमपुरके वकील पं० सूर्य्य नारायण दीक्षित ने उपस्थित करते समय निम्न वक्तृता दीः— "हिन्दी के विरोधी विश्वविद्यालयोंमें हिन्दीको उच्च स्थान न मिलने के सम्बन्धमें कई प्रकारकी दलीलें दिया करते हैं। उनमेंसे किसी २ का कहना है कि हिन्दी कोई भाषा ही नहीं है। कुछ कहते हैं कि हिन्दी में साहित्य नहीं है। ऐसी पोच दलीलोंके उत्तर देनेकी आवश्यकता नहीं है। जिस भाषामें हम बातेंकर रहे हैं, क्या वह हिन्दी नहीं है? किसी भाषा में दूसरी भाषा के शब्द आजाने से वह भाषा मर नहीं जाती। अंगरेजी में भी दूसरी भाषाओं के शब्द मिलते हैं। मगर फिर भी अंगरेज़ी मरी हुई भाषा नहीं है, वह अंगरेज़ी ही बनी हुई है। इसी तरह हमारी भाषा भी ज़िन्दा जीती हुई है और जिस दिन हमारी भाषा न होगी उसी दिन हमारी जाति भी न रहेगी। सरकारी विश्वविद्यालय हमारी इस भाषा की उपेक्षा कर रहे हैं। मान लीजिये कि हिन्दी मुर्दाही है फिर इससे क्या हुआ? वह प्राचीन है इस विचार से ही उसे विश्वविद्यालयों में स्थान मिलजाना चाहिये था। जिनका यह कहना है कि पुस्तकें नहीं मिलती हैं उनसे मेरा यह निवेदन है कि यदि बी० ए० एम० ए० में हिन्दी पढ़ाई जाय तो इस समयभी उपयुक्त हिन्दी पुस्तकें मिलसकती हैं। इस प्रस्तावका अनुमोदन करते हुए पं० नन्दकुमारदेव शर्मा ने कहाः—"शिक्षाके दो उद्देश्य होते हैं एक तो बुद्धि का विकास, दूसरा प्राप्त की हुई विद्याका उपयोग। ये उद्देश्य तभी सिद्ध हो सकेंगे जब विद्यार्थियों को मातृ भाषा द्वारा शिक्षा मिलेगी। हिन्दी में पढ़ने योग्य पुस्तकें नहीं मिलती, यह दलील बिलकुल निकम्मी है। मिश्र बन्धुओं ने जो मिश्रबन्धु विनोद ग्रन्थ लिखा है उसमें हिन्दीकी पुरानी पुस्तकोंका

पता लगता है। जब बम्बई में स्वर्गीय रानाडे महोदय ने बम्बई विश्वविद्यालय में मराठी को स्थान दिलाने का प्रयत्नकिया तब उनको भी यही उत्तर मिला था। हरद्वार के गुरुकुल और वृन्दावनके प्रेममहाविद्यालय में शिक्षा माध्यम हिन्दी ही है। तब यूनिवर्सिटीयों में कोई अड़चल उपस्थित नहीं हो सकती।" पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी ने इसका समर्थन किया।

पांचावां प्रस्ताव जो स्कूलों में शिक्षा के माध्यम के सम्बन्ध में था काशी के पं० रामनारायण मिश्र ने उपस्थित किया, आपने कहाः—"देशी भाषा द्वारा शिक्षा देने के लाभ किसीसे छिपे नहीं हैं, प्रत्यक्ष है। हिन्दी उर्दू मिडिल पास करके जो लड़के अंगरेज़ी स्कूलों के "स्पेशल", "दर्जों" में भरती होते हैं, उनकी दशा उन विद्यार्थियों से कहीं अच्छी होती है, जो शुरू से अङ्गरेज़ी पढ़ते हैं। वे अपनी योग्यता द्वारा उन विद्यार्थियों से जो प्रारम्भ से अङ्गरेज़ी शिक्षा पाते हैं विशेष पारितोषकादि पाते हैं। हिन्दी उर्दू मिडिल पास विद्यार्थियों की दूसरे विद्यार्थियों से शारीरिक अवस्था भी अच्छी होती हैं।" "सद्धर्म प्रचारक" के सम्पादक, श्रीयुक्त इन्द्र वेदालङ्कार ने इस प्रस्ताव का सारगर्भित वक्तृता द्वारा अनुमोदन किया, जिसका सारांश यह हैः—"यदि किसी विषय को हृदयङ्गत करना हो उसे मातृभाषा द्वाराही पढ़ना चाहिये सारे सभ्य देशों में विद्यार्थी अपनी मातृभाषा द्वारा ही शिक्षा प्राप्त करते हैं। परन्तु एक अमेरिकन यात्री के शब्दों में भारतवर्ष "विचित्रताओं का देश है। थोड़े दिन हुए किएक अमेरिकन यात्री गुरुकुलमें आया था, उसे जब यह बतलायागया कि भारतवर्ष में बालकों को विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा दी जाती है। तब वह कहने लगा "अमेरिका में सुना करते थे कि भारत विचित्रताओं का देश है निस्सन्देह यह भी उसकी विचित्रता है।" यह क्रम कितना अस्वभाविक और हानिकारक है, यह स्पष्ट ही है। शिक्षा का ऐसा क्रम कितना अस्वभाविक और हानिकारक है, यह स्पष्ट ही हैं। मेरी तो दृढ़ सम्मति है कि हमारी सारी शिक्षा मातृभाषा द्वारा ही होनी चाहिये और इसलिये इस प्रस्ताव में जो स्कूल की ऊपरी दो श्रेणियों को छोड़ देने वाला अंश है, उसका मैं विरोधी हूं। वर्तमान अस्वभाविक

अवस्था तब तक बनी रहेगी, जब तक कुल शिक्षा का प्रबन्ध हम लोग अपने हाथों में नहीं लेंगे। मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि समस्त भारत वासियों की "अपनी" भाषा इस समय कोई नहीं है। जाति के जीवन में भाषा का बड़ा महत्व है। किसी जाति को नष्ट करने के लिये पहिले उसकी भाषा को नष्ट करना होता है आप लोगों को कदाचित् मालूम होगा कि जर्मन सरकार ने पोलिश भाषाको निर्मूल करने के लिये कैसे कैसे प्रयत्न किये। मगर पोलिश जाति भी मातृभाषा की ऐसी कट्टर भक्त थी कि उसके सामने जर्मन अधिकारियों की कोई दाल नहीं गली। आज्ञा होगई थी कि जो पोलिश बालक जर्मन भाषा को छोड़ अपनी भाषा में ईश्वर प्रार्थना करें उनके बेंत लगाये जायँ और जो अध्यापक ऐसा आचरण करें वे निकाल दिये जायँ। परन्तु पोलिश अपने मत पर अड़े रहे और आखिर जर्मन सरकार को अपनी आज्ञा रद्द ही करनी पड़ी।

मोतिहारी के पं० रामदहिन मिश्र ने समर्थन करते हुए कहा कि कलकत्ता यूनिवर्सिटी में मेट्रिक्युलेशन के विद्यार्थी इतिहास के प्रश्नपत्रों के उत्तर बङ्गला में लिख सकते हैं परन्तु प्रयाग के विश्वविद्यालय ने अभी तक हिन्दी के सम्बन्ध में यह नियम नहीं बनाया है।

श्रीयुत मुख्तार सिंह, श्रीयुत रुद्रनारायण, पं० गणपति जानकी राम, और पं० रामरत्न के समर्थन करने पर प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

तदन्तर मध्यप्रदेश के सागर जिले से आये हुए पं० सुखराम चोबे ने कुछ मनोरञ्जक पद्य पढ़ सुनाये। इसके पीछे पं० जीवानन्द शर्मा ने कई गीत बड़े मधुर स्वर में गाये, तत्पश्चात्त आगरा धांधूपुरा के पं० सत्यनारायण कविरत्न ने मनोहर और चित्ताकर्षण करने वाली कविताएं पढ़ीं।

---

## सम्मेलन की परीक्षा

सम्मेलन के प्रधान मंत्री, बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन ने सम्मेलनकी परीक्षा के सम्बन्ध में कुछ शब्द कहे, उसके पश्चात् परीक्षा समि-

ति के संयोजक, बाबू रामदास गोड़ एम० ए० ने परीक्षा सम्बन्धी विवरण सुनाया जो पत्रिका के पिछले अङ्कमें छपचुका है। सर्वोत्तम परीक्षार्थी पं० लक्ष्मीधर शुक्ल लखनऊ का पं० जनार्दन भट्ट ने पं० बालकृष्णभट्टकी स्मृति में रौप्य पदक दिया। और एक सुवर्ण पदक बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन ने दिया। श्रीयुत सत्यदेवने अन्य परीक्षार्थियों को अपनी पुस्तकें भेंट कीं।

इस समय सभास्थल मेंबैठे हुए सज्जनोंका उत्साह देखने योग्य था. प० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी ने यह सूचना दी कि वे परीक्षाके प्रथम उत्तीर्ण विद्यार्थीको स्वर्ण पदक प्रदान करेंगे। 'चारों ओरसे पदक प्रदान करने वालों के नाम आने लगे। और इतने सज्जनोंके पदक देने के लिये पत्र आये वे सब पढ़कर नहीं सुनाये गये। कितने ही सज्जनोंने अपनी जाति के परीक्षार्थियों को पदक देने की प्रतिज्ञा की, और एक सज्जन ने सबसे कम नम्बर से फ़ेल होनेवाले को पदक देने की सूचना दी। श्रीवेङ्कटेश्वर समाचार के सम्पादक श्रीयुत पं० अमृतलाल चक्रवर्त्ती स्त्रीशिक्षा की वर्त्तमान प्रणाली के विरोधी हैं, इस पर एक महाशय ने "अमृतलाल चक्रवर्ती पदक" उस बालिका को देने की सूचना दी जो सम्मेलन की आगामी वर्ष की परीक्षा में उत्तीर्ण होगी"। इस पर श्रीयुत पं० अमृतलाल चक्रवर्ती ने भी "उस बालिका को एक रत्न जटित सुवर्ण पदक देने की प्रतिज्ञा की, जो केवल अपने पति से शिक्षा पाकर सम्मेलन की परीक्षा में उत्तीर्ण होगी"। इस के अनन्तर बिहार के कुमार गणेश प्रसाद सिंह की ओर से यह सूचना दी गई कि वे गणित और फलित ज्योतिष की गवेषणा पूर्ण पुस्तक लिखने वाले को २००) उपहार स्वरूप देंगे और पुस्तक की योग्यता का निर्णय पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी अथवा उनके द्वारा नियुक्त कोई महाशय करेंगे।

इसके अनन्तर छटवां प्रस्ताव हिन्दू विश्व विद्यालय के संचालकों से हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाने के अनुरोध के सम्बन्ध में था, इस प्रस्ताव को श्रीयुक्त पं० हरिश्चन्द्र विद्यालङ्कार ने बड़ी ओजस्विनी वक्तृता द्वारा उपस्थित किया, जिसका सारांश यह है "मातृ भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने के विरुद्ध यह कहा जाता

है कि वह इस योग्य नहीं है कि उसमें शिक्षा दी जा सके। परन्तु इस युक्ति में कुछ भी सार नहीं है। जो भाषा हम नित्य बोलते लिखते हैं और जिस में सोचते हैं उसमें योग्यता का प्रश्न क्या है? समस्त सभ्य देशों में बालक अपनी मातृ भाषा द्वारा ही उच्च से उच्च विषयों की भी शिक्षा पाते हैं। केवल हमी लोग उलटे रास्ते पर चल रहे हैं और इस अस्वभाविक क्रम का परिणाम हमारे लिये कैसा हानिकारक होरहा है यह स्पष्टही है। आज से ५० वर्ष पहले जापान के साहित्य में क्या था? परन्तु आज उसका साहित्य इतना उन्नत इसलिये है कि जापानियों ने अपनी शिक्षा का माध्यम जापानी भाषा ही को रखा। पाश्चात्य वैज्ञानिक पुस्तकें सभी जापानी भाषा में अनुवादित करके जापानी बालकों को पढ़ाई गईं और इसी से मानसिक विकाश और स्वतन्त्र विचार में जापानी भारतवासियों से कहीं बढ़े चढ़े हैं। यहां तो बेचारे विद्यार्थियों को अङ्गरेजी पुस्तकें रट रट कर दिमाग़ खराब करना पड़ता है।

कुछ लोग कहते हैं कि हिन्दी में उपयुक्त पुस्तकें नहीं हैं। मेरा विश्वास है कि जब यूनिवर्सिटियों में मातृ भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया जायगा तब बहुत पुस्तकें हो जावेंगी। गुरुकुल में यही कठिनाई हुई थी परन्तु वह हल हो गई।" इसका अनुमोदन करते हुये, बांदे के वकील कुंवर हरिप्रसाद ने कहा कि सारे भारत में हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का साधन हिन्दू विश्व विद्यालय हो सकता है। अगर हमारे भाई ही हमारी अपील को नहीं सुनेंगे तो सरकार कैसे सुन सकती है।

बाबू श्यामसुन्दर दास ने अपनी स्वाभाविक ओजस्विनी वक्तृता द्वारा—सातवां प्रस्ताव प्रयाग विश्वविद्यालयों में हिन्दी के अच्छे विद्वानों को "फेलो" नियुक्त करने के विषय में उपस्थित किया। आपने राम कहानी" पुस्तक की बड़ी आलोचना की। पं० सूर्यनारायण दीक्षित के अनुमोदन करने पर प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। इसी अवसर पर यह सूचना सुनाई गई कि स्वामी ब्लाकटानन्द ने उस सज्जन को स्वर्ण पदक देने की प्रतिज्ञा की कि जो देश भक्ति पर धार्मिक कविता कर आगरे की नागरी प्रचारिणीसभा को भेजेंगे।

---

## तीसरा दिन

मार्गशीर्ष ११ सं० १९७१

तीसरे दिन नियत समय पर पुनः कार्य्यारम्भ हुआ। आरम्भ में पं० जीवानन्द शर्म्मा काव्यतीर्थ ने श्रोताओं का चित्त अपने मधुर गीत से प्रसन्न किया। बाद उस के श्रीयुक्त सत्यदेवजी का "लेखन कला" पर ओजस्विनी व्याख्यान हुआ। वक्ता महाशय ने आरम्भ में "लेखन-कला" क्या है? इस विषय की व्याख्या करते हुए उत्तम लेखकों के गुण, उनके ग्रन्थों की उपयोगिता, बतलाते हुए कहाः-"कोई मनुष्य जिसके पास नये विचार, नयी बात लिखने का मसाला न हो के किसी पुस्तकके लिखनेमें हाथ न डाले। जिनके पास कोई संदेशा नहीं उसको अधिकार नहीं है कि वह ग्रन्थ लिखे" आगे उन्होंने ऐसे लेखकोंकी आलोचनाकी, जो दूसरोंसे पुस्तक लिखा कर अपना नाम देदेते हैं आगे कहाः—"जो अपने सिद्धान्त को छिपाता है, वह पाठकों को धोखा देता है। उसकी पुस्तक नहीं पढ़नी चाहिये। उस उपदेशक की, उस लेखक, का कुछ भी प्रभाव नहीं, जिसका चरित्र कमजोर है।

इसके पीछे पं० तोताराम सनाढ्य का व्याख्यान हुआ, जिसमें उन्होंने जङ्गली जातिओंको मातृभाषासे कैसा प्रेमहै यह बतलाया? आपने कर्मवीर गान्धी और डाकृर मणिलाल वरिस्टर-एट-ला के उन पत्रों को पढ़कर सुनाया जो उन्होंने हिन्दी में फ़ीजी में रहने वाले भारतीयों के नाम लिखे थे।"

श्रीयुक्त पं० कामता प्रसाद गुरु ने हिन्दी व्याकरण पर एक निबन्ध पढ़ा इस निबन्ध में व्याकरण संबन्धी कई विवेचनापूर्ण बातें कहीं थी। तत्पश्चात् पं० माधव शुक्ल, पं० सत्यनारायण कवि-रत्न, पीलीभीतके पं० राधेलालकी पाठकोंके चित्त प्रसन्न करनेवाली कविताएं हुईं इसके अनन्तर पं० अमृतलाल चक्रवर्त्ती ने जोशीले शब्दों में पैसाफ़ण्ड की अपील की जिस समय चक्रवर्त्ती जी अपील कर रहे थे, उस समय लखनऊके डिप्टी कमिश्नर तथा म्युनिस्पल बोर्डके यूरोपियन सेक्रेटरी आये। पं०गोकर्णनाथ मिश्र और श्रीयुक्त सत्यदेवजीने भी पैसाफ़ण्डके लिये अपीलकी पं० गोकर्णनाथ मिश्रने अपील करते हुए कहाः—"इसी लखनऊमें सिर्फ़ दस वर्ष पहले यदि कोईहिन्दीकी बात कहता, तो लोग उसकी हंसी किया करते थे। मानों

वह अभी मदरासमे आरहा हो। पर आज यही लखनऊ हिन्दी प्रेम से पूरित है यह आप लोगों से छिपा हुआ नहीं है। एक आदमी ने कल कहा कि यह सम्मेलन देखकर मुझ पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। बिना देखे मैं विश्वास नहीं कर था सकता कि यहां वालोंमें हिन्दीका इतना प्रेम होगा। आगे आपने कहा कि मेरे बहुत से मित्र इङ्गलैण्ड से पत्र भेजते हैं कि हमें "सरस्वती" और "मर्यादा" भेजिये। आपने यह भी कहा कि मैं हिन्दू विश्वविद्यालय कमेटी का सदस्य हूं और मैं आप लोगों को विश्वास दिलाता हूं कि उक्त समिति इस विषय पर विचार कररही है कि विश्व विद्यालय में हिन्दी तथा संस्कृत को यथा संभव अधिक स्थान दिया जायगा।

श्रीयुत् सत्यदेवजी ने अपने ओजस्विनी शब्दों में अपील करते हुये अपनी चद्दर पैसा फण्ड में दान करदी। यह चद्दर उसी समय ४१) रुपये में शाहजहांपुर के लाला नानकचन्द कपूरने खरीद कर श्रीयुक्त सत्यदेवजी को उढ़ा दी। एक सज्जन ने उत्साह में आकर अपना कोट बेचदिया, वह बाबू राधामोहन गोकुलजो ने ५) रुपया में खरीदलिया। पं० माधवशुक्लने अपना साफ़ा देदिया और एक स-ज्जन ने ७) सात रुपये में खरीद कर साफ़ा शुक्लजी को लौटा दिया। गोरखपुर के स्वामी सच्चिदानन्द जी ने अपने जूते दान दिये। जिसको गोरखपुर के पं० जमनारायण मिश्र ने ५) रुपये में खरीद लिये और उनका लौटा दिये। पैसा फंड में जिन महाशयों ने मुख्य मुख्य रकमें दीं उनका नाम नीचे दिया जाता है:—

| | |
|---|---|
| श्रीमान् राजा रामपाल सिंह | २००) |
| " " इन्द्र विक्रम सिंह | २००) |
| " ठाकुर शिवनारायण सिंह | २००) |
| " पं० चन्द्रभाल बाजपेयी | १००) |
| " पं० सोमेश्वर दत्त शुक्ल | १००) |
| " सेठ खेमराज श्रीकृष्णदास | १००) |
| " कुमार गणेशप्रसाद सिंह | १००) |
| " ठाकुर जगन्नाथ सिंह | १००) |
| " पं० गोकर्णनाथ मिश्र | ५०) |
| " पं० रघुवर दयाल मिश्र | ५०) |
| " पं० शिवबिहारी लाल वाजपेयी | २५) |

| | |
|---|---|
| श्रीमान् राय देवीप्रसाद पूर्ण | ११) |
| श्रीयुक्त मन्नूलाल | १०) |
| " स्वामी ब्लाकटानन्द | १०) |

इसके पश्चात् बांदाके सुयोग्य वकील श्रीयुत् कुंवर हरप्रसादसिंह जी के मुहर्रिर मुंशीमथुराप्रसादको अदालतोंमें तीनहजार दरख्वास्तें देने के कारण सभापति महोदय ने सम्मेलन की ओर से चांदी का क़लमदान और प्रमाणपत्र दिया। इसके पश्चात् बाबू हरिकृष्ण दास धावन बी०ए०, एल०एल०बी०, बाबू लक्ष्मणप्रसाद श्रीवास्तव पं० व्रजनाथ एम०ए०, एलएल०बी०, रायदेवीप्रसाद पूर्ण कवि आदि वकीलों ने प्रतिज्ञा की कि अबसे हम अपने यहां का हिन्दी में कार्य्य करेंगे। पं० गोकर्णनाथ मिश्र ने भी कहाः—"मैंने भी अपने मुहर्रिर से तीन दिन पहिले ही हिन्दी में काम करने के लिये कह दिया है। अब आगे से मेरे यहां भी हिन्दी में ही सब काम होगा। अवध में एक मुक़द्दमा हो रहा है वह मेरे हाथ में है उसका काम भी हिन्दी में करूंगा और वह शायद अवध में पहला मुकद्दमा हिन्दी में होगा" लखनऊके लाला सांवलदास ने कहाः—मैं अपने बहीखाते हिन्दी में करूंगा"। पण्डित गणेशबिहारी मिश्र ने हिन्दी में काम करनेकी प्रतिज्ञा की। ठाकुर जगन्नाथप्रसाद सिंह रहवांने कहाः—"मैं अवध का छोटा सा जमींन्दार हूं, मेरा कार्य्य पहले से ही हिन्दी में होता है। राजासाहब दोहरा ने तीन महीनों से अपने यहां हिन्दी करदी है। प्रयागपुर, सूरजपुर और श्रीमान राजारामपाल सिंह के यहां हिन्दी में ही बहीखाते का काम होता है। उन्नाव अवध के पं० चन्द्रभाल बाजपेयी ने भी हिन्दी की प्रतिज्ञा की। इसके अनन्तर प्रधान मन्त्री-जी ने सूचना दी कि श्रीयुत महावीर प्रसादजी आनरेरी मेजिस्ट्रेट आगे से अपने फैसले हिन्दी में लिखा करेंगे। कर्वीके बाबासाहब मोरेश्वर बलवन्त जोगे अपने फैसले हिन्दी में लिखा करते हैं, श्रीयुक्त शिवनारायणसिंह बहादुर ताल्लुकदार ने भी हिन्दी में काम करने की प्रतिज्ञा की। श्रीयुक्त पं० महेशदत्त शुक्ल ने कानपुर में जो कुछ कार्य हिन्दी में होरहा है,उसका परिचय देते हुए कहा कि मेरा मुसलमान मुहर्रिर सब काम हिन्दी में करता है।

## "हिन्दी नहीं आर्य्य भाषा"

इसके बाद एक गुजराती सज्जन खड़े हुए, और कहने लगे कि मैं गुजराती होकर भी हिन्दी बोलता हूं और हिन्दी में ही अपना काम करता हूं। परन्तु हिन्दी नाम अशुद्ध है, आर्य्यभाषा नाम होना चाहिये। इस पर चारों ओर से बैठ बैठ जाओ मत बोलो की आवाज आने लगी। इतने में ही श्रीयुक्त हरिश्चन्द्र विद्यालङ्कार खड़े हुए, और कहा कि आर्य्यभाषा कहना आर्य्य समाज का यह सिद्धान्त नहीं है। लड़ाई झगड़े की बात साम्प्रदायिक सङ्कीर्णताका फल है। साम्प्रदायिकता ने भारतवर्ष को दग्ध कर दिया है। कम से कम अभी कुछ समय तक सम्मेलन को इस साम्प्रदायिकतासे अलग ही रहने दीजिये। एकताकी लहरें उठने दीजिये जब सब आपस में मिलजांय तव समझ लीजियेगा।"

इसके अनन्तर रायदेवी प्रसादजी पूर्ण कवि की १३ वें प्रस्ताव पर हृदयग्राही और सुललित वक्तृता हुई, जो अन्यत्र प्रकाशित है। उक्त प्रस्ताव का अनुमोदन कालपी के श्रीयुक्त कृष्ण वलदेव वर्मा बी० ए०, और समर्थन पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी और श्रीयुक्त हरिश्चन्द्र विद्यालङ्कार ने किया और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ। अन्य प्रस्ताव सभापति द्वारा उपस्थित हुए और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुए।

## लाहोर में छठवां सम्मेलन।

श्रीयुक्त हरिश्चन्द्र जी ने १३ वें प्रस्ताव के अनुमोदन करने के पश्चात् चतुर्थ सम्मेलन के सभापति, श्रीमहात्मा मुन्शीरामजी का तार पढ़कर सुनाया जिसमें लाहौर के राय रामशरणदास, श्रीयुक्त रोशनलाल, लाला गोपाललाल भण्डारी और भक्त ईश्वरदास की ओर से निमन्त्रण था।

इसके पश्चात् प्रधान मन्त्रीजी ने सम्मेलन के कार्यालय के कार्य विवरण का संक्षिप्त वृतान्त सुनाया और सर्व सम्मति से कार्य विवरण स्वीकृत हुआ उसके पश्चात सम्मेलन के कार्यकर्ता और स्थायी समिति के सभासदों का निर्वाचन हुआ। सभापति

स्वेच्छा सेवक, स्वागतकारिणी सभा आदि को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई।

---

## राय साहब की वक्तृता।

राय देवी प्रसाद जी पूर्ण कवि ने तेरहवें प्रस्ताव को उपस्थित करते समय जो हृदयग्राही और सुललित वक्तृता दी थी, उस का सारांश यह है :—

विद्या रसिक सज्जनो ! हिन्दी हितषी मित्रों ! जिस प्रस्ताव को आपके सामने उपस्थित करने लिये मैं ख़ड़ा हुआ हूं वह इस भांति है:—

"यह हिन्दी साहित्य सम्मेलन अपना नितान्त आश्चर्य प्रकट करता है कि। पगट्स के मेम्बर ने हिन्दी को मृतभाषा कहने का साहस किया है (सभा में "मिथ्या" की बाणी) और "सैयद करामत हुसैन" की सब कमेटीने यह मिथ्या आरोप्य किया है कि हिन्दी के प्रचारक राजनैतिक उद्देश्यों से उसका साहित्य गढ़ रहे हैं ( सभा में "सब मिथ्याकी बाणी ) यह सम्मेलन लोकल गवर्नमेण्टको धन्यवाद देता है कि उसने ऐसे निर्मूल अपवादों पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया ( हर्ष ध्वनि )

मैं असमञ्जस में हूं कि इस मन्तव्य की प्रस्तावना में क्या कहूं, स्वयं सिद्ध को क्या सिद्ध करूं तथापि आज सभापति ने प्रोग्राम के अतिरिक्त वक्तृताओं और कविताओं के लिये उदारता पूर्वक समय दिया है, इस समय मेरा कथन भी खण्डित खण्डन तथा मण्डित मण्डन पूर्वक जो कार्य हम कर चुके हैं उसका अनुचिन्तन स्वरूप और जो कार्य हमें करना है भूमिका स्वरूप होगा (हर्षध्वनि)

महाशयो ! माधवजी के पीलू और देश के स्वरों में उस गान के उपरान्त जो अभी आप ने सुना है, मेरे कर्कश शब्द आप पर क्या प्रभाव डाल सकेंगे ? तथापि चक्रवर्ती महाराज ने जो पड़े हुए गले के साथ उच्चस्वर से अपनी "पैसा फंड" की अपील आप के हृदयों तक पहुंचाई है, उसके सहारे "सूत्रस्येवास्ति मे गतिः" के अनुसार मैं आशा कर सकता हूं कि मेरे कर्कश शब्द भी वहां तक पहुंच जावेंगे। ( हर्षध्वनि और विनोद ) महाशयो ! सा-

हित्य में एक अलङ्कार होता है उसका नाम है "मिथ्या ध्यवसित" अलङ्कार, उसका प्रयोग बहुधा वेदान्त में हुआ करता है:-"बन्ध्या का पुत्र गन्धर्व नगर में आकाश पुष्प संचय के लिये पंगु होकर भी सैर कर रहा है बिना नाक के भी उन पुष्पों को सूंघता है, जैसे यह सब सत्य वा असत्य है, उसी प्रकार हिन्दी का निर्जीव होना भी सत्य वा असत्य है (हर्षध्वनि) मुझे तो अब ही ज्ञात हुआ है कि मुर्दा भी बड़े बड़े काम करता है दूर दूर से यात्रा कर के आता है (हास्य) दान देता है दान लेता है। और खाता है और खिलाता भी है (हास्य), मन्तव्य स्वीकार करता है और चियर्स भी देता है (हर्षध्वनि) यह करताल ध्वनि नहीं है यह अन्धकार के किले का बम्बार्डमेंट होरहा है (अत्यन्त हर्षध्वनि) क्या आश्चर्य जो हिन्दी को मुर्दा कहने वाला वेदान्ती हो जो "ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या" के भाव से हिन्दी साहित्य को कोई वस्तु नहीं समझता ब्रह्म ही तो वस्तु है जिसमें अवस्तु का आरोप हुआ करता है। उर्दू में वस्तु को चीज़ कहते हैं, उर्दू बोलने वालों का बोल चाल ही हुआ करता है कि "अजी जनाब यह ख़ाक सार तो बिलकुल नाचीज़ है (हास्य और हर्षध्वनि) ऐसे ही भाव से किसी ने हमको भी कुछ कह सुन दिया होगा। हां एक बात और याद आई हिन्दी के प्रचारक तो उसका साहित्य गढ़ ही रहे हैं, परन्तु अन्धेर यह है कि हमारी सरकार भी इस धुन में पड़ गई है, मिला देखिये सरकारी वार कम्यूनीक जो नागरी अक्षरों में निकलते हैं और जो उर्दू अक्षरों में निकलते हैं (वक्ता ने बहुत से शुद्ध समाचार विज्ञप्तियां जो सरकार की ओर से प्रकाशित होती हैं सभा को दिखलाईं और नमूने की भांति उनमें से कुछ वाक्य पढ़े जो शुद्ध और सुन्दर हिन्दी के उदाहरण थे और उन पर विनोद पूर्ण तिलक करते हुए "अनु-मानतः" शब्द जब आया तब कृत्रिम क्रोध से पत्र को टेबुल पर पटक दिया और कहा कि यह सरकारी हिन्दी अब असहनीय है सभा में विनोदसे करताल ध्वनि होती रही)।

महाशयो! लोग कहा करते हैं कि "मुर्दा दिल ख़ाक जिया करते हैं" हम तो "मुर्दादिल" उसी को समझते हैं, जो एक जीती जागती इस देश की सब से अधिक प्रसिद्ध और प्रचलित भाषा से विमुख होने के अतिरिक्त उससे द्रोह भी रखता हो। अब मैं एक पद्य द्वारा

ईश्वर का धन्यवाद करता हूं कि उसकी कृपा से हिन्दी केवल जीवित ही नहीं है, किन्तु एक परिपूर्ण प्रकाश वाली वस्तु है (हर्षध्वनि) इसी में साहित्य का गौरव भी गर्भित है ।

महाशयो ! "रसखान" की सुन्दर रस मया कविता आप आज ही इस प्लेटफार्म से सुन चुके हैं, कुछ "रसलीन" की रस लीनता की बानगी लीजिये, जो इसी अवध प्रान्त में विलग्राम में हो गये हैं उनका नाम मुहम्मद अरिफ़ था ।

"राधा पद बाधा हरन साधा करि रस लीन
अङ्ग अगाधा लखन को कीन्हों मुकुट नवीन ।
(हर्षध्वनि)

यह "अङ्गदर्पण" का प्रथम दोहा है, एक दोहा उनका बहुत ही प्रसिद्ध है, जिसे लोग भ्रान्ति से दूसरे कवि का समझते हैं । वह दोहा यह है, इसमें यथा संख्यालङ्कार का अपूर्व चमत्कार है ।

"अमी हलाहल मद भरे श्वेत श्याम रतनार'
जियत मरत झुकि झुकि परत जेहि चितवत इकबार ।
(हर्षध्वनि)

एक बात और भी याद आ गई । ईसाई मिशनरियों को जिनको वहां के सर्व साधारण में अपने मत का प्रचार करना अभीष्ट था होली बाईविल का अनुवाद करके लाखों पुस्तकें छपवाईं और बेचीं अथवा वितरण कीं । क्यों उनको भी हमारी तरह मुर्दा भाषा का साहित्य गढ़ना था । ( हर्षध्वनि )

(प्रथम छप्पै)

अन्धकार है वहां जहां अदित्य नहीं है ।
है वह मुर्दा देश जहां साहित्य नहीं है ।
जहां नहीं साहित्य नहीं आदर्श वहाँ है* ।
जहां नहीं आदर्श वहां उत्कर्ष कहां है ।
है धन्यवाद उस जगत् के स्वामी विश्वादित्य का ।
जो जग में पूर्ण प्रकाश है हिन्दी के साहित्य का ।
(हर्ष ध्वनि)

---

* यथा मनु, वसिष्ठ, हरिश्चन्द्र, राम, कृष्ण, भीष्म पितामह, युधिष्ठिर, सती, गौरी, सावित्री, सीता, गान्धारी, इत्यादि ।

अब दूसरे पद्य में यह निवेदन है कि हिन्दी का निर्जीवत्व एक असम्भव विचार है, अपितु उसे निर्जीव कहना ही एक निर्जीव आरोपण है और इस सम्मेलन की सत्ता ही इस पक्ष में प्रमाण है।

(दूसरा छप्पै)

मिथ्याध्यवसित अलङ्कार जो सुनत आये,
उसके हमने उदाहरण मन माने पाये।
शशक शृङ्ग लै घड़ी पङ्गु बन्ध्यासुत घूमै,
मृगजल-कमल-अगन्ध-अलिमुख बिन चूमै*
यों ही हिन्दी—निर्जीविता आरोपण निष्प्राण है।
सम्मेलन यह इस बात का सत्ता पूर्ण प्रमाण है।

( हर्षध्वनि )

अब तीसरे पद्य में यह प्रश्न करते हैं कि जो इस प्रकार अतीव प्रबल है और जो इस प्रकार विविध ध्वनियों से बड़े बड़े कार्य कर रही है क्या वह निर्जीव कही जा सकती है।

( तीसरा छप्पै )

प्रेम ध्वनि से जो सोतों को सदा जगावे।
शंख ध्वनि से जो ईश्वर का प्रेम सिखावे॥
सिंह ध्वनि से फूट और दुर्मति को मारे।
मेघ ध्वनि से दुराभाव को जो ललकारे।
यह विनय ध्वनि से प्रश्न है, जो यों प्रबल अतीव है।
तुम कहो हृदय पर हाथ रख, क्या हिन्दी निर्जीव है?

( हर्षध्वनि )

( चौथा छप्पै )

शोक न होता यदि यों मुर्दा कहने वाला।
होता कोई आफ्रिका का रहने वाला।
हिन्द निवासी हाय कहै हिन्दी को मुर्दा!
होगा उसका बड़ा ग़ैर मामूली गुर्दा!
क्यों भला देख पड़ती नहीं हिन्दी भाषा हिन्द की।
यह प्रभा पूर्ण जब है सभा दवा मोतिया विन्द की।

( हर्षध्वनि )

* सब एक से एक अधिक असम्भव !

अब यह दिखलाते हैं कि हिन्दी का प्रयोग भारतवर्षीय संसार के संगीत में किस अधिकता से है। बङ्गाली, और महाराष्ट्र गवैये भी तानसेन दैजूबावरे सदारङ्ग इत्यादि के हिन्दी गीत गाते हैं।

( पाँचवां छप्पै )

जिसमें "ध्रुवपद" "भजन" "शूल" "धम्माल" सुरीले।
गाते हैं "ठुमरियां" रँगीली सदा रँगीले॥ *
हा! जिसमें मर्सिये तलक गावें दर्दीले।
मधुर स्वरों में जिसके हों व्याख्यान रसीले॥
ध्वनि गूंज रही जिसकी सरस भारत में अभिराम है।
मुर्दा कहना उस व्यक्ति को किन कानों का काम है॥ †

अब अगले पद्य में यह सूचना करते हैं कि मुसलमानों में भी हिन्दी अच्छे लेखक बराबर होते चले आये हैं, तो वह मर कब गई? यह भी सूचित करना अभीष्ट है कि पिछले समय में मुसलमानों को हिन्दी से द्वेष नहीं था, प्रत्युत उसके प्रति प्रेम और आदर था, अब भी बहुत से मुसलमानों को हिन्दी से उसी प्रकार प्रीति है।

(छठवां छप्पै)

हुए न थे जब दर्शन तक उर्दू बीबी के
"कुतुब अली" "मसऊद" हुए दो कवि हिन्दी के।
पीछे "कुतुबन शेख़" आदि हिन्दी के लेखक
हुए काव्य के रसिक और विद्या उत्तेजक॥
गुणवान "खाने खाना" सदृश कविता नेमी हो गये
"रसखान" और "रसलीन" से हिन्दी प्रेमी हो गये।

(हर्ष ध्वनि)

राजनैतिक उद्देश्य से न सही, धार्मिक उद्देश्य से सही!

एक पादरी पर जो जुङ्ग सवार हुई तो उन्होंने निर्जीव हिन्दी का व्याकरण ही लिख डाला। जिस का नाम प्रसिद्ध "भाषा भास्कर"

---

* मुहम्मद शाह के दरबार के गवैयों के गीतों में बहुधा "सदा रँगीले" सम्बोधन भी आता है।

† यह छप्पै कागज़ों की लपेट में रह गया था, सभा में नहीं पढ़ा गया था।

है (हर्ष ध्वनि) और उस जुङ्को शिक्षा विभाग ने भी ऐसा निबाहा कि वर्षों तक हिन्दी व्याकरण की वही पुस्तक स्कूलों में पढ़ाई जाती रही। (हास्य और हर्ष ध्वनि)

अब हिन्दी कवियों के नाम उदाहरणावत् गिनाते हैं, जिनसे प्रत्यक्ष ही सिद्ध है कि हिन्दी मरने वा शिथिल होने के बदले क्रमशः उन्नति करती हुई आपके समय तक पहुंची है।

(सातवां छप्पै)

सुकवि "चन्द" "जगनिक" ऐसे होते ही आए
"गोरखनाथ" "कवीर" प्रेम वोते ही आए।
"तुलसी" "केशव" "सूर" "गंग" सेना पति"
"नरहरि" "भूषण" "देव" "विहारी" "मति" "पद्माकर"
है बहुत बड़ी नामावली श्री हरिचन्द प्रताप तक
है सदा वृद्धि पाती हुई हिन्दी पहुंची आप तक।

(हर्ष ध्वनि)

महाशयो ! अब स्वयं हिन्दी की उक्ति है, वह कहती है कि यदि मेरी सामग्री उर्दू फेर दे तो वह बोल ही न सके प्रथम चार चरणों में उदाहरणवत् शब्दावली है परन्तु शब्द ऐसे चुने हैं कि जिस से एक विशेष दूसरा अर्थ भी झलकता है।

(आठवां छप्पै)

जिसे पलक पल घड़ी पहर दिन रात सिखलाया
पखवारा ऋतु बरस महीनों तक रटवाया।
जिसे एक दो तीन चार पांचादि पढ़ाया।
दूने पौने ड्योढ़ पहाड़ा कण्ठ कराया।
मम कोष व्याकरण फेर कर बीबी बोलें तो सही !
मम सन्मुख, मुझ से विमुख हो कुछ मुंह खोलें तो सही !

(हर्षध्वनि)

अगले छप्प में भी उदाहरण के लिये हिन्दी के शब्द दिये गये हैं, हिन्दी कहती है बिना मेरे उर्दू की सत्ता ही नष्ट होती है।

( नवां छप्पै )

आना जाना रोना गाना खाना पीना।
कहना सुनना रहना बहना मरना जीना।
पोता भाई बहिन बाप माँ लिखना पढ़ना।
मेल बढ़ावा सजधज कडुई बातें गढ़ना।
मुझ बिन उर्दू को एक भी जुमला रचना कठिन है।
जुमला-रचना की क्या कथा? जीती बचना कठिन है।

(हर्षध्वनि)

अब हिन्दी कुछ आतङ्क से, अपनी पोसी हुई के प्रति कुछ उलाहने से कहती है।

( दशवाँ छप्पै )

जिस पत्ती को मृदुल शब्द दानों से पाला।
रक्षा को व्याकरण रूप पिंजड़े में डाला॥
सुर्ख़ ज़र्द की जगह लाल पीला सिखलाया।
नवों रसों का जिसे सरस जलपान कराया॥
मुझपर ही ग्रीवा की मटक? अरी कपोती वाह वा॥
तू मुझ से ही चोंचें करे परी, तोती वाह वा (हर्षध्वनि)

और भी हिन्दी ही की उक्ति है, वह उर्दू को दोष न देकर समय को दोष देती है।

( ग्यारहवां छप्प )

प्रीति—पालने में मेरेही पलने वाली।
अभी हुई है निज पैरों कुछ चलने वाली॥
सीखा कैसा चलन लगी क्यों चाल बनाने।
बोल चाल कुछ सीख चली है बात बनाने॥
मत चरचा चालो नीति की जग का येही हाल है।
उपकार भुला देना सहज आज कलह की चाल है॥

( हर्ष ध्वनि )

अगले पद्य में भी हिन्दी ही की उक्ति है, परन्तु अब आतङ्क की विशेषता है।

( बारहवाँ छप्प )

कोसौ जी भर हमें द्वेष से वा ईर्ष्या से।
कोई मरता नहीं किसी के कोसे कासे॥

हां, मेरा आतङ्क नोट चाहो तो कर लो।
होगा व्यर्थ कलङ्क चोट चाहो तो करलो॥
हूं, दिव्य, देववाणी, सुता, नाश नहीं मेरा कहीं।
मैं अमरों की सन्तान हूं मैं मरने वाली नहीं॥

( हर्ष ध्वनि )

अगले पद्य में हिन्दी अपनी अमरता का कारण स्पष्टता से बतलाती है।

( तेहरवां छप्पै )

मैंनेचर से बनी पली नेचरल् नियम से।
संस्कृत का पीयूष पिया मैंने संयम से॥
है ज्यों रविचन्द्रादि प्रकृति-सामग्री से धन्या।
मैं भी हूं कुछ वस्तु, देववाणी की कन्या॥
मम प्राकृति यह शब्दावली अस्त कभी होगी नहीं।
प्रतिभा—नभ की चन्द्रावली अस्त कभी होगी नहीं।

( हर्षध्वनि )

अब हिन्दी और हिन्दी के स्पष्ट सम्बन्ध पर दृढ़ विश्वास के आधार से कहते हैं।

( चौदहवां छप्पै )

संभव नहीं कदापि धर्म को छोड़ै धर्मी।
होसकती है दूर कभी पावक से गर्मी॥
स्वयं सिद्ध है, मित्र हिन्द हिन्दी का नाता।
है अभिलाषा यही रहे अनुकूल विधाता॥
तुम निष्ठा से लो आसरा प्रभु के पद अरविन्द का।
यह नाता है जगदीश कृत हिन्दी का अरु हिन्द का॥

( हर्षध्वनि )

अगले पद्य में भी उसी विश्वास की दृढ़ता का कथन है।

( पन्द्रहवाँ छप्पै )

यहां कुमढ़े की नहीं अजी बतिया है कोई।
ऊँगली से निर्देश हुआ अरु बस वह सोई॥
नहीं पतङ्गी रङ्ग धूप लगते उड़ जावे।
है यह वह संगठन कभी छूटने न पावे॥

संयोग नहीं यह ओस कण और मृदुल अरविन्द का।
यह नाता समझो प्रलय तक हिन्दी का अरु हिन्द का॥
( हर्षध्वनि )

अब हिन्दी देवी की अत्यन्त संक्षेप से एक पद्य में स्तुति करके मैं निवेदन समाप्त करता हूं।

( सोलहवां छप्पै )

छल जड़ता अज्ञान आदि असुरों के दल का।
करै दलन अरु हरै भार विद्या भूतल का॥
धर्म काव्य, इतिहास, नीति विज्ञान, महत्ता।
अर्थ, देश हित, मेल सुमति, दश आयुध सत्ता॥
उद्योग-सिंह-आरूढ़ शुभ दश-दिश भुजी महेश्वरी।
हो बरदा भारतवर्ष की श्री हिन्द पूर्णेश्वरी॥

---

## जातीयभाषा

[ कवि—पं० श्रीयुक्त अयोध्यासिंह उपाध्याय ]

षट्पद

जातियां जिससे बनीं ऊंची हुईं फूली फलीं।
अंक में जिसके बड़े ही गौरवों से हैं पलीं॥
रत्त हो करके रहीं जो रंग में उसके ढलीं।
राज भूलीं पर न सेवा से कभी जिसकी टलीं॥
ऐ हमारे बंधुओ जातीय भाषा है वही।
है सुधा की धार बहुमरु भूमि में जिससे बही॥१॥
जो हुए निर्जीव हैं उनको जिला देती है वह।
धार सुरसरि कर्मनाशा में मिला देती है वह॥
स्वच्छ पानी प्यास वाले को पिला देती है वह।
जो कली कुम्हला गई उसको खिला देती है वह॥
नीम में हैं दाख के गुच्छे वही देती लगा।
ऊसरों में है रसालों को वही देती उगा॥ २॥
आन जिनकी दिखाती देस ममता है निरी।
जो सपूतों की न उंगली देख सकते हैं चिरी॥
रह नहीं सकतीं सफलतायें कभी जिन से फिरी।

वह नई पौधें उठी हैं जातियां जिन से गिरी ॥
थीं इसी जातीय भाषा के हिंडोले में पलीं ।
फूंक से जिनकी घटायें आपदाओं की टलीं ॥३॥
है कलह वो फूटका जिसमें फहराता फरहरा ।
दंभ उल्लू नाद जिसमें है बहुत देता डरा ॥
मोह आलस मूढ़ता जिसमें जमाती है परा ।
वह अंधेरा देस का बहु आपदाओं से भरा ॥
दूर करती है इसी जातीय भाषा की किरन ।
भानु का सा है चमकता भालका जिसके रतन ॥ ४ ॥
सूझती जिनको नहीं अपनी भलाई की गली ।
पड़ गई है बीच में जिनके बड़ी ही खलबली ॥
है अनाशारंग में जिनकी सभी आशा ढली ।
जिन समाजों की जड़ें भी हो गई हैं खोखली ॥
ढंग से जातीय भाषा ही उन्हें आगे बढ़ा ।
है समुन्नति के शिखर पर सर्वदा देती चढ़ा ॥ ५ ॥
उस स्वकीया जाति भाषा सर्वथा सुख दानिकी ।
परम सुरला सुन्दरी आधार भूता आनि की ॥
जननि सी उपकारिका प्रतिपालिका कुल कानिकी ।
उस निराली नागरी अति आगरी गुण खानिकी ॥
प्र आपमें कितनी है ममता दीजिये मुझको बता ।
आज भी क्या प्यार उससे आप सकते हैं जता ॥६॥
खोलकर आंखें निरखिये बंगभाषा की छटा ।
मरहठी की देखिये कैसी बनी ऊंची अटा ॥
क्या लसी साहित्य नभ में गुर्जरी की है घटा ॥
आह ! उर्दू का है कैसा चौंतरा ऊंचा पटा ॥
किन्तु हिन्दी के लिये ए बार अब भी दूर हैं ।
आज भी इसके लिये उपजे न सच्चे सूर हैं ॥ ७ ॥
फिर कहें क्यों आप उससे प्यार सकते हैं जता ।
फिर कहें क्यों आप में है उसकी ममता का पता ॥
फिर कहें क्यों है लुभाती नागरी लोनी लता ।
किन्तु प्यारे बंधुओ देता हूं मैं सच्ची बता ॥
दृष्टि उससे दैव की चिरकाल रहती है फिरी ।

जिस अभागी जाति की जातीय भाषा है गिरी ॥ ८ ॥
क्यों चमकते मिलते हैं बंगाल में मानव रतन।
किस लिये है बंबई में देवतों से दिव्य जन॥
क्यों मुसलमानों की है जातीयता इतनी गहन।
क्यों जहां जाते हैं वे पाते हैं आदर मान धन॥
और कोई हेतु इसका है नहीं ऐ बंधु गन।
ठीक है जातीय भाषा से हुई उनकी गठन॥ ९ ॥
आंख उठाकर देखिये इस प्रान्त की बिगड़ी दसा।
हैं जहां पर यूथ हिन्दी भाषियों का ही बसा॥
आज भी जो है बड़ों के कीर्त्ति चिन्हों से लसा॥
सूर तुलसी के जनम से पूत है जिसकी रसा॥
सिद्ध विद्या पीठ गौरव खानि बिबुधों से भरी।
आज भी है अंक में जिस के लसी काशीपुरी॥१०॥
अल्प भी जो है खिंचा जातीय भाषा ओर चित।
तो दशा को देख करके आप होवेंगे व्यथित॥
नागरी अनुरागियों की न्यूनता अवलोक नित।
चित्त ऊबेगा दृगों से बारि भी होगा पतित॥
आह! जाती हैं नहीं इस प्रान्त की बातें कही।
नित्य हिन्दी को दबा उर्दू सबल है हो रही॥११॥
यह कथन सुन कह उठेंगे आप तुम कहते हो क्या।
पर कहूंगा मैं कि मैंने जो कहा वह सच कहा॥
जांच इसकी जो करेंगे आप गावों बीच जा।
तो दिखायेगा वहां पर आप को ऐसा समा॥
हिन्दुओं के लाख प्रति दिन हाथ सुबिधा का गहे।
भूल अपनापन को उर्दू ओर ही हैं जा रहें॥ १२॥
जो उठा कर हाथ में दस साल पहले का गज़ट।
देख लेंगे और तो होगी अधिक जी की कचट॥
मिड्ल हिन्दी पास का था जो लगा उसकाल ठट।
वह गया है एक चौथे से अधिक इस काल घट॥
बढ़ रही है नित्य यों उर्दू छबीली की कला।
घोंटते हैं हाथ अपने हाय! हम अपना गला॥ १३॥
बन फलों को प्यार से खा छाल के कपड़े पहन।

राज भोगों पर नहीं जो डालते थे निज नयन ॥
फूल सा बिकसा हुआ लख जाति भाषा का बदन ।
जो सदा थे वारते सानंद अपना प्राण धन ॥
उन द्विजों की हाय ! कुछ सन्तानें चाहों भरी ।
पड़ गई है पेच उर्दू में तजी निज नागरी ॥ १४ ॥
हिन्द हिन्दू और हिन्दी कष्ट से होके अथिर ।
खौल उठता था अहो निज के शरीरों का रुधिर ॥
जो हथेली पर लिये फिरते थे उनके काज शिर ।
थे उन्हीं के वास्ते जो राज तज देते रुचिर ॥
बहु कुंवर उन क्षत्रियों के तुच्छ भोगों से डिगे ।
तोड़ नाता नागरी से रंग उर्दू में रंगे ॥ १५ ॥
हो जहां पर शिर धरों का आज दिन यों शिर फिरा ।
फिर वहां पर क्यों फड़क सकती है औरों की शिरा ॥
किन्तु क्यों है नागरी के पास इतना तम घिरा ।
आंख से कुछ हिन्दुओं के क्यों है उसका पद गिरा ॥
आप सोचेंगे अगर इसको तनिक भी जी लगा ।
तो समझ जायेंगे है अज्ञानता ने की दगा ॥ १६ ॥
आज दिन भी गांव गांवों में अंधेरा है भरा ।
है वहां नहिं आज दिन भी ज्ञान का दीपक बरा ॥
आज दिन भी है मूढ़ता का है वहां डेरा परा ।
जाति हित के रंग से कोरी वहां की है धरा ॥
हाथ का पारस भला वह फेंक देगा क्यों नहीं ।
आह ! उसके दिव्य गुणको जानता है जो नहीं ॥ १७ ॥
है नगर के वासियों में ज्ञान का अंकुर उगा ।
जाति हित में किन्तु वैसा जी नहीं अब भी लगा ॥
फूंक सेवह आपदा है सैकड़ों देता भगा ॥
जाति भाषा रंग में नर रत्न जो सच्चा रँगा ॥
उस बदन की ज्योति देती है तिमिर सारा नसा ।
जाति के अनुराग का न्यारा तिलक जिस पर लसा ॥ १८ ॥
नागरी के नेह से हम लोग आये हैं यहां ।
किन्तु सच्चा त्याग हममें आज दिन भी है कहां ॥
जाति सेवा के लिये हैं जन्मते त्यागी जहाँ ।

आपदायें ढूढ़ने पर भी नहीं मिलती वहाँ ॥
जाति भाषा के लिये किस सिद्ध की धूनी जगी ।
वे कहां हैं जिनके जी को चोट है सच्ची लगी ॥१६॥
निज धरम के रंग में डूबे तजे निज बन्धु जन ।
हैं यहां आते चले यूरोप के सच्चे रतन ॥
किस लिये ! इस हेतु ! जिसमें वे करें तमका निधन ।
दीन दुखियों का हरें दुख औ उन्हें देवें सरन ॥
देखिये उनको कहां आ करके क्या करते हैं वे ।
एक हम हैं आंख से जिसकी न आंसू भी स्रवे ॥२०॥
जो अंधेरे में पड़ा है ज्योति में लाना उसे ।
जो भटकता फिर रहा है पंथ दिखलाना उसे ।
फंस गया जो रोग में है पथ्य बतलाना उसे ।
सीखता ही जो नहीं कर प्यार सिखलाना उसे ॥
काम है उनका जिन्हें पा पूत होती है मही ।
इस विषम संसार पादप के सुधा फल हैं वही ॥ २१ ॥
आज का दिन है बड़ा ही दिव्य बहु रत्नों जड़ा ।
जो यहां इतने स्वभाषा प्रेमियों का पग पड़ा ॥
किन्तु होवेगा दिवस वह और भी सुन्दर बड़ा ।
लाल कोई वीर लौं जिस दिन कि होवेगा खड़ा ॥
दूर करने के लिये निज नागरीकी कालिमा ।
औ लसाने के लिये उन्नति गगन में लालिमा ॥ २२ ॥
राज महलों से गिनेगा झोंपड़ी को वह न कम ।
वह फिरेगा उन थलों में है जहां पर घोर तम ॥
जो समझते यह नहीं, है काल क्या, हैं कौन हम ।
वह बता देगा उन्हें जातीय उन्नति के नियम ॥
वह बना देगा बिगड़ती आंख को अंजन लगा ।
जाति भाषा के लिये वह जाति को देगा जगा ॥ २३ ॥
वह नहीं कपड़ा रंगेगा किन्तु उर होगा रंगा ।
घर न छोड़ेगा, रहेगा पर नहीं उस में पगा ॥
काम में निज वह परम अनुराग से होगा लगा ।
प्यार होगा सब किसी से और होगा सब सगा ॥
बात में होगी सुधा उसका रहेगा पूत मन ।

जाति भाषा तेज होगा दमकता बर बदन ॥ २४ ॥
दूर होवेगा उसी से गांव गांवों का तिमिर ।
खुल पड़ेगी हिन्दुओं की बन्द होती आंख फिर ॥
तम भरे उर में जगेगी जोति भरि अति ही रुचिर ।
वह सुनेगी बात सब,जो जाति है कब की बधिर ॥
दूर होगी नागरी के सीस की सारी बला ।
चौगुनी चमकेगी उसकी चारुता डूबी कला ॥ २५ ॥
दैनिकों के वास्ते हैं आज दिन लाले पड़े ।
सैकड़ों दैनिक लिये तब लोग होवेंगे खड़े ॥
केतु होंगे नागरी की कीर्ति के सुन्दर बड़े ।
जगमगायेंगे विभूषण अंग में रत्नों जड़े ॥
देस भाषा रूप से वह जायगी उस दिन बरी ।
सब सगी बहनें बनायेंगी उसे निज सिरधरी ॥ २६ ॥
मैं नहीं सकटेरियन हूं और हूं न उतावला ।
बात गढ़कर मैं किसी को चाहता हूं कब छला ॥
मैं न हूं उरदू बिरोधी मैं न हूं उससे जला ।
कौन हिन्दू चाहता है घोंटना उसका गला ॥
निज पड़ोसी का बुरा कर कौन जग फूला फला ।
हैं इसी से चाहते हम आज भी उसका भला ॥२७॥
किन्तु रह सकता नहीं यह बात बतलाये बिना ।
ज्यों न जीयेगा कभी जापान जापानी बिना ॥
ज्यों न जीयेगा मुसल्माँ पारसी अरबी बिना ।
जी सकोगे हिन्दुओ वों हीं न तुम हिन्दी बिना ॥
देखकर उरदूकुतुब यह दीजिये मुझको बता ।
आप की जातीयता का है कहीं उसमें पता ॥२८॥
क्या गुलाबों पर करेंगे आप कमलों को निसार ।
क्या करेंगे कोकिलों को छोड़कर बुल बुल को प्यार ॥
क्या रसालों को सरो शम शाद पर देवेंगे वार ।
क्या लखेंगे हिन्द में ईरान का मौसिम बहार ॥
क्या हिरासे और दजला आदि से होगी तरी ।
तज हिमालय सा सुगिरिवर पूत सलिला सुरसरी ॥२९॥
भीम अर्जुन की जगह पर गेव रुस्तम को बिठा ।

सभ्य लोगों में नहीं हग आप सकते हैं उठा ॥
साथ कैकाऊस द्वारा प्रेम की गांठें गठा।
क्या भला होगा ! रसातल भोज विक्रम को पठा ॥
कर्ण की ऊंची जगह जो हाथ हातिम के चढ़ी।
तो समझिये ढह पड़ेगी आप की गौरव गढ़ी ॥३०॥
क्या हसन की मसनवी से आप होकर मुग्ध मन।
फेंक देंगे हाथ से वह दिव्य रामायन रतन ॥
क्या हटाकर सूर तुलसी मुख सरोरुह से नयन।
आप अवलोकन करेंगे मीरग़ालिब का वदन ॥
क्या सुधा को छोड़कर मंजुल मयंक मुखी सखी।
आप सहबा पान करके हो सकेंगे गौरवी ॥३१॥
जो नहीं तो देखिये जातीय भाषा का बदन।
पोंछिये उस पर लगे हैं जो बहुत से धूलिकन ॥
जी लगाकर कीजिये उसकी भलाई का जतन।
पूजिये उसका चरन उस पर चढ़ा न्यारे रतन ॥
जगमगाजायेगी उसकी ज्योति से भारत धरा।
आपका उद्यान यश होगा फला फूला हरा ॥३२॥
भाग्य से ही राज उस सरकार का है आज दिन।
जो उचित आशा किसी की है नहीं करता मलिन ॥
शान्ति का जिसने यहां आकर अराजकता अगिन।
उंगलियों पर जिसके सब उपकार हैं सकते न गिन ॥
जो न ऐसा राज पाकर आप सोते से जगे।
तो कहें क्यों आप हैं रंग जाति भाषा में रंगे ॥३३॥
हे प्रभो उर हिन्दुओं में ज्ञान का अंकुर उगे।
हिन्द में बन कर रहें सब काल वे सबके सगे ॥
दूसरों की हानि पहुंचाये बिना औ बिन ठगे।
दूर हों सब विघ्न बाधा भाग हिन्दी का जगे ॥
जाति भाषा के लिये जो राजसुख को रजगने।
बुद्ध शंकर भूमि कोईलाल फिर ऐसा जने ॥३४॥

---

# वर्णविचार समिति का विवरण ।

## सिद्धान्त ।

कई वर्षों से इस विषय पर विचार हो रहा है कि हमारी देवनागरी लिपि में किन किन सुधारों की आवश्यकता है जिसमें वह सर्वमान्य हो जाय और उसमें जो जो त्रुटियां हों वे दूर हो जांय।

हमारी वर्णमाला में प्रधान गुण यह है कि उसकी प्रत्येक ध्वनि हमारे सब कामों के लिये अलम है और उसके प्रत्येक चिन्ह अर्थात् अक्षर का वही नाम है जो उन ध्वनियों का है। अतः इस प्रश्न पर विचार करने के लिये हमें अपनी वर्णमाला की ध्वनि पूर्णता, उच्चारण निश्चितता, सरलता, सुन्दरता का ध्यान रखना चाहिये और साथ ही ऐसे प्रस्ताव उपस्थित करने चाहिये जिससे उसमें शीघ्र-लेखन शक्ति भी प्राप्त हो जाय।

ध्वनि-पूर्णता के सम्बन्ध में दो भिन्न भिन्न विचार हैं। कुछ महाशयों का तो यह कथन है कि हमारी भाषा और बोलियों के लिये जिन जिन ध्वनियों का प्रयोजन है उतनी ही ग्रहण की जाँय। इसके विरुद्ध कुछ महाशय कहते हैं कि संसार की जितनी भाषाएं हैं उन सब की ध्वनियों के लिये उसमें संकेत हों। वे लोग कहते हैं कि इस उद्देश्य में सफलता प्राप्त करने के लिये कुछ थोड़े से चिन्हों के मान लेने से हमारा काम चल जायगा और हमारी वर्णमाला ऐसी सर्वांग पूर्ण हो जायगी कि इसकी समता संसार का कोई लिपि न कर सकेगी। प्रथम पक्ष वाले कहते हैं कि यह कार्य असम्भव है और इस आदर्श के मानने में हम एक बड़े सिद्धान्त को भूलते हैं जो इस बात को स्पष्ट कहता है कि प्रत्येक भाषा की ध्वनियों के लिये उसकी विशेष लिपि ही उपयुक्त है और उसका उच्चारण उन संकेतों के आधार पर वे ही ठीक ठीक कर सकते हैं जिनकी वह मातृभाषा है। हम लोग इसी सिद्धान्त को मानते और इसी के अनुकुल कार्य करना उचित समझते हैं तथा दूसरे सिद्धान्त के अनुकूल कार्यकरनेमें शिक्षा प्रकार में बाधाकी आशंका करते हैं*।

* हम में से केवल मुझ शुकदेव विहारी मिश्र का विचार है कि केवल दो चिन्ह बढ़ाने से नागरी लिपि द्वारा अङ्गरेजी और भारत में प्रचलित सभी बोलियों का शुद्ध द्योतक होना सम्भव है, सो दो चिन्ह बढ़ाने चाहिये। शुकदेव बिहारी मिश्र।

उच्चारण-निश्चितता के सम्बन्ध में हम लोग इस बात को मानते हैं कि हमारी वर्णमाला में यह प्रधान गुण वर्तमान है कि प्रत्येक ध्वनि का उच्चारण निश्चित है और उसके संकेत भी उसी नाम से अंकित हैं अर्थात् "अ" ध्वनिके लिये जो चिन्ह हमारी वर्णमालामें निर्धारित है वहभी "अ" ही नाम से अंकितहै। इस गुण को सदा बनाए रहना ही हमारा सिद्धान्त होना चाहिये। इसमें किंचित भी फेर फार अनावश्यक अनुचित और हानिकारक है क्योंकि हमारी वर्णमाला की सरलता भी इसीउच्चारण निश्चितता पर निर्भर है।

हमारी वर्णमाला में सरलता और सुन्दरता रूपी गुण तो स्पष्ट ही हैं। उनके विषय में कुछ कहना आवश्यक नहीं है।

जिस गुण का हमारी वर्णमाला में अभाव है वह शीघ्र लेखन शक्ति है। स्पष्टता और शीघ्र लेखन शक्ति इन दोनों का आपस में विरोध है। जहां एक में पूर्णता है वहां दूसरे का अभाव है। पर समयका प्रवाह इस बात के पक्ष में है कि जहां तक संभव हो शीघ्र लेखन शक्ति का सम्पादन किया जाय। हम लोगों के विचार में भी यह उचित जान पड़ता है परन्तु साथही हम स्पष्टता का सर्व-नाश करके इस गुण के सम्पादन करनेके पक्षपाती नहीं हैं।

इन पांच बातों का ध्यान रखकर हम लोग अपने विचार नीचे लिखते हैं।

(१) स्वर वर्णों में हमारी लिपि में ॠ, ऌ, ॡ की कोई आवश्यकता नहीं है। ये अक्षर वर्णमाला से निकाल दिये जाँय। प्रायः सभी पाठ्य पुस्तकों में यह परिवर्त्तन कर भी दिया गया है।

कुछ महाशयों की यह भी सम्मति है कि ऋ की भी आवश्यकता नही है, इसका काम साधारण "र" से चल सकता है। हम लोग इस मतके समर्थक नहीं हैं, क्योंकि इससे अनेक शब्दों में जो संस्कृत से ज्यों के त्यों हमारी भाषा में आये हैं गड़ बड़ मच जायगा और समस्त शब्दों के बनने में संधि के नियमों में उलट फेर करना पड़ेगा।

(२) ए, ऐ, ओ, औ अक्षरों के दो उच्चारण कहीं पूर्ण और कहीं अर्ध हमारी भाषा में और विशेष कर उसके पद्य में होते हैं, कुछ महाशयों की सम्मति है कि जहां पूर्ण उच्चारण हो वहां तो

वर्तमान रूप बने रहें पर जहां आधा उच्चारण हो वहां इन्हीं रूपों में कुछ साधारण परिवर्तन करके उच्चारण स्पष्ट कर दिया जाय, जैसे ो ौ आदि। हम लोगों की सम्मति इसके विरुद्ध है। हम नये चिन्ह बनाना नहीं चाहते। तिस पर इन अक्षरों के उच्चारण में जो विशेष रूप से भेद देख पड़ता है वह प्रायः पद्य में ही होता है और वह भी केवल पिंगल शास्त्र के नियमों का पालन करने में ये नियम और पद्यों के पढ़ने का ढंग इस बात का स्पष्ट पथ प्रदर्शक है कि कहां कैसा उच्चारण होना चाहिये फिर भी यदि आवश्यकता समझी जाय तो उन नियमों का पता लगाया जाय जिनके अनुसार उच्चारण में भेद पड़ता है और वे विचारपूर्व निर्धारित किए जांय।*

(३) हिन्दी में चन्द्रविन्दु और पूर्णविन्दु के प्रयोग में बड़ी गड़-बड़ है। इसको दूर करने के लिये नियम निश्चित होना चाहिये हम लोगों की सम्मति में इस कार्य के लिये एक अलग समिति का संगठन किया जाय जो विचार पूर्वक यह सम्मति दे कि किन किन नियमों का बनाना आवश्यक है। पर ऐसे नियमों के बनाने की आशा कम की जा सकती है क्योंकि चंद्रविन्दु सानुनासिक के लिये और पूर्णविन्दु अनुस्वर के लिये लिखे जाते है जिन में एक स्वर और दूसरा व्यंजन है।

(४) हम लोगों के विचार में हिन्दी लिखने में परसवर्ण के नियमों का पालन होना अनावश्यक है। हमारा उद्देश्य लखन रीति को सुगम करने का है और परसवर्ण के नियमों के पालन करने में इसमें जटिलता आती है और समय अधिक लगता है। जहां दो पंचम वर्ण एक साथ आवें वहां अनुस्वारसे काम न लिया जाय जैसे जन्म सम्मान सम्मति आदि में। अन्य अवस्थाओं में अनुस्वार से काम लिया जाय। इस सिद्धांत को मान लेनेसे हमारी वर्णमाला में ङ ञ की आवश्यकता नहीं रह जाती। पर वर्ग विभाग में हम उलट फेर करने के पक्षपाती नहीं हैं अतएव हमारी सम्मति में इन ध्वनियों के चिन्ह वर्तमान रहें।

(५) कुछ महाशयों का मत है कि विदेशीय भाषाओं के जो जो शब्द हमारी हिन्दी में आगए हैं और जिनका प्रयोग साधारणतः होता है वे अपने शुद्ध रूप में लिखे जांय। ऐसा करना मानो इस

*मैं यहां भी नये चिन्हों का पक्षी हूं। शुकदेव विहारी मिश्र।

बात को स्पष्ट स्वीकार करना है कि हमारी भाषा में यह सामर्थ्य नहीं है कि वह अन्य भाषा के शब्दों को लेकर उन्हें अपनी टकसाल में ढाल कर अपना बना सके। किसी प्रौढ़ भाषा में यह नहीं देखा जाता है कि वह दूसरी भाषाओं के शब्दों को लेकर उन्हें अपने मुख रंग में रंजित न करले। हमारी भाषा में भी यह सामर्थ्य होते हुए जो महाशय यह चाहते हैं कि हिन्दी में विदेशीय शब्द ज्यों के त्यों बने रहें वे कभी भी उसमें न मिल सकें, उनके मत के समर्थक हम लोग नहीं होसकते। हम अपनी भाषा को पूर्ण सामर्थ्यवती बनाना चाहते हैं और उसपर व्यर्थ लांछन नहीं लगाना चाहते।

इतिहास इस बात को पूर्णतया सिद्ध करता है कि संसार में सब जातियों की भाषा और रहन सहन पर उन अन्य जातियों का पूर्ण प्रभाव पड़ा है जिनसे किसी न किसी रीति से उनका कुछ घनिष्ट सम्बन्ध हो जाता है। यह सम्बन्ध प्रायः दो प्रकार से होता है एक तो जब एक जाति दूसरी जाति को पराजित करके उस देश का शासन करने लगती है और दूसरे जब दो जातियों में परस्पर व्यापार का सम्बन्ध होजाता है। इस प्रकार से सम्बन्ध होने पर परस्पर शब्दों का हेर फेर होने लगता है और प्राकृत नियमानुसार वे शब्द काल पाकर अपना रूप किंचित परिवर्तन करके स्वयं उस भाषा में मिल जाते और उसके शब्द माने जाते हैं यद्यपि उनकी उत्पत्ति के विषय में यही कहा जाता है कि वे शब्द अमुक भाषा के हैं। इस प्रकार से जिस भाषा में शब्द मिल जाते हैं उस भाषा की कुछ अप्रतिष्ठा नहीं मानी जाती वरन् आत्मीय करण शक्ति की प्रशंसा होती है और उसका शब्द भंडार दिनों दिन बढ़ता जाता है तथा उसमें नए नए भावों और विचारों के प्रगट करनेकी शक्ति बढ़ती जाती है। अतएव नीचे ऊपर चिन्हों को देकर न हम अपनी वर्णमाला को जटिल बनाना चाहते हैं और न अपनी भाषा की आत्मीय करण शक्ति को नष्ट किया चाहते हैं। हमारी भाषा में तद्भव शब्दों की विशेष संख्या इस शक्ति का प्रमाण है। इसे बनाए रखना और इसकी वृद्धि करना हमारा परम कर्तव्य होना चाहिये।

(६) ड़ ढ़ चिन्हों के उच्चारण हमारी भाषा में वर्तमान हैं अत एव उन्हें यथास्थित रखना चाहिये।

अब अपनी वर्ण मालाके रूपों पर हम लोग अपने विचार प्रकट करते हैं यद्यपि हम लोग यह स्वीकार करते हैं कि हमारी वर्णमाला के लिखने का जो ढंग प्रचलित है उसमें आवश्यक से कुछ अधिक समय लगता है, पर ध्यान रहे कि शीघ्रता के लिये हम अपनी स्पष्टता को नष्ट करने के लिये उद्यत नहीं हैं हां स्पष्टता को स्थिर रक्खे हुए जहां तक शीघ्रता सम्पादित हो सके उसे मानने के लिये हम लोग तैयार हैं। हमारी सम्मति में अक्षरों के ऊपर जो लकीरें खींची जाती हैं लिखने में उनका प्रयोग उठा दिया जाय। इससे लगभग तिहाई समय की बचत अवश्य हो जायगी और हमारी समझ में यह अलम है। इससे अधिक शीघ्रता प्राप्त करने में लाभ की अपेक्षा हानि की अधिक आशंका है यदि यह मान लिया जाय तो हम लोग निम्न लिखित अक्षरों के लिखने के रूप में किञ्चित परिवर्तन करने की सम्मति देंगे।

अक्षर — परिवर्तित रूप

अ
ख
घ
ण
भ
ध

ऊपर लिखे हुए सिद्धांन्त हम लोगों ने विचार पूर्वक स्थिर किये हैं। आशा है इन पर यथोचित ध्यान देकर कुछ निर्णय किया जायगा।

जगन्मोहनवर्म्मा
श्यामसुन्दरदास
गौरीशंकर हीराचंद ओझा
शुकदेव विहारी मिश्र
श्रीशचन्द्र वसु
बाबूराव विष्णु पराड़कर

यह विचार प्रायः सब मेरे अभिमत हैं मुझे जो कुछ विशेष विज्ञापन करना है सो उस लेख से विदित होगा जो मैं पहिले भेज चुका हूं आशा है लिपि की शीघ्रता के विषय में जो मत उस लेख में निवेदित है वह और उसमें निर्दिष्ट "मुअल्लिमे नागरी" नामक में दिये हुए उदाहरण ध्यान के योग्य समझे जाव—श्री कृष्णजोशी।

## जोशीजी की सम्मति

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायी सभा के श्रीयुत मन्त्री महाशय के समीप निवेदन है कि श्रीयुत बाबू श्यामसुन्दर दास जी के पत्र से विदित हुआ कि भागलपुर के अधिवेशन से साहित्य सम्मेलन ने देवनागरी वर्णमाला सम्बन्धी प्रश्नों पर विचार करने के लिये एक उपसमिति बनाई और उसमें स्थान देकर मुझको भी आदृत किया। मेरी अल्प बुद्धि में तो यह प्रतीत होता है कि इस विषय में पुरातन समयों में अद्भुत प्रज्ञाशाली और सूक्ष्मदर्शी महापुरुषों ने चिरकाल तक विचार करके इस वर्णमाला को ऐसा सर्वांग सुन्दर और परिपूर्ण बना दिया है कि वह जगत भर में अद्वितीय मानी गई। अब इस विषय में विचार का बहुत अवकाश नहीं दिखाई देता। देवनागरी के प्रचार की अपेक्षा है उस पर विचार की बहुत आवश्यकता नहीं है। नागरी के प्रचार में सम्मेलन की स्थायी समिति जो उद्योग कर रही है उसका धन्यवाद करना सब नागरी के प्रेमियों को उचित है, उस उद्योग से सम्मेलन और नागरी प्रचारिणी इत्यादिक सभाओं की ओर से उत्तरोत्तर वृद्धि की आवश्यकता है। जहां नागरी का प्रचार हो जाता है वहां विचार की आवश्यकता नहीं रहती। मध्य भारत में, अल्मोड़ा नैनीताल आदि प्रान्तों में और ग्वालियर रीवां प्रमुख राज्यों में जहां राज्य कार्य और लोक व्यवहार से नागरी प्रचलित है वहां कोई कठिनता किसी को नहीं होती और न कोई संशयग्रस्त और विचारस्पद विषय उपस्थित होते हैं। जहां नागरी लिपि का प्रचार बहुत नहीं है वहां लोग कहा करते हैं कि नागरी में और तो सब गुण हैं पर शीघ्र नहीं लिखी जा सकती। इस अपवाद को सुन कर उन प्रान्तों के लोग हंसते हैं जहां नागरी लोक व्यवहार में प्रचलित है। यह सच है कि पोथी के अक्षरों को संपूर्ण और सुन्दर बनाने में समय लगता है। अंग्रेजी के छापे के अक्षर भी हाथ से लिखे जाते हैं तो लिपि के अक्षरों से बहुत अधिक समय लगता है पर अंग्रेजी लिपि के अक्षर जो शीघ्र लिखे जाते हैं छापे से वस्तुतः भिन्न नहीं होते वैसे ही जहां नागरी लोक व्यवहार में हैं वहाँ वह भी शीघ्र लिखी जाती है और पोथी या छापे के अक्षरों से वस्तुतः भिन्न नहीं होती और न उसमें अस्पष्टता का दोष होता। पोथी के अक्षर अभ्यास से क्रमशः किस भांति शीघ्र लिपि में परिणत अथवा अव-

नत हो जाते हैं वह मुअल्लिमे नागरी नामक एक पुस्तक में दिखाया गया है जो उर्दू फारसी जानने वालों को नागरी सिखाने के लिये बनी है। उस पुस्तक की एक प्रति इस पत्र के साथ है। उसके ६०वें पृष्ठ में पोथी का लिपि का उदाहरण है जिसमें एक २ अक्षर पृथक लिखा जाता है। ६२, ६४ और ६६ पृष्ठ में उस लिपि के उदाहरण हैं जिसमें एक एक शब्द पृथक लिखा जाता है। और पोथी की लिपि की अपेक्षा शीघ्र लिखा जाता है। ६८ पृष्ठ में व्यावहारिक लिपि का उदाहरण है जो और भी शीघ्र लिखी जाती है। ७० और ७२वें पृष्ठ में जो लिपि है वह बहुत शीघ्र लिखी जा सकती हैं परन्तु रूप में वस्तुतः ६० पृष्ठ वाली पोथी की लिपि से भिन्न नहीं है। यह लिपि वैसी ही हैं जैसी कि गतवर्ष की वर्णविचार समिति ने यों निर्दिष्ट की हैः—"स्पष्टता को स्थिर रखते हुए जहाँ तक शीघ्रता प्राप्त हो सके उसे मानने के लिये हम लोग तैयार हैं हमारी सम्मति में जो अक्षरों के ऊपर लकीर खींचा जाता है उसका प्रयोग उठा दिया जाय" यह सम्मति उन प्रान्तों के व्यवहार के अनुकूल है जहां नागरी न्यायालयों और कार्य्यालयों में प्रचलित है। मुअल्लिमे नागरी में जो उदाहरण शीघ्र लिपि के हैं वह अलमोड़ा प्रभृति प्रान्तों में चिरकाल से प्रचलित हैं और थोड़े से अभ्यास करने पर वह लिपि शीघ्र लिखी जाती है और शीघ्र पढ़ी जाती है।

इसी मुअल्लिम नागरी में दो और विषयों के उदाहरण विद्यमान हैं जिनका विचार गतवर्ष की समिति ने किया है। उनमें से एक तो ए, ऐ, ओ, औ इन स्वरों के भिन्न उच्चारणों के सूचक संकेत और दूसरा हिन्दी भाषा में विदेशी भाषाओं के जो शब्द प्रचलित हो गये हैं उनके लिखने के संकेत। इन दोनों विषयों के उदाहरण उस पुस्तक के ८० से ८३ पृष्ठ तक दिये हैं। इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि फारसी अरबी कैसी सुगमता से नागरी में लिखी जा सकती हैं। पढ़ने में तो फ़ारसी अरबी के अक्षरों की अपेक्षा नागरी में लिखी हुई फ़ारसी अरबी बहुत ही सुगमता से पढ़ी जाती है क्योंकि फारसी अरबी के अक्षरों में लिखे हुए शब्दों का ठीक २ उच्चारण वही कर सकता है जो उन शब्दों से परिचित हो क्योंकि एक शब्द कई भांति पढ़ा जा सकता है जैसे शब्द सुख़न सख़ुन् सुख़नि इत्यादि कई प्रकार पढ़ा जा सकता है।

नागरी में सुख़न् लिखा जाय तो सुख़न् ही पढ़ा जायगा पढ़ने वाला शब्द को चाहे जानता हो या न जानता हो जिन संकेतों का प्रयोग उन उदाहरणों में किया गया है अर्थात् ऊपर अर्द्ध-चन्द्र और नीचे विन्दु उनकी आवश्यता केवल उनके लिये है जो शब्दों के उच्चारण को और छन्द की गति को नहीं जानते। छपी हुई पुस्तकों में और विशेष कर बालकों के पढ़ने की पुस्तकों में इन संकेतों का प्रयोग उपयोगी होसकता है। शब्दों को और छन्दों को जानने वालों के लिये जो हस्त लिखित वस्तु है उसमें संकेतों की आवश्यकता नहीं है नागरी वर्णमाला के अक्षर पर्याप्त हैं। अंगरेज़ी को या किसी और विदेशी भाषाको नागरी में लिखकर कोई नहीं पढ़ता और न यह आशा की जा सकती है कि कभी कोई पढ़ेगा इसलिये नागरी में अंग्रेजी इत्यादि विदेशी भाषा लिखने के लिये संकेतों की चिन्ता करना निरर्थक दिखाई देता है। किसी विदेशी वर्णमाला के अक्षरों को नागरी वर्णमाला में मिलाना कदापि श्रेय नहीं है। विजातीय का प्रवेश किसी समुदाय में कल्याणकारी नहीं पाया जाता। पण्डित शुकदेव विहारी मिश्र जी का कथन यथार्थ है कि दो एक नये चिन्ह बढ़ादेने से नागरी वर्णमाला समस्त भारत-वर्ष की भाषाओं के लिये उपयोग में आसकती है। बङ्गला गुजराती इत्यादि आर्यभाषाओं का निर्वाह तो निःसंदेह होसकता है और मराठी का होता ही है। द्राविड़ी प्रभृति दक्षिण की भाषाओं को या और किसी भाषा को नागरी में लिखने का कभी समय आजाय तो उन भाषाओं में जिन ध्वनियों के लिये नागरी में वर्ण न हों उनके लिये नये वर्ण उन्हीं अवयवों की योजना से बनने उचित हैं। जिनसे नागरी के अकारादिस्वर और ककारादि व्यञ्जन बने हैं जैसे अवर्ण तीन सरल तिर्यक् रेखा, एक उनको जोड़ने वाली भुग्नरेखा, एक सरल ऊर्द्ध रेखा का बना है क वर्ण में पहिले एक अर्द्ध वृत्त है तब एक सरल उर्द्ध रेखा है तब एक ईषद्वर्तुल रेखा है जो एक अधो-गत सरल रेखा से संयुक्त है ख वर्ण के पहिले अवयव में आधी अधोगत सरल रेखा है आधी आवर्जित सरल रेखा है और यह दो रेखा एक वर्तुलाकार विन्दुसे जुड़ी हुई हैं दूसरा अवयव क वर्ण के पहिले दो अवयवों का बना है। अब तक नागरी वर्णमाला के लिये नये वर्णों की कल्पना करने की आवश्यकता नहीं हुई कभी होतो नये

वर्णों के अवयव और उनकी योजना ऐसे होने चाहियें कि वर्तमान वर्णों के साथ विजातीय न दिखाई दें। यह एक कल्पित नया वर्ण है जो ई और क के अवयवों से बना है यह भी एक नयी कपोल कल्पना है जिसके अवयव च और र हैं इसी प्रकार बहुत नये वर्ण बन सकते हैं जो देवनागरी वर्णों में मिल सकते हैं पर अब तक कोई प्रबल आवश्यकता नये वर्णों की नहीं दिखाई देती। और न कोई और प्रकार का परिवर्तन वर्णमाला में करने की आवश्यकता दिखाई देती। ऋ ॠ ऌ ॡ स्वर वर्ण और ङ ञ व्यञ्जन वर्ण को वर्णमाला से निकाल देना योग्य नहीं दिखाई देता क्योंकि हिन्दी भाषा को संस्कृत के शब्दों की सम्पत्ति से सम्पन्न करने की आवश्यकता है जैसा कि बङ्गला मराठी आदि भाषाओं में किया जा रहा है और संस्कृत के शब्दों में इन वर्णों की आवश्यकता निस्सन्देह है। इसलिये संस्कृत और हिन्दी की वर्णमाला एक होनी चाहिये। ऋतु को रितु और मातृभाषा को मात्रिभाषा लिखना अशुद्ध है और ऐसा अत्याचार संस्कृत के शब्दों पर नहीं होना चाहिये। व्यापारियों और श्रमजीवियों और इतर अविद्वानों के लिये जो पुस्तक हों उनमें संस्कृत के अविकृत शब्दों का बहुत प्रयोग करना उचित नहीं पर जिसको बङ्गला में साधुभाषा कहते हैं और जिसको शास्त्रीय भाषा अथवा विद्वानोंकी भाषा भी कह सकते अपभ्रंश प्रचलित होगयाहै उसमें संस्कृतके शब्द शुद्ध लिखे जाने योग्य हैं। जिन शब्दोंकाअपभ्रंश प्रचलित होगया है वह अपभ्रष्टरूपमें लिखे जांय तो हानि नहीं। सरकारी पाठशालाओं में पढ़ाने के लिये जो पुस्तकें हिन्दीके नामसे गढ़ी जाती हैं उनके गढ़नेवाले हिन्दीभाषा पर और संस्कृतके शब्दों पर जो कुछ अत्याचार करें उनको अधिकार है परन्तु उनकी हिन्दी विद्वानोंके व्यवहार से सर्वथा वहिष्कृत रहनी चाहिये। पर सवर्ण न हो ऐसा नियम किया जायतो उच्चारण शब्द को उत्चारण लिखना पड़ेगा और उल्लेख को उत्लेख लिखना पड़ेगा। हां सम्पत्तिको संपत्ति चिन्ताको चिंता, विन्दु को विंदु लिखने में कोई हानि नहीं है पर इस विषयमें कोई नियम बनाने की भी आवश्यकता नहीं दिखाई देती। जिसको जैसा अभ्यास हो वैसा लिखे। चन्द्रविन्दु और पूर्ण बिन्दुके विषयमें भी नियम बनानेकी कोई बड़ी आवश्यकता नहीं दिखाई देती। चन्द्रविन्दु का प्रयोग बहुत थोड़ा होता है भँवर कुँवर चँवर इत्यादि

शब्दों में चन्द्रबिन्दु का प्रयोग होना चाहिये पर लिखने और छापने वाले प्रायः सुगमता के कारण पूर्ण बिन्दु रख देते हैं परन्तु पढ़ने वाले उच्चारण शुद्ध ही करते हैं। इसमें इतना दोष अवश्य है कि कुछ शब्द जिनके उच्चारण और अर्थ भिन्न है वे एक से लिखे जाते हैं जैसा दन्त का अपभ्रंश दांत शब्द और इन्द्रियदमन करने वाले का वाचक दान्त शब्द दोनों दांत लिखे जाते हैं परंतु प्रसंग से शब्द का यथार्थ रूप स्पष्ट होजाता है नियम की कोई आवश्यकता नहीं दिखाई देती। इन थोड़ी सी बातों को छोड़कर और सब विषयों में गतवर्ष की वर्ण विचार समिति की सम्मति सर्वथा युक्ति युक्त और आदरणीय जान पड़ती है।

शुभम्
श्रीकृष्णजोशी

---

# पंचम हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन,

के

## प्रस्ताव

(१)

### युरोपीय युद्ध।

वृटिश साम्राज्य और जर्मनी, आष्ट्रिया तथा टर्की में जो भयंकर युद्ध होरहा है, उसमें वृटिश सरकार से इस सम्मेलन की पूर्ण सहानुभूति है और इसे दृढ़ आशा है कि हमारे सम्राट् की इसमें शीघ्र ही जीत होगी।

(सभापति द्वारा)

(२)

### हिन्दी हितैषियों की मृत्यु।

यह सम्मेलन पं० बालकृष्ण भट्ट, कविराजा मुरारिदान, मनीषि समर्थ दान, राय गंगाप्रसाद वर्मा बहादुर, राजा रामप्रताप सिंह बहादुर, स्वामी नित्यानन्द, बाबू ब्रजचन्द्र, लाला बैजनाथ, बाबू घमूलाल अग्रवाल तथा राय श्रीरामबहादुर की शोकजनक मृत्युपर

अपना आन्तरिक दुःख प्रगट करता है, और उनकी हिन्दी सेवाका स्मरण करता हुआ उनके सम्बन्धियों से अपनी समवेदना प्रदर्शित करता है।

( सभापति द्वारा )

( ३ )

## नोटों और सिक्कों पर हिन्दी।

इस सम्मेलन को इस बात का अत्यन्त दुःख है कि भारतगवर्नमेण्ट ने नागरी से परिचित बहुसंख्यक भारतीय प्रजा की सुविधा की ओर ध्यान न देकर नोटों पर से नागरी अक्षरों को उठा दिया है और अनेक बेर प्रार्थना करने पर भी इस सम्बन्ध में सम्मेलन के निवेदन को स्वीकार नहीं किया है। इस सम्मेलन ने सिक्कों पर नागरी अक्षर रखने के लिए भी कई बार भारतीय गवर्नमेण्ट का ध्यान आकर्षित किया है पर उसका भी अभी तक कोई फल नहीं हुआ। अतः यह सम्मेलन भारतगवर्नमेंट से पुनः सानुरोध प्रार्थना करता है कि नोटों और सिक्कों पर शीघ्र नागरी अक्षरों को स्थान दे।

प्रस्तावकर्ता—बाबू पुरुषोतम दास टंडन एम. ए. एलएल. बी.
अनुमोदनकर्ता—पं० दुर्गाप्रसाद बी. ए. एलएल. बी. सीतापुर।
समर्थनकर्त्ता—पं० देवीदत्त

( ४ )

## विश्वविद्यालय में हिन्दी का स्थान।

यह सम्मेलन इस बात पर अपना घोर असन्तोष और हार्दिक दुःख प्रकट करता है कि पंजाब और प्रयाग के विश्वविद्यालयों ने युनिवर्सिटीज कमीशन के सम्मति देने और दोनों गवर्नमेण्टों के उस सिद्धान्त से सहमत होने पर भी अब तक कालिज विभाग में देश भाषाओं की उपयुक्त और पूर्ण शिक्षाओं के होनेका कोई नियम नहीं बना है। इस सम्मेलन की सम्मति में इन दोनों विश्वविद्यालय को शीघ्र ही देश भाषाओं की पढ़ाई को भी अन्य विषयों की भांति पाठ्यक्रम में उपयुक्त स्थान देकर इस अभाव की पूर्ति करना चाहिये।

प्रस्तावकर्ता—पं० सूर्यनरायण दीक्षित बी. ए. एल. एल. बी.
अनुमोदनकर्ता—पं० नन्दकुमारदेव शर्मा।
,, पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी।

( ५ )

## स्कूलों में शिक्षा का माध्यम।

इस सम्मेलन का यह दृढ़ निश्चय है कि स्कूलविभाग में अंगरेज़ी साहित्य को छोड़कर गणित, विज्ञापन, इतिहास, भूगोल आदि विषयों की शिक्षा का माध्यम अंगरेजी होने से बालकों की उपयुक्त और आवश्यक मानसिक उन्नति में बहुत बाधा पड़ती है और उन विषयों में उनका समुचित प्रवेश नहीं होने पाता तथा उनका बहुत सा समय व्यर्थ नष्ट होजाता है। अतएव यह सम्मेलन भारत तथा संयुक्तप्रदेश की गवर्नमेएटों से प्रार्थना करता है कि, वे कृपाकर ऐसी आज्ञा निकालें जिसमें यदि स्कूल विभाग की समस्त श्रेणियोंमें नहीं तो कम से कम ऊपर की श्रेणियों को छोड़कर बाकी सब श्रेणियों में अङ्गरेज़ी साहित्य के अतिरिक्त अन्य सब विषयों की शिक्षा देशभाषा द्वारा हो।

प्रस्तावकर्ता—पं० रामनरायणजी मिश्र बी० ए० काशी।
अनुमोदनकर्ता—श्रीयुत इन्द्रजी वेदालङ्कार।
समर्थनकर्ता—पं० रामदहिन मिश्र काव्यतीर्थ मोतिहारी।
,, बाबू मुख़ार सिंह।
,, मुं० रुद्र नारायण।
,, पं० गणपति जानकीराम दुबे।
,, पं० रामरत्न जी।

## हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी।

(६)

यह सम्मेलन हिन्दू विश्वविद्यालय के संचालकों से बलपूर्वक अनुरोध करता है कि उक्त विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम हिन्दी को बनावें।

प्रस्तावकर्ता—पं० हरिश्चन्द्रजी विद्यालंकार देहली।
अनुमोदन कर्ता—कुंवर हरिप्रसादसिंह जी वकील, बांदा।

( ७ )

## प्रयाग विश्वविद्यालय, टेक्स्टबुक कमेटी तथा अन्य समितियों में हिन्दी के ज्ञाता।

(क) इस सम्मेलन को दुःख है कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सदस्यों में हिन्दी विद्वानों की नितान्त कमी होने के कारण हिन्दी की अनपयुक्त पुस्तकें नियत होती हैं तथा परीक्षकों में उपयुक्त हिन्दी के ज्ञाता नहीं चुने जाते। यह सम्मेलन उक्त विश्वविद्यालय के चैंसलर महोदय से सानुनय प्रार्थना करता है कि वे अवसर मिलतेही हिन्दी के पांच माननीय ज्ञाताओं को यूनीवर्सिटी का फेलो नियत करने की कृपा करें।

(ख) शिक्षाविभाग सम्बन्धी ऐसे प्रश्नों पर विचार करनेवाली समितियों में जिनका देश भाषाओं से सम्बन्ध हो हिन्दी के विद्वानों का नियत होना परमावश्यक समझकर, यह सम्मेलन संयुक्त प्रदेश की गवर्नमेंट से प्रार्थना करता है कि ऐसी कमेटियों में उन्हें भी संख्या में स्थान दिया करे।

प्रस्तावकर्ता—बा० श्यामसुन्दरदास बी०ए० लखनऊ

अनुमोदनकर्ता—पं० सूर्यनारायण दीक्षित बी०ए०एल०एल०बी० लखीमपुर।

## हिन्दी का लिङ्ग भेद।

( ८ )

यह सम्मेलन निम्न लिखित महाशयों की एक समिति नियत करता है जो आगामी सम्मेलन के पूर्व इस विषय पर विचार कर अपनी सम्मति दें कि हिन्दी में और विशेष कर उसके निर्जीव-पदार्थों के द्योतक शब्दों के लिंग निर्णय करने के लिये क्या कसौटी होना चाहिये और उसके लिए क्या नियम बनाना उपयुक्त होगा?

१—पं० कामता प्रसाद गुरू—संयोजक
२—पं० रामावतार पाण्डेय एम० ए०
३—पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी
४—गोस्वामीराधाचरणजी
५—पं० गोविन्द नारायण मिश्र
६—पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

७—पं० पद्मसिंह शर्मा
८—पं० अमृतलाल चक्रवर्ती
९—पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय
१०—बा० श्यामसुन्दर दास बी० ए०
११—पं० चन्द्रशेखर जी शास्त्री
१२—पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी ।

( सभापति द्वारा )

## वर्णविचार समिति ।

( ९ )

यह सम्मेलन वर्णविचार समिति के सदस्यों को उनकी रिपोर्ट के लिए धन्यवाद देता है और यह निश्चय करता है कि उक्त रिपोर्ट सम्मेलन पत्रिका तथा अन्य हिन्दी-पत्रों में प्रकाशित कर दी जाय। और, इस पर जो सम्मतियां पत्रों में प्रकाशित हों या सम्मेलन कार्यालय में प्राप्त हों उनका संग्रह करके स्थायी समिति कार्यालय आगामी वर्ष के सम्मेलन से ३ मास पूर्व पुस्तकाकार प्रकाशित कर दे और स्थायी समिति के सदस्यों के पास भेज कर उनकी सम्मतियों के साथ आगामी वर्ष के सम्मेलन में उपस्थित करे। संग्रहकर्ता को सम्पादकत्व का सर्वाधिकार प्राप्त रहेगा।

( सभापति द्वारा )

( १० )

## राजपूताने में नागरी का प्रचार ।

यह सम्मेलन निश्चय करता है कि स्थायी समिति एक उपयुक्त व्यक्ति को इस कार्य के लिए नियत करे कि वह राजपूताना और मध्यभारत के समस्त देशी राज्यों में घूम घूम कर इस बात की पूरी २ जांच करे कि किस राज्य में हिन्दी तथा नागरी प्रचार की क्या अवस्था है। और वहां के मुख्य २ हिन्दी प्रेमियों की सम्मति के अनुसार उनका पूर्ण प्रचार किस प्रकार हो सकता है। यह रिपोर्ट आगामी सम्मेलन के तीन मास पूर्व प्रकाशित करदी जाय और उस पर आगामी सम्मेलन में विचार हो।

प्रस्तावकर्ता—पं० अमृतलालजी चक्रवर्त्ती।

( ११ )

## नागरी प्रचार ।

(क) यह सम्मेलन हिन्दू राजा महाराजाओं, जमींदारों, वकील मुख्तारों तथा महाजनों और व्यापारियों से सविनय प्रार्थना करता है कि वे अपने बालकों की प्रारम्भिक शिक्षा नागरी अक्षरों तथा हिन्दी भाषा द्वारा करावें और अपने अधीनस्थ सब कार्य चाहे वे राज्य, ज़मींदारी, दुकानदारी, अदालतों या दफ्तरों से सम्बन्ध रखते हों, नागरी अक्षरों में करना और कराना आरम्भ कर दें और क्रमशः उसके पूर्ण प्रचार का उद्योग करते रहें। सम्मेलन संस्कृत और महाजनी पढ़ाने वाली पाठशालाओं के अध्यापकों से भी प्रार्थना करता है कि वह अपने विद्यार्थियों को हिन्दी पढ़ाया करें।

( ख ) एक डेपुटेशन निम्न लिखित सज्जनों का नियत किया जाता है कि वह स्थान २ पर यथाशक्ति और समय पाकर नागरी प्रचार के निमित्त उद्योग करे।

बा० भगवानदास हालना—संयोजक
ला० गौरीशंकरप्रसाद बी. ए., एल एल. बी.
बा० पुरुषोत्तमदास टंडन एम. ए., एल एल. बी.
पं० सूर्यनारायण दीक्षित बी. ए., एल एल. बी.
पं० मुरलीधर मिश्र बी- ए., एल एल. बी.
बा० श्यामसुन्दरदास बी. ए.
बा० कृष्णबलदेव वर्मा
स्वामी सत्यदेवजी
पं० गणेशविहारी मिश्र.
पं० महेशदत्त शुक्ल बी. ए., एल एल. बी.
पं० हरिश्चन्द्रजी विद्यालंकार
पं० विश्वेश्वरदयाल त्रिवेदी

( १२ )

## संयुक्त प्रदेश में प्रारम्भिक शिक्षा ।

( क ) यह सम्मेलन गवर्नमेण्ट को ता० २९ अगस्त १९१४ के प्रारम्भिक शिक्षासम्बन्धी मन्तव्य के इस सिद्धान्त का विरोध करता है कि प्रारम्भिक शिक्षा की हिन्दी और उर्दू पुस्तकें सामान्य मिश्रित

...ाई जाय और केवल लिपि का अन्तर रहे। यह सम्मे... ...मेण्ट से निवेदन करता है कि संयुक्त प्रान्त की हिन्दी ...ी वाली और हिन्दी में काम करनेवाली बहुसंख्यक प्रजा की ...शिक्षा की ओर ध्यान देकर हिन्दी पढ़नेवाले बालकों के लिए आरम्भ से ही शुद्ध किन्तु बहुत सरल हिन्दी भाषा में पाठ्य पुस्तकें तैय्यार कराई जांय।

( ख ) यह सम्मेलन सर जेम्स मेस्टन महोदय को स्वर्गीय बाबू गंगाप्रसाद वर्मा जी का प्रोफ़िशिएन्सी (प्रवीणता) परीक्षाओं के सम्बन्ध में प्रस्ताव स्वीकार करने को सन्नद्ध होने के लिए धन्यवाद देता है और निवेदन करता है कि-गवर्नमेण्ट प्रस्ताविक परीक्षा क्रम को स्वीकार करने के पहिले प्रकाशित करदे। यह सम्मेलन गवर्नमेंट की सेवा में उपस्थित करने के हेतु हिन्दी परीक्षा का क्रम बनाने के लिए निम्न लिखित सज्जनों की एक समिति नियुक्त करता है।

१—प्रोफेसर रामदास गौड़ एम० ए० प्रयाग. संयोजक
२—पं० रामनारायण मिश्र बी० ए० काशी
३—बाबू श्याम दास सुन्दर बी० ए० लखनऊ
४—बा० पुरुषोत्तमदास टंडन एम० ए०, एल० एल०, बी०
५—श्रीयुक्त हरिश्चन्द्र जी विद्यालङ्कार देहली
६—ठाकुर शिवकुमार सिंह जी प्रयाग
७—राय देवी प्रसादजी पूर्ण बी० ए०, एल०एल० बी० कानपूर
८—पं० गोविन्दनारायण मिश्र कलकत्ता
९—पं० रामजीलाल शर्मा प्रयाग
१०—पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी. ए., छत्रपुर।
११—पं० श्यामविहारी मिश्र एम. ए. बुलन्दशहर।

( ग ) इस सम्मेलन को इसलामिया स्कूलों और मकतबों के खोलने के सम्बन्ध में गवर्नमेण्ट से विरोध नहीं है किन्तु दुःख है कि गवर्नमेण्ट ने हिन्दी की शिक्षा के लिए उस प्रकार का कोई प्रबन्ध नहीं किया है जैसा उसने इसलामिया स्कूल खोलकर उर्दू शिक्षा के लिये किया है। अतः यह सम्मेलन गवर्नमेन्ट से निवेदन करता है कि हिन्दी की पढ़ाई के लिये भी हिन्दी बोलने वालों की

संख्या के अनुसार वैसी ही सुविधाएं कर दे जैसी उसने ... लिये की हैं।

...ों, वकील

(१३)

यह सम्मेलन इस बात पर अपना अतीव आश्चर्य प्रकट करता करता है कि पिगट कमेटी ( आरंभिक शिक्षा सम्बन्धी कमेटी ) के एक मेम्बर ने हिन्दी भाषा को, जो अधिकांश भारतवासियों की प्रधान भाषा है "Dead Language" अर्थात् "मृतभाषा" कहने का साहस किया है और मिस्टर करामत हुसेन कमेटी ने यह निर्मूल आक्षेप किया है कि हिन्दी के प्रचारक राजनैतिक उद्देश्य से हिन्दी साहित्य को गढ़ रहे हैं—यह सम्मेलन प्रान्तिक गवर्नमेण्ट को धन्यवाद देता है कि उसने उक्त निर्मूल कथनों पर ध्यान नहीं दिया।

प्रस्तावकर्ता—राय देवीप्रसाद जी पूर्ण, बी.ए., बी. एल. कानपुर
अनुमोदनकर्ता—बा० कृष्णबलदेव वर्मा, बी. ए. कालपी
समर्थनकर्ता—पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, कलकत्ता
" —श्रीयुक्त हरिश्चन्द्र—विद्यालङ्कार

( १४ )

## नियमावली संशोधन

( क ) यह नया नियम बनाया जाय—

"यदि किसी समय कोई ऐसी अवस्था उपस्थित हो जाय जो नियमावली की किसी धारा के अन्तर्गत न हो तो स्थायी समिति को अधिकार होगा कि अपने एक विशेष अधिवेशन में उस सम्बन्ध में निश्चय करके कार्य्य करे परन्तु इसकी सूचना सम्मेलन के आगामी अधिवेशन में लेनी होगी और भविष्यत् में सम्मेलन के निश्चित सिद्धान्तों के अनुसार कार्य्य होगा"।

( ख ) वर्त्तमान नियम ( १ ) में "इस सम्मेलन" के स्थान में "हिन्दी साहित्य सम्मेलन" रक्खा जाय।

# "सम्मेलन पत्रिका" के नियम।

१—"सम्मेलन पत्रिका" हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन कार्य्यालय, ...न प्रतिमास प्रकाशित होगी।

२—इसका वार्षिक मूल्य १) इसलिये रक्खा गया है कि सर्व-साधारण इसके ग्राहक हो सकें।

३—इस समय इसमें प्रतिमास कुल २४ पृष्ठ ही रहा करेंगे। परन्तु आवश्यकता होने पर कभी कभी पृष्ठ संख्या बढ़ा भी दी जाया करेगी। आगे चल कर यदि इसकी सेवा साहित्यसेवियों को रुचिकर हो, और इसके ग्राहकों की यथोचित संख्या हो जाय तो यही पत्रिका अधिकतर पृष्ठ-संख्याओं में और अधिकतर उन्नत दशा में प्रकाशित की जायगी।

४—इसके प्रबन्ध-विभाग के पत्र—ग्राहक बनने के लिये आवेदन, विज्ञापन-संबन्धी पत्र, मनीआर्डर इत्यादि—मन्त्री, साहित्य-सम्मेलन कार्य्यालय, जानसेनगंज प्रयाग, के नाम भेजे जाने चाहियें।

५—सम्पादक के नाम की चिट्ठियां, बदले के समाचार-पत्रादि समालोचना की पुस्तकें, पत्रिका में प्रकाशित होने के लिये लेखादि भी ऊपर ही के पते से भेजे जाने चाहियें।

# विज्ञापनदाताओं के लि...

१—"सम्मेलनपत्रिका में अश्लील विज्ञापनों को ...ं, वकील मिलेगा। ... करता

२—विज्ञापन साधारणतः पूरे और आधे पृष्ठ से कम स्थान ... लिये स्वीकृत न होंगे।

१—पृष्ठ का मासिक मूल्य ... ४॥) होगा

२—आधे पृष्ठ का ... २॥) होगा

३—जो लोग १२ संख्याओं में विज्ञापन छपवाने का मूल्य एक साथ भेज देंगे उनका विज्ञापन एक संख्या में बिना मूल्य छाप दिया जायगा, अर्थात् १२ की जगह १३ बार उनका विज्ञापन छापा जायगा।

४—किसी दशा में पेशगी मूल्य बिना मिले कोई भी विज्ञापन नहीं छापा जायगा।

५—विक्रयार्थ पुस्तकों के विज्ञापनों पर ऊपर दिये हुए मूल्य से कम मूल्य न लिया जायगा।

१ पृष्ठ का मूल्य १ मास के लिये ३॥) और
आधे ,, ,, २) होगा।

६—अदालतों में लेखकों की नौकरी, अध्यापक-अध्यापिकाओं की नौकरी, इत्यादि हिन्दी-प्रचारार्थ नौकरियों के विज्ञापन एक बार बिना मूल्य छाप दिये जायंगे। दूसरी वार और अधिकवार के लिये ऐसे विज्ञापनों का मूल्य केवल १) प्रतिमास होगा। विज्ञापन ८ पंक्तियों से अधिक न हो।

मन्त्री, हि० सा० स० कार्यालय, प्रयाग।

पं० ओंकारनाथ वाजपेयी के प्रबन्ध से ओंकार प्रेस प्रयाग में छपा।

Reg. No. A629.

# सम्मेलन पत्रिका

## हिन्दी-सांहित्य-सम्मेलन की

### मुखपत्रिका ।

भाग २ } चैत्र संवत् १९७२ { अङ्क ७

### विषय सूची



वार्षिक मूल्य १) ] [ एक संख्या =)

हिन्दी साहित्य सम्मेलन से बाबू नरेन्द्र नारायण सिंह द्वारा प्रकाशित ।

# सम्मेलन के उद्देश्य

(१) हिन्दी साहित्य के अङ्गों की उन्नति का प्रयत्न करना।

(२) देवनागरी लिपि का देश भर में प्रचार करना और देश व्यापी व्यवहारों कार्यों के सुलभ करने के लिये हिन्दी भाषा को राष्ट्र भाषा बनाने का प्रयत्न करना।

(३) हिन्दी को सुगम, मनोरम और लाभदायक बनाने के लिये समय समय पर उसकी शैली के संशोधन और उसकी त्रुटियों और अभावों के दूर करने का प्रयत्न करना।

(४) सरकार, देशी, राज्यों, पाठशालाओं, कालेजों, विश्व-विद्यालयों और अन्य संस्थाओं, समाजों, जन समूहों तथा व्यापार, ज़मीदार और अदालतों के कार्य्यों में देवनागरी लिपि और हिन्दी के प्रचार का उद्योग करते रहना।

(५) हिन्दी के ग्रन्थकारों, लेखकों, पत्रसंपादकों, प्रचारकों और सहायकों को समय समय पर उत्साहित करने के लिये पारितोषिक, प्रशंसापत्र, पदक आदि से सम्मानित करना।

(६) उच्च-शिक्षा प्राप्त युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने के लिये प्रयत्न करना।

(७) जहां आवश्यकता समझी जाय वहां पाठशाला, समिति तथा पुस्तकालय स्थापित करने और कराने का उद्योग करना तथा इस प्रकार की वर्त्तमान संस्थाओं की सहायता करना।

(८) हिन्दी साहित्य के विद्वानों को तैयार करने के लिए हिन्दी की उच्च परीक्षाएं लेने का प्रबन्ध करना।

(९) हिन्दी भाषा के साहित्य की वृद्धि के लिये उपयोगी पुस्तकें तैय्यार करना।

(१०) हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के उद्देश्यों की सिद्धि और सफलता के लिए अन्य जो उपाय आवश्यक और उपयुक्त समझे जांय उन्हें काम में लाना।

## सम्मेलन-पत्रिका का उद्देश्य

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता करना, और साहित्य-प्रेमियों से इसी के लिये उपदेश लेना।

# सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति
की ओर से प्रतिमास प्रकाशित।

भाग २ } चैत्र संवत् १९७२ { अङ्क ७


## हिन्दी संसार।

### कान्हड़ दे प्रबन्ध।

हमारे यहां काव्यों का अभाव नहीं है पुराणों की कथा और कल्पनाओं के आधार पर कितने ही काव्य बने हैं परन्तु अब तक ऐतिहासिक काव्य इने गिने ही हैं उन ऐतिहासिक प्राचीन काव्यों में से वीर रसका एक काव्य कान्हड़ दे प्रबन्ध भी है सर्वसाधारण को इस काव्य के परिचय देने का सौभाग्य प्राचीनशोध रसिक प्रख्यात विद्वद्वर स्वनामधन्य डाकृर ब्यूलर को प्राप्त हुआ है। उक्त डाकृर साहब पुराने संस्कृत ग्रन्थों की खोज में राजपूताने की ओर गये थे वहां थराद के जैन भण्डार में उनकी दृष्टि इस प्रबन्ध पर पड़ी। प्रबन्ध कपड़े की बैठन में लपेटा हुआ एक मजबूत डिब्बे में ताले में बन्द था। निबन्ध को मूल्यवान जानकर उन्होंने उसकी एक नकल करवाई और अहमदाबाद के शाला पत्र के सम्पादक—पं० नवलराम लक्ष्मीराम पंड्या के पास भेजदी। सम्पादक महाशय ने इस प्रबन्ध को अपने पत्र में प्रकाशित करके सर्वसाधारण को लाभ पहुंचाया।

यह "काव्य कान्हदे चौपाई" "कान्हड़े देरासो" और "कान्हड़े दे प्रबन्ध" के नामसे विख्यात है। चौहान कुलतिलक कान्हड़ देवके वंशज अखेराज की आज्ञानुसार जालौन में संवत् १५१२ में पद्मनाभ

कवि ने यह काव्य रचा था, लिखने वालों की भूल से वर्ष में गलती न होजाय इस लिये कविने काव्य ही में लिखदिया है कि काव्य झाजोर के पतन के १४५वें वर्ष में रचा गया है, ग्रन्थ के अन्त में कवि ने काव्य के पद्यों की गणना भी देदी है। वह कहता है "कान्हड़ दे चौपाईना पदबन्ध ७८० हैं, चारखण्ड हैं, काव्य दोहा चौपाई पावाड़े और गीत में हैं"। इस काव्य की कथा आगामी संख्या में प्रकाशित करेंगे, अहमदाबाद के वारिस्टर-एट-ला श्रीयुत डायाभाई पीताम्बर देरासरी ने अहमदाबाद के न्यूनियन प्रिंटिंग प्रेस में मुद्रित कराके प्रकाशित किया है। मूल ग्रन्थ देवनागरी अक्षरों में हैं पर उस की भूमिका और काव्य की कथा गुजराती भाषा में सम्पादक महाशयने लिखी है।

## मैहर राज्य में हिन्दी

इसमें सन्देह नहीं बुन्देलखण्ड की भाषा हिन्दी है। किसी समय बुन्देलखण्ड में हिन्दी भाषा के अच्छे अच्छे कवि होगये हैं। इस समय भी बुन्देलखण्ड में हिन्दी का अच्छा प्रचार है। हमारे समान ही पाठकों को यह सुनकर प्रसन्नता होगी कि बुन्देलखण्ड के मैहर राज्य के दीवान साहब डब्ल्यू०वी० सरदेसाई ने अपने राज्य के समस्त दफ़तरों का काम नागराक्षरों में कर रखा है। सुनते हैं दीवान साहब का नागरी लिपि के प्रति अत्यन्त प्रेम है। क्या आशा की जा सकती है कि बुन्देलखण्ड के जिन राज्यों में हिन्दी नहीं है वे भी अपने यहां हिन्दी को स्थान देकर मैहर राज्य का अनुकरण करेंगे ?

## नागरी प्रचारक विद्यालय

कलकत्ते के कुछ उत्साही सज्जनों के प्रयत्न का फल वहां के मछुआ बाजार में नागरी प्रचारक विद्यालय है। उसकी नियमावली हमारे पास आई है, नियमावली के देखने से ज्ञात होता है कि इस विद्यालय के तीन उद्देश्य हैं (१) हिन्दी शिक्षा का प्रचार (२) बिना फ़ीस शिक्षा देना और अङ्गरेज़ी शिक्षा के साथ सदाचार पर ध्यान रखना। नैतिक और शारीरिक शिक्षा पर भी ध्यान दिया जाता है। यद्यपि विद्यालय की प्रारम्भिक अवस्था

देखते हुए सन्तोष जनक स्थिति है तथापि कलकत्ता जैसे सरस्वती और लक्ष्मी के केन्द्र में इसकी उन्नति के बहुत से साधन हैं। आशा है विद्यालय के सञ्चालक और कार्य्य कर्त्तागण विद्यालय को और भी उन्नतावस्था में लाने का प्रयत्न करेंगे।

## नागरी प्रचार के लिये दान

नागरी प्रचार के कार्यों में से अदालतों में नागरी प्रचार की विशेष आवश्यकता है। इतने दिनों से अदालतों में नागरी प्रचार की आज्ञा हो जाने पर भी अभी तक संयुक्त प्रान्त की जन संख्या देखते हुए प्रचार नहीं हुआ है। परन्तु अब अनेक व्यक्तियों का इस ओर ध्यान गया है। हमें यह प्रकाशित करते हुए हर्ष होता है कि हाथरस के प्रसिद्ध रईस और आनरेरी मजिस्ट्रेट सेठ चिरञ्जी-लाल बागला ने सम्मेलन कार्य्यालय को १००) सौ रुपया हाथरस में सम्मेलन की ओर से जो नागरी प्रचार का कार्य हो रहा है, उसकी सहायतार्थ दान दिया है, जिसके लिये उक्त सेठ साहब को अनेक धन्यवाद हैं।

## दक्षिण अफ़्रीका में हिन्दी पत्र

क्या हिन्दी भाषा भाषियों के हार्दिक प्रेम का यह द्योतक नहीं है कि वे दक्षिण अफ़्रीका जैसे स्थान में पहुंच कर भी अपनी मातृ भाषा नागरी के प्रति अटल अनुराग का परिचय देते हैं। सुना गया है ट्रांसवाल जर्मिस्टन की हिन्दी प्रचारिणी सभा "हिन्दी" नामक साप्ताहिक पत्र निकालना चाहती है, उसका विज्ञापन हमारे यहां प्रकाशनार्थ आया है जिसकी ओर हम अपने पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं।

## नागरी प्रचारिणी सभा की आवश्यकता।

बम्बई जैसे वाणिज्य का घर है, वैसे ही विद्या का भी घर है। बम्बई नगरीमें हिन्दीका प्रचार कितना है, इसका पता केवल इतनेसेही लगता है कि वहांपर हिन्दीके कई बड़े बड़े यन्त्रालयहैं। यह सच है कि कलकत्तेसे बम्बईकी अपेक्षा हिन्दीके समाचार पत्र अधिक निकलते

हैं, परन्तु बम्बई में हिन्दी के जितने यन्त्रालय हैं, उतने कलकत्ते में नहीं हैं बम्बई प्रान्त के विद्वानों का बङ्गभाषा भाषियों से अधिक हिन्दी के प्रति प्रेम है। पूना का "केसरी" तथा और भी मराठी भाषा के प्रधान प्रधान समाचार पत्र हिन्दी का पक्ष सदैव करते रहते हैं। गुर्जर भाषा के अनेक समाचार पत्र और मासिक पत्रिकाएं अपने लेखोंके शीर्षक नागराक्षरोंमें छापते हैं। परन्तु खेद है, बम्बई में कलकते की नागरीप्रचारिणी सभा तथा हिन्दी साहित्य परिषद के समान एक भी सभा नहीं है। क्या बम्बई नगरके हिन्दी प्रेमी अपने यहां एक नागरीप्रचारिणी सभा स्थापित नहीं कर सकते हैं, बम्बईमें नागरी प्रचारिणी सभाकी अत्यन्त आवश्यकता है, जिससे वहां के शिक्षित समाज में हिन्दी की चर्चा हो।

## श्री एड़वर्ड़ हिन्दी पुस्तकालय।

संयुक्तप्रान्त—अलीगढ़ के जिले में हाथरस व्यापार की मंडी है. वहाँके कुछ विद्या प्रेमियों के प्रयत्न से संवत् १९६७में स्वर्गीय सम्राट सप्तम एडवर्डके स्मारक में हिन्दी पुस्तकालय स्थापित हुआ था, जो इस समय अच्छी दशामें है। उसके मंत्री महोदय सूचित करते हैं:- "नवम्बर सन् १९१४ ई० को सोसाइटीज़ एक्ट २१ सन् १८६० के अनुसार रजिस्ट्री करा दी गई है। पुस्तकालय में अनेक विषयों के २४४९ ग्रन्थ हैं, दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक तथा मासिक पत्रिकाएं सब मिलाकर, ३५ आते हैं। पुस्तकालय के मंत्री महोदय सर्वसाधारण तथा हिन्दी प्रेमियों से उक्त पुस्तकालय की सहायता के लिये प्रार्थना करते हैं।

## लाहौर में सम्मेलन।

लाहौर से, "हमको निम्न लिखित चिट्ठी मिली है:—

"आगामी हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पंजाब की राजधानी, लाहौर में होगा। 'प्रारम्भिक कार्य लाला रोशनलालजी बैरिस्टर-एट-ला लाला गोपालचन्द्रजी और सभा ने आरम्भ करदिया है। हिन्दी प्रेमियों से प्रार्थना है कि सम्मेलन की सर्व प्रकार से सहायता करें। जो सभा में योग देना चाहें—वे निम्न पते से पत्र व्यवहार करें—

ज्वालादत्त प्रसाद —मंत्री देवनागरी भाषा प्रचारक मण्डल—गुमटी बाज़ार—ठाकुर द्वारा गोस्वामी मधुसूदन दत्त—लाहौर ”।

---

## वर्णमाला पर विचार ।

ब्यावर की श्री सनातनधर्म बाल सभा के मंत्री महोदय ने निम्नपत्र हमारे पास भेजने की कृपा की है :—

“आज कल जिधर देखें उधर ही हिन्दू संसार में हिन्दी के लिये रौला मच रहा है हिन्दी भाषा की पुकार मची हुई है हिन्दी भाषा की उन्नति के लिये सारा हिन्दू संसार चेष्टा कर रहा है यह हिन्दी हिन्दुस्तान का सौभाग्य समय है यह हिन्दुओं के अभ्युदय के लक्षण हैं लेकिन इस हिन्दी भाषा को लिखने के लिये देवनागरी वर्णमाला काम में ली जाती है जो कि अनिश्चित पूर्वकाल से अनेक परिवर्तन होते २ वर्तमान में देवनागरी अक्षर वर्णमाला बनी है जिस प्रकार पूर्वकाल से अनेक सुधार होते २ वर्तमान हिन्दी भाषा बनी है यह सच है कि दुनिया की अन्यान्य वर्णमालाओं से यह देवनागरी वर्णमाला अत्यन्त स्पष्ट और सुन्दर है परन्तु इस वर्णमाला में भी निम्न लिखित दोष है जिनके सुधार की आवश्यकता है ॥

(१) हर एक अक्षर का वा मात्रा का एक २ अङ्ग ही होना चाहिये जैसे क च उ टुकड़े २ नहीं जैसे ग ण ऐ औ ।

(२) हर एक अक्षर दूसरे अक्षर से न मिलना चाहिये जैसे ए रा व ब ड ङ,

(३) कोई एक अक्षर किन्हीं दो अक्षरों के मिलान से न होने चाहिये जैसे ख,

(४) कण्ठ आदि एक स्थान से निकालने वा बोलनेवाले एक वर्गी अक्षरों की एक ही भूमिका होनी चाहिये जैसे कण्ठ स्थानी कवर्ग की ( ां ) तालव्य स्थानी चवर्ग की ( न ) मुर्द्धन्य स्थानी ट वर्ग की ( ~ ) दन्त स्थानी तवर्ग की ( ट ) और ओष्ट स्थानी पवर्ग की [ ٦ ] इसी भूमिका पर प्रत्येक वर्ग के ध्वनि के अनुसार पांचों अक्षर बनने चाहिये जैसे च वर्ग के तीन अक्षर च ज ञ, टवर्ग के चार अक्षर ट ठ ड ढ पवर्ग के चार

अक्षर प फ भ म है इन चवर्ग टवर्ग पवर्ग में एक २ वा दो २ अक्षर और कवर्ग तवर्ग के पांचों अक्षर वे मेल है जैसे क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म इन में लकीर वाले वेमेल हैं।

(५) प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा अक्षर का स्वर पहिले और तीसरे अक्षर की ध्वनि में ह की ध्वनि के मिलान से बनता है जैसा कि फारसी और रोमन लिपि में लिखा भी जाता है लेकिन देवनागरी अक्षरों में गड़बड़ है यानी ध्वनि के अनुसार अक्षरों की आकृति नहीं जैसे, क ख ग घ इत्यादि इसलिये ह का निशान [ℴ] इतना होना चाहिये जो प्रत्येक वर्ग के पहिले और तीसरे अक्षर में लगा देने से उसी वर्ग का दूसरा और चौथा अक्षर बन जाय जैसे प फ लेकिन जैसे प फ की आकृति है वैसा ही इसकी ध्वनि एकसी है उसी प्रकार व क और भ झ की एकसी आकृति होने पर भी उनकी ध्वनि का स्थान दूसरा २ है व की ध्वनि ओष्ट स्थान है तो क की ध्वनि कण्ठ स्थान है भ की ध्वनि ओष्ट स्थान है तो झ की ध्वनि तालू स्थान है यह ठीक नहीं।

इस प्रकार के दोष युक्त वर्णमाला के सीखने सिखाने में और हस्त लिखित लिपि लिखने वा वांचने में बड़ा समय लगता है और बड़ी गड़बड़ रहती है इसलिये ऊपर लिखे हुए अथवा अन्य सुधार होने से हस्तलिखित वा टाइपराइट के लिखने में बड़ी सरलता स्वच्छता और सुन्दरता आजायगी और वांचने में भी बड़ा सुभीता होगा किसी प्रकार की गड़बड़ न रहेगा।

अभी सारे संसार में तो क्या भारतवर्ष भर में भी हिन्दी देवनागरी वर्णमाला का दौर दौरा नहीं हुआ है इस वर्णमाला का सुधार बहुत सुलभता से और शीघ्रता से हो सकता है ध्यान रहे कि इस सुधार की हुई वर्णमाला का नाम आर्य हिन्दी वर्णमाला होना चाहिये"।

---

# हिन्दी का एक अनूठा ग्रन्थ

## मणिमाला

[ लेखक—श्रीयुत बाबू गिरजाकुमार घोष ]

"मणिमाला" में रत्न विज्ञान की चर्चा है। इसके रचयिता हैं कलकत्ता वाले (इस समय स्वर्गीय) सौरीन्द्र मोहन ठाकुर। ठाकुर सौरीन्द्र मोहनजी बंगला में गान और वादन कला में अद्वितीय यश पा चुके हैं। आपके यश की सुगन्ध बंगाल के बाहर भारतवर्ष ही की सीमा में नहीं, दूर देशान्तरों तक में फैल चुकी है, और आपको वेलजियम, सकसनी, टरकी, नैपाल, स्वीडेन, हालैंड, जेनिभा हेग रोम, मारिन्स, वोलोना, ग्रीस, राजधानी एथेन्स, सिसिली सार्डिनीया, आस्ट्रेलिया इत्यादि पाश्चात्य भूखंडों से भी संगीत आदि के लिये मान पत्र और उपाधियां मिल चुकी थीं। इन्हीं भूमंडल मात्र के यशस्वी सौरीन्द्रमोहनजी की रचित मणिमाला नामक ग्रन्थ का पता लगा है। यह ग्रन्थ मूल संस्कृत में लिखा गया है परन्तु साथ ही अङ्गरेज़ी हिन्दी और बंगला भाषा में इसके अनुवाद छापे गये हैं। ग्रन्थ की हिन्दी भाषा वाली भूमिका इस प्रकार है। "आर्य—जाति का पुराण और अन्य अन्य शास्त्र स्वरूप आकार से रत्न सब संग्रह करके यह "मणि माला" अङ्गरेज़ी, हिन्दी, बङ्गला और संस्कृत यह चारों भाषा स्वरूप चारों सूत्र करके बनाया प्रत्येक रत्न के वर्णन के शेष भाग में रचना का दृढ़ता करने के वास्ते इउरोप का रत्न तत्वज्ञ पण्डित लोग के मत ग्रन्थि स्वरूप कल्पित भये। यह माला में नाना रत्न के विषय का वर्णन करके परिशोभित मध्यमणि के स्वरूप एक परिशिष्ट संयुक्त भया।

ग्रन्थकार।"

इस ग्रन्थ का विषय मणि या रत्नों के प्रेमियों को बहुत रुचिकर होगा। परन्तु इसकी हिन्दी भाषा ऐसी विचित्र है कि एकमात्र इसी के लिए इस पुस्तक की आलोचना करने की इच्छा होती है। सन् १८३९ ईसवी में यह ग्रन्थ कलकत्ते से प्रकाशित हुआ, और इसकी हिन्दी सम्भवतः स्वयं ठाकुर साहब की लेखनी से ही

निकली होगी क्योंकि यह कलकत्ते में रहनेवाले बंगालियों की हिन्दी का आदर्श है। मणिमाला की हिन्दी का एक नमूना और लीजिए–
"विदेह नगर का राजा जनक बलराम के पायों को धोकर अपने मकान पर ले गया, और वह वहीं रहे और कृष्ण द्वारका में लौट आवे। बलराम जिस समय जनक के मकानपर थे, उस समय धृतराष्ट्र का लड़का दुर्य्योधन गद्य युद्ध वहाँ शीखता था।"

सम्भवतः सौरीन्द्र मोहन ठाकुर महाशय ही ने अपनी असली बंगला मिश्रित अमार्ज्जित हिन्दी में ग्रन्थ प्रकाशन का साहस सब से पहले किया होगा, क्योंकि इस प्रकार की कोई दूसरी पुस्तक हमारे देखने में नहीं आयी। अस्तु हिन्दी के अनूठेपन के सिवाय हीरा माणिक मोती, पन्ना, गोमेद, पुखराज नीलम, स्फटिक, इत्यादि अनेक रत्नों का पौराणिक तत्वों से संगृहीत वर्णन भी पाठकों को आनन्द और शिक्षा दोनों देसकता है। मणिमाला दो भागों में छपा है और एक एक भाग में ५०० से भी अधिक पृष्ठ हैं। सुना गया है कि पुस्तककी बिक्री नहीं होती, परन्तु उत्साही प्रकाशकों को चाहिए कि इसकी भाषाको शोधकर इसे हिन्दी में छपवाने का प्रबन्ध करें। एक मात्र रत्नविज्ञान के भी कारण हिन्दी में ऐसी पुस्तकों का रहना अनुचित नहीं है।

## पंजाब में हिन्दी

पञ्जाब की राजधानी लाहोर से 'प्रभात" नामक हिन्दी साप्ताहिक पत्र को निकलते हुए आठ नौ महीने हो गये हैं। जब से सहयोगी "प्रभात" निकला है तब से वह बराबर पञ्जाब में हिन्दी विषयक आन्दोलन कर रहा है। यदि सहयोगी हिन्दी, पंजाबी के सम्बन्ध में ऐसा ही आन्दोलन करता रहा जैसा अब तक कर रहा है तो हिन्दी की पंजाब में विशेष उन्नति होगी।

———

# युक्तप्रांत में हिन्दी के लिये उद्योग।

( लेखक—श्रीयुत् मन्नन द्विवेदी गजपुरी बी० ए० )

युक्तप्रांत में हिन्दी के लिये सब से पहला उद्योग बनारस का बनारस अख़बार है। यह पत्र उस वक्त निकला था जब न तो कहीं नागरी प्रचारिणी सभा थी, न आर्यसमाज था और न आज की तरह किसी को हिन्दी का ध्यान था। बनारस अख़बार का जन्म सन् १८४५ ई० में हुआ था, जब टकसाली हिन्दी के पिता भारतेंदु बाबू हरिश्चन्द्र के जन्म होने की पाँच बरस की देरी थी। इस पत्र के निकालने का यश राजा शिवप्रसादजी को था और एक नोट करने की बात यह है कि पहले हिन्दी पत्र का पहला सम्पादक इस प्रांत का लेखक न होकर एक मराहठी सज्जन था। कुछ दिन के बाद बनारस अख़बार बन्द होगया दूसरा उद्योग काशी का 'सुधाकर" था जो सन् १८५० में निकाला गया था। इस पत्र के सम्पादक एक बङ्गाली सज्जन थे। सुधाकर भी थोड़े दिनों में बन्द होगया। इसके बाद भारतेंदुजी के "कवि-बचनसुधा" का जन्म सन् १८६८ ई० में हुआ इसके बाद जो कुछ उद्योग हिन्दी के लिये होता था, मरण काल तक उसमें भारतेंदुजी का हाथ सर्वत्र दिखाई देता था।

कवि-बचनसुधा के बाद हरिश्चन्द्र—चन्द्रिका निकली जो कवि-बचनसुधा का परिवर्तित रूप कही जा सकती है। हरिश्चन्द्र-चन्द्रिका का प्रादुर्भाव होने के पहिले ही अलमोड़ा अखबार और प्रेम पत्र का जन्म सन् १८७१ और १८७२ में होगया था। उसके बाद काशी-पत्रिका का जन्म बनारस में हुआ। सन् १८७७ ई० हिन्दी के लिये बड़े सौभाग्य का वर्ष था। उसी वर्ष शाहजहांपुर से "आर्य्य-दर्पण" निकला। कलकत्ते से "भारत-मित्र" का जन्म हुआ लेकिन इस लेख से कलकत्ते का कुछ सम्बन्ध नहीं है। मैं यह कहना भूल गया कि अलीगढ़ का "भारत-बन्धु" सन् १८७६ में निकल चुका था। हिन्दी के प्रसिद्ध पत्र "हिन्दी प्रदीप" का जन्म इसी सन् में हुआ था। सन् १८७७ तक हिन्दी की उन्नति के लिये सिर्फ़ पत्र पत्रिकाये निकाल कर उद्योग किया गया था। तब तक किसी हिन्दी सभा का पता नहीं चलता है। कहीं कहीं समस्यापूर्ति की बैठकें

रहीं हों लेकिन कोई नियम बद्ध सभा नहीं थी। श्रीमान् पं० बालकृष्णभट्टजी के उद्योग से प्रयाग में सन् १८७७ में हिन्दी प्रवर्धिनी सभा खुली। कुछ दिन तक इस सभा का काम बड़े उत्साह से चलता था लेकिन अंत में यह टूट गई और अब कहीं इसका नाम निशान नहीं है।

इस तरह यदि युक्तप्रांत का पहला हिन्दी समाचार पत्र निकालने का यश काशी को है तो हिन्दी की पहिली सभा खोलने का सौभाग्य प्रयाग को है। लेकिन दुःख की बात है कि अब न तो वह पत्र रहा और न अब वह सभा ही रही। प्रयाग में हिन्दूसमाज नाम की एक सभा स्थापित हुई थी उससे भी हिन्दी का बड़ा उपकार हुआ। इसके बाद अलीगढ़ की भाषा संवर्धिनी सभा का जन्म हुआ। इसको बाबू तोताराम जी ने खोला था इस सभा से कुछ किताबें भी निकली थीं। पं० गौरीदत्तजी की देव नागरी-प्रचारिणी सभा का नंबर इसके बाद है।

मेरठ की सभा के बाद विद्या धर्म वर्द्धिनी सभा प्रयाग का नाम लिया जा सकता है। इस सभा ने प्रयाग और सरयूपार में हिन्दी की उन्नति के लिये बड़ा यत्न किया था। पं० देवकीनन्दन जो अपने समय के इने गिने हिन्दी हितैषियों में से थे। आप के उद्योग के फल से "प्रयाग-समाचार" और "नाट्यपत्र" निकले थे, जिन में से अब कोई नहीं है।

इसके बाद १६ जुलाई सन् १८९३ ई० में सबसे बड़ी हिन्दी सभा, नागरी प्रचारिणी सभा काशी का जन्म हुआ। जब क्वीन्स कालेज बनारस के कुछ विद्यार्थियों ने यह सभा खोली तो उनको क्या मालूम था कि एक रोज उनकी सभा इतने ऊंचे पद पर चढ़ जायगी कि लाट लोग उसमें पधारने की कृपा करेंगे उसके सभासदों की संख्या डेढ़ हज़ार के क़रीब होजायगी, बम्बई से कलकत्ते तक और मदरास से काश्मीर तक इसके सभासद् फैले रहेंगे, आक्सफ़र्ड, लंडन, और पेरिस तक में इस के मेम्बर पाये जायंगे और उनमेंसे डाक्टर हार्नली और डाक्टर ग्रियर्सन ऐसे विदेशी विद्वान भी होंगे। तब कौन आशा करता था कि इस सभा से एक कोश बनेगा जिसके लिये भारत गवर्मेंट, प्रांतीय गवर्नमेंट

और देशी रजवाड़े मिलकर बीस बाइस हज़ार रुपया दे डालेंगे जिसकी खोज के लिये सरकार आर्थिक सहायता देगी और आधे दर्जन स्वतंत्र भारतीय नरेश इसके संरक्षक होंगे। कौन कह सकता था कि ६ वर्ष ६ महीना २ दिन की अवस्था वाली कन्या इतनी हृष्ट पुष्ट हो जायगी कि टोडरमल द्वारा निकाली हुई देवनागरी को तीन सौ वर्ष से भी अधिक समय के बाद फिर न्यायालयों में पहुंचा देगी। लेकिन श्रद्धेय बाबू श्यामसुंदरदास और उनके साथियों ने दिखला दिया कि उद्योग सब कुछ कर सकता है।

उसके बाद लखनऊ और जौनपुर की सभाएँ हैं। जौनपुर की सभा ने पूज्य मिश्रबन्धु की हिन्दी अपील छापी थी और लखनऊ की सभा से भी आपही लोगों की किसी किताब का कुछ सम्बन्ध था।

जौनपुर की सभा की अच्छी दशा नहीं है लेकिन लखनऊ की सभा से अब विशेष आशा है। प्रयाग की नागरी प्रवर्धिनी सभा ने आरम्भ में बड़े जोश से काम किया था लेकिन अब उसमें बड़ी शिथिलता आगई है जब से सम्मेलन कार्य्यालय प्रयाग गया तबसे नागरी प्रवर्धिनी सभा की वही दशा हो गई जो बड़े पेड़ों की छाहों लगने से छोटे छोटे पौधों की होजाती है।

प्रयाग की सभा के बाद गोरखपुर, आगरा, कानपुर इत्यादि कई जगहों में सभाएँ हुईं। अगर मेरा सम्बन्ध उससे न होता तो मैं कहता कि नागरी प्रचारिणी सभा गोरखपुर बड़े काम कर रही है। उसके पुस्तकालय में पांच हज़ार से अधिक पुस्तकें हैं। बस्ती देवरिया, पड़रौना, गगहा और बकसूंडी में इसकी शाखायें भी खुल गई हैं। गगहा की शाखा तो इतनी अच्छी हो गई है कि अपना सुरम्य सभा भवन बनवा रही है। लेकिन सब से बढ़कर जो काम इस सभा ने किया है वह कचहरियों में नागरी प्रचार है। इस काम में अब तक कोई सभा इसका मुकाबिला नहीं कर सकी है।

अब तक जितनी सभाये स्थापित हुईं किसी न किसी अर्थ में उनका रूप एक देशीय था। इस लिये हिन्दी वालों की प्रतिनिधि सभा का पहले पहल ता० १० अक्तूबर सन् १६१० ई० में जन्म हुआ। उसी प्रतिनिधि सभा का नाम हिन्दी साहित्य सम्मेलन है।

सम्मेलन का जन्म भी जैसा चाहिये था वैसा ही हुआ। काशी की पवित्र भूमि ने, नागरी प्रचारिणी सभा के हाते में, श्रद्धेय बाबू श्यामसुन्दरदासजी के प्रबन्ध और हम लोगों के सर्व श्रेष्ठ गुरुवर माननीय मालवीय जी के सभापतित्व में इस सभा का जन्म हुआ। इससे अधिक अच्छा क्या हो सकता था? यह सम्मेलन का पांचवां वर्ष है। इसमें सन्देह नहीं कि सम्मेलन प्रतिवर्ष बड़े उत्साह से होता जारहा है। उसका कार्य्यालय होगया है और उससे सम्मेलन पत्रिका प्रति मास निकल रही है। बा० पुरुषोत्तम दास टंडन एम० ए० एल० एल० बी० से बढ़कर योग्य और उत्साही मंत्री मिलना कठिन है।

यह सब होते हुए भी सम्मेलन के विषय में दो एक बातें निवेदन करनी हैं। सम्मेलन अभी तक सिर्फ़ निरीक्षक समिति के (supervising body) के रूप में है। उसका यह रूप ठीक है लेकिन यदि आप चाहते हैं कि आपकी आवाज़ दूर तक सुनाई पड़े तो आपको किसी ऊंचे स्थान पर चढ़कर बोलना चाहिये। यदि आप चाहते हैं कि आपकी बात को लोग मानें तो आप को पहले अपना महत्व ( status ) बना लेना पड़ैगा।

* दुख के साथ कहना पड़ता है कि सम्मेलन ने अपने नाम और पद के अनुकूल महत्व अभी पैदा नहीं किया है। लोग इसकी बातों पर हंस देते हैं उसकी आज्ञा भङ्ग करने में डरते नहीं हैं।

---

*सम्मेलन को स्थापित हुए पांचवां वर्ष है, थोड़े समय को देखते हुए कहना पड़ता है कि सम्मेलन को अपने कार्य में आशातीत सफलता प्राप्त होरही है। मालूम नहीं कि सम्मेलन की कौन सी बातों पर लोग हंस रहे हैं, आज्ञाभङ्ग कर रहे हैं। पर सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशनों को देखते हुए यही पता लगता है कि समस्त हिन्दी प्रेमियों की उससे सहानुभूति है अभी पिछले दिनों में लखनऊ में जो लोग सम्मेलन के अधिवेशन में उपस्थित थे वे जानते हैं कि वहां पर हिन्दी प्रेमियों ने अपूर्व उत्साह का परिचय दिया था, सम्मेलन कांग्रेस के समान ही वर्ष गांठ मनाकर चुप नहीं रह जाता हैं किन्तु सदैव वर्ष भर तक उसका काम होता रहता है अदालतों में प्रचार का काम सम्मेलन की ओर से कई स्थानों

इस अभाव को मिटाने के लिए सम्मेलन को चाहिये कि ऐसे ऐसे काम कर दिखलावे जिससे कोई यह प्रश्न न कर सके "सम्मेलन ने किया क्या है?" कांग्रेस की तरह वर्ष गाँठ मनानेवाले सम्मेलन के रूप से काम न चलैगा। बहुत से कार्य जो इस वक्त नागरी प्रचारिणी सभायें कर रही हैं वे सम्मेलन के हाथ में होने चाहिये थे जिस से उनको सार्वजनिक रूप मिल जाता। आशा है स्थानीय सभायें हर्ष से वे काम सम्मेलन को दे देंगी लेकिन तब देंगी जब उनको मालूम हो जायगा कि सम्मेलन भी उस स्थान पर पहुंच गया जहां से वह राजा प्रजा दोनों का प्रिय है, दोनों उसके लिये धन देंगे और वह उन कामों को और अच्छी तरह चला सकैगा।

---

# मारवाड़ी और हिन्दी ।

हमारे एक मित्र ने निम्न लेख भेजने की कृपा की है:—

"व्यावर के कृष्ण मिल्स में हिन्दी सब लोग जानते हैं कि मारवाड़ी लिपि देवनागरी की अपभ्रंश मात्र है। परन्तु मारवाड़ के बाहर रहने वाले तथा मारवाड़ी से अनभिज्ञ सज्जन सम्भवतः नहीं जानते कि जिसको हम लोग साधारणतः मारवाड़ी लिपि कहते या समझते हैं उसमें भी कई भेद हैं। हमने भली प्रकार देख लिया है कि राजपूताने के एक प्रान्त की लिपि दूसरे प्रान्त में कठिनाई से पढ़ी जाती है क्योंकि उनके लिखने में समानता नहीं है। यों तो जिस लिपि में महाजनों के वही खाते लिखे जाते हैं उस में सभी प्रान्तों में स्वरवर्ण की मात्राओं का तिरस्कार होता ही है और उसके कारण उसके पढ़ने में बहुत प्रकार की विपत्तियों से सामना करना पड़ता है; परन्तु आश्चर्य्य की बात यह है कि व्यंजन प्रधान मारवाड़ी वा महाजनी लिपि भी सर्वत्र एक रूप नहीं

---

में होरहा है। और भी सम्मेलन ने कई काम उठा रखे हैं हिन्दीकी परीक्षायें ग्रन्थ प्रकाशनादि। सम्मेलन की ओर से पं० हरिमङ्गल मिश्र एम०ए० का "भारतवर्ष का इतिहास" और पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी कृत—"भारतीय ज्योतिष शास्त्र" प्रकाशित होने वाले हैं और भी कई कार्य हैं जिनका सम्मेलन ने बीड़ा उठा रखा है।

सम्पादक

धारण करती। एक प्रान्त की महाजनी मारवाड़ी स्वयं वही खाते लिखने वाले मुनीम गुमाश्ते दूसरे प्रान्त में नहीं पढ़ सकते अथवा उसके पढ़ने और समझने के लिये उनको बहुत माथापच्ची करनी पड़ती है। तिस पर महाजन लोग इस अशुद्ध कुरूप टूटी फूटी लिपि के ऊपर उतना ही मरते हैं जितना मुसलमान उर्दू के लिये। हमने बहुत ध्यान से देखा है कि शीघ्र लिख जाने के बहाने, बतलाने वाले मारवाड़ी महाजन नागरी प्रचार के मित्र नहीं हैं उर्दू के स्वपक्षियों के समान ये भी सचमुच नागरी अक्षर के विरोधी हैं। आनन्द की बात है कि राजपूताने के कई राजसरकारों ने अब उर्दू और महाजनी का परिहार कर उनके स्थान में नागरी लिपि का प्रचार कर दिया है परन्तु हमारे व्यापारी भाई जिनमें पढ़े लिखे तथा शिक्षित लोगों की संख्या बहुत ही कम है अभी तक मारवाड़ी लिपि ही के कट्टर पक्षपाती हैं। सम्भव है कि उनको देव नागरी लिपि की सुन्दरता, उपयोगिता तथा अन्य अनेक गुण अभी पूरी तरहसे समझाने की चेष्टा नहीं की गयी है। इस ओर भी समस्त हिन्दी प्रेमियों को अवश्यही ध्यान देना चाहिए और मारवाड़ी महाजनों को नागरी लिपि परिहार के पाप से बचाने के उपाय करने चाहिए। हर्ष की बात है कि हिन्दी प्रेमी ब्यावर निवासी सद्गुणोत्साही सेठ दामोदरदासराठी जी ने अपने कृष्ण मिल्स के दफ़्तर में एकमात्र रोकड़ अर्थात् जमा खर्च की वही को गत पहली जनवरी से मारवाड़ी के बदले देवनागरी अक्षरों में लिखवाना आरम्भ करदिया है, परन्तु सारा दफ़्तर सारे वही खाते अभी तक उसी मारवाड़ी लिपि ही में लिखी जाती हैं। जो गुमाश्ता वा रोकड़िया रोकड़ वही को इस समय नागरी अक्षरों में लिख रहा है, उसने कभी इसके पूर्व मारवाड़ी छोड़ किसी अन्य लिपि का उपयोग नहीं किया था, और उसने बड़ी स्वच्छन्दता से अनायास नागरी लिखने में सफलता पाली है। भाषा उसकी वही प्रान्तिक मारवाड़ी है; परन्तु इसमें बहुत हानि नहीं। मारवाड़ में शिक्षित वही लेखकों का अभाव है तथा व्यापारियों की भाषा वा बोली मार्जित हिन्दी नहीं हासकती, इसलिए भाषा परिवर्त्तन की आशा करना अभी अनुचित होगा। सेठ दामोदरदासराठीजी ने अपने मिल्स के

दफ़्तर में जो परीक्षा आरम्भ करदी है और जिस परीक्षा में प्रारम्भही में ऐसी सफलता प्राप्त होचुकी है, हमको पूर्ण आशा है कि उसके फल स्वरूप अगले जनवरी से मिल्स की सारी बहियें और सारी लिखा पढ़ी नागरी अक्षरों में की जाने की आज्ञा भी सेठ जी दे देंगे। अच्छा होगा कि इसके लिए वह अभी से अपने समस्त कर्मचारियों को नागरी पढ़ने लिखने का अभ्यास कराने की आज्ञा देवेंगे और सब से उत्तम सफलता दिखलाने वालों के लिये यदि अनुचित न हो तोकुछ पुरस्कार देकर सबका उत्साह बढ़ाने का भी प्रबन्ध कर देंगे और हम को आशा है कि अन्यान्य महाजन लोग भी राठी जीके इस सराहने योग्य दृष्टान्त का पालन कर के मातृभाषा की उन्नतिका द्वार खोल देंगे।

---

हर्ष है ऊपर लिखे हुये समाचार के मिलने के उपरान्त हमको विदित हुआ कि सेठ दामोदरदासजी राठी ने ब्यावरके कृष्णा मिल्स् में मारवाड़ी लिपि के बदले देवनागरी ही से पूर्णतया काम लेना आरम्भ कर दिया है और एक सप्ताह पहले जो कर्मचारी देवनागरी में लिखना तक नहीं जानते थे अब भली भांति उसे लिख पढ़ लेते हैं और मिल्स् का सारा कार्य निर्विघ्न देवनागरी में चल रहा है।

---

# सौरमास और सौर-संवत् के प्रचलन की आवश्यकता।

( लेखक—श्रीयुत अयोध्या प्रसाद वर्मा )

आज कल भारतवर्ष में भाषा और लिपि के ऐक्यपर आन्दोलन प्रायः सबही प्रान्त में होरहा है, जोकि भारतवर्ष के लिये बहुत ही हितकारी है, परन्तु शोक का स्थल है कि स्वदेशी मिति तथा संवत् का प्रचलन प्रतिदिन न्यून होता जाता है, और अङ्गरेज़ी तारीख़ और सन् का प्रचार दिन पर दिन बढ़ताही जाता है, देख कर भी इधर किसी का ध्यान आकर्षित नहीं होता।

संयुक्त प्रान्त, बिहार, तथा मध्य प्रदेश में चान्द्रमास और संवत् का प्रचलनथा और अब भी एक दम उठ नहीं गया है।

परन्तु चान्द्र वत्सर किसी साल में १२ तथा किसी साल में १३ महीनों के होते हैं। किसी महीने में कोई तिथि अन्तर्हित हो-जाती है और किसी महीने में एक तिथि के दो दिन होते हैं, तथा किसी महीने में एक दिन में दो तिथियां होतीं हैं। चैत्रवदी, १५ को संवत् समाप्त होता है और चैत्रसुदी १ को नया संवत् प्रारम्भ होता है, अर्थात् चैत्र का आधा महीना एक संवत् में और आधा दूसरे संवत् में पड़ता है। इन व्यावहारिक अनियमों के होने के कारण लोगों को काम काज में बहुत हो अड़चन पड़ती है। इन असुविधाओं को मिटाने के लिये ही वर्त्तमान हिन्दी जगत में अङ्गरेज़ी तारीख़ और सनका प्रचलन होपड़ा है। विशेषतः अङ्गरेज़ी तारीख़ महीने और सन केवल अङ्कों से भी सूचित किये जा सकते हैं जिसे पत्र लेखकों को शीघ्र लिखना बहुत हा सुलभ हो जाता है, जोकि चन्द्रमास के प्रचलन से नहीं प्राप्त होसकता, और यही मुख्य कारण है कि हमारे पत्र व्यवहारों में भी मिति और संवत् का प्रचलन प्रतिदिन उठता जाता है, और अङ्गरेज़ी महीने तारीख तथा उनका प्रचार क्रमशः बढ़ता हो जाता है। वर्त्तमान समय में अङ्गरेज़ी तारीख, सन् महीनों का प्रचलन इतना विस्तृत होरहा है कि हिन्दी भाषा के संवाद पत्र और मासिक पत्र अधि-कांश अङ्गरेज़ी महीनों के अनुसार नवीन वर्ष का प्रारम्भ करते हैं, तथा आर्थिक लेन देन भी इन्ही महीनों के अनुसार करते हैं। हिन्दी की तो बात ही क्या संस्कृत के व्याख्यानों और पुस्तकों में भी अङ्गरेज़ी सन् तथा महीनों ने अपना अधिकार जमा लिया है जोकि हमारे राष्ट्रीय गौरव को धक्का लगाता है। यदि इस प्रचलन पर अभी से बाधा नहीं पहुंचाई जावेगी तो किसी समय उर्दू अक्षरों के सदृश इस प्रचलन को रोकना अत्यन्त कष्टदायक होजावेगा।

इस वर्त्तमान आपत्ति से बचने का यह उपाय होसकता है कि सौरमास और सौर संवत् का प्रचलन किया जावे। अङ्गरेज़ी महीनों के सदृश सौरमासों के १२ महीनों का एक सौर वत्सर होता है, १३ महीनों का कभी नहीं होता। सौरमास और वत्सर सूर्य्य की चालपर निर्द्धारित किये गये हैं, अर्थात् सूर्य्य का एक राशि से दूसरी राशि तक पहुंचने पर्य्यन्त जो समय का व्यवधान होता है,

वेही सौरमास हैं और सौरमासों की प्रत्येक अहोरात्रि ही उनकी मितियां अथवा तारीखें हैं इस हेतु अङ्गरेजी तारीखों के सदृश सौरमासों की मितियाँ भी हैं, और इनकी किसी मिति का लोप या द्विगुण नहीं होता। ऐसा ही सूर्य का १२ राशियों में परिभ्रमण करते समय प्रत्येक राशि के संक्रमण से १२ सौरमास निर्द्धारित हुए हैं, इस हेतु सौर वत्सर सदा १२ महीनों का ही होता है।

इस स्थल पर यह प्रश्न उठ सकता है, कि चान्द्रमास वैशाख ज्यैष्ठादि के क्रम से प्रसिद्ध है, और ऐसा व्यवहार कारवार तथा पत्रादि में भी बहुत दिनों से होते दिखाई देता है, यदि सौरमासों के नाम भी केवल वैशाख ज्यैष्ठादि क्रम से रक्खा जावे, तो लोगों को यह समझना कठिन होजावेगा कि यह सौरमास की मिति है, अथवा चान्द्रमास की ? यद्यपि सुदी वदी शब्दों के योग से चान्द्रमासों का, तथा सौर मिति शब्द के योग से सौरमासों का परिज्ञान लिखे पढ़ों में होसकता है, परन्तु अशिक्षितों में इन शब्दों के योग से भी गड़बड़ होसकती है। अर्थात् अशिक्षितों में इन शब्दों के योग से भी सौरमासों के वैशाख ज्यैष्ठादि नाम विभ्रात्मिकही रहेंगे। अतएव ऐसी शैली ग्रहण करनी चाहिये कि जिससे आवाल वृद्ध—बनिता सब ही समझ सकें तथा इन्हें भ्रम भी किसी प्रकार का न हो

सौरमासों का प्रचार वङ्गदेश, आसाम, उड़ीसा तथा पंजाब में होते दिखाई देता है। बङ्गाल और आसाम में सौरमासों के नाम वैशाख ज्यैष्ठादि के क्रम से ही हैं, परन्तु उड़ीसा में सौरमासों के नाम १२ राशियों के नाम से हैं, अर्थात् वैशाख ज्यैष्ठादि के स्थान पर मेष वृष, मिथुन इत्यादि नाम हैं। पंजाब की रीति इन तीनों से न्यारी है, वहाँ राशि और नक्षत्र इन दोनों के युग्म नामों से सौरमासों के नाम रक्खे गये हैं। अर्थात् वैशाख ज्येष्ठादि के स्थान पर मेष वैशाख वृष ज्येष्ठ आदि नाम प्रचलित हैं।

यदि उड़ीसा में प्रचलित रीति के अनुसार केवल राशियों के नामों से सौरमासों के नाम रक्खे जाएं तो सर्वसाधारण की दृष्टि में वे नाम सम्पूर्ण नवीन जचेंगे और वे उनकी आयत्त भी शीघ्र नहीं समझ सकेंगे। इस हेतु पंजाब में प्रचलित राशि और

नक्षत्रों के युग्म नामों से सौरमासों के नाम होना ही युक्तिसिद्ध है और ये नाम सर्वसाधारण के समझ में भी शीघ्र आ सकते हैं तथा चान्द्रमासों के नामों से भी पृथक समझे जा सकते हैं। अतः सौरमासों के नाम निम्न लिखितानुसार होने चाहियें जैसे—

(१)—मेष—वैशाख। (२)—वृष-ज्येष्ठ। (३)—मिथुनाषाढ़। (४)—कर्क—श्रावण।। (५)—सिंह—भाद्र। (६)—कन्याश्विन। (७)—तुला—कार्त्तिका। (८)—वृश्चिकाग्रहायण। (९)-धनु-पौष। (१०)—मकर—माघ। (११)—कुम्भ—फाल्गुन। (१२—मीन चैत्र।

अब रहा सन पर विचार कि ऐसा सन् प्रचलन करना चाहिये जोकि सौर वत्सर के साथ सम्बन्ध रखता हो अर्थात् मेष वैशाख की पहली मिति से प्रारम्भ होकर मीन चैत्र की संक्रान्ति को समाप्त होता हो। भारतवर्ष में दो प्रकार के सौरसन प्रचलित है, एक शकाब्द और दूसरा वङ्गाब्द। परन्तु इन दोनों के ही सृष्टिकर्ता म्लेच्छ हैं। कलकत्ता से प्रकाशित संस्कृत का बृहदमिधान शब्द कल्प द्रुम में "शक" शब्द के वारे में यों लिखा है कि—

"शकः—( पु० )—जाति भेदः। नृप भेदः। इति मेदिनि।

सच नृपः शकादित्य इति शालि वाहन इति च ख्यातः, तस्य मरण दिनावधि वत्सरगणनाङ्कः शकाब्देति नाम्ना पञ्जिकायां लिख्यते। सच जाति भेदः म्लेच्छ जाति विशेषः,

"शक" शब्द उपर्युक्त के अर्थ से यह सिद्ध होता है कि पूर्व काल में भारतवर्ष में "शक" नामक म्लेच्छ जाति में उत्पन्न शालि वाहन नाम के एक राजा हुए थे उनकी मृत्यु के समय से ही शकाब्द प्रारम्भ हुआ था, और इस शकाब्द का प्रचलन पञ्चाङ्गों में होते दिखाई देता है।

"शक" नामक म्लेच्छ जाति कोई थी, इसका प्रमाण मनुस्मृति में यह मिलता है:—

"शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रिय जातयः।
वृषलत्वं गतालोके ब्राह्मणा दर्शनेन च॥
पौराड्काश्चौएड्द्रविड़ाः काम्बोजा यवनाः शकाः।

पारदाः पह्लवाश्चीनाः किराता दरदाः खशाः ॥
मुख वाहूरूपज्जानां या लोके जातयो वहिः ।
म्लेच्छ वाचश्चार्य्य वाचाः सर्वेते दस्यवः स्मृताः ॥"

ये सब क्षत्रियों की जातियां क्रमशः क्रिया लोप तथा ब्राह्मणों के अदर्शन के हेतु वृषलत्व को प्राप्त हुई हैं। मुखज, वाहुज, ऊरुज, और पज्जों को छोड़कर पौण्ड्रक, चौण्ड्, द्रविड़, कम्बोज, यवन, शक, पारद, पह्लव, चीन, किरात, दरद, और खश आदि जातियां चाहे म्लेच्छ भाषी हों अथवा आर्य्य भाषी ये सब दस्युओं में परिगणित हैं।

उपर्युक्त प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि "शक" नामक एक म्लेच्छ जाति पूर्वकाल में थी। शालि वाहन "शक" वंश में पैदा हुए और सम्भव है कि तातार आदि पश्चिमीय म्लेच्छ देशों से वह अथवा उनके किसी पूर्व पुरुष ने भारत आक्रमण कर इस देशपर अपना अधिकार जमाया था। "शकाब्द" शब्द से भी यह प्रतिपन्न होता है कि "शकों" का अब्द शकाब्द, अर्थात् "शक" नामक म्लेच्छ जाति का अब्द। ईसवी सन् वैदेशिकादि प्रचलन हिन्दुओं में बढ़ने न पावें, इस उद्देश्य से ही यह लेख लिखा गया है। परन्तु उपर्युक्त प्रमाणों से "शकाब्द" भी म्लेच्छ संवत् ठहरता है, और इसके प्रचलन पर भी वही दोष आता दिखाई देता है।

"पंचसिद्धान्तिका" और "सिद्धान्त शिरोमणि" आदि संस्कृत के अर्वाचीन ज्योतिष ग्रन्थों के ग्रन्थकर्तागण अपने अपने ग्रन्थ निर्माण के समय का अभिव्यञ्जक विक्रमाब्द को व्यवहार में न लाकर शकाब्द लाये हैं और भारत के अर्वाचीन काल में (तथा आज कल भी) पञ्चाङ्गों में तथा जन्म पत्रियों में भी शकाब्द का प्रचलन है केवल इन्हीं प्रमाणों से ही "शकाब्द" को आर्य्याब्द स्वीकार करना ठीक नहीं। जैसे वर्त्तमान समय में बहुधा संस्कृत तथा भाषा के ग्रन्थ रचयिता अन्ध परम्परा से स्वदेशीय मिति और संवत् का व्यवहार न कर अङ्गरेजी तारीख और ईसवी सन् व्यवहार में लाते हैं ऐसी चाल चलनी देश के लिये हानिकारक है यह बात उनकी समझ में नहीं आती। अनुमान होता है कि ऐसी ही अन्ध परम्परा की रीति उपर्युक्त अर्वाचीन ज्योतिष के ग्रन्था

के निर्माण समय में भी प्रचलित थी क्योंकि हम में जातीयता का विनाश बहुत दिनों से है। अतएव उपर्युक्त कारणों से शकाब्द कर प्रचलन भारत के गौरव का अभिव्यञ्जक न होगा।

उपर्युक्त विवरण से शकाब्द का सार्वजनिक प्रचार विवाद-ग्रस्त प्रतीत होता है। परन्तु विक्रमाब्द में एक झगड़ा दिखाई देता है कि इसका क्रम सौर वत्सर के अनुसार नहीं। अतएव सौर मासों के सहित विक्रमाब्द का सङ्ग ठीक नहीं होगा। बङ्गाल में बङ्गाब्द का प्रचलन है और इसका क्रम भी सौर वत्सर के अनुसार है, परन्तु बङ्गालियो ने यह सन् मुसलमानों के हिजरी सन् से लिया है। अकबर शाह के राजत्व समय में बादशाह ने बङ्गालियों के लिये मुसलमानी हिजरी सन् की प्रारम्भिक वर्ष के १० वर्षों के बाद से बङ्गाब्द की सृष्टि सौर वत्सर के क्रमानुसार करदी थी वही आजकल बङ्गाल में चल रहा है। अतएव बङ्गाब्द भी म्लेच्छ सन् ही है इसके प्रचलन पर भी उपर्युक्त आपत्तियां आ सकतीं हैं।

जैसे अकबर शाहने बङ्गालियों के लिये हिजरी सन् का क्रम सौर वत्सर के अनुसार चला कर बङ्गाब्द नामक एक नया सन् चलाया था यदि वैसे ही विक्रमाब्द का क्रम सौर वत्सर के अनुसार चलाकर एक नया सौर संवत् चलाया जावे तो बहुत ही अच्छा हो अर्थात् विक्रमाब्द का क्रम चान्द्र वत्सरके अनुसार जैसा चल रहाहै, वैसाही चान्द्र मासों के साथ व्यवहार में आता रहे इसे वैसाही अबाधित रख कर विक्रमाब्द को मेष वैशाख की पहली मिति से प्रारम्भ कर मीन चैत्र की संक्रान्ति में समाप्त करा जावे और इस नये संवत् का नाम सौर विक्रमाब्द अथवा सौर संवत् रख दिया जावे तो यह निर्विवाद हासकता है। सर्व साधारण संवत् शब्द से केवल विक्रमाब्द को ही समझते हैं यदि उपर्युक्त नये संवत् का नाम केवल सौर संवत् हीरक्खा जावे तो लोग केवल इस नाम से ही समझ सकेंगे कि इस नये संवत् की सृष्टि विक्रमाब्द के सौर वत्सर के क्रमानुसार से दी हुई है।

उपसंहार में निवेदन यह है, कि सौरमासों का प्रचलन बङ्गाल आसाम, उड़ीसा, और पंजाब में बहुत दिनोंसे होरहा है, इस हेतु

इन प्रदेशों में अङ्गरेजी सन् और महीनों ने अपना एकाधिपत्य उतना जमा नहीं पाया, कि जितना चान्द्रमासों का प्रचलन विहार, मध्य-प्रदेश और संयुक्तप्रान्त में रहने के कारण ही इन प्रदेशों में अङ्गरेजी सन् और महीनों का प्रचलन दिन परदिन बढ़ रहा है, अतएव यदि इन प्रदेशों में भी सौरमासों के प्रचार करने का यत्न किया जावे, तो अङ्गरेजी महीनों तथा सन का एकाधिपत्य क्रमशः घट सकता है और तब सम्पूर्ण उत्तर भारत में सौरमासोंका एकाधिपत्य होसकता है।

इस वर्ष के प्रारम्भ करने का भार सर्व प्रथम पत्र सम्पादकों तथा विभिन्न संस्थाओं के सञ्चालकों को लेना उचित है, क्योंकि इन के उद्योग से ही सौरमासों का प्रचार बहुत शीघ्र होसकता है, और क्रमशः व्यवसायी गण भी इनका अनुकरण कर सौरमासों का व्यवहार करने लगेंगे। यदि संस्थाओं के सञ्चालक तथा पत्र सम्पादक यह आशङ्का करें कि इस परिवर्तन से उन्हें आर्थिक हानि पहुंचेगी, सो ठीक नहीं है। क्योंकि सौरमासों की पहली मिति को अङ्गरेजी १३ से १८ तारीख तक होती है। वर्त्तमान वर्ष में प्रत्येक सौरमास में अङ्गरेजी जो जो महीने पड़े हैं, इनका भूत और भविष्य काल के सम्बन्ध में परिवर्तन थोड़ा ही दिखाई देगा इस से एक भी हानि नहीं पहुंच सकती। यद्यपि किसी का जनवरी से नया वर्ष प्रारम्भ होता हो तो यह महीना सौरमास के १५ धनुपौष से १५ मकर माघ तक के लगभग पड़ता है, ऐसी अवस्था में जनवरी के स्थानपर मकर माघ से नया वर्ष प्रारम्भ करना युक्ति सङ्गत होवेगा ऐसा ही अन्य महीनों के वारे में समझना चाहिये। अयनों के क्रमनुसार से भी सौर वत्सर का प्रारम्भ एक प्रकार होसकता है, क्यों कि उत्तरायण मकर माघ से प्रारम्भ होकर मिथुनाषाढ़ में समाप्त तथा दक्षिणायन कर्क श्रावण से प्रारम्भ होकर धनुपौष में समाप्त होता है। अतएव जनवरी महीने से जिनका नवीन वर्ष प्रारम्भ होता है, वे यदि मकर माघ से प्रारम्भ करें तो यह भी एक प्रकार का सौर वत्सर अयनों के क्रमानुसार माना जा सकता है अब मैं अपने प्रस्ताव को यहीं समाप्त करता हूं कि सुधी मण्डली इस पर मनन करेगी तथा किसी एक पन्थ को अवलम्बन करेगी।

# गुरू गोविन्दसिंह

(पत्र प्रेरकों का सम्पादक उत्तर दाता नही है)

[ लेखक अज्ञात ]

इस नाम की दो पुस्तकें अभी मेरे देखने में आई हैं। सिक्खों के अन्तिम गुरु गोविन्दसिंह बड़े वीर होगये हैं। उन्होंने देश और धर्म के निमित्त अनेक असीम कष्ट सहन किये थे, परन्तु वे अपने व्रतसे डिगे नहीं। शोक है अबतक हिन्दी में उनका कोई क्रमबद्ध और श्रङ्खलाबद्ध चरित्र प्रकाशित नहीं हुआ था। हर्ष है अब उनके एकके स्थान में दो चरित्र प्रकाशित हुए हैं। पहला चरित्र बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए० द्वारा सम्पादित मनोरञ्जन पुस्तकमाला की तीसरी पुस्तक है उस के लेखक श्रीयुत् बेणीप्रसाद हैं। काशी की नागरी प्रचारिणी सभा ने प्रकाशितकिया हैं, २४७पृष्ठ की पुस्तक है, मूल्य एक रुपया है। यह स्वतन्त्र ग्रन्थ है किसीका अनुवाद नहीं। दूसरी पुस्तक बङ्गभाषा का अनुवाद है, स्वतन्त्र नहीं। इस पुस्तक के अनुवादक पं० बृजनन्दन मिश्र और श्री वैद्य पं० रघुनन्दन प्रसाद मिश्र हैं। ब्रह्मप्रेस इटावा में छपी है और उक्त प्रेस ने ही प्रकाशित की है। पुस्तक क्राऊन साईज १३९ पृष्ठ की की है, मूल्य छः आने हैं। इन दोनों पुस्तक के विषय में कौनसी अच्छी है अथवा कौनसी बुरी है। स्वतन्त्र रूप से विचार करनेका स्थान नही है। बङ्गभाषा से जो पुस्तक ब्रह्मप्रेस इटावा ने प्रकाशित की है। उसमें गुरूगोविन्दसिंहजी की जीवनी की मुख्य घटनाओं का संक्षिप्तमें अच्छा संग्रह कर दिया है। मनोरंजन ग्रन्थमाला से प्रकाशित होने वाले चरित्रके लेखक का कथन है कि वैज्ञानिक और ऐतिहासिक दृष्टि से विचार करके पुस्तक लिखी गई है परन्तु पुस्तक के देखने से ज्ञात होता है कि लेखक अपने कथनानुसार जीवनी नहीं लिख सके हैं। यद्यपि उनहोंने चेष्टा अवश्य की है। पुस्तक पढ़ते समय ज्ञात होता है कि इतिहास नहीं उपन्यास पढ़ रहे हैं। इसमें सन्देह नहीं कि चरित्र ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है लेखक ने पुस्तक लिखने में बहुत परिश्रम किया है। पर गुरुगोविन्द सिंह जी की जीवनी की कितनी ही घटनाएं छोड़दी

गई हैं। कहने को लेखक महाशय ने भूमिका में इस बात पर बल दिया हैं कि धार्मिक विषयों को दूर रखकर ऐतिहासिक चरित्र लिखने चाहिये, परन्तु जहां गुरु गोविन्दसिंह के दो लड़कों के मारे जाने का वर्णन किया गया है, वहां लिखा है कि दोनों भाई ओ३म् ओ३म् का उच्चारण करने लगे। मैंने गुरूगोविन्दसिंह की कई जीवनी पढ़ा हैं, पर किसी पुस्तक में यह नहीं पढ़ा कि गुरूगोविन्द सिंह के लड़के मृत्यु के समय ओ३म् ओ३म् का उच्चारण करते रहे मुझे ओ३म् शब्दसे घृणा नहीं है, द्वेष नहीं है, परन्तु मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि ऐतिहासिक चरित्रों के लिखने में जहां तक हो चरित्र नायकों के वे ही शब्द आने चाहिये, जो उनके हो अथवा जो उनके चरित्र सम्बन्धी प्रमाणिक ग्रन्थों में हो, शब्दों की भरमार नहीं होनी चाहिये। जब गुरू गोविन्द सिंहजी अपने पुत्रों की मृत्यु के पश्चात् सरहिन्द से होकर सिक्खों के साथ निकले थे, तब उन के साथियोंको बड़ा क्रोध आया वे सरहिन्द को उजाड़ने को तैयार होगये थे तब गुरुने अपने साथियों को समझाया कि समस्त सरहिन्द को नष्ट करने से कुछ लाभ नहीं है निर्दोष बच्चे स्त्रियोंकी हत्या व्यर्थ होगी। जो कोई सिक्ख इधर से उधर निकलें तबदो ईंट शहर में से निकालकर सतलज नदी में फेंक दें और इसको सरहिन्द में कह कर गुरुमार कहे ऐसी कई घटनाएं इस पुस्तक में छोड़ दी गई हैं। परन्तु इसपर भी पुस्तक सुन्दर है, पढ़ने योग्य है। इतिहास और चरित्र के प्रेमियों को संग्रह करनी चाहिये। "मनोरञ्जन ग्रन्थमाला" से हिन्दीसाहित्य में और भी अनेक सुन्दर ग्रन्थों के प्रकाशित होने की आशा है।

---

# पुस्तकों की प्राप्ति स्वीकार।

[ पूर्व प्रकाशित से आगे ]

| | पुस्तक का नाम | लेखक | नाम पुस्तक-दाता | मूल्य |
|---|---|---|---|---|
| २४५ | श्रान्त पथिक | पं० श्रीधर पाठक-प्रयाग | पं० श्रीधरपाठक | |
| २४६ | एकान्तवासी योगी | ,, | ,, | |
| २४७ | मनोविनोद-प्रथम भाग | ,, | ,, | |
| २४८ | मनोविनोद-द्वितीय भाग | ,, | ,, | |
| २४९ | तृतीय वैद्य-सम्मेलन के सभापति की वक्तृता | कविराज गणनाथ सेन | आयुर्वेद महामण्डल | ॥) |
| २५० | भारत में प्लेग | पं० हनुमान शर्मा (जयपुर) | पं० जगन्नाथप्रसादशुक्ल | =) |
| २५१ | पुरुषोत्तम चरित्र | पं० जगन्नाथप्रसादशुक्ल | ,, | -) |
| २५२ | शङ्कर चरित्र | ,, | ,, | -) |
| २५३ | आयुर्वेद का महत्व | ,, | ,, | -) |
| २५४ | प्राकृत ज्वर | पं० राधावल्लभ वैद्य | ,, | |
| २५५ | दोष विज्ञान | ,, | ,, | ≡) |
| २५६ | वैद्यक सम्मेलन की रिपोर्ट | पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल | ,, | =) |
| २५७ | भारतीय रसायन शास्त्र | ,, | ,, | ॥।) |
| २५८ | दीर्घ जीवन | पं० बलदेव प्रसाद शुक्ल | ,, | ॥) |

# भूलों का सुधार

गत संख्या में परीक्षा की पाठ्य पुस्तकों के विषय में भी कई भूलें रह गयीं जिन्हें पाठक कृपया सुधार लें—

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १७१ | २० | छन्दोवर्णव | छन्दोऽर्णव |
| १७३ | १८ | भौतिकी | भौतिकी (पदार्थ विज्ञान विटप के स्थान में) |
| १७३ | २२ | दिये | दिया |
| १७३ | २३ | जीव वि०" | ——— |
| १७३ | २३ | गये | गया |

---

# आवश्यकता

सम्मेलन कार्यालय के लिये एक सहकारी मंत्री की आवश्यकता है जो आफ़िसों के काम से भली भांति परिचित हो बही खाते का काम जानता हो, "सम्मेलन पत्रिका" का सम्पादन कर सके और समय समय पर हिन्दी संसार में अपने लेखों और व्याख्यानों द्वारा सम्मेलन का सन्देश पहुँचा सके। वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा। निम्न लिखित पते पर प्रार्थना पत्र भेजना चाहिये।

# अध्यापिका की आवश्यकता है

म्युनिसपिल लोअर प्रैमरी स्कूल के लिये कि जो (यदि मिडिल पास हो तो अच्छी बात है) हिन्दी हिसाब, सीना पिरोना आदि जानती हो। वेतन १०) रु० से २०) रु० तक योग्यतानुसार मिलेगा।

मन्त्री

हिन्दी साहित्य सम्मेलन

प्रयाग।

लीजिये ! खरीदिये !!

# सम्मेलन

के

## कार्य्य विवरण और लेखमाला

## प्रथम वर्ष

का

कार्य्य विवरण, इसमें उस वर्ष के सभापति माननीय श्री पं० मदनमोहन मालवीय जी की

### प्रभावशालिनी और ओजस्विनी वक्तृता ।

बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०–प्रोफ़ेसर हेमचन्द्र सरकार एम०-ए०प्रो० पारनकर एम०ए० और बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन एम० ए० एल० एल० बी० आदि विद्वानों की वक्तृताएं अनेक विषयों पर पढ़ने और मनन करने योग्य हैं आरम्भ में ही माननीय मालवीय जी का चित्र है। मूल्य चार आना।

### प्रथम वर्ष की लेख माला ।

इस में हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक पं० श्याम विहारी मिश्र एम० ए०-पं० शुकदेव बिहारी मिश्र बी० ए०, महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी, पं० गणेशबिहारी मिश्र, पं० राधाचरण गोस्वामी राय साहब पं० चन्द्रिकाप्रसाद त्रिपाठी, पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय, पं० माधव शुक्ल, बाबू शारदाचरण मित्र, मुंशी देवी प्रसाद पं० केशव देव शास्त्री प्रभृति विद्वानों के विद्या और मातृभाषा का महत्व,धर्मवीर,वर्त्तमान नागरी अक्षरों की उत्पत्ति, खड़ी बोली की कविता हिन्दी साहित्य ब्रजभाषा, दादू दयाल और सुन्दरदास, राष्ट्र भाषा और राष्ट्र लिपि प्रभृति विषयों पर लेख हैं मूल्य ॥।) आना।

## दूसरे वर्ष का कार्य्य विवरण।

कौन ऐसा हिन्दी प्रेमी है जो स्वर्गीय पं० बालकृष्ण भट्ट के नाम से परिचित न हो; वे द्वितीय सम्मेलन की स्वागत कारिणी सभा के सभापति थे इस कार्य्य विवरण में उन्हों ने स्वागत कारिणी सभा के सभापति की हैसियत से जो वक्तृता दी थी वह है। भट्टजी की वक्तृता में हिन्दी साहित्य के जानने योग्य बहुत सी बातें हैं। द्वितीय सम्मेलन के सभापति श्रीयुक्त पं० गोविन्दनारायण मिश्र की विद्वत्ता पूर्ण वक्तृता भी है। इसके अतिरिक्त श्रीयुक्त सत्यदेव जी पं० बदरी नारायण चौधरी पं० अमृत लाल चक्रवर्त्ती आदि विद्वानों के अनेक प्रस्तावों पर छोटे छोटे सुन्दर भाषण हैं। मूल्य चार आने।

## लेख माला।

द्वितीय वर्ष की लेख माला में बड़े बड़े सुन्दर, ज्ञातव्य पूर्ण लेख हैं। पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी, बाबूमैथली शरण गुप्त पं० सत्य नारायण शर्मा, पं० माधव शुक्ल पं० लोचन प्रसाद पाण्डेय आदि की प्रारम्भ में कवितायें हैं। पं० गौरी शङ्कर हीराचन्द्र ओझा मुं० देवी प्रसाद मुनसिफ प० गणेश विहारी मिश्र पं० श्यामविहारी मिश्र पं० शुकदेव विहारी मिश्र ला० भगवानदीन पं० मन्नन द्विवेदी बी० ए० बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए० के खोज और इतिहास सम्बन्धी निबन्ध हैं। हिन्दी की सामयिक अवस्था पर पं० महावीर प्रसान द्विवेदी साहित्याचार्य पं० रामावतार शर्मा एम० ए०, पं० सकल नारायण पाण्डेय पं० बदरी नाथ भट्ट बी० ए० प्रभृति विद्वानों के पढ़ने योग्य लेख हैं। इनके अतिरिक्त और भी अनेक विद्वानों के व्याकरण नाटक आदि विषयों पर लेख हैं। मूल्य केवल एक रुपया।

## तृतीय वर्ष का कार्य विवरण।

इस में स्वागतकारिणी सभा के सभापति की वक्तृता और सम्मेलन के सभापति पं० बदरी नारायण चौधरी की सारगर्भित अनेक विषयोंसे पूर्ण वक्तृता साहित्य सम्बन्धिनी है। इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध वक्ता बाबू विपिनो चन्द्र पाल बाबू पचकौड़ी बनर्जी बाबू

शिवप्रसाद गुप्त श्रीयुक्त सत्यदेव आदि की ओजस्विनी वक्तृताएं हैं। मूल्य ।=) छः आने।

## लेख माला।

पं० गणेशविहारी मिश्र पं० श्यामबिहारी मिश्र पं० शुकदेव बिहारी मिश्र पं० जीवानन्द शर्मा काव्यतीर्थ बा० राधामोहन गोकुल जी बा० गोपालराम साहित्याचार्य पं० रामावतार शर्मा एम० ए० आदि के इतिहास कविता खोज और साहित्य पर विद्वत्ता पूर्ण लेख हैं। मूल्य बारह आने।

## एक और लाभ।

"सम्मेलन-पत्रिका" के ग्राहकों को तीन चौथाई कम मूल्य पर मिलेंगे। "पत्रिका" के ग्राहकों को साहित्य समिति में अपनी सम्मति भेजने का अधिकार होगा। वार्षिक मूल्य एक रुपया।

निवेदक

मन्त्री

**हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।**

---

## तरङ्गिणी

विदित हो कि आगामी ज्येष्ठ शुक्ला दशमी को एक नवीन मासिक पत्र काशी से प्रकाशित होने वाला है इसका नाम "तरङ्गिणी" होगा और प्रति मास आठ फार्मों की पुस्तक ग्राहकों की सेवा में भेजी जाया करेगी। इसमें समयोपयोगी प्रायः सभी विषयों पर साहित्य पूर्ण लेख छपा करेंगे। आरम्भ में एक दर्शनीय चित्र रंगीन होगा तथा ३ हाफ टोन फोटो रहा करेंगे। कागज, छपाई, आकार प्रकार में यह "सरस्वती" के समान होगा। इसका वार्षिक मूल्य ३) रु० रक्खा गया है, किन्तु जो महाशय गङ्गा दशहरा तक आर्डर भेज कर ग्राहक श्रेणी में अपना नाम लिखावेंगे उनसे इस वर्ष केवल २।।) रुपया मात्र लिया जावेगा।

मेनेजर

**तरङ्गिणी-कार्य्यालय**

**काशी**

# "नवजीवन" ।

## राष्ट्रभाषा हिन्दीका प्रसिद्ध सचित्रमासिक पत्र

**क्या** आपको मालूम है कि स्वदेश और स्वधर्म के प्रति आपके क्या कर्त्तव्य है !

**क्या** आप भारत में एक राष्ट्रीयता के प्रचार के इच्छुक हैं ?

**क्या** आप राष्ट्रीय, धार्मिक और सामाजिक उन्नति के उपायों पर देशके प्रसिद्ध महानुभावों के विचार जानना चाहते हैं ?

## यदि हां, तो ।

आजही राष्ट्र सेवक **"नवजीवन"** के ग्राहक बनजाइये ।

**"नवजीवन** राष्ट्रीयता के प्रत्येक अंगपर निर्भीकता के साथ आलोचना और गवेषणा पूर्ण लेख मार्मिक टिप्पणियां, नवजीवन संचारक कवितायें आदि आदि विषय सुनाकर सच्चे सुखों का आस्वादन करावेगा ।

## "नवजीवन"

देशकी कठिन किन्तु अत्यावश्यकीय समस्याओं की पूर्ति कर हिन्दी भाषा और धार्मिक संसार में **युगान्तर** स्थापित करेगा ।

बिना संकोच शीघ्रही ग्राहक बनिये मूल्य कुछ नहीं केवल ३) वार्षिक अग्रिम । एक प्रति **नमूने** के लिये ।)॥ के टिकट भेजिये ।

व्यवस्थापक **"नवजीवन"**
सरस्वती सदन
केम्प **इन्दौर** C. I.)

# श्री महात्मा गोखले

## ( राजनैतिक संन्यासी और निष्काम कर्मयोगी )

[ ले० पण्डित नन्दकुमार देव शर्मा ]

भारत माता के सच्चे सुपूत महात्मा गोखले की सचित्र जीवन है। जीवनी बड़े परिश्रम और खोज से लिखी गयी है। जीवन सम्बन्धी घटनाओं के अतिरिक्त उनके मुख्य मुख्य व्याख्यान और लेखों के भी मुख्य मुख्य अंशों का अनुवाद दिया गया है। इसमें कानपुर के सुप्रसिद्ध हिन्दी कवि रायदेवीप्रसाद पूर्ण तथा हिन्दी के अन्य कवियों की कविताएं भी दी गई हैं। पुस्तक २० वीं एप्रिल तक प्रकाशित होगी मूल्य छः आना है पर जो पहले ग्राहक होंगे उनको चार आने में मिलेगी।

**जोशी एण्ड कम्पनी**

४२, शिव ठाकुर्स लेन

कलकत्ता।

---

# हिन्दी-वैद्यकल्पतरु।

## सचित्र मासिकपत्र

यदि आप प्राचीन महर्षियों के आयुर्वेद सम्बन्धी सिद्धान्तों को जानना चाहते हैं, यदि आप भारतीय आयुर्वेदविद्या की रक्षा व उन्नति चाहते हैं, यदि आप वर्तमान समय के प्रवञ्चक और नामधारी वैद्योंसे अपने आरोग्य व द्रव्य की रक्षा करना चाहते हैं, यदि आप छोटे मोटे रोगों के नुस्खे घर बैठे जान लेना चाहते हैं, यदि आप उत्तम सन्तति, सदाचार व आरोग्य को प्राप्त कराने वाले नियमों को जानना चाहते हैं सारांश यह कि आप घर बैठे एक उत्तम चिकित्सक, शुभचिन्तक व उपदेशक की सलाह को प्राप्त कर सुखी बनना चाहते हैं तो वर्ष भर में केवल एकबार १-९-० व्ययकर इस मासिक

पत्र के ग्राहक बनजाइये । लेख, कागज, छपाई प्रभृतिके सामने वार्षिक मूल्य कुछभी नहीं है । नमूना मुफ़ भेजा जाता है वर्ष आरम्भ जनवरी से होता है ।

**सम्पादक वैद्य जटाशङ्कर लीलाधर त्रिवेदी,**

अहमदाबाद गुजरात,

---

# "हिन्दी-सर्वस्व"

## हिन्दीभाषा का एकमात्र सर्वोपयोगी मासिक-पत्र

यदि आप हिन्दी प्रेमी हैं तो इसे मंगाकर अवश्य पढ़िये । यदि प्रसिद्ध विद्वान्-लेखकों के लेखों का आनन्द लूटना है तो इसे अवश्य पढ़िये । यदि आपको उपन्यास, गल्प, प्रहसन, नाटक, विनोद, विदूषक विज्ञान, इतिहास इत्यादि उत्तमोत्तम शिक्षाप्रद लेखों को पढ़ना है तो इसे अवश्य पढ़िये । विशेष क्या ? यदि आप का थोड़ा सा भी प्रेम हिन्दी-भाषा से है तो इसे अवश्य पढ़िये ।

इसकी प्रशंसा हिन्दी के प्रायः समस्त पत्रों ने तथा प्रसिद्ध २ पुरुषों ने की है ।

क्या आप हिन्दी भाषा के ऐसे उपयोगी पत्र के लिये वर्ष भर में डेढ़ रुपया १॥) रु० भी नहीं दे सकेंगे ? तिस पर भी यह मालवे से निकलने वाला इकलौता हिन्दी-मासिक पत्र है । विद्यार्थी धनी निर्धनी सभी के सुभीते के लिये इसका वार्षिक मूल्य केवल १॥) ही रक्खा गया है नमूना पत्र आने पर मुफ़्त दिया जाता है ।

निवेदक

**पं० गणेशदत्त शर्मा वैदिक "इन्द्र"**

सम्पादक "हिन्दी सर्वस्व"

आगर ( मालवा )

Gwaliar state

# "सम्मेलन पत्रिका" के नियम ।

१—"सम्मेलन पत्रिका" हिन्दी साहित्य-सम्मेलन कार्य्यालय, प्रयाग से प्रतिमास प्रकाशित होगी।

२—इसका वार्षिक मूल्य १) रु० इसलिये रक्खा गया है कि सर्वसाधारण इसके ग्राहक हो सकें।

३—इस समय इसमें प्रतिमास कुल २४ पृष्ठ ही रहा करेंगे। परन्तु आवश्यकता होने पर कभी कभी पृष्ठ संख्या बढ़ा भी दी जाया करेगी। आगे चलकर यदि इसकी सेवा साहित्य सेवियों को रुचिकर हो, और इसके ग्राहकों की यथोचित संख्या हो जाय तो यही पत्रिका अधिकतर पृष्ठ-संख्याओं में और अधिकतर उन्नत दशा में प्रकाशित की जायगी।

४—इसके प्रबन्ध-विभाग के पत्र—ग्राहक बनने के लिये आवेदन विज्ञापन-संबन्धी पत्र, मनीआर्डर इत्यादि—मन्त्री, साहित्य-सम्मेलन कार्य्यालय, जानसेनगंज प्रयाग, के नाम भेजे जाने चाहियें।

५—सम्पादक के नामकी चिट्ठियां, बदले के समाचार-पत्रादि समालोचना की पुस्तकें, पत्रिका में प्रकाशित होने के लिये लेखादि भी ऊपर ही के पते से भेजे जाने चाहियें

# विज्ञापनदाताओं के लिये नियम।

१—सम्मेलनपत्रिका में अश्लील विज्ञापनों को स्थान नहीं मिलेगा।

२—विज्ञापन साधारणतः पूरे और आधे पृष्ठ से कम स्थान के लिये स्वीकृत न होंगे।

१—पृष्ठ का मासिक मूल्य ... ४॥) होगा

२—आधे पृष्ठ का ... २॥) होगा

३—जो लोग १२ संख्याओं में विज्ञापन छपवाने का मूल्य एक साथ भेज देंगे उनका विज्ञापन एक संख्या में बिना मूल्य छाप दिया जायगा, अर्थात् १२ की जगह १३ बार उनका विज्ञापन छापा जायगा।

४—किसी दशा में पेशगी मूल्य बिना मिले कोई भी विज्ञापन नहीं छापा जायगा।

५—विक्रयार्थ पुस्तकों के विज्ञापनों पर ऊपर दिये हुए मूल्य से कम मूल्य न लिया जायगा।

१ पृष्ठ का मूल्य १ मास के लिये ३॥) और
आधे " " २) होगा।

६—अदालतों में लेखकों की नौकरी, अध्यापक-अध्यापकाओं की नौकरी इत्यादि हिन्दी प्रचारार्थ नौकरियों के विज्ञापन एक बार बिना मूल्य छाप दिये जायंगे। दूसरी बार और अधिक बार के लिये ऐसे विज्ञापनो का मूल्य केवल १) प्रतिमास होगा। विज्ञापन ८ पंक्तियों से अधिक न हो।

मन्त्री, हि० सा० स० कार्यालय, प्रयाग।

पण्डित ओंकारनाथ वाजपेयी के प्रबन्ध से ओंकार प्रेस प्रयाग में छपा।

# सम्मेलन पत्रिका

## हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की

### मुखपत्रिका ।

भाग २ } चैत्र संवत् १९७२ { अङ्क ७

### विषय सूची



वार्षिक मूल्य १) ] [ एक संख्या =)

हिन्दी साहित्यसम्मेलन से बाबू नरेन्द्र नारायण सिंह द्वारा प्रकाशित ।

# सम्मेलन के उद्देश्य

(१) हिन्दी साहित्य के अङ्गों की उन्नति का प्रयत्न करना।

(२) देवनागरी लिपि का देश भर में प्रचार करना और देश व्यापी व्यवहारों कार्यों के सुलभ करने के लिये हिन्दी भाषा को राष्ट्र भाषा बनाने का प्रयत्न करना।

(३) हिन्दी को सुगम, मनोरम और लाभदायक बनाने के लिये समय समय पर उसकी शैली के संशोधन और उसकी त्रुटियों और अभावों के दूर करने का प्रयत्न करना।

(४) सरकार, देशी, राज्यों, पाठशालाओं, कालेजों, विश्व-विद्यालयों और अन्य संस्थाओं, समाजों, जन समूहों तथा व्यापार, ज़मीदार और अदालतों के कार्य्यों में देवनागरी लिपि और हिन्दी के प्रचार का उद्योग करते रहना।

(५) हिन्दी के ग्रन्थकारों, लेखकों, पत्रसंपादकों, प्रचारकों और सहायकों को समय समय पर उत्साहित करने के लिये पारि-तोषिक, प्रशंसापत्र, पदक आदि से सम्मानित करना।

(६) उच्च-शिक्षा प्राप्त युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने के लिये प्रयत्न करना।

(७) जहां आवश्यकता समझी जाय वहां पाठशाला, समिति तथा पुस्तकालय स्थापित करने और कराने का उद्योग करना तथा इस प्रकार की वर्त्तमान संस्थाओं की सहायता करना।

(८) हिन्दी साहित्य के विद्वानों को तैयार करने के लिए हिन्दी की उच्च परीक्षाएं लेने का प्रबन्ध करना।

(९) हिन्दी भाषा के साहित्य की वृद्धि के लिये उपयोगी पुस्तकें तैय्यार करना।

(१०) हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के उद्देश्यों की सिद्धि और सफलता के लिए अन्य जो उपाय आवश्यक और उपयुक्त समझे जांय उन्हें काम में लाना।

# सम्मेलन-पत्रिका का उद्देश्य

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता करना, और साहित्य-प्रेमियों से इसी के लिये उपदेश लेना।

# सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति
की ओर से प्रतिमास प्रकाशित।

भाग २ | चैत्र संवत् १९७२ | अङ्क ७


## हिन्दी संसार।

### कान्हड़ दे प्रबन्ध।

हमारे यहां काव्यों का अभाव नहीं है पुराणों की कथा और कल्पनाओं के आधार पर कितने ही काव्य बने हैं परन्तु अब तक ऐतिहासिक काव्य इने गिने ही हैं उन ऐतिहासिक प्राचीन काव्यों में से वीर रसका एक काव्य कान्हड़ दे प्रबन्ध भी है। सर्वसाधारण को इस काव्य के परिचय देने का सौभाग्य प्राचीनशोध रसिक प्रख्यात विद्वद्वर स्वनामधन्य डाकृर ब्यूलर को प्राप्त हुआ है। उक्त डाकृर साहब पुराने संस्कृत ग्रन्थों की खोज में राजपूताने की ओर गये थे वहां थराद के जैन भण्डार में उनकी दृष्टि इस प्रबन्ध पर पड़ी। प्रबन्ध कपड़े की बैठन में लपेटा हुआ एक मजबूत डिब्बे में ताले में बन्द था। निबन्ध को मूल्यवान जानकर उन्होंने उसकी एक नकल करवाई और अहमदाबाद के शाला पत्र के सम्पादक—पं० नवलराम लक्ष्मीराम पंड्या के पास भेजदी। सम्पादक महाशय ने इस प्रबन्ध को अपने पत्र में प्रकाशित करके सर्वसाधारण को लाभ पहुंचाया।

यह "काव्य कान्हदे चौपाई" "कान्हड़े देरासो" और "कान्हड़े दे प्रबन्ध" के नामसे विख्यात है। चौहान कुल तिलक कान्हड़ देवके वंशज अखेराज की आज्ञानुसार जालौन में संवत् १५१२ में पद्मनाभ

कवि ने यह काव्य रचा था, लिखने वालों की भूल से वर्ष में गलती न होजाय इस लिये कविने काव्य ही में लिखदिया है कि काव्य झाजोर के पतन के १४५वें वर्ष में रचा गया है, ग्रन्थ के अन्त में कवि ने काव्य के पद्यों की गणना भी देदी है। वह कहता है "कान्हड़ दे चौपाईना पदबन्ध ७८० हैं, चारखण्ड हैं, काव्य दोहा चौपाई पावाड़े और गीत में हैं"। इस काव्य की कथा आगामी संख्या में प्रकाशित करेंगे, अहमदावाद के वारिस्टर-एट-ला श्रीयुत डायाभाई पीताम्बर देरासरी ने अहमदावाद के न्यूनियन प्रिंटिंग प्रेस में मुद्रित कराके प्रकाशित किया है। मूल ग्रन्थ देवनागरी अक्षरों में हैं पर उस की भूमिका और काव्य की कथा गुजराती भाषा में सम्पादक महाशयने लिखी है।

## मैहर राज्य में हिन्दी

इसमें सन्देह नहीं बुन्देलखण्ड की भाषा हिन्दी है। किसी समय बुन्देलखण्ड में हिन्दी भाषा के अच्छे अच्छे कवि होगये हैं। इस समय भी बुन्देलखण्ड में हिन्दी का अच्छा प्रचार है। हमारे समान ही पाठकों को यह सुनकर प्रसन्नता होगी कि बुन्देलखण्ड के मैहर राज्य के दीवान साहब डब्ल्यू०बी० सरदेसाई ने अपने राज्य के समस्त दफ़तरों का काम नागराक्षरों में कर रखा है। सुनते हैं दीवान साहब का नागरी लिपि के प्रति अत्यन्त प्रेम है। क्या आशा की जा सकती है कि बुन्देलखण्ड के जिन राज्यों में हिन्दी नहीं है वे भी अपने यहां हिन्दी को स्थान देकर मैहर राज्य का अनुकरण करेंगे?

## नागरी प्रचारक विद्यालय

कलकत्ते के कुछ उत्साही सज्जनों के प्रयत्न का फल वहां के मछुआ बाजार में नागरी प्रचारक विद्यालय है। उसकी नियमावली हमारे पास आई है, नियमावली के देखने से ज्ञात होता है कि इस विद्यालय के तीन उद्देश्य हैं (१) हिन्दी शिक्षा का प्रचार (२) बिना फ़ीस शिक्षा देना और अङ्गरेज़ी शिक्षा के साथ सदाचार पर ध्यान रखना। नैतिक और शारीरिक शिक्षा पर भी ध्यान दिया जाता है। यद्यपि विद्यालय की प्रारम्भिक अवस्था

देखते हुए सन्तोष जनक स्थिति है तथापि कलकत्ता जैसे सरस्वती और लक्ष्मी के केन्द्र में इसकी उन्नति के बहुत से साधन हैं। आशा है विद्यालय के सञ्चालक और कार्य्य कर्त्तागण विद्यालय को और भी उन्नतावस्था में लाने का प्रयत्न करेंगे।

## नागरी प्रचार के लिये दान

नागरी प्रचार के कार्यों में से अदालतों में नागरी प्रचार की विशेष आवश्यकता है। इतने दिनों से अदालतों में नागरी प्रचार की आज्ञा हो जाने पर भी अभी तक संयुक्त प्रान्त की जन संख्या देखते हुए प्रचार नहीं हुआ है। परन्तु अब अनेक व्यक्तिओं का इस ओर ध्यान गया है। हमें यह प्रकाशित करते हुए हर्ष होता है कि हाथरस के प्रसिद्ध रईस और आनरेरी मजिस्ट्रेट सेठ चिरञ्जी-लाल बागला ने सम्मेलन कार्य्यालय को १००) सौ रुपया हाथरस में सम्मेलन की ओर से जो नागरी प्रचार का कार्य हो रहा है, उसकी सहायतार्थ दान दिया है, जिसके लिये उक्त सेठ साहब को अनेक धन्यवाद हैं।

## दक्षिण अफ़रीका में हिन्दी पत्र

क्या हिन्दी भाषा भाषियों के हार्दिक प्रेम का यह द्योतक नहीं है कि वे दक्षिण अफ़रीका जैसे स्थान में पहुंच कर भी अपनी मातृ भाषा नागरी के प्रति अटल अनुराग का परिचय देते हैं। सुना गया है ट्रांसवाल जर्मिस्टन की हिन्दी प्रचारिणी सभा "हिन्दी" नामक साप्ताहिक पत्र निकालना चाहती है, उसका विज्ञापन हमारे यहां प्रकाशनार्थ आया है जिसकी ओर हम अपने पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं।

## नागरी प्रचारिणी सभा की आवश्यकता।

बम्बई जैसे वाणिज्य का घर है, वैसे ही विद्या का भी घर है। बम्बई नगरीमें हिन्दीका प्रचार कितना है, इसका पता केवल इतनेसेही लगता है कि वहांपर हिन्दीके कई बड़े बड़े यन्त्रालयहैं। यह सच है कि कलकत्तेसे बम्बईकी अपेक्षा हिन्दीके समाचार पत्र अधिक निकलते

हैं, परन्तु बम्बई में हिन्दी के जितने यन्त्रालय हैं, उतने कलकत्ते में नहीं हैं बम्बई प्रान्त के विद्वानों का बङ्गभाषा भाषियों से अधिक हिन्दी के प्रति प्रेम है। पूना का "केसरी" तथा और भी मराठी भाषा के प्रधान प्रधान समाचार पत्र हिन्दी का पक्ष सदैव करते रहते हैं। गुर्जर भाषा के अनेक समाचार पत्र और मासिक पत्रिकाएं अपने लेखोंके शीर्षक नागराक्षरोंमें छापते हैं। परन्तु खेद है, बम्बई में कलकते की नागरीप्रचारिणी सभा तथा हिन्दी साहित्य परिषद् के समान एक भी सभा नहीं है। क्या बम्बई नगरके हिन्दी प्रेमी अपने यहां एक नागरीप्रचारिणी सभा स्थापित नहीं कर सकते हैं, बम्बईमें नागरी प्रचारिणी सभाकी अत्यन्त आवश्यकता है, जिससे वहां के शिक्षित समाज में हिन्दी की चर्चा हो।

## श्री एडवर्ड हिन्दी पुस्तकालय।

संयुक्तप्रान्त—अलीगढ़ के जिले में हाथरस व्यापार की मंडी है, वहाँके कुछ विद्या प्रेमियों के प्रयत्न से संवत् १९६७में स्वर्गीय सम्राट सप्तम एडवर्डके स्मारक में हिन्दी पुस्तकालय स्थापित हुआ था, जो इस समय अच्छी दशामें है। उसके मंत्री महोदय सूचित करते हैं:- "नवम्बर सन् १९१४ ई० को सोसाइटीज़ एक्ट २१ सन् १८६० के अनुसार रजिस्ट्री करा दी गई है। पुस्तकालय में अनेक विषयों के २४४६ ग्रन्थ हैं, दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक तथा मासिक पत्रिकाएं सब मिलाकर, ३५ आते हैं। पुस्तकालय के मंत्री महोदय सर्वसाधारण तथा हिन्दी प्रेमियों से उक्त पुस्तकालय की सहायता के लिये प्रार्थना करते हैं।

## लाहौर में सम्मेलन।

लाहौर से, "हमको निम्न लिखित चिट्ठी मिली है:—

"आगामी हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पंजाब की राजधानी, लाहौर में होगा। 'प्रारम्भिक कार्य लाला रोशनलालजी वैरिस्टर-एट-ला लाला गोपालचन्द्रजी और सभा ने आरम्भ करदिया है। हिन्दी प्रेमियों से प्रार्थना है कि सम्मेलन की सर्व प्रकार से सहायता करें। जो सभा में योग देना चाहें—वे निम्न पते से पत्र व्यवहार करें—

ज्वालादत्त प्रसाद —मंत्री देवनागरी भाषा प्रचारक मण्डल—गुमटी बाज़ार—ठाकुर द्वारा गोस्वामी मधुसूदन दत्त—लाहौर"।

# वर्णमाला पर विचार ।

ब्यावर की श्री सनातनधर्म बाल सभा के मंत्री महोदय ने निम्नपत्र हमारे पास भेजने की कृपा की है :—

"आज कल जिधर देखें उधर ही हिन्दू संसार में हिन्दी के लिये रौला मच रहा है हिन्दी भाषा की पुकार मची हुई है हिन्दी भाषा की उन्नति के लिये सारा हिन्दू संसार चेष्टा कर रहा है यह हिन्दी हिन्दुस्तान का सौभाग्य समय है यह हिन्दुओं के अभ्युदय के लक्षण हैं लेकिन इस हिन्दी भाषा को लिखने के लिये देवनागरी वर्णमाला काम में ली जाती है जो कि अनिश्चित पूर्वकाल से अनेक परिवर्तन होते २ वर्तमान में देवनागरी अक्षर वर्णमाला बनी है जिस प्रकार पूर्वकाल से अनेक सुधार होते २ वर्तमान हिन्दी भाषा बनी है यह सच है कि दुनिया की अन्यान्य वर्णमालाओं से यह देवनागरी वर्णमाला अत्यन्त स्पष्ट और सुन्दर है परन्तु इस वर्णमाला में भी निम्न लिखित दोष है जिनके सुधार की आवश्यकता है॥

(१) हर एक अक्षर का वा मात्रा का एक २ अङ्ग ही होना चाहिये जैसे क च उ टुकड़े २ नहीं जैसे ग ण ऐ औ।

(२) हर एक अक्षर दूसरे अक्षर से न मिलना चाहिये जैसे ए रा व ब ड ङ,

(३) कोई एक अक्षर किन्हीं दो अक्षरों के मिलान से न होने चाहिये जैसे ख,

(४) कण्ठ आदि एक स्थान से निकालने वा बोलनेवाले एक वर्गी अक्षरों की एक ही भूमिका होनी चाहिये जैसे कण्ठ स्थानी कवर्ग की ( ा ) तालव्य स्थानी चवर्ग की ( ज ) मुर्द्धन्य स्थानी ट वर्ग की ( ≈ ) दन्त स्थानी तवर्ग की ( ─ ) और ओष्ट स्थानी पवर्ग की [ ᒣ ] इसी भूमिका पर प्रत्येक वर्ग के ध्वनि के अनुसार पांचों अक्षर बनने चाहिये जैसे च वर्ग के तीन अक्षर च ज ञ, टवर्ग के चार अक्षर ट ठ ड ढ पवर्ग के चार

अक्षर प फ भ म है इन चवर्ग टवर्ग पवर्ग में एक २ वा दो २ अक्षर और कवर्ग तवर्ग के पांचों अक्षर वे मेल है जैसे क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म इन में लकीर वाले वेमेल हैं।

(५) प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा अक्षर का स्वर पहिले और तीसरे अक्षर की ध्वनि में ह की ध्वनि के मिलान से बनता है जैसा कि फारसी और रोमन लिपि में लिखा भी जाता है लेकिन देवनागरी अक्षरों में गड़बड़ है यानी ध्वनि के अनुसार अक्षरों की आकृति नहीं जैसे क ख ग घ इत्यादि इसलिये ह का निशान [०] इतना होना चाहिये जो प्रत्येक वर्ग के पहिले और तीसरे अक्षर में लगा देने से उसी वर्ग का दूसरा और चौथा अक्षर बनजाय जैसे प फ लेकिन जैसे प फ की आकृति है वैसा ही इसकी ध्वनि एकसी है उसी प्रकार व क और भ झ की एकसी आकृति होने पर भी उनकी ध्वनि का स्थान दूसरा २ है व की ध्वनि ओष्ट स्थान है तो क की ध्वनि कण्ठ स्थान है भ की ध्वनि ओष्ट स्थान है तो झ की ध्वनि तालू स्थान है यह ठीक नहीं।

इस प्रकार के दोष युक्त वर्णमाला के सीखने सिखाने में और हस्त लिखित लिपि लिखने वा वांचने में बड़ा समय लगता है और बड़ी गड़बड़ रहती है इसलिये ऊपर लिखे हुए अथवा अन्य सुधार होने से हस्तलिखित वा टाइपराइट के लिखने में बड़ी सरलता स्वच्छता और सुन्दरता आजायगी और वांचने में भी बड़ा सुभीता होगा किसी प्रकार की गड़बड़ न रहेगा।

अभी सारे संसार में तो क्या भारतवर्ष भर में भी हिन्दी देवनागरी वर्णमाला का दौर दौरा नहीं हुआ है इस वर्णमाला का सुधार बहुत सुलभता से और शीघ्रता से हो सकता है ध्यान रहे कि इस सुधार की हुई वर्णमाला का नाम आर्य हिन्दी वर्णमाला होना चाहिये"।

---

# हिन्दी का एक अनूठा ग्रन्थ

## मणिमाला

[ लेखक—श्रीयुत बाबू गिरजाकुमार घोष ]

"मणिमाला" में रत्न विज्ञान की चर्चा है। इसके रचयिता हैं कलकत्ता वाले (इस समय स्वर्गीय) सौरीन्द्र मोहन ठाकुर। ठाकुर सौरीन्द्र मोहनजी बंगला में गान और वादन कला में अद्वितीय यश पा चुके हैं। आपके यश की सुगन्ध बंगाल के बाहर भारतवर्ष ही की सीमा में नहीं, दूर देशान्तरों तक में फैल चुकी है, और आपको वेलजियम, सकसनी, टरकी, नैपाल, स्वीडेन, हालैंड, जेनिभा हेग रोम, फ्लोरिन्स, वोलोना, ग्रीस, राजधानी एथेन्स, सिसिली सार्डिनीया, आस्ट्रेलिया इत्यादि पाश्चात्य भूखंडों से भी संगीत आदि के लिये मान पत्र और उपाधियां मिल चुकी थीं। इन्हीं भूमंडल मात्र के यशस्वी सौरीन्द्रमोहनजी की रचित मणिमाला नामक ग्रन्थ का पता लगा है। यह ग्रन्थ मूल संस्कृत में लिखा गया है परन्तु साथ ही अङ्गरेज़ी हिन्दी और बंगला भाषा में इसके अनुवाद छापे गये हैं। ग्रन्थ की हिन्दी भाषा वाली भूमिका इस प्रकार है। "आर्य—जाति का पुराण और अन्य अन्य शास्त्र स्वरूप आकार से रत्न सब संग्रह करके यह "मणि माला" अङ्गरेज़ी, हिन्दी, बङ्गला और संस्कृत यह चारों भाषा स्वरूप चारों सुत्र करके बनाया प्रत्येक रत्न के वर्णन के शेष भाग में रचना का दृढ़ता करने के वास्ते इउरोप का रत्न तत्वज्ञ पण्डित लोग के मत ग्रन्थि स्वरूप कल्पित भये। यह माला में नाना रत्न के विषय का वर्णन करके परिशोभित मध्यमणि के स्वरूप एक परिशिष्ट संयुक्त भया।

ग्रन्थकार।"

इस ग्रन्थ का विषय मणि या रत्नों के प्रेमियों को बहुत रुचिकर होगा। परन्तु इसकी हिन्दी भाषा ऐसी विचित्र है कि एकमात्र इसी के लिए इस पुस्तक की आलोचना करने की इच्छा होती है। सन् १८३६ ईसवी में यह ग्रन्थ कलकत्ते से प्रकाशित हुआ, और इसकी हिन्दी सम्भवतः स्वयं ठाकुर साहब की लेखनी से ही

निकली होगी क्योंकि यह कलकत्ते में रहनेवाले बंगालियों की हिन्दी का आदर्श है। मणिमाला की हिन्दी का एक नमूना और लीजिए— "विदेह नगर का राजा जनक बलराम के पायों को धोकर अपने मकान पर ले गया, और वह वहीं रहे और कृष्ण द्वारका में लौट आये। बलराम जिस समय जनक के मकानपर थे, उस समय धृतराष्ट्र का लड़का दुर्य्योधन गद्य युद्ध वहाँ शीखता था।"

सम्भवतः सौरीन्द्र मोहन ठाकुर महाशय ही ने अपनी असली बंगला मिश्रित अमार्ज्जित हिन्दी में ग्रन्थ प्रकाशन का साहस सब से पहले किया होगा, क्योंकि इस प्रकार की कोई दूसरी पुस्तक हमारे देखने में नहीं आयी। अस्तु हिन्दी के अनूठेपन के सिवाय हीरा माणिक मोती, पन्ना, गोमेद, पुखराज नीलम, स्फटिक, इत्यादि अनेक रत्नों का पौराणिक तत्वों से संगृहीत, वर्णन भी पाठकों को आनन्द और शिक्षा दोनों देसकता है। मणिमाला दो भागों में छपा है और एक एक भाग में ५०० से भी अधिक पृष्ठ हैं। सुना गया है कि पुस्तककी बिक्री नहीं होती, परन्तु उत्साही प्रकाशकों को चाहिए कि इसकी भाषाको शोधकर इसे हिन्दी में छपवाने का प्रबन्ध करें। एक मात्र रत्नविज्ञान के भी कारण हिन्दी में ऐसी पुस्तकों का रहना अनुचित नहीं है।

## पंजाब में हिन्दी

पञ्जाब की राजधानी लाहोर से 'प्रभात" नामक हिन्दी साप्ताहिक पत्र को निकलते हुए आठ नौ महीने हो गये हैं। जब से सहयोगी "प्रभात" निकला है तब से वह बराबर पञ्जाब में हिन्दी विषयक आन्दोलन कर रहा है। यदि सहयोगी हिन्दी, पंजाबी के सम्बन्ध में ऐसा ही आन्दोलन करता रहा जैसा अब तक कर रहा है तो हिन्दी की पंजाब में विशेष उन्नति होगी।

---

# युक्तप्रांत में हिन्दी के लिये उद्योग।

( लेखक—श्रीयुत् मन्नन द्विवेदी गजपुरी बी० ए० )

युक्तप्रांत में हिन्दी के लिये सब से पहला उद्योग बनारस का बनारस अख़बार है। यह पत्र उस वक्त निकला था जब न तो कहीं नागरी प्रचारिणी सभा थी, न आर्यसमाज था और न आज की तरह किसी को हिन्दी का ध्यान था। बनारस अख़बार का जन्म सन् १८४५ ई० में हुआ था, जब टकसाली हिन्दी के पिता भारतेंदु बाबू हरिश्चन्द्र के जन्म होने की पाँच बरस की देरी थी। इस पत्र के निकालने का यश राजा शिवप्रसादजी को था और एक नोट करने की बात यह है कि पहले हिन्दी पत्र का पहला सम्पादक इस प्रांत का लेखक न होकर एक मराहठी सज्जन था। कुछ दिन के बाद बनारस अख़बार बन्द होगया दूसरा उद्योग काशी का "सुधाकर" था जो सन् १८५० में निकाला गया था। इस पत्र के सम्पादक एक बङ्गाली सज्जन थे। सुधाकर भी थोड़े दिनों में बन्द होगया। इसके बाद भारतेंदुजी के "कवि-बचनसुधा" का जन्म सन् १८६८ ई० में हुआ इसके बाद जो कुछ उद्योग हिन्दी के लिये होता था, मरण काल तक उसमें भारतेंदुजी का हाथ सर्वत्र दिखाई देता था।

कवि-बचनसुधा के बाद हरिश्चन्द्र—चन्द्रिका निकली जो कवि-बचनसुधा का परिवर्तित रूप कही जा सकती है। हरिश्चन्द्र-चन्द्रिका का प्रादुर्भाव होने के पहिले ही अलमोड़ा अखबार और प्रेम पत्र का जन्म सन् १८७१ और १८७२ में होगया था। उसके बाद काशी-पत्रिका का जन्म बनारस में हुआ। सन् १८७७ ई० हिन्दी के लिये बड़े सौभाग्य का वर्ष था। उसी वर्ष शाहजहांपुर से "आर्य्य-दर्पण" निकला। कलकत्ते से "भारत-मित्र" का जन्म हुआ लेकिन इस लेख से कलकत्ते का कुछ सम्बन्ध नहीं है। मैं यह कहना भूल गया कि अलीगढ़ का "भारत-बन्धु" सन् १८७६ में निकल चुका था। हिन्दी के प्रसिद्ध पत्र "हिन्दी प्रदीप" का जन्म इसी सन् में हुआ था। सन् १८७७ तक हिन्दी की उन्नति के लिये सिर्फ़ पत्र पत्रिकाये निकाल कर उद्योग किया गया था। तब तक किसी हिन्दी सभा का पता नहीं चलता है। कहीं कहीं समस्यापूर्ति की बैठकें

रहीं हों लेकिन कोई नियम बद्ध सभा नहीं थी। श्रीमान् पं० बालकृष्णभट्टजी के उद्योग से प्रयाग में सन् १८७७ में हिन्दी प्रवर्धिनी सभा खुली। कुछ दिन तक इस सभा का काम बड़े उत्साह से चलता था लेकिन अंत में यह टूट गई और अब कहीं इसका नाम निशान नहीं है।

इस तरह यदि युक्तप्रांत का पहला हिन्दी समाचार पत्र निकालने का यश काशी को है तो हिन्दी की पहिली सभा खोलने का सौभाग्य प्रयाग को है। लेकिन दुःख की बात है कि अब न तो वह पत्र रहा और न अब वह सभा ही रही। प्रयाग में हिन्दूसमाज नाम की एक सभा स्थापित हुई थी।उससे भी हिन्दी का बड़ा उपकार हुआ। इसके बाद अलीगढ़ की भाषा संवर्धिनी सभा का जन्म हुआ। इसको बाबू तोताराम जी ने खोला था इस सभा से कुछ किताबें भी निकलीं थीं। पं० गौरीदत्तजी की देव नागरीप्रचारिणी सभा का नंबर इसके बाद है।

मेरठ की सभा के बाद विद्या धर्मवर्द्धिनी सभा प्रयाग का नाम लिया जा सकता है। इस सभा ने प्रयाग और सरयूपार में हिन्दी की उन्नति के लिये बड़ा यत्न किया था। पं० देवकीनन्दन जी अपने समय के इने गिने हिन्दी हितैषियों में से थे। आप के उद्योग के फल से "प्रयाग-समाचार" और "नाट्यपत्र" निकले थे, जिन में से अब कोई नहीं है।

इसके बाद १६ जुलाई सन् १८९३ ई० में सबसे बड़ी हिन्दी सभा, नागरी प्रचारिणी सभा काशी का जन्म हुआ। जब क्वीन्स कालेज बनारस के कुछ विद्यार्थियों ने यह सभा खोली तो उनको क्या मालूम था कि एक रोज उनकी सभा इतने ऊंचे पद पर चढ़ जायगी कि लाट लोग उसमें पधारने की कृपा करेंगे उसके सभासदों की संख्या डेढ़ हज़ार के क़रीब होजायगी, बम्बई से कलकत्ते तक और मदरास से काश्मीर तक इसके सभासद् फैले रहेंगे, आक्सफ़ोर्ड, लंडन, और परिस तक में इस के मेम्बर पाये जायंगे और उनमेंसे डाक्टर हार्नली और डाक्टर ग्रियर्सन ऐसे विदेशी विद्वान भी होंगे। तब कौन आशा करता था कि इस सभा से एक कोश बनेगा जिसके लिये भारत गवर्मेंट, प्रांतीय गवर्नमेंट

और देशी रजवाड़े मिलकर बीस बाइस हज़ार रुपया दे डालेंगे जिसकी खोज के लिये सरकार आर्थिक सहायता देगी और आधे दर्जन स्वतंत्र भारतीय नरेश इसके संरक्षक होंगे। कौन कह सकता था कि ६ वर्ष ६ महीना २ दिन की अवस्था वाली कन्या इतनी हृष्ट पुष्ट हो जायगी कि टोडरमल द्वारा निकाली हुई देवनागरी को तीन सौ वर्ष से भी अधिक समय के बाद फिर न्यायालयों में पहुंचा देगी। लेकिन श्रद्धेय बाबू श्यामसुंदरदास और उनके साथियों ने दिखला दिया कि उद्योग सब कुछ कर सकता है।

उसके बाद लखनऊ और जौनपुर की सभाएँ हैं। जौनपुर की सभा ने पूज्य मिश्रबन्धु की हिन्दी अपील छापी थी और लखनऊ की सभा से भी आपहा लोगों की किसी किताब का कुछ सम्बन्ध था।

जौनपुर की सभा की अच्छी दशा नहीं है लेकिन लखनऊ की सभा से अब विशेष आशा है। प्रयाग की नागरी प्रवर्धिनी सभा ने आरम्भ में बड़े जोश से काम किया था लेकिन अब उसमें बड़ी शिथिलता आगई है जब से सम्मेलन कार्यालय प्रयाग गया तबसे नागरी प्रवर्धिनी सभा की वही दशा हो गई जो बड़े पेड़ों की छाहीं लगने से छोटे छोटे पौधों की होजाती है।

प्रयाग की सभा के बाद गोरखपुर, आगरा, कानपुर इत्यादि कई जगहों में सभाएँ हुईं। अगर मेरा सम्बन्ध उससे न होता तो मैं कहता कि नागरी प्रचारिणी सभा गोरखपुर बड़े काम कर रही है। उसके पुस्तकालय में पांच हज़ार से अधिक पुस्तकें हैं। बस्ती देवरिया, पड़रौना, गगहा और बकसूंडी में इसकी शाखायें भी खुल गई हैं। गगहा की शाखा तो इतनी अच्छी हो गई है कि अपना सुरम्य सभा भवन बनवा रही है। लेकिन सब से बढ़कर जो काम इस सभा ने किया है वह कचहरियों में नागरी प्रचार है। इस काम में अब तक कोई सभा इसका मुकाबिला नहीं कर सकी है।

अब तक जितनी सभाये स्थापित हुईं किसी न किसी अर्थ में उनका रूप एक देशीय था। इस लिये हिन्दी वालों की प्रतिनिधि सभा का पहले पहल ता० १० अक्तूबर सन् १६१० ई० में जन्म हुआ। उसी प्रतिनिधि सभा का नाम हिन्दी साहित्य सम्मेलन है।

सम्मेलन का जन्म भी जैसा चाहिये था वैसा ही हुआ। काशी की पवित्र भूमि ने, नागरी प्रचारिणी सभा के हाते में, श्रद्धेय बाबू श्यामसुन्दरदासजी के प्रबन्ध और हम लोगों के सर्व श्रेष्ठ गुरुवर माननीय मालवीय जी के सभापतित्व में इस सभा का जन्म हुआ। इससे अधिक अच्छा क्या हो सकता था? यह सम्मेलन का पांचवां वर्ष है। इसमें सन्देह नहीं कि सम्मेलन प्रतिवर्ष बड़े उत्साह से होता जारहा है। उसका कार्य्यालय होगया है और उससे सम्मेलन पत्रिका प्रति मास निकल रही है। बा० पुरुषोत्तम दास टंडन एम० ए० एल० एल० बी० से बढ़कर योग्य और उत्साही मंत्री मिलना कठिन है।

यह सब होते हुए भी सम्मेलन के विषय में दो एक बातें निवेदन करनी हैं। सम्मेलन अभी तक सिर्फ़ निरीक्षक समिति के (supervising body) के रूप में है। उसका यह रूप ठीक है लेकिन यदि आप चाहते हैं कि आपकी आवाज़ दूर तक सुनाई पड़े तो आपको किसी ऊंचे स्थान पर चढ़कर बोलना चाहिये। यदि आप चाहते हैं कि आपकी बात को लोग मानें तो आप को पहले अपना महत्व ( status ) बना लेना पड़ेगा।

* दुख के साथ कहना पड़ता है कि सम्मेलन ने अपने नाम और पद के अनुकूल महत्व अभी पैदा नहीं किया है। लोग इसकी बातों पर हंस देते हैं उसकी आज्ञा भङ्ग करने में डरते नहीं हैं।

---

*सम्मेलन को स्थापित हुए पांचवां वर्ष है, थोड़े समय को देखते हुए कहना पड़ता है कि सम्मेलन को अपने कार्य में आशातीत सफलता प्राप्त होरही है। मालूम नहीं कि सम्मेलन की कौन सी बातों पर लोग हंस रहे हैं, आज्ञाभङ्ग कर रहे हैं। पर सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशनों को देखते हुए यही पता लगता है कि समस्त हिन्दी प्रेमियों की उससे सहानुभूति है अभी पिछले दिनों में लखनऊ में जो लोग सम्मेलन के अधिवेशन में उपस्थित थे वे जानते हैं कि वहां पर हिन्दी प्रेमियों ने अपूर्व उत्साह का परिचय दिया था, सम्मेलन कांग्रेस के समान ही वर्ष गांठ मनाकर चुप नहीं रह जाता है किन्तु सदैव वर्ष भर तक उसका काम होता रहता है अदालतों में प्रचार का काम सम्मेलन की ओर से कई स्थानों

इस अभाव को मिटाने के लिए सम्मेलन को चाहिये कि ऐसे ऐसे काम कर दिखलावै जिससे कोई यह प्रश्न न कर सकै "सम्मेलन ने किया क्या है?" कांग्रेस की तरह वर्ष गाँठ मनानेवाले सम्मेलन के रूप से काम न चलैगा। बहुत से कार्य जो इस वक्त नागरी प्रचारिणी सभायें कर रही हैं वे सम्मेलन के हाथ में होने चाहिये थे जिस से उनको सार्वजनिक रूप मिल जाता। आशा है स्थानीय सभायें हर्ष से वे काम सम्मेलन को दे देंगी लेकिन तब देंगी जब उनको मालूम हो जायगा कि सम्मेलन भी उस स्थान पर पहुंच गया जहां से वह राजा प्रजा दोनों का प्रिय है, दोनों उसके लिये धन देंगे और वह उन कामों को और अच्छी तरह चला सकैगा।

---

## मारवाड़ी और हिन्दी।

हमारे एक मित्र ने निम्न लेख भेजने की कृपा की है:—
"ब्यावर के कृष्ण मिल्स में हिन्दी सब लोग जानते हैं कि मारवाड़ी लिपि देवनागरी की अपभ्रंश मात्र है। परन्तु मारवाड़ के बाहर रहने वाले तथा मारवाड़ी से अनभिज्ञ सज्जन सम्भवतः नहीं जानते कि जिसको हम लोग साधारणतः मारवाड़ी लिपि कहते या समझते हैं उसमें भी कई भेद हैं। हमने भली प्रकार देख लिया है कि राजपूताने के एक प्रान्त की लिपि दूसरे प्रान्त में कठिनाई से पढ़ी जाती है क्योंकि उनके लिखने में समानता नहीं है। यों तो जिस लिपि में महाजनों के वही खाते लिखे जाते हैं उस में सभी प्रान्तों में स्वरवर्ण की मात्राओं का तिरस्कार होता ही है और उसके कारण उसके पढ़ने में बहुत प्रकार की विपत्तियों से सामना करना पड़ता है; परन्तु आश्चर्य्य की बात यह है कि व्यंजन प्रधान मारवाड़ी वा महाजनी लिपि भी सर्वत्र एक रूप नहीं

---

में होरहा है। और भी सम्मेलन ने कई काम उठा रखे हैं हिन्दीकी परीक्षायें ग्रन्थ प्रकाशनादि। सम्मेलन की ओर से पं० हरिमङ्गल मिश्र एम०ए० का "भारतवर्ष का इतिहास" और पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी कृत—"भारतीय ज्योतिष शास्त्र" प्रकाशित होने वाले हैं और भी कई कार्य हैं जिनका सम्मेलन ने बीड़ा उठा रखा है।

सम्पादक

धारण करती। एक प्रान्त की महाजनी मारवाड़ी स्वयं वही खाते लिखने वाले मुनीम गुमाश्ते दूसरे प्रान्त में नहीं पढ़ सकते अथवा उसके पढ़ने और समझने के लिये उनको बहुत माथापच्ची करनी पड़ती है। तिस पर महाजन लोग इस अशुद्ध कुरूप टूटी फूटी लिपि के ऊपर उतना ही मरते हैं जितना मुसलमान उर्दू के लिये। हमने बहुत ध्यान से देखा है कि शीघ्र लिख जाने के बहाने, बतलाने वाले मारवाड़ी महाजन नागरी प्रचार के मित्र नहीं हैं उर्दू के स्वपक्षियों के समान ये भी सचमुच नागरी अक्षर के विरोधी हैं। आनन्द की बात है कि राजपूताने के कई राजसरकारों ने अब उर्दू और महाजनी का परिहार कर उनके स्थान में नागरी लिपि का प्रचार कर दिया है परन्तु हमारे व्यापारी भाई जिनमें पढ़े लिखे तथा शिक्षित लोगों की संख्या बहुत ही कम है अभी तक मारवाड़ी लिपि ही के कट्टर पक्षपाती हैं। सम्भव है कि उनको देव नागरी लिपि की सुन्दरता, उपयोगिता तथा अन्य अनेक गुण अभी पूरी तरहसे समझाने की चेष्टा नहीं की गयी है। इस ओर भी समस्त हिन्दी प्रेमियों को अवश्यही ध्यान देना चाहिए और मारवाड़ी महाजनों को नागरी लिपि परिहार के पाप से बचाने के उपाय करने चाहिए। हर्ष की बात है कि हिन्दी प्रेमी व्यावर निवासी सद्गुणोत्साही सेठ दामोदरदासराठी जी ने अपने कृष्ण मिल्स के दफ़्तर में एकमात्र रोकड़ अर्थात् जमा खर्च की वही को गत पहली जनवरी से मारवाड़ी के बदले देवनागरी अक्षरों में लिखवाना आरम्भ करदिया है, परन्तु सारा दफ़्तर सारे वही खाते अभी तक उसी मारवाड़ी लिपि ही में लिखी जाती हैं। जो गुमाश्ता वा रोकड़िया रोकड़ वही को इस समय नागरी अक्षरों में लिख रहा है, उसने कभी इसके पूर्व मारवाड़ी छोड़ किसी अन्य लिपि का उपयोग नहीं किया था, और उसने बड़ी स्वच्छन्दता से अनायास नागरी लिखने में सफलता पाली है। भाषा उसकी वही प्रान्तिक मारवाड़ी है, परन्तु इसमें बहुत हानि नहीं। मारवाड़ में शिक्षित वही लेखकों का अभाव है तथा व्यापारियों की भाषा वा बोली मार्जित हिन्दी नहीं होसकती, इसलिए भाषा परिवर्त्तन की आशा करना अभी अनुचित होगा। सेठ दामोदरदासराठीजी ने अपने मिल्स के

दफ़्तर में जो परीक्षा आरम्भ करदी है और जिस परीक्षा में प्रारम्भही में ऐसी सफलता प्राप्त होचुकी है, हमको पूर्ण आशा है कि उसके फल स्वरूप अगले जनवरी से मिल्स की सारी बहिएं और सारी लिखा पढ़ी नागरी अक्षरों में की जाने की आज्ञा भी सेठ जी दे देंगे। अच्छा होगा कि इसके लिए वह अभी से अपने समस्त कर्मचारियों को नागरी पढ़ने लिखने का अभ्यास कराने की आज्ञा देवेंगे और सब से उत्तम सफलता दिखलाने वालों के लिये यदि अनुचित न हो तोकुछ पुरस्कार देकर सबका उत्साह बढ़ाने का भी प्रबन्ध कर देंगे और हम को आशा है कि अन्यान्य महाजन लोग भी राठी जीके इस सराहने योग्य दृष्टान्त का पालन कर के मातृभाषा की उन्नतिका द्वार खोल देंगे।

---

हर्ष है ऊपर लिखे हुये समाचार के मिलने के उपरान्त हमको विदित हुआ कि सेठ दामोदरदासजी राठी ने व्यावरके कृष्णा मिल्स् में मारवाड़ी लिपि के बदले देवनागरी ही से पूर्णतया काम लेना आरम्भ कर दिया है और एक सप्ताह पहले जो कर्मचारी देवनागरी में लिखना तक नहीं जानते थे अब भली भांति उसे लिख पढ़ लेते हैं और मिल्स् का सारा कार्य निर्विघ्न देवनागरी में चल रहा है।

---

# सौरमास और सौर-संवत् के प्रचलन की आवश्यकता।

( लेखक—श्रीयुत अयोध्या प्रसाद वर्मा )

आज कल भारतवर्ष में भाषा और लिपि के ऐक्यपर आन्दोलन प्रायः सबही प्रान्त में होरहा है, जोकि भारतवर्ष के लिये बहुत ही हितकारी है, परन्तु शोक का स्थल है कि स्वदेशी मिति तथा संवत् का प्रचलन प्रतिदिन न्यून होता जाता है, और अङ्गरेज़ी तारीख़ और सन् का प्रचार दिन पर दिन बढ़ताही जाता है, देख कर भी इधर किसी का ध्यान आकर्षित नहीं होता।

संयुक्त प्रान्त, बिहार, तथा मध्य प्रदेश में चान्द्रमास और संवत् का प्रचलनथा और अब भी एक दम उठ नहीं गया है।

परन्तु चान्द्र वत्सर किसी साल में १२ तथा किसी साल में १३ महीनों के होते हैं। किसी महीने में कोई तिथि अन्तर्हित हो जाती है और किसी महीने में एक तिथि के दो दिन होते हैं, तथा किसी महीने में एक दिन में दो तिथियां होतीं हैं। चैत्रबदी, १५ को संवत् समाप्त होता है और चैत्रसुदी १ को नया संवत् प्रारम्भ होता है, अर्थात् चैत्र का आधा महीना एक संवत् में और आधा दूसरे संवत् में पड़ता है। इन व्यावहारिक अनियमों के होने के कारण लोगों को काम काज में बहुत ही अड़चन पड़ती है। इन असुविधाओं को मिटाने के लिये ही वर्त्तमान हिन्दी जगत में अङ्गरेज़ी तारीख़ और सनका प्रचलन होपड़ा है। विशेषतः अङ्गरेज़ी तारीख़ महीने और सन केवल अङ्कों से भी सूचित किये जा सकते हैं जिसे पत्र लेखकों को शीघ्र लिखना बहुत ही सुलभ हो जाता है, जोकि चन्द्रमास के प्रचलन से नहीं प्राप्त होसकता, और यही मुख्य कारण है कि हमारे पत्र व्यवहारों में भी मिति और संवत् का प्रचलन प्रतिदिन उठता जाता है, और अङ्गरेज़ी महीने तारीख तथा उनका प्रचार क्रमशः बढ़ता ही जाता है। वर्त्तमान समय में अङ्गरेज़ी तारीख, सन् महीनों का प्रचलन इतना विस्तृत होरहा है कि हिन्दी भाषा के संवाद पत्र और मासिक पत्र अधिकांश अङ्गरेज़ी महीनों के अनुसार नवीन वर्ष का प्रारम्भ करते हैं, तथा आर्थिक लेन देन भी इन्हीं महीनों के अनुसार करते हैं। हिन्दी की तो बात ही क्या संस्कृत के व्याख्यानों और पुस्तकों में भी अङ्गरेज़ी सन् तथा महीनों ने अपना अधिकार जमा लिया है जोकि हमारे राष्ट्रीय गौरव को धब्बा लगाता है। यदि इस प्रचलन पर अभी से बाधा नहीं पहुंचाई जावेगी तो किसी समय उर्दू अक्षरों के सदृश इस प्रचलन को रोकना अत्यन्त कष्टदायक होजावेगा।

इस वर्त्तमान आपत्ति से बचने का यह उपाय होसकता है कि सौरमास और सौर संवत् का प्रचलन किया जावे। अङ्गरेज़ी महीनों के सदृश सौरमासों के १२ महीनों का एक सौर वत्सर होता है, १३ महीनों का कभी नहीं होता। सौरमास और वत्सर सूर्य्य की चालपर निर्द्धारित किये गये हैं, अर्थात् सूर्य्य का एक राशि से दूसरी राशि तक पहुंचने पर्य्यन्त जो समय का व्यवधान होता है,

वेही सौरमास हैं और सौरमासों की प्रत्येक अहोरात्रि ही उनकी मितियां अथवा तारीखें हैं इस हेतु अङ्गरेजी तारीखों के सदृश सौरमासों की मितियाँ भी हैं, और इनकी किसी मिति का लोप या द्विगुण नहीं होता। ऐसा ही सूर्य का १२ राशियों में परिभ्रमण करते समय प्रत्येक राशि के संक्रमण से १२ सौरमास निर्द्धारित हुए हैं, इस हेतु सौर वत्सर सदा १२ महीनों का ही होता है।

इस स्थल पर यह प्रश्न उठ सकता है, कि चान्द्रमास वैशाख ज्यैष्ठादि के क्रम से प्रसिद्ध है, और ऐसा व्यवहार कारबार तथा पत्रादि में भी बहुत दिनों से होते दिखाई देता है, यदि सौरमासों के नाम भी केवल वैशाख ज्यैष्ठादि क्रम से रक्खा जावे, तो लोगों को यह समझना कठिन होजावेगा कि यह सौरमास की मिति है, अथवा चान्द्रमास की? यद्यपि सुदी वदी शब्दों के योग से चान्द्रमासों का, तथा सौर मिति शब्द के योग से सौरमासों का परिज्ञान लिखे पढ़ों में होसकता है, परन्तु अशिक्षितों में इन शब्दों के योग से भी गड़बड़ होसकती है। अर्थात् अशिक्षितों में इन शब्दों के योग से भी सौरमासों के वैशाख ज्यैष्ठादि नाम विभ्रान्तिमूलक ही रहेंगे। अतएव ऐसी शैली ग्रहण करनी चाहिये कि जिससे आबाल वृद्ध—बनिता सब ही समझ सकें तथा इन्हें भ्रम भी किसी प्रकार का न हो

सौरमासों का प्रचार वङ्गदेश, आसाम, उड़ीसा तथा पंजाब में होते दिखाई देता है। बङ्गाल और आसाम में सौरमासों के नाम वैशाख ज्यैष्ठादि के क्रम से ही हैं, परन्तु उड़ीसा में सौरमासों के नाम १२ राशियों के नाम से हैं, अर्थात् वैशाख ज्यैष्ठादि के स्थान पर मेष वृष, मिथुन इत्यादि नाम हैं। पंजाब की रीति इन तीनों से न्यारी है, वहाँ राशि और नक्षत्र इन दोनों के युग्म नामों से सौरमासों के नाम रक्खे गये हैं। अर्थात् वैशाख ज्येष्ठादि के स्थान पर मेष वैशाख वृष ज्येष्ठ आदि नाम प्रचलित हैं।

यदि उड़ीसा में प्रचलित रीति के अनुसार केवल राशियों के नामों से सौरमासों के नाम रक्खे जाएं तो सर्वसाधारण की दृष्टि में वे नाम सम्पूर्ण नवीन जचेंगे और वे उनको आयत्त भी शीघ्र नहीं समझ सकेंगे। इस हेतु पंजाब में प्रचलित राशि और

नक्षत्रों के युग्म नामों से सौरमासों के नाम होना ही युक्तिसिद्ध है और ये नाम सर्वसाधारण के समझ में भी शीघ्र आ सकते हैं तथा चान्द्रमासों के नामों से भी पृथक समझे जा सकते हैं। अतः सौरमासों के नाम निम्न लिखितानुसार होने चाहियें जैसे—

(१)—मेष—वैशाख। (२)—वृष-ज्येष्ठ। (३)—मिथुनाषाढ़। (४)—कर्क—श्रावण।। (५)—सिंह—भाद्र। (६)—कन्याश्विन। (७)—तुला—कार्त्तिका। (८)—वृश्चिकाग्रहायण। (९)-धनु-पौष। (१०)—मकर—माघ। (११)—कुम्भ—फाल्गुन। (१२—मीन चैत्र।

अब रहा सन पर विचार कि ऐसा सन् प्रचलन करना चाहिये जोकि सौर वत्सर के साथ सम्बन्ध रखता हो अर्थात् मेष वैशाख की पहली मिति से प्रारम्भ होकर मीन चैत्र की संक्रान्ति को समाप्त होता हो। भारतवर्ष में दो प्रकार के सौरसन प्रचलित है, एक शकाब्द और दूसरा वङ्गाब्द। परन्तु इन दोनों के ही सृष्टिकर्ता म्लेच्छ हैं। कलकत्ता से प्रकाशित संस्कृत का वृहदभिधान शब्द कल्प द्रुम में "शक" शब्द के वारे में यों लिखा है कि—

"शकः—( पु० )—जाति भेदः। नृप भेदः। इति मेदिनि।

सच नृपः शकादित्य इति शालि वाहन इति च ख्यातः, तस्य मरण दिनावधि वत्सरगणनाङ्कः शकाद्धेति नाम्ना पञ्जिकायां लिख्यते। सच जाति भेदः म्लेच्छ जाति विशेषः,

"शक" शब्द उपर्युक्त के अर्थ से यह सिद्ध होता है कि पूर्व काल में भारतवर्ष में "शक" नामक म्लेच्छ जाति में उत्पन्न शालि वाहन नाम के एक राजा हुए थे उनकी मृत्यु के समय से ही शकाब्द प्रारम्भ हुआ था, और इस शकाब्द का प्रचलन पञ्चाङ्गों में होते दिखाई देता है।

"शक" नामक म्लेच्छ जाति कोई थी, इसका प्रमाण मनुस्मृति में यह मिलता है:—

"शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रिय जातयः।
वृषलत्वं गतालोके ब्राह्मणा दर्शनेन च॥
पौराड्काश्चौएड्द्रविड़ाः काम्बोजा यवनाः शकाः।

पारदाः पह्लवाश्चीनाः किराता दरदाः खशाः ॥
मुख बाहूरूपज्जानां या लोके जातयो वहिः ।
म्लेच्छ वाचश्चार्य्य वाचाः सर्वंते दस्यवः स्मृताः ॥"

ये सब क्षत्रियों की जातियां क्रमशः क्रिया लोप तथा ब्राह्मणों के अदर्शन के हेतु वृषलत्व को प्राप्त हुई हैं। मुखज, बाहुज, ऊरुज, और पज्जों को छोड़कर पौण्ड्रक, चौण्ड्, द्रविड़, कम्बोज, यवन, शक, पारद, पह्लव, चीन, किरात, दरद, औ खश आदि जातियां चाहे म्लेच्छ भाषी हों अथवा आर्य्य भाषी ये सब दस्युओं में परिगणित हैं।

उपर्युक्त प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि "शक" नामक एक म्लेच्छ जाति पूर्वकाल में थी। शालि वाहन "शक" वंश में पैदा हुए और सम्भव है कि तातार आदि पश्चिमीय म्लेच्छ देशों से वह अथवा उनके किसी पूर्व पुरुष ने भारत आक्रमण कर इस देशपर अपना अधिकार जमाया था। "शकाब्द" शब्द से भी यह प्रतिपन्न होता है कि "शकों" का अब्द शकाब्द, अर्थात् "शक" नामक म्लेच्छ जाति का अब्द। ईसवी सन् वैदेशिकादि प्रचलन हिन्दुओं में बढ़ने न पावें, इस उद्देश्य से ही यह लेख लिखा गया है। परन्तु उपर्युक्त प्रमाणों से "शकाब्द" भी म्लेच्छ संवत् ठहरता है, और इसके प्रचलन पर भी वही दोष आता दिखाई देता है।

"पंचसिद्धान्तिका" और "सिद्धान्त शिरोमणि" आदि संस्कृत के अर्वाचीन ज्योतिष ग्रन्थों के ग्रन्थकर्तागण अपने अपने ग्रन्थ निर्म्माण के समय का अभिव्यञ्जक विक्रमाब्द को व्यवहार में न लाकर शकाब्द लाये हैं और भारत के अर्वाचीन काल में (तथा आज कल भी) पञ्चाङ्गों में तथा जन्म पत्रियों में भी शकाब्द का प्रचलन है केवल इन्हीं प्रमाणों से ही "शकाब्द" को आर्य्याब्द स्वीकार करना ठीक नहीं। जैसे वर्त्तमान समय में बहुधा संस्कृत तथा भाषा के ग्रन्थ रचयिता अन्ध परम्परा से स्वदेशीय मिति और संवत् का व्यवहार न कर अङ्गरेजी तारीख और ईसवी सन् व्यवहार में लाते हैं ऐसी चाल चलनी देश के लिये हानिकारक है यह बात उनकी समझ में नहीं आती। अनुमान होता है कि ऐसी ही अन्ध परम्परा की रीति उपर्युक्त अर्वाचीन ज्योतिष के ग्रन्था

के निर्माण समय में भी प्रचलित थी क्योंकि हम में जातीयता का विनाश बहुत दिनों से है। अतएव उपर्युक्त कारणों से शकाब्द कर प्रचलन भारत के गौरव का अभिव्यञ्जक न होगा।

उपर्युक्त विवरण से शकाब्द का सार्वजनिक प्रचार विवाद-ग्रस्त प्रतीत होता है। परन्तु विक्रमाब्द में एक झगड़ा दिखाई देता है कि इसका क्रम सौर वत्सर के अनुसार नहीं। अतएव सौर मासों के सहित विक्रमाब्द का सङ्ग ठीक नहीं होगा। बङ्गाल में बङ्गाब्द का प्रचलन है और इसका क्रम भी सौर वत्सर के अनुसार है, परन्तु बङ्गालियो ने यह सन् मुसलमानों के हिजरी सन् से लिया है। अकबर शाह के राजत्व समय में बादशाह ने बङ्गालियों के लिये मुसलमानी हिजरी सन् की प्रारम्भिक वर्ष के १० वर्षों के बाद से बङ्गाब्द की सृष्टि सौर वत्सर के क्रमानुसार करदी थी वही आजकल बङ्गाल में चल रहा है। अतएव बङ्गाब्द भी म्लेच्छ सन् ही है इसके प्रचलन पर भी उपर्युक्त आपत्तियां आ सकतीं हैं।

जैसे अकबर शाहने बङ्गालियों के लिये हिजरी सन् का क्रम सौर वत्सर के अनुसार चला कर बङ्गाब्द नामक एक नया सन् चलाया था यदि वैसे ही विक्रमाब्द का क्रम सौर वत्सर के अनुसार चलाकर एक नया सौर संवत् चलाया जावे तो बहुत ही अच्छा हो अर्थात् विक्रमाब्द का क्रम चान्द्र वत्सरके अनुसार जैसा चल रहाहै, वैसाही चान्द्र मासों के साथ व्यवहार में आता रहे इसे वैसाही अबाधित रख कर विक्रमाब्द को मेष वैशाख की पहली मिति से प्रारम्भ कर मीन चैत्र की संक्रान्ति में समाप्त करा जावे और इस नये संवत् का नाम सौर विक्रमाब्द अथवा सौर संवत् रख दिया जावे तो यह निर्विवाद होसकता है। सर्व साधारण संवत् शब्द से केवल विक्रमाब्द को ही समझते हैं यदि उपर्युक्त नये संवत् का नाम केवल सौर संवत् हीरक्खा जावे तो लोग केवल इस नाम से ही समझ सकेंगे कि इस नये संवत् की सृष्टि विक्रमाब्द के सौर वत्सर के क्रमानुसार से ही हुई है।

उपसंहार में निवेदन यह है, कि सौरमासों का प्रचलन बङ्गाल आसाम, उड़ीसा, और पंजाब में बहुत दिनोंसे होरहा है, इस हेतु

इन प्रदेशों में अङ्गरेजी सन् और महीनों ने अपना एकाधिपत्य उतना जमा नहीं पाया, कि जितना चान्द्रमासों का प्रचलन विहार, मध्य-प्रदेश और संयुक्तप्रान्त में रहने के कारण ही इन प्रदेशों में अङ्गरेजी सन् और महीनों का प्रचलन दिन परदिन बढ़ रहा है, अतएव यदि इन प्रदेशों में भी सौरमासों के प्रचार करने का यत्न किया जावे, तो अङ्गरेजी महीनों तथा सन का एकाधिपत्य क्रमशः घट सकता है और तब सम्पूर्ण उत्तर भारत में सौरमासोंका एकाधिपत्य होसकता है।

इस वर्ष के प्रारम्भ करने का भार सर्व प्रथम पत्र सम्पादकों तथा विभिन्न संस्थाओं के सञ्चालकों कोलेना उचित है, क्योंकि इन के उद्योग से ही सौरमासों का प्रचार बहुत शीघ्र होसकता है, और क्रमशः व्यवसायी गण भी इनका अनुकरण कर सौरमासों का व्यवहार करने लगेंगे। यदि संस्थाओं के सञ्चालक तथा पत्र सम्पादक यह आशङ्का करें कि इस परिवर्तन से उन्हें आर्थिक हानि पहुंचेगी, सो ठीक नहीं है। क्योंकि सौरमासों की पहली मिति को अङ्गरेजी १३ से १८ तारीख तक होती है। वर्त्तमान वर्ष में प्रत्येक सौरमास में अङ्गरेजी जो जो महीने पड़े हैं, इनका भूत और भविष्य काल के सम्बन्ध में परिवर्तन थोड़ा ही दिखाई देगा इस से एक भी हानि नहीं पहुंच सकती। यद्यपि किसी का जनवरी से नया वर्ष प्रारम्भ होता हो तो यह महीना सौरमास के १५ धनुपौष से १५ मकर माघ तक के लगभग पड़ता है, ऐसी अवस्था में जनवरी के स्थानपर मकर माघ से नया वर्ष प्रारम्भ करना युक्ति सङ्गत होवेगा। ऐसा ही अन्य महीनों के बारे में समझना चाहिये। अयनों के क्रमनुसार से भी सौर वत्सर का प्रारम्भ एक प्रकार होसकता है, क्योंकि उत्तरायण मकर माघ से प्रारम्भ होकर मिथुनाषाढ़ में समाप्त तथा दक्षिणायन कर्क श्रावण से प्रारम्भ होकर धनुपौष में समाप्त होता है। अतएव जनवरी महीने से जिनका नवीन वर्ष प्रारम्भ होता है, वे यदि मकर माघ से प्रारम्भ करें तो यह भी एक प्रकार का सौर वत्सर अयनों के क्रमानुसार माना जा सकता है अब मैं अपने प्रस्ताव को यहीं समाप्त करता हूं कि सुधी मण्डली इस पर मनन करेगी तथा किसी एक पन्थ को अवलम्बन करेगी।

# गुरू गोविन्दसिंह

(पत्र प्रेरकों का सम्पादक उत्तर दाता नहीं है)

[ लेखक अज्ञात ]

इस नाम की दो पुस्तकें अभी मेरे देखने में आई हैं। सिक्खों के अन्तिम गुरु गोविन्दसिंह बड़े वीर होगये हैं। उन्होंने देश और धर्म के निमित्त अनेक असीम कष्ट सहन किये थे, परन्तु वे अपने व्रतसे डिगे नहीं। शोक है अबतक हिन्दी में उनका कोई क्रमबद्ध और श्रङ्खलाबद्ध चरित्र प्रकाशित नहीं हुआ था। हर्ष है अब उनके एकके स्थान में दो चरित्र प्रकाशित हुए हैं। पहला चरित्र बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए० द्वारा सम्पादित मनोरञ्जन पुस्तकमाला की तीसरी पुस्तक है उस के लेखक श्रीयुत् बेणीप्रसाद हैं। काशी की नागरी प्रचारिणी सभा ने प्रकाशितकिया हैं, २४७ पृष्ठ की पुस्तक है, मूल्य एक रुपया है। यह स्वतन्त्र ग्रन्थ है किसीका अनुवाद नहीं। दूसरी पुस्तक बङ्गभाषा का अनुवाद है, स्वतन्त्र नहीं। इस पुस्तक के अनुवादक पं० वृजनन्दन मिश्र और श्री वैद्य पं० रघुनन्दन प्रसाद मिश्र हैं। ब्रह्मप्रेस इटावा में छपी है और उक्त प्रेस ने ही प्रकाशित की है। पुस्तक क्राऊन साईज १३९ पृष्ठ की की है, मूल्य छः आने हैं। इन दोनों पुस्तक के विषय में कौनसी अच्छी है अथवा कौनसी बुरी है। स्वतन्त्र रूप से बिचार करनेका स्थान नही है। बङ्गभाषा से जो पुस्तक ब्रह्मप्रेस इटावा ने प्रकाशित की है। उसमें गुरूगोविन्दसिंहजी की जीवनी की मुख्य घटनाओं का संक्षिप्तमें अच्छा संग्रह कर दिया है। मनोरंजन ग्रन्थमाला से प्रकाशित होने वाले चरित्रके लेखक का कथन है कि वैज्ञानिक और ऐतिहासिक दृष्टि से विचार करके पुस्तक लिखी गई है परन्तु पुस्तक के देखने से ज्ञात होता है कि लेखक अपने कथनानुसार जीवनी नहीं लिख सके हैं। यद्यपि उनहोंने चेष्टा अवश्य की है। पुस्तक पढ़ते समय ज्ञात होता है कि इतिहास नहीं उपन्यास पढ़ रहे हैं। इसमें सन्देह नहीं कि चरित्र ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है लेखक ने पुस्तक लिखने में वहुत परिश्रम किया है। पर गुरुगोविन्द सिंह जी की जीवनी की कितनी ही घटनाएं छोड़दी

गई हैं। कहने को लेखक महाशय ने भूमिका में इस बात पर बल दिया हैं कि धार्मिक विषयों को दूर रखकर ऐतिहासिक चरित्र लिखने चाहिये, परन्तु जहां गुरू गोविन्दसिंह के दो लड़कों के मारे जाने का वर्णन किया गया है, वहां लिखा है कि दोनों भाई ओ३म् ओ३म् का उच्चारण करने लगे। मैंने गुरूगोविन्दसिंह की कई जीवनी पढ़ा हैं, पर किसी पुस्तक में यह नहीं पढ़ा कि गुरूगोविन्द सिंह के लड़के मृत्यु के समय ओ३म् ओ३म् का उच्चारण करते रहे मुझे ओ३म् शब्दसे घृणा नही है, द्वेष नहीं है, परन्तु मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि ऐतिहासिक चरित्रों के लिखने में जहां तक हो चरित्र नायकों के वे ही शब्द आने चाहिये, जो उनके हो अथवा जो उनके चरित्र सम्बन्धी प्रमाणिक ग्रन्थों में हो, शब्दों की भरमार नहीं होनी चाहिये। जब गुरू गोविन्द सिंहजी अपने पुत्रों की मृत्यु के पश्चात् सरहिन्द से होकर सिक्खों के साथ निकले थे, तब उन के साथियोंको बड़ा क्रोध आया वे सरहिन्द को उजाड़ने को तैयार होगये थे तब गुरुने अपने साथियों को समझाया कि समस्त सरहिन्द को नष्ट करने से कुछ लाभ नहीं है निर्दोष बच्चे स्त्रियोंकी हत्या व्यर्थ होगी। जो कोई सिक्ख इधर से उधर निकलें तबदो ईंट शहर में से निकालकर सतलज नदी में फेंक दें और इसको सरहिन्द में कह कर गुरुमार कहे ऐसी कई घटनाएं इस पुस्तक में छोड़ दी गई हैं। परन्तु इसपर भी पुस्तक सुन्दर है, पढ़ने योग्य है। इतिहास और चरित्र के प्रेमियों को संग्रह करनी चाहिये। "मनोरञ्जन ग्रन्थमाला" से हिन्दीसाहित्य में और भी अनेक सुन्दर ग्रन्थों के प्रकाशित होने की आशा है।

---

# पुस्तकों की प्राप्ति स्वीकार।

[ पूर्व प्रकाशित से आगे ]

| पुस्तक का नाम | लेखक | नाम पुस्तक-दाता | मूल्य |
|---|---|---|---|
| २४५ श्रान्त पथिक | पं० श्रीधर पाठक-प्रयाग | पं० श्रीधर पाठक | |
| २४६ एकान्तवासी योगी | " | " | |
| २४७ मनोविनोद-प्रथम भाग | " | " | |
| २४८ मनोविनोद-द्वितीय भाग | " | " | |
| २४९ तृतीय वैद्य-सम्मेलन के सभापति की वक्तृता | कविराज गणनाथ सेन | आयुर्वेद महामण्डल | ॥) |
| २५० भारत में प्लेग | पं० हनुमान शर्मा (जयपुर) | पं० जगन्नाथप्रसादशुक्ल | =) |
| २५१ पुरुषोत्तम चरित्र | पं० जगन्नाथप्रसादशुक्ल | " | -) |
| २५२ शङ्कर चरित्र | " | " | -) |
| २५३ आयुर्वेद का महत्व | " | " | -) |
| २५४ प्राकृत ज्वर | पं० राधावल्लभ वैद्य | " | |
| २५५ दोष विज्ञान | " | " | ≡) |
| २५६ वैद्यक सम्मेलन की रिपोर्ट | पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल | " | =) |
| २५७ भारतीय रसायन शास्त्र | " | " | ॥।) |
| २५८ दीर्घ जीवन | पं० बलदेव प्रसाद शुक्ल | " | ॥) |

# भूलों का सुधार

गत संख्या में परीक्षा की पाठ्य पुस्तकों के विषय में भी कई भूलें रह गयीं जिन्हें पाठक कृपया सुधार लें—

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १७१ | २० | छन्दोवर्णव | छन्दोऽर्णव |
| १७३ | १८ | भौतिकी | भौतिकी (पदार्थ विज्ञान विटप के स्थान में) |
| १७३ | २२ | दिये | दिया |
| १७३ | २३ | जीव वि०" | ——— |
| १७३ | २३ | गये | गया |

## आवश्यकता

सम्मेलन कार्यालय के लिये एक सहकारी मंत्री की आवश्यकता है जो आफ़िसों के काम से भली भांति परिचित हो बही खाते का काम जानता हो, "सम्मेलन पत्रिका" का सम्पादन कर सके और समय समय पर हिन्दी संसार में अपने लेखों और व्याख्यानों द्वारा सम्मेलन का सन्देश पहुँचा सके। वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा। निम्न लिखित पते पर प्रार्थना पत्र भेजना चाहिये।

## अध्यापिका की आवश्यकता है

म्युनिसपिल लोअर प्रैमरी स्कूल के लिये कि जो (यदि मिडिल पास हो तो अच्छी बात है) हिन्दी हिसाब, सीना पिरोना आदि जानती हो। वेतन १०) रु० से २०) रु० तक योग्यतानुसार मिलेगा।

मन्त्री
हिन्दी साहित्य सम्मेलन
प्रयाग।

लीजिये ! खरीदिये !!

# सम्मेलन

के

## कार्य्य विवरण और लेखमाला

# प्रथम वर्ष

का

## कार्य्य विवरण, इसमें उस वर्ष के सभापति माननीय श्री पं० मदनमोहन मालवीय जी

की

## प्रभावशालिनी और ओजस्विनी वक्तृता ।

बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०-प्रोफ़ेसर हेमचन्द्र सरकार एम०-ए० प्रो० पारनकर एम०ए० और बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन एम० ए० एल० एल० बी० आदि विद्वानों की वक्तृताएं अनेक विषयों पर पढ़ने और मनन करने योग्य हैं आरम्भ में ही माननीय मालवीय जी का चित्र है । मूल्य चार आना ।

## प्रथम वर्ष की लेख माला ।

इस में हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक पं० श्याम विहारी मिश्र एम० ए०-पं० शुकदेव बिहारी मिश्र बी० ए०, महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी, पं० गणेशविहारी मिश्र, पं० राधाचरण गोस्वामी राय साहब पं० चन्द्रिकाप्रसाद त्रिपाठी, पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय, पं० माधव शुक्ल, बाबू शारदाचरण मित्र, मुंशी देवी प्रसाद पं० केशव देव शास्त्री प्रभृति विद्वानों के विद्या और मातृभाषा का महत्व, धर्मवीर, वर्त्तमान नागरी अक्षरों की उत्पत्ति, खड़ी बोली की कविता हिन्दी साहित्य व्रजभाषा, दादू दयाल और सुन्दरदास, राष्ट्र भाषा और राष्ट्र लिपि प्रभृति विषयों पर लेख हैं मूल्य ॥।) आना ।

## दूसरे वर्ष का कार्य्य विवरण ।

कौन ऐसा हिन्दी प्रेमी है जो स्वर्गीय पं० बालकृष्ण भट्ट के नाम से परिचित न हो, वे द्वितीय सम्मेलन की स्वागत कारिणी सभा के सभापति थे इस कार्य्य विवरण में उन्हों ने स्वागत कारिणी सभा के सभापति की हैसियत से जो वक्तृता दी थी वह है। भट्टजी की वक्तृता में हिन्दी साहित्य के जानने योग्य बहुत सी बातें हैं। द्वितीय सम्मेलन के सभापति श्रीयुक्त पं० गोविन्दनारायण मिश्र की विद्वत्ता पूर्ण वक्तृता भी है। इसके अतिरिक्त श्रीयुक्त सत्यदेव जी पं० बदरी नारायण चौधरी पं० अमृत लाल चक्रवर्त्ती आदि विद्वानों के अनेक प्रस्तावों पर छोटे छोटे सुन्दर भाषण हैं। मूल्य चार आने।

## लेख माला।

द्वितीय वर्ष की लेख माला में बड़े बड़े सुन्दर, ज्ञातव्य पूर्ण लेख हैं। पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी, बाबू मैथली शरण गुप्त पं० सत्य नारायण शर्मा, पं० माधव शुक्ल पं० लोचन प्रसाद पाण्डेय आदि की प्रारम्भ में कवितायें हैं। पं० गौरी शङ्कर हीराचन्द्र ओझा मुं० देवी प्रसाद मुन्सिफ प० गणेश विहारी मिश्र पं० श्यामविहारी मिश्र पं० शुकदेव बिहारी मिश्र ला० भगवानदीन पं० मन्नन द्विवेदी बी० ए० बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए० के खोज और इतिहास सम्बन्धी निबन्ध हैं। हिन्दी की सामयिक अवस्था पर पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी साहित्याचार्य पं० रामावतार शर्मा एम० ए०, पं० सकल नारायण पाण्डेय पं० बदरी नाथ भट्ट बी० ए० प्रभृति विद्वानों के पढ़ने योग्य लेख हैं। इनके अतिरिक्त और भी अनेक विद्वानों के व्याकरण नाटक आदि विषयों पर लेख हैं। मूल्य केवल एक रुपया।

## तृतीय वर्ष का कार्य विवरण।

इस में स्वागतकारिणी सभा के सभापति की वक्तृता और सम्मेलन के सभापति पं० बदरी नारायण चौधरी की सारगर्भित अनेक विषयोंसे पूर्ण वक्तृता साहित्य सम्बन्धिनी है। इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध वक्ता बाबू विपिनी चन्द्र पाल बाबू पचकौड़ी बनर्जी बाबू

शिवप्रसाद गुप्त श्रीयुक्त सत्यदेवआदि की ओजस्विनी वक्तृताएं हैं। मूल्य ।=) छः आने।

## लेख माला।

पं० गणेशविहारी मिश्र पं० श्यामबिहारी मिश्र पं० शुकदेव बिहारी मिश्र पं० जीवानन्द शर्मा काव्यतीर्थ बा० राधामोहन गोकुल जी बा० गोपालराम साहित्याचार्य पं० रामावतार शर्मा एम० ए० आदि के इतिहास कविता खोज और साहित्य पर विद्वत्ता पूर्ण लेख हैं। मूल्य बारह आने।

## एक और लाभ।

"सम्मेलन-पत्रिका" के ग्राहकों को तीन चौथाई कम मूल्य पर मिलेंगे। "पत्रिका" के ग्राहकों को साहित्य समिति में अपनी सम्मति भेजने का अधिकार होगा। वार्षिक मूल्य एक रुपया।

निवेदक

मन्त्री

**हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।**

---

## तरङ्गिणी

विदित हो कि आगामी ज्येष्ठ शुक्ला दशमी को एक नवीन मासिक पत्र काशी से प्रकाशित होने वाला है इसका नाम "तरङ्गिणी" होगा और प्रति मास आठ फार्मों की पुस्तक ग्राहकों की सेवा में भेजी जाया करेगी। इसमें समयोपयोगी प्रायः सभी विषयों पर साहित्य पूर्ण लेख छपा करेंगे। आरम्भ में एक दर्शनीय चित्र रंगीन होगा तथा ३ हाफ टोन फोटो रहा करेंगे। कागज, छपाई, आकार प्रकार में यह "सरस्वती" के समान होगा। इसका वार्षिक मूल्य ३) रु० रक्खा गया है, किन्तु जो महाशय गङ्गा दशहरा तक आर्डर भेज कर ग्राहक श्रेणी में अपना नाम लिखावेंगे उनसे इस वर्ष केवल २।) रुपया मात्र लिया जावेगा।

मेनेजर

**तरङ्गणी-कार्य्यालय**

**काशी**

# "नवजीवन"।

## राष्ट्रभाषा हिन्दीका प्रसिद्ध सचित्रमासिक पत्र

**क्या** आपको मालूम है कि स्वदेश और स्वधर्म के प्रति आपके क्या कर्त्तव्य है!

**क्या** आप भारत में एक राष्ट्रीयता के प्रचार के इच्छुक हैं?

**क्या** आप राष्ट्रीय, धार्मिक और सामाजिक उन्नति के उपायों पर देशके प्रसिद्ध महानुभावों के विचार जानना चाहते हैं?

## यदि हां, तो।

आजही राष्ट्र सेवक **"नवजीवन"** के ग्राहक बनजाइये।

**"नवजीवन** राष्ट्रीयता के प्रत्येक अंगपर निर्भीकता के साथ आलोचना और गवेषणा पूर्ण लेख मार्मिक टिप्पणियां, नवजीवन संचारक कवितायें आदि आदि विषय सुनाकर सच्चे सुखों का आस्वादन करावेगा।

## "नवजीवन"

देशकी कठिन किन्तु अत्यावश्यकीय समस्याओं की पूर्ति कर हिन्दी भाषा और धार्मिक संसार में **युगान्तर** स्थापित करेगा।

बिना संकोच शीघ्रही ग्राहक बनिये मूल्य कुछ नहीं केवल ३) वार्षिक अग्रिम। एक प्रति **नमूने** के लिये ।)॥ के टिकट भेजिये।

व्यवस्थापक **"नवजीवन"**

सरस्वती सदन

केम्प **इन्दौर** C. I.)

पत्र के ग्राहक बनजाइये । लेख, कागज, छपाई प्रभृतिके सामने वार्षिक मूल्य कुछभी नहीं है। नमूना मुफ़ भेजा जाता है वर्ष आरम्भ जनवरी से होता है।

सम्पादक वैद्य जटाशङ्कर लीलाधर त्रिवेदी,
अहमदाबाद गुजरात,

---

# "हिन्दी-सर्वस्व"

## हिन्दीभाषा का एकमात्र सर्वोपयोगी मासिक-पत्र

यदि आप हिन्दी प्रेमी हैं तो इसे मंगाकर अवश्य पढ़िये। यदि प्रसिद्ध विद्वान्-लेखकों के लेखों का आनन्द लूटना है तो इसे अवश्य पढ़िये। यदि आपको उपन्यास, गल्प, प्रहसन, नाटक, विनोद, विदूषक विज्ञान, इतिहास इत्यादि उत्तमोत्तम शिक्षाप्रद लेखों को पढ़ना है तो इसे अवश्य पढ़िये। विशेष क्या? यदि आप का थोड़ा सा भी प्रेम हिन्दी-भाषा से है तो इसे अवश्य पढ़िये।

इसकी प्रशंसा हिन्दी के प्रायः समस्त पत्रों ने तथा प्रसिद्ध २ पुरुषों ने की है।

क्या आप हिन्दी भाषा के ऐसे उपयोगी पत्र के लिये वर्ष भर में डेढ़ रुपया १॥) रु० भी नहीं दे सकेंगे? तिस पर भी यह मालवे से निकलने वाला इकलौता हिन्दी-मासिक पत्र है। विद्यार्थी-धनी निर्धनी सभी के सुभीते के लिये इसका वार्षिक मूल्य केवल १॥) ही रक्खा गया है नमूना पत्र आने पर मुफ़्त दिया जाता है।

निवेदक

**पं० गणेशदत्त शर्मा वैदिक "इन्द्र"**

सम्पादक "हिन्दी सर्वस्व"
आगर (मालवा)
Gwaliar state

# "सम्मेलन पत्रिका" के नियम ।

१—"सम्मेलन पत्रिका" हिन्दी साहित्य-सम्मेलन कार्य्यालय, प्रयाग से प्रतिमास प्रकाशित होगी ।

२—इसका वार्षिक मूल्य १) रु० इसलिये रक्खा गया है कि सर्वसाधारण इसके ग्राहक हो सकें ।

३—इस समय इसमें प्रतिमास कुल २४ पृष्ठ ही रहा करेंगे । परन्तु आवश्यकता होने पर कभी कभी पृष्ठ संख्या बढ़ा भी दी जाया करेगी । आगे चलकर यदि इसकी सेवा साहित्य सेवियों को रुचिकर हो, और इसके ग्राहकों की यथोचित संख्या हो जाय तो यही पत्रिका अधिकतर पृष्ठ-संख्याओं में और अधिकतर उन्नत दशा में प्रकाशित की जायगी ।

४—इसके प्रबन्ध-विभाग के पत्र—ग्राहक बनने के लिये आवेदन विज्ञापन-संबन्धी पत्र, मनीआर्डर इत्यादि—मन्त्री, साहित्य-सम्मेलन कार्य्यालय, ज्ञानसेनगंज प्रयाग, के नाम भेजे जाने चाहियें ।

५—सम्पादक के नामकी चिट्ठियां, बदले के समाचार-पत्रादि समालोचना की पुस्तकें, पत्रिका में प्रकाशित होने के लिये लेखादि भी ऊपर ही के पते से भेजे जाने चाहियें ।

# विज्ञापनदाताओं के लिये नियम।

१—सम्मेलनपत्रिका में अश्लील विज्ञापनों को स्थान नहीं मिलेगा।

२—विज्ञापन साधारणतः पूरे और आधे पृष्ठ से कम स्थान के लिये स्वीकृत न होंगे।

१—पृष्ठ का मासिक मूल्य ... ४॥) होगा

२—आधे पृष्ठ का ... २॥) होगा

३—जो लोग १२ संख्याओं में सविज्ञापन छपवाने का मूल्य एक साथ भेज देंगे उनका विज्ञापन एक संख्या में बिना मूल्य छाप दिया जायगा, अर्थात् १२ की जगह १३ बार उनका विज्ञापन छापा जायगा।

४—किसी दशा में पेशगी मूल्य बिना मिले कोई भी विज्ञापन नहीं छापा जायगा।

५—विक्रयार्थ पुस्तकों के विज्ञापनों पर ऊपर दिये हुए मूल्य से कम मूल्य न लिया जायगा।

१ पृष्ठ का मूल्य १ मास के लिये ३॥) और
आधे " " २) होगा।

६—अदालतों में लेखकों की नौकरी, अध्यापक अध्यापकाओं की नौकरी इत्यादि हिन्दी प्रचारार्थ नौकरियों के विज्ञापन एक बार बिना मूल्य छाप दिये जायंगे। दूसरी बार और अधिक बार के लिये ऐसे विज्ञापनो का मूल्य केवल १) प्रतिमास होगा। विज्ञापन ८ पंक्तियों से अधिक न हो।

मन्त्री, हि० सा० स० कार्य्यालय, प्रयाग।

---

पण्डित ओंकारनाथ वाजपेयी के प्रबन्ध से ओंकार प्रेस प्रयाग में छपा।

Reg. No. A629.

# सम्मेलन-पत्रिका

## हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

की

## मुखपत्रिका ।

भाग २ | वैशाख संवत् १९७२ | अङ्क ८

### विषय सूची



वार्षिक मूल्य १) ] [ एक संख्या =)

हिन्दी साहित्य सम्मेलन से बाबू नरेन्द्र नारायण सिंह द्वारा प्रकाशित ।

# सम्मेलन के उद्देश्य

(१) हिन्दी साहित्य के अङ्गों की उन्नति का प्रयत्न करना।

(२) देवनागरी लिपि का देश भर में प्रचार करना और देश व्यापी व्यवहारों कार्यों के सुलभ करने के लिये हिन्दी भाषा को राष्ट्र भाषा बनाने का प्रयत्न करना।

(३) हिन्दी को सुगम, मनोरम और लाभदायक बनाने के लिये समय समय पर उसकी शैली के संशोधन और उसकी त्रुटियों और अभावों के दूर करने का प्रयत्न करना।

(४) सरकार, देशीराज्यों, पाठशालाओं, कालेजों, विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थाओं, समाजों, जन समूहों तथा व्यापार, ज़मींदार और अदालतों के कार्य्यों में देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा के प्रचार का उद्योग करते रहना।

(५) हिन्दी के ग्रन्थकारों, लेखकों, पत्रसंपादकों, प्रचारकों और सहायकों को समय समय पर उत्साहित करने के लिये पारितोषिक, प्रशंसापत्र, पदक, उपाधि आदि से सम्मानित करना।

(६) उच्च शिक्षा प्राप्त युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने के लिने प्रयत्न करना।

(७) जहां आवश्यकता समझी जाय वहां पाठशाला, समिति तथा पुस्तकालय स्थापित करने और कराने का उद्योग करना तथा इस प्रकार की वर्त्तमान संस्थाओं की सहायता करना।

(८) हिन्दी साहित्य के विद्वानों को तैयार करने के लिए हिन्दी की उच्च परीक्षाए लेने का प्रबन्ध करना।

(९) हिन्दी भाषा के साहित्य की वृद्धि के लिए उपयोगी पुस्तकें तैय्यार करना।

(१०) हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के उद्देश्यों की सिद्धि और सफलता के लिए अन्य जो उपाय आवश्यक और उपयुक्त समझे जायँ उन्हें काम में लाना।

---

# सम्मेलन-पत्रिका का उद्देश्य

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता करना और साहित्य-प्रेमियों से इसी के लिए उपदेश लेना।

# सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति
की ओर से प्रतिमास प्रकाशित।

भाग २ | वैशाख संवत् १९७२ | अङ्क ८


## हिन्दी संसार

### युद्ध में हिन्दी

युरोप में जो महाभारत हो रहा है, उसमें हिन्दी को भी स्थान मिला है। यों तो भारत वर्ष में युद्ध के कारण हिन्दी के दैनिक पत्र निकले हैं, तथा युद्ध सम्बन्धी कितनी ही पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं; सरकार ने भी प्रेस ब्यूरोंद्वारा समर समाचार हिन्दी में प्रकाशित कराके सर्वसाधारण के कुतूहल शान्ति की चेष्टा की है, परन्तु आज पाठकों का ध्यान लण्डन से जो "युद्ध—समाचार" प्रकाशित होने लगा है, उसकी ओर आकर्षित करना चाहते हैं। —"अखबार-ए० जङ्ग"—१६ डेविल शायर एसक्वायर लण्डन से यह "युद्ध समाचार" निकलता है। मोटे कागज़ पर लिथोमें छपता है। पर इसकी भाषा अच्छी नहीं होती उसमें अनेक अशुद्धियां रहती हैं नीचे नमूना दिया जाता है:—

यह समाचार पत्र वर्त्तमान संग्राम में जो ब्रीटीश सैन्य शांमिल है उमको अपने घर की खबर पहुंचाने के लिये श्रीमत सरकार की "इण्डिया आफीस के आश्रय में हर सप्ताह मैं दो दफे" "इन्डिया मेन" की आफिस प्रसीद्ध करती है जहां तक युद्ध कायम रहेगा, वहां तक इस पत्र प्रसीद्ध होने वाला है। हिन्दुस्तानके रहने वालों

को यह पत्रसे अपने देशको सब कुछ खबर मिलजायगी। रण संग्राम के विध २ भागों में क्या हो रहा है वह बात भी इथर ही दी जायगी। ब्रीटीश फौज के कोई अफसर या सिपाही अपना अनुभव कीसी दूसरी बिना जो की प्रसीद्ध करने लायक हो हमारी तरफ लिख भेजेगा, हम बहुत एशानमंद होंगी"

खिचड़ी भाषा और अशुद्ध हिज्जे होने पर भी, शुद्ध हिन्दी शब्दों का बहिष्कार नहीं होने पाया है।—हिन्दी को जो मुर्दा भाषा कहते हैं, क्या उनकी आंखें इस "युद्ध समाचार" को पढ़ कर भी नहीं खुलेंगी?—सम्मेलन-कार्य्यालय में "युद्ध-समाचार" की एक प्रति भेजने के लिये, हम सुप्रसिद्ध हिन्दी लखक, डाक्टर महेन्द्र लाल गर्ग को बहुत बहुत धन्यवाद देते हैं।

---

## डी० ए० वी० हाइस्कूल।

यह सभी जानते हैं कि आर्यसमाजके द्वारा हिन्दीका अच्छा प्रचार हुआ है। आर्यसमाजके प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती, हिन्दी के इतने प्रेमी थे कि उन्होंने गुजराती होने पर भी, अपनी मातृभाषा गुर्जर होने पर भी, हिन्दी मेंही अपने सब ग्रन्थ लिखे थे। पर हमको लाहोरके सहयोगी "प्रभात" में अजमेर निवासीकी निम्न चिट्ठी पढ़ कर अत्यन्त खेद हुआ। चिट्ठी यह है:—

"इन्स्पेक्टर आफ़ स्कूल्स अजमेर मेरवाड़ा की ओर से श्रीमद् दयानन्द स्कूलके मुख्याधिष्ठाताको एक पत्र द्वारा यह सूचना दी गई है कि हिन्दा उर्दू दोनों में से एकको अपने विद्यालयमें स्थान दिया जाना चाहिये, दोनों को नहीं, इस का विचार स्कूल कमेटी द्वारा किया जाने को है। देखें स्कूल कमेटी अपनी मातृभाषाको अपनाती है या यावनी भाषा को! किन्तु ऐसा सुना जाता है कि मुख्याधिष्ठाता साहब उर्दू प्रेमी हैं, क्योंकि आप उर्दू को स्थान देने में अपना कर्त्तव्य पालन कर रहे हैं। इस कारण आप को डी० ए० वी० कालेज लाहोर से शिक्षा ग्रहण करना चाहिये"। यदि यह बात सत्य

है तो दुःखका विषय है, अजमेर के दयानन्द एङ्गलो वैदिक हाईस्कूल के कार्य्य कर्त्ताओं के संवाद दाता के शब्दों में लाहार के डी० ए० वी० कालेज के कार्य्यसञ्चारकों से अवश्य शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये, क्योंकि अजमेर में हिन्दी प्रचार उतना कठिन नहीं है, जितना लाहोर में है। यदि सहयोगी "प्रभात" के संवाददाता के कहने के अनुसार अजमेर डी० ए० वी० हाईस्कूल के कार्य्यकर्त्ताओं ने कार्य्य किया तो बहुत बुरा होगा, डी० ए० वी० स्कूलजो एक पवित्रात्माका स्मारक है, उसमें ऐसाकरना उस पवित्रात्मा के उद्देश्य कोही नष्ट करना नहीं है प्रत्युत उस पवित्रात्मा के प्रति विश्वासघात करना है।

## सहायोगियें का स्वागत

यह निश्चित हो चुका है कि विहार प्रान्त की भाषा हिन्दी है, इस महीने में वहां के दो मासिकपत्रों के दर्शन हुए हैं। हम इन नवीन सहयोगियों का हृदय से स्वागत करते हैं। बांकीपुर के खड्ग विलास प्रेस से 'हरिश्चन्द्र-कला" बड़ी सज धज से निकली है। उक्त प्रेस के अध्यक्ष स्वर्गीय बाबू रामदीन सिंह ने लग भग २८ वर्ष हुए भारतेन्दु जी के स्मारक में उक्त पत्रिका निकाली थी, तब से यह "पत्रिका" समय समय पर प्रकाशित होती रही है, परअब बाबू नरेन्द्र नारायणसिंह की सम्पादकता में नये रूप, नये आकार से प्रकाशित होने लगी है। सम्पादक का परिश्रम सराहनीय है, अनेक लेख और कविताओं के अतिरिक्त-साहित्याचर्य्य पं० चन्द्रशेखर शास्त्री कृत, कौटिल्य के अर्थशास्त्र का अनुवाद अच्छा प्रकाशित हो रहा है। वार्षिक मूल्य तीनरुपये है।

मुजफ्फरपुर के हिन्दी साहित्य रत्नाकर कार्य्यालय से "सतयुग" को पाकर भी हम बड़े आनन्दित हुए हैं। "सतयुग" के प्रथम अङ्क के देखने सेही प्रतीत होता है कि यह होनहार है। श्रीयुत राधाकृष्ण एम० ए०, बाबू राधामोहन गोकुल जी, पं० रामशरण उपाध्याय बी० ए० और रामावतार शर्म्मा एम० ए० आदि के विविध विषयों पर लेख और कविताएं हैं। इस पत्र का

वार्षिक मूल्य तीन रुपये हैं। आशा है हिन्दी प्रेमियों की सहायता से "सतयुग", सतयुग उपस्थित करने में सफलता प्राप्त करेगा।

## "भारत गीताञ्जलि"

हमारे प्रिय मित्र पं० माधवशुक्ल का नाम हिन्दी प्रेमियों से छिपा हुआ नहीं है। स्थान स्थान पर शुक्ल जी की कविताओं को गान का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आप राष्ट्रीय गीतों के लिखने में सिद्ध-हस्त हैं। आप की कविता सर्वसाधारण को कितनी प्रिय होती है, इसका उदाहरण यह है कि आप की पुस्तकों का दूसरा संस्करण बहुत जल्दी कुछ महीनों में ही होगया है। पुस्तक में कितने ही राष्ट्रीय गीतों का समा वेश किया गया है, हम अपने पाठकों से इस पुस्तक को अपने पास रखने का अनुरोध करते हैं।

## प्रान्तिक कान्फरेंस में हिन्दी।

पिछली ईष्टर की छुट्टियों में गोरखपुर में बहुत सी कान्फरेन्सों की पहले पहल हुई थी। साथ ही हिन्दी कान्फरेंस की भी बैठक हुई थी जिसके विषय में अन्यत्र लिखा गया है। हिन्दी कान्फरेन्स के सम्बन्ध में सहयोगी "प्रताप" कहता है कि "चिराग़ तले अन्धेरा" वाली कहावत चरितार्थ हुई है। क्योंकि सहयोगी का कथन है कि प्रान्तिक हिन्दी कान्फरेन्स अन्य कार्य्य छोड़कर—यदि प्रान्तिक राजनैतिक कान्फरेन्स में हिन्दी की चर्चा कराती तो बहुत भारी काम करने में समर्थ होती। कहना तो सहयोगी का ठीक है, परन्तु शायद "प्रताप" को ज्ञात नहीं है अथवा उसके संवाद दाता ने उसको यह समाचार नहीं भेजा है कि प्रान्तिक हिन्दी कान्फरेंस में प्रान्तिक राजनैतिक कान्फरेंस में हिन्दी को स्थान दिलाने की चर्चा हुई थी परन्तु सभापति जी ने यह आज्ञा करके इस विषय को स्थगित कर दिया था कि आज ही मैं एक प्रस्ताव पर हिन्दी बोला था तब श्रीमती एनी बिसेएट ने कहा था "हम नहीं जानतीं कि आपने किस भाषा में भाषण किया है, हमें जब तक सभानेत्री का कार्य करना है, तब तक कृपया अङ्गरेजी में ही सभा की कार्य्य वाही कीजिये"। सभानेत्री जी के इस कथन पर सब लोग शान्त हो गये।

# प्रथम हिन्दी कान्फरेंस

हर्ष है कि अब चारों ओर से विविध प्रकार से हिन्दी की उन्नति के निमित्त उद्योग हो रहे हैं। जब से हिन्दी साहित्य सम्मेलन स्थापित हुआ है, तब से हिन्दी प्रेमियों में नवीन स्फूर्त्ति, नवीन जागृति हुई है। अनेक स्थानों में हिन्दी प्रचार के लिये सभाएं स्थापित हुई हैं। सर्वसाधारण का ध्यान अपनी मातृ-भाषा, अपनी भावीराष्ट्र भाषा को उन्नतावस्था में लाने के लिये विशेष रूप से हो गया है। इस उत्साह, और जागृति का ही फल गोरखपुर की प्रथम हिन्दी कान्फरेंस थी।

दिसम्बर का अन्तिम सप्ताह सभा, सोसाईटियों के लिये विख्यात हो गया है। अनेक सभाएं अपने अधिवेशन दिसंबर के अन्तिम सप्ताह में ही करती हैं, परन्तु पिछले कुछ वर्षों से एप्रिल मास की ईस्टर की छुट्टियों में भी सभाओं की खूब धूम धाम होती है। गोरखपुर में बहुत सी सभाओं की चहल पहल थी। राजनैतिक प्रान्तिक कान्फरेंस, प्रान्तिक समाजिक कान्फरेंस, औद्योगिक कान्फरेंस आदि सभाएं गोरखपुर में हुई थीं। इन सभाओं के साथ ही साथ इस बार हमारे गोरखपुर के भाइयों के प्रयत्न से एक और प्रान्तिक सभा की नींव पड़ी और यह सभा ही प्रथम प्रान्तिक हिन्दी कान्फरेंस थी। वास्तव में गोरखपुर के हिन्दी प्रेमियों का उत्साह प्रसंसनीय था, और उद्योग सराहनीय था। यहाँ के निवासियों ने कान्फरेंस की सफलता के लिये अत्यन्त परिश्रम किया था और यह लिखते हुए हमें आनन्द होता है कि के हिन्दी प्रेमियों को अपने परिश्रम में अच्छी सफलता प्राप्त हुई।

प्रान्तिक प्रथम हिन्दी कान्फरेंस का अधिवेशन—गोरखपुर में वैशाख कृष्ण २ सं० १९७२ तदनुसार २एप्रिल सन् १९१५ को वहांके अलीनगर मुहल्ले में, श्रीयुत गिरधारी लाल वकील के विशाल भवन के अहाते में हुआ था। शहर तथा गोरखपुर विभाग के गए हुए मान्य सज्जनों के अतिरिक्त बाहर से भी कुछ हिन्दी प्रेमी पहुंचे थे, काशीसे बाबू गौरीशंकर प्रसाद–वकील राम कृष्ण ओ-बाबू

भगवानदीन जी और बाबू जगमोहन वर्मा ; प्रयाग से बा० भगवान दास हालना और बाबू रुद्रनारायण ; लखनऊ से बाबू पुत्तन लाल विद्यार्थी ; कानपुर से सभापति जी के अतिरिक्त पं० देवी प्रसाद शुक्ल और हरनारायण निगम ; लखीमपुर खेरी से पं० सूर्य्यनारायण दीक्षित बाँकीपुर से पं० रामदहिन मिश्र आदि सज्जनों ने सम्मिलित होकर कान्फरेंस की शोभा बढ़ाई थी। हिन्दी प्रेमियों के अतिरिक्त राजनैतिक प्रान्तिक कान्फरेंस की सभा नेत्री श्रीमती एनी बिसेन्ट, मिस्टर सच्चिदानन्द सिंह, डाक्टर तेजबहादुर सप्रू, बाबू ईश्वरशरण सिंह—सभा में पधार ने की कृपा की थी। सभापति थे कानपुर के प्रसिद्ध वकील और साहित्यसेवी राय देवीप्रसाद जी, सभा का कार्य्य आरम्भ लगभग चार बजे से हुआ। स्वागत कारिणी सभा के सभापति बाबू महावीर प्रसाद अग्रवाल का स्वागत सम्बन्धी भाषण हुआ। भाषण में हिन्दी की उन्नति के सम्बन्ध में अनेक बातें कही गईं फिर कई सज्जनों के प्रस्ताव, अनुमोदन और समर्थन करने पर राय देवी प्रसाद पूर्ण ने सभापति का आसन ग्रहण किया। यहां पर एक बात लिखने से रह गई कि सभापति के प्रस्ताव को अनुमोदन करते समय हमारे प्रिय मित्र पं० मन्नन द्विवेदी गजपुरी ने हिन्दी के सम्बन्ध में अपनी रची हुई कविता पढ़ी थी।

सभापति का व्याख्यान कैसा था, इस विषय में हम इतना ही कहना चाहते है कि जिन हिन्दी प्रेमियों ने इस बार लखनऊ के सम्मेलन में राय साहब की वक्तृता सुनी थी वे स्वयं ही अनुमान कर लें कि राय साहब की वक्तृता कैसी थी साहित्य के मर्म्मज्ञों के लिये इस वक्तृता में जानने विचारने और मनन करने योग्य अनेक विषय थे। सभापति का भाषण लगभग तीन घंटे हुआ था। पहले उन्हों ने मङ्गलाचरण करके यूरोप में जो युद्ध हो रहा है उसकी बात छेड़ते हुये सम्राट की उसमें विजय कामना करते हुये वीर रस के साहित्य पर विशेष बल दिया था उन्हों ने अपने व्याख्यान में कहा था कि शृङ्गार रसकी कविता की

समान ही वीर रस की कविता होनी चाहिये श्रृङ्गार रस की कविता करने वाले जितने नायिका भेद कर गये हैं उनसे ज्यादा वीर रस की कविता में वीरों के भेद होने चाहिये युद्ध-वीर, दान-वीर, शान्त-वीर, दया-वीर, उद्योग-वीर, वचन-वीर, सेवा वीर, सत्य वीर आदि अनेक प्रकार के वीर बतलाये। साहित्य के सम्बन्ध में आपने कहाः—गिरी हुई जाति वा देश को एकबार फिर उन्नति के ऊंचे आसन पर बैठने के लिये उत्साह देना उत्तेजित करना और धीरता पूर्वक उद्योग करना साहित्य का गुण है। सभी प्रकार के सुधार और संशोधन में प्रवृत्त करना साहित्य का गुण है। कुटुम्ब समाज और देश की सेवा के लिये तत्पर कर देना साहित्य का गुण है। धर्म के अभिमुख करना अधर्म से निवृत्त करना मनुष्य कर्त्तव्य को स्मरण कराना संसार मात्र को कुटुम्ब वत् दरसा कर उसको हितकारी बनाना, धन, बल, यश, प्रतिष्ठा प्राप्त कराना कहां तक कहें. मनुष्य जन्म को सफल कराना गिरे हुए जीव को उद्र्ध्व-गामी बनाकर ब्रह्मपद तक पहुंचाना साहित्य ही का गुण है। फिर भला वीरता का प्रकरण इससे बाहर कैसे"? सभापति जी ने वीर रस की कविता के अतिरिक्त—देशी भाषाएं शिक्षा का माध्यम बनाई जांय इस विषय पर भी अपनी वक्तृता में बहुत सी बातें कही थीं। इस विषय में जितनी शङ्काएं की जाती हैं उनका भली भांति समाधान किया था। प्राथमिक शिक्षा की भी आपने आवश्यकता दिखलायी थी। तात्पर्य यह कि सभापति जी का व्याख्यान सर्वाङ्ग पूर्ण था।

सभापति जी के व्याख्यानों के पश्चात् प्रस्तावों की बारी आई। पहले जो दो प्रस्ताव उनमें से एक वर्त्तमान युद्ध के सम्बन्ध में और दूसरा हिन्दी हितैषियों की मृत्यु के सम्बन्ध मे था, सभापति द्वारा उपस्थित किया गया तीसरा प्रस्ताव—देशी भाषाओं द्वारा शिक्षा विषयक था, इसको पं० नन्दकुमार देवशर्म्मा ने उपस्थित किया था, पं० सूर्य्यनारायण दीक्षित और पं० रमाकन्त मालवीय ने इस का अनुवेदन और समर्थन किया था. चौथा प्रस्ताव-अदालतों में हिन्दी के सम्बन्ध में था, इसको काशी के प्रसिद्ध

वकील बाबू गौरी शङ्कर प्रसाद बी० ए० ने उपस्थित किया था। उपस्थित करते समय उन्होंने अदालतों में नागरी प्रचार की अवश्यकता पर युक्ति पूर्ण वक्तृता दी। अपनी वक्तृता में बाबू गौरीशङ्कर प्रसाद जी ने यह एक बड़े मार्के की बात कही कि अदालतों में नागरी के कागज़ पत्र दाखिल करने के लिये वकीलों के अतिरिक्त मुवक्किलों को भी चेष्टा करनी चाहिये। यदि मुवक्किल अदालतों में नागरी में ही कागज़ दाखिल करना चाहें तो लाचार होकर वकीलों को दाखिल करना ही पड़ेगा क्योंकि यह रोटी का सवाल है। वक्ता महाशय ने नवयुवक वकीलों से इस का बीड़ा उठाने के लिये अपील की। गोरखपुर के बा० अभयनन्दन प्रसाद ने उक्त प्रस्ताव का अनुमोदन करते समय गोरखपुर का कुछ अपना अनुभव सुनाया। पांचवा प्रस्ताव प्रचलित शिक्षा प्रणाली में हिन्दी के स्थान के विषय पर था—बाबू चण्डीप्रसादने उपस्थित किया और ज्ञानशक्ति के सम्पादक शिवकुमार जी ने अनुमोदन किया। शेष प्रस्ताव हिन्दू विद्यालय में हिन्दी नागरी प्रचार म्युनिसिपल बोर्डों और डिस्ट्रिक्ट बोर्डों में हिन्दी, नोटों, सिक्कों तथा स्टाम्पों पर हिन्दी आदि सभापति जी द्वारा उपस्थित किये गये और स्वीकृत हुए। नियमावली बनाने के लिये एक कमेटी नियुक्ति हुई। श्रीयुत पं० मनन द्विवेदी गजपुरी बी० ए० ने गोरखपुरी बोली में एक कविता सुनाई, जिसमें देश दशा का अच्छा वर्णन था। पश्चात् सभापति को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई।

एक दर्शक

---

## हि० सा० स० की स्थायी समिति के द्वितीयाधिवेशन का कार्य्य विवरण

स्थाई समिति का द्वितीयाधिवेशन सम्मेलन कार्य्यालय प्रयाग में मिती वैसाख कृष्ण २ सं० १९७२ ( २ अप्रेल १९१५ ) को ५ बजे तीसरे पहर के समय हुआ। निम्न लिखित सदस्य उपस्थित थे—

श्रीयुत पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी
" " रामजी लाल शर्म्मा
" " लक्ष्मी नारायण नागर
श्रीयुत बाबू पुरुषोत्तम दास जी टण्डन।

श्रीयुत बा० रामदास जी गौड़
" " नवाब बहादुर
" " राधामोहन गोकुल जी (कलकत्ता)

१—(क)—सभापति व उपसभापति महोदयों की अनुपस्थिति में, श्रीयुत पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी जी ने सर्व सम्मति से सभापति का आसन ग्रहण किया।

(ख)—प्रधान मन्त्री ने ता० २५ नवम्बर १६१४ अर्थात् मार्गशीर्ष शुक्ला ८ संवत् १६७१ के अधिवेशन का कार्य विवरण (जो किसी अनिवार्य्य कारण से गत बैठक में न उपस्थित हो सका था) पढ़ा और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

(ग)—पुनः प्रधान मन्त्री जी ने पिछलाधिवेशन जो मिती माघ शुक्ला ५ सं० १६७१ को हुआ था उसका कार्य्य विवरण पढ़ कर सुनाया और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

## प्रस्ताव

२—(क) स्थायी समिति के सदस्य श्रीयुत शिवचन्द्र जी भरतिया (इन्दौर) की असामयिक मृत्यु पर शोक प्रकट करती हुई, यह समिति उन के कुटुम्ब के प्रति समवेदना प्रकट करती है।

(ख) निश्चय हुआ कि इनके कुटुम्बियों को समवेदना सूचक पत्र भेजा जाय और स्थायी समिति के रिक्त स्थान पर श्रीयुत पं० गणपति जानकी राम दुबे (ग्वालियर) निर्वाचित किये जाँय।

३—श्रीयुत पं० लक्ष्मीनारायण जी नागर ने आयव्यय का लेखा २६ नवम्बर सन् १६१४ से २८ फ़रवरी सन् १६१५ तक का उपस्थित किया जो सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

४—सम्मेलन के आय व्यय परीक्षक श्रीयुत बाबू गौरीशङ्कर प्रसाद बी०ए०, एल०एल०बी०, का पत्र उपस्थित किया गया जिस में दो विषय विचारार्थ उपस्थित किए गये एक तो वर्ष का आदि और अन्त निश्चय कर देना और दूसरा यह कि "पत्रिका" "परीक्षासमिति" और कार्य्यालय की

तीन पृथक रोकड़ें जो रक्खी जाती हैं न रक्खी जाकर एक ही रोकड़ वही में सब हिसाब रक्खा जाय।

इसपर निश्चय हुआ कि:—

(क) इस समिति के विचार में यही अच्छा है कि सम्मेलन के बैठने के समय उस दिन तक का लेखा उस के समक्ष उपस्थित किया जाय, इस में हानि कुछ नहीं है किन्तु लाभ और सुविधा अधिक है।

(ख) रोकड़ वही एक ही हो, किन्तु पत्रिका और परीक्षा समिति के विभागीय खाते बहियां भी रक्खी जायं जिस से लेखा स्पष्ट रहे।

५—बाबू राधामोहन गोकुलजी ने प्रस्ताव किया कि कार्य्यालय में काम की वृद्धि को देखते एक वैतनिक लेखक बढ़ाये जाने की आवश्यकता प्रतीत होती है अतः १५) २०) मासिक का एक आदमी बढ़ाया जाय। वादानुवाद होने के अनन्तर गोकुल जी ने अपना प्रस्ताव लौटा लिया।

६—नियमावली संशोधन—निश्चय हुआ कि तीन सदस्यों की एक उपसमिति बनाई जाय। जो पूर्ण विचार पूर्वक नियमों का आवश्यक संशोधन कर समिति में उपस्थित करै। तदनुसार निम्न सज्जनों की उपसमिति संगठित की गई।

१ " श्रीयुत पं० श्रीधर जी पाठक संयोजक।
२ " श्री कृष्णजी जोशी।
३ " बा० रामदास जी गौड़।

७—"राम कहानी" पर श्रीयुत पं० श्रीधर जी का पत्र उपस्थित किया गया निश्चय हुआ कि निम्न लिखित सदस्यों की एक उपसमिति बनाई जाय जो सरकारी पाठशालाओं की नियत हिन्दी पाठ्य पुस्तकों को पढ़कर अपनी आलोचनात्मक सम्मति इस समिति में उपस्थित करती रहा करे।

१—श्रीयुत पं० राम जी लाल शर्म्मा संयोजक।
२ " " लक्ष्मीनारायण जी नागर।
३ " " इन्द्र नारायण जी द्विवेदी।

४ श्रीयुत पं० श्रीकृष्ण जी जोशी
५ " " श्रीधर जी पाठक
६ " बा० पुरुषोत्तम दास जी टंडन
७ " " राधा मोहन गोकुल जी

नोट—पुस्तकें सम्मेलन द्वारा संग्रह करके सदस्यों को पहुचाई जावेंगी।

८—काशी के श्रीयुत पं० रामनारायण जी मिश्र का त्याग पत्र उपस्थित किया गया, निश्चय हुआ कि जब पं० जी आग्रह करते हैं तो उनका त्याग पत्र स्वीकृत हो और उनके के स्थान पर कानपुर के श्रीयुत रायदेवी प्रसाद जी (पूर्ण) सदस्य निर्वाचित किये जाँय।

९—श्रीयुत पं० नन्दकुमार देव शर्म्मा का त्याग पत्र उपस्थित किया गया निश्चय हुआ कि इसका निपटारा मंत्री मंडल परछोड़ा जाय वह अपनी सुविधा के अनुसार प्रबन्ध करे।

१०—पं० राजमणि त्रिपाठी के दो पत्र उपस्थित किये गये, निश्चय हुआ कि इस पर कार्य्यालय उचित कार्रवाई करे।

११—बाबू रामदास गौड़ संयोजक परीक्षा समिति ने प्रस्ताव किया कि समिति के लिये ३००) दिये जायं; निश्चय हुआ कि २००) शुल्क की आय के अतिरिक्त परीक्षा समिति के संयोजक को दिये जांय।

१२—आरा के बाबू वृजनन्दन सहाय और छपरा के बाबू मथुरा प्रसाद के पत्र उपस्थित किये गये, जिन में इन्हों ने यह प्रस्ताव किया था कि तृतीय सम्मेलन की लेख माला में पं० जीवानन्द शर्म्मा काव्य तीर्थ लिखित—"वैष्णव धर्म का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव शीर्षक लेख में पृष्ठ २४ की बाईं ओर अन्त की ४ पंक्तियां तथा दाहिनी ओर की पहिली आठवीं और नवीं पक्तियां लेख में से निकाल दी जावे. निश्चय हुआ कि उक्त लेख के आपति जनक शब्दों पर टिप्पणी लगा दीजाँय।

नोट—कार्य्यालय से जो पुस्तकें बाहर जाँय, वह देख ली जाँय कि इस आज्ञा का पालन हुआ है या नहीं।

१३—कलकत्ते के पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी का बंगाल के प्रति

निधियों के सम्बन्ध में पत्र उपस्थित किया गया। निश्चय हुआ कि मंत्री इसका उचित उत्तर दें।

सभापति को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई।

---

## उत्तर भारत में द्रविड़ भाषाओं का प्रभाव

( लेखक—श्रीयुत बाबू गिरिजा कुमार घोष )

आज कल हम लोग तामिल और तेलेगू की भाषाओं को नहीं समझते। परन्तु सम्भव है कि द्रविड़ देश की भाषाओं का प्रभाव कुछ न कुछ उत्तर भारत की भाषाओं पर भी पड़ा होगा। वर्त्तमान भाषा की उत्पत्ति के इतिहास के लिये बंगाल के विद्वान द्रविड़ उपादानों का भी अनुसन्धान कर रहे हैं। और जब उड़ीसा और बंगाल में द्राविड़ी उपादानों का पता चला है, तो क्या आश्चर्य यदि बिहार वा समीपस्थ दूसरे प्रान्तों में भी इनका कुछ न कुछ पता लग जावे। हिन्दी के लिए इसके खोज का उद्योग कौन करेगा ?

तामिल भाषा अब मद्रास नगर और उसके दक्षिण और दक्षिण-पश्चिमी प्रान्त में प्रचलित पाई जाती है। तमलुक एक समय बंगाल के समुद्रतट पर बहुत बड़ा और ऐश्वर्यशाली नगर था। तामिल भाषियों के किसी समय तमलुक में रहने की बात सुनी जाती है। किसी समय अन्ध्रदेश के राजा लोग, सारे भारतवर्ष के राजाधिराज माने जाते थे, और उस समय अवश्य ही सारी प्राचीन आर्य्य भाषा पर आन्ध्र भाषा का प्रभाव पड़ा होगा। इसी बात का, और वर्त्तमान हिन्दी पर आन्ध्र भाषा का कुछ या कहां तक प्रभाव पड़ा होगा इसका भी निर्णय करना भाषातत्वान्वेषियों का कर्त्तव्य है। बहुत से अर्थ शून्य शब्द और स्थानों के नाम पाये जाते हैं, जिनका सम्बन्ध सम्भव है कि खोज करने से अनार्य्य भाषाओं से पाया जावे। आर्य्य अनार्य्य का संघर्ष इस देश में बराबर होता रहा है। कालिदास—वर्णित इन्दुमती के स्वयंवर में द्रविड़कुल से उत्पन्नपाण्डुराज को आर्य्यकुमारी के पाणिग्रहण का उपयोगी बतलाया गया है। संस्कृत में भी विद्वानों ने द्रविड़

शब्दों के प्रवेश के चिन्ह पाये हैं। हिन्दी शब्द "घोड़ा" तेलेगू "गुर्रा-मू" से निकला हुआ जान पड़ता है। घोटक पहले संस्कृत नहीं था। "गुर्रा-मू" गुजरात में "घोड़ो" हुआ। बाबू विजयचन्द्र मजुमदार का कथन है कि "अनार्य तृणमात्रभोजी "घाड़ा" आर्य्य मन्दुरा में आकर अतिरिक्त व्यञ्जन और दाना के बल से 'घोटक' बन गया। वरिशाल में घोड़ा को अब भी गुर्रा कहते हैं"। पंडित वर विजय बाबू की तालिका से हिन्दी भाषा से सम्भवतः सम्बन्ध रखने वाले कुछ शब्द ये हैं :—

| हिन्दी | उड़िया | बङ्गला | तेलेगु | तामिल | |
|---|---|---|---|---|---|
| अकाल | —— | आकाल | —— | आकालि | काल शब्द से दुर्भिक्ष का कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। |
| चिकनी या चिकना | —= | —— | चक्कनी | | |
| बिल्ली | विलेइ | विड़ाल या बेराल | बिल्ली | बुलइ या पुलइ | प्राचीन पाली में वैदिक और प्राचीन संस्कृत का "मार्ज्जार" "विलार' और 'विड़ाल' के रूप में मिलता है। 'विड़ाल' शब्द अर्व्वाचीन संस्कृतही में व्यवहृत हुआ है। |
| —— | —— | —— | वेदुरु | ———— | बेदरू बांस को कहते हैं। इसी के रंग से संस्कृत "वैदुर्य्य" की उत्पत्ति है। |

---

# प्राचीन मुसलमानी बंगला के दृष्टान्त

( ले० श्रीयुत बाबू गिरिजा कुमार घोष )

हिन्दी रसिकों को मालूम होगा कि बंगला साहित्य के भंडार के पुष्ट करने के लिए बंगाल के हिन्दू मुसलमान दोनों सम्प्रदाय के लोग एक मत होकर कार्य कर रहे हैं—आज ही नहीं, बहुत पुराने समय से। वहां उर्दू फ़ारसी का प्रभाव मातृभाषा पर कुछ भी चोट नहीं पहुंचा सका। परन्तु खेद की बात है कि हिन्दी के भाग्य में यह सुख नहीं बदा है। दो एक इने गिने मुसलमान सज्जनों के सिवाय सारी मुसलमान मंडली हिन्दी का परिहार ही करना अच्छा समझती है।

मुसलमानी बंगला के कुछ दृष्टांत हिन्दी पाठकों के विनोद के लिये यहां पर दिये जाते हैं। मतलब आप ही जहां तक हो समझ लिया जावे—

इमाम सागर से—

(१)

अल्ला रसूलेर यदि कृपादृष्टि पानु।
बाङ्गाला हइते इमाम सागर शुनानु॥
शेख नुबाकु अली से विदित संसार।
ताहार तनय शेख फरीद खोन्दकार॥ इत्यादि॥

(२)

आमार आरज एक सभार हुजूरे।
पुस्तके ताकिब हइया निबे सबे सिरे॥
तहकीक करिया सबे सिरे निबे भाइ।
कमी बेसी कर यदि आल्लार दोहाइ॥
हादी से लेखा आछे शुन हो ममिन॥
.........................................

करिनु शायरी पुंथि ( पोथी ) बड़ई मुशकिले।
इमाम सागर नाहिं मिले काकिना संसारे॥
बाङ्गाला जबाने नाजो पुंथि इमामेर।
तादाते करिनू शेखी कर बराबर॥ इत्यादि॥

फतिमार सूरत् नामा नामक पुस्तक से—

आरम्भः—

विस्र् मिल्लाहे रहमानि रहिम।
प्रथमे आल्लार नाम करिये स्वरण।
रसूल चरणे मुइ ( मैं ) मागि निवेदन॥
शुन नर सब आम्हि ( हम ) एक कथा बुली।
जेन फातिमार रूप देखिलेन्त आली॥
एक दिन आली गेल वक्करेर घर।
दरजाते ( द्वार पर) जाइ आली डाके (पुकारे) उश्चस्वर॥
इत्यादि।

स्मरण रहे कि ये दृष्टान्त मुसलमानी धर्म्मग्रन्थों से उद्धृत किये गये हैं। बंगाल के मुसलमान सैकड़ों वर्षों से मातृभाषा बंगला ही में अपने धर्म्म ग्रन्थों तक का अनुवाद करने लगे थे। इसके उपरान्त, हिन्दी की भांति, बंगला में भी मुसलमानों ने वैष्णव धर्म्म विषयों पर कविताएं की थीं।

## परीक्षा-समिति का दूसरा अधिवेशन

परीक्षा समिति का दूसरा अधिवेशन संयोजक की सूचनानुसार मि० वै० कृ० २ सं० १९७२ तदनुसार ता० २ अप्रैल सन् १९१५ का दिन को ११ बजे आरम्भ हुआ जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे।

१—श्रीयुत पं० इन्द्र नारायण द्विवेदी।
२ " " राम जी लाल शर्म्मा।
३ " बा० पुरुषोत्तमदास टंडन।
४ " " राम दास गौड़ संयोजक।

पूर्व वितरित कार्य्य क्रम के अनुसार पहिले प्रथमा परीक्षा के आवेदन पत्रों पर विचार हुआ सभी आवेदन पत्र स्वीकृत हुए और काशी, कानपुर और हरदोई का नाम केन्द्र में सम्मिलित किया गया।

मध्यमा परीक्षा के आवेदन पत्रों पर इस लिये विचार न हो सका कि आवेदकों में बहुतों ने इस बात का कोई विश्वासनीय प्रमाण नहीं दिया था कि उन्होंने हिन्दी वा संस्कृत वा दोनों लेकर मैट्रिक, स्कूल लीविङ्ग वा इन्ट्रेंस की परीक्षा पास की है अथवा किसी विशेष योग्यता के कारण मध्यमा परीक्षा में बैठने के अधिकारी हैं। पं० इन्द्र नारायण द्विवेदी ने सम्मेलन पत्रिका में छपी हुई यह भूल दिखाई कि आवेदन पत्र और शुल्क भेजने की अन्तिम तिथि ३१ मई है और इस कारण अनेक आवेदक भ्रम वश अब तक आवेदन पत्र नहीं भेज सके। सर्व सम्मति से यह निश्चय हुआ कि इस भूल के प्रतीकार में समस्त दैनिकों और प्रसिद्ध २ साप्ताहिक पत्रों में तुरन्त प्रकाशित करा दिया जाय कि आवेदन पत्र और शुल्क जो इस भूल के कारण ३१ मार्च तक नहीं भेजे जा सके हैं १५ अप्रैल सन् १९१५

तक स्वीकार कर लिए जावेंगे इस मन्तव्य के अनुसार कार्य्यालय से साइक्लोस्टाइल करा के कार्ड उसी समय भेज दिए गए।

२—निश्चय हुआ कि १९७३ और १९७४ की परीक्षाएं अगस्त के महीने में पहिले रविवार को आरम्भ हों। यदि पहले रविवार को १ प्रतिपदा हो तो परीक्षा दूसरे रविवार को आरम्भ हो यह भी निश्चय हुआ कि प्रतिदिन एक प्रश्नपत्र दिया जाय और प्रत्येक प्रश्नपत्र ३ घन्टे से अधिक का न हो।

३—निश्चय हुआ कि सं० १९७३ की परीक्षाओं में सम्मिलित होने वालों के शुल्कसहित आवेदन पत्र सं० १९७२ की चैत्र कृष्ण ३० ता० २ अप्रैल सन् १९१६ तक आ जाने चाहिये।

४—निश्चय हुआ कि उपनियम आठ की पहली पंक्ति से ३ पंक्ति तक, "उत्तीर्णता" शब्द से "परीक्षा में" शब्द तक काट दिया जाय तथा चौथी पंक्ति में "सब विषयों के अङ्क मिला कर" यह शब्द भी काट दिये जांय और उपनियम २६ में 'मध्यमा' के स्थान में "उत्तमा और मध्यमा" लिखा जाय तथा १२ उपनियम के अंतरगत यह नियम और बढ़ाए जाँय —

(अ) प्रति वर्ष की परीक्षा के लिये समिति पहले से ही परीक्षा केन्द्रों की नियुक्ति करेगी किन्तु उसे अधिकार होगा कि शुल्क आजाने की तिथि के एक मास बाद तक निर्द्दिष्ट केन्द्रों में से कुछ के नाम निकाल दे अथवा उनकी नामावली में और भी नाम जोड़ दे।

(इ) उत्तमा परीक्षा के लिए एक मात्र केन्द्र प्रयाग राज ही होगा।

(उ) शुल्क सहित आवेदन पत्र भेजने की तिथि परीक्षारम्भ की तिथि से कम से कम ३ मास पहले से होगी जिसकी सूचना समिति पूर्वोक्त तिथि से कम से कम २ मास पहिले विवरण पत्रिका तथा सम्मेलन पत्रिका द्वारा दे देगी।

५—निश्चय हुआ कि पृष्ट १२ की पहिली पंक्ति में एक के स्थान में २ और पृष्ट १६ में तीसरी पंक्ति में ४ के स्थान में २ छपना चाहिये था इस भूल का सुधार कर दिया जाय।

६—निश्चय हुआ कि १६ वें नियम के धारा (अ) के अनुसार स्थायी समिति के सदस्यों से निम्नलिखित परिवर्त्तन के लिए जवाबी कार्ड द्वारा सम्मतियां मांगी जायँ—

"नियम १५ में" परीक्षा से दो महीने, इन शब्दों के स्थान में 'समिति द्वारा नियत तिथि पर वा उस से' यह शब्द रक्खे जायँ तथा नियम १६ में 'परीक्षा स्थान शब्द के नीचे' यह शब्द और लिखे जायँ 'निर्वाचित विषय' यदि उत्तमा व मध्यमा परीक्षा हो" ।

७—उत्तमा परीक्षा के विषयमें यह मन्तव्य निश्चित हुआ कि "जिस विषय को परीक्षार्थी परीक्षार्थ चुनेगा उस विषय में उसे एक निबन्ध लिखकर जो छपे हुए डबल क्राउन १६ पेजी के २०० पृष्ठों से कम न होगा परीक्षा से २ मास पूर्व संयोजक के पास भेज देना होगा । इस लेख के न पहुंचने पर अथवा समिति द्वारा अयोग्य समझे जाने पर समिति को अधिकार होगा कि उस वर्ष की उत्तमा परीक्षा में लेखक परीक्षार्थी को सम्मिलित न होने दे निबन्ध आरम्भ करने के लिये पहले उसकी संक्षिप्त विषय सूची लिखकर संयोजक से अनुमति ले लेना आवश्यक होगा ।

८—यह निश्चित हुआ कि उत्तमा परीक्षा निम्नलिखित विषयों में से किसी एक में ली जा सकेगी:—

(१) हिन्दी साहित्य जिसमें मराठी बंगला गुजराती इन तीनों में किसी दो भाषा से साधारण अभिज्ञता अन्तर्गत होगी।

(२) संस्कृत साहित्य जिसमें मराठी बंगला गुजराती इन तीनों में किसी दो भाषा से साधारण अभिज्ञता अन्तर्गत होगी ।

(३) अंग्रेजी साहित्य जिसमें मराठी बंगला गुजराती इन तीनों में किसी दो भाषा से साधारण अभिज्ञता अन्तर्गत होगी ।

(४) इतिहास जिसमें वैकल्पिक विषय होंगे ।

(५) गणित ( जो कम से कम अंग्रेजी के बी०एस० सी० की

योग्यता का होगा)।

( ६ ) दर्शन जिस में वैकल्पिक विषय होंगे।

( ७ ) विज्ञान जिसमें वैकल्पिक विषय होंगे।

( ८ ) अर्थशास्त्र।

( ९ ) ज्योतिष भारतीय पाश्चात्य दोनों।

(१०) पुरातत्व जिसमें पाली और प्राकृति की पूरी अभिज्ञता सम्मिलित होगी।

९—उपर्युक्त दसों विषयों तथा मध्यमा के समस्त विषयों में प्रत्येक की परीक्षार्थियों की सूचनार्थ, वृहत अनुक्रमणी वर्गियोंसे बनवा कर परीक्षा समिति के सभासदों के पास भेजी जाय और उन की अनुमति अगली समिति में उपस्थित की जाय।

१०–वर्गों में यह छः वर्ग और बढ़ाये जायँ अंग्रेजी साहित्य, संस्कृत साहित्य, पुरातत्व, मराठी, बंगला और गुजराती और संयोजक उपर्युक्त वर्गियों की सूची बना कर उनकी स्वीकृत लेले।

समयाभाव से परीक्षकों की नियुक्ति पर विचार न होसका और न वर्गियों की सूची उपस्थित की जासकी। अतएव निश्चय हुआ कि अधिवेशन स्थगित होकर फिर १८ अप्रैल को ६ बजे सायंकाल में बैठे।

११–तारीख़ १८–४–१५ को परीक्षा समति का कार्य्य पुनः सुप्रारम्भ हुआ निम्न लिखित वर्गियों की सूची स्वीकृत हुई। मध्यमा के परीक्षार्थियों के आवेदन पत्र स्वीकृत हुए। परीक्षकों की सूची बनायी गयी और निश्चय हुआ कि संयोजक पत्रव्योहार करके उचित प्रबन्ध करें।

१२–यह निश्चय हुआ कि परीक्षार्थिनियों के लिए प्रथमा से हमीर-हठ निकाल दिया जाय तथा मिश्र बन्धु विनोदके निम्नलिखित अंश ही मध्यमा के साहित्य के चौथे प्रश्न पत्र के लिये पढ़े जायँ।

( पहिला भाग )

१३–( पृष्ठ १५ से ८४ ) ( पृष्ठ १०५ से ३५३ तक ) ( ३६३ से लेकर ३८४ तक ) ( ३८८ से लेकर ४०१ तक ) (४१३ से ४१९ तक)

## दूसरा भाग

१४-निम्नलिखित कवि और लेखकः—

सेनापति, मलूकदास, बेनी, महाराजा जसवंत, नीलकंठ, विहारी, मतिराम, सबलसिंह, भूषण, कुलपति सुखदेव, कालिदास, महाराज छत्रसाल, अक्षर, अनन्द, निवाज, वृन्द, देव, वैताल, आलम, शेख, गुरू गोविन्दसिंह, पठान सुलतान, लाल, घन आनन्द, श्रीपति, महाराज विश्वनाथ सिंह, घाघ, नागरीदास, चरणदास, दास, तोष, रसलीन, गिरधर, नूर मुहम्मद, ठाकुर, गुमान, दूलह, राजा भगवंतराय खीची, सूदन, सुन्दरि कुवरि, दत्त, बृजवासी दास, गोकुलनाथ, गोपीनाथ, बोधा, लल्लूजी लाल, सदल मिश्र, पद्माकर, ग्वाल, सूर्य मल।

## तीसरा भाग

( पृष्ठ १०७३ से १०८० ) ( १२२५ से लेकर १२४६ तक )

१५-तथा निम्नलिखित कवियों और लेखकों का वर्णनः—
द्विजदेव, काष्ठ जिह्वा स्वामी, गिरधर दास, पजनेश, महाराजा रघुराज सिंह, राजाशिव प्रसाद, बाबा रघुनाथ दास, लेखराज, महर्षिदयानन्द, राजा लक्ष्मनसिंह, लछिराम, बालकृष्णभट्ट, हरिश्चन्द्र, श्रीनिवास, दास, शिवसिंह सेंगर, अम्बिका दत्त व्यास, सुधाकर, प्रताप नरायण मिश्र, देवकी नन्दन खत्री।

१६-कई आवेदकों ने प्रार्थना की है कि गणित के परीक्षा विषयों की विस्तृतसूची प्रकाशित की जाय अतः निम्न लिखित सूची प्रस्तुत की गई और प्रकाशनार्थ स्वीकृत हुई।

### बीज गणित

परिभाषा—संकलन-व्यवकलन-कोष्ठ-गुणन-भागहार-घातक्रिया मूल-क्रिया-प्रकीर्णक-महत्तमा पवर्तन-लघुतमा पवर्त्य-बीजात्मक भिन्न पदों काव्युत्पादन-भिन्न पदों का रूप भेद-भिन्न पदों का संकलन और व्यवकलन-भिन्न पदों का गुणा-भिन्न पदों का भागहार-भिन्न पदों का घात क्रिया-भिन्न पदों की मूलक्रिया-भिन्न संबन्धि प्रकीर्णक-समीकरण काव्युत्पादन—एक वर्ण एक घात समीकरण-अनेक वर्ण एक घात समीकरण-एक घात समीकरण संबन्धिप्रश्न-इष्ट

कर्म और द्वीष्ट कर्म-करणी का व्युत्पादन-करणियों का रूप भेद, उनका संकलन और व्यवकलन-गुणन और भाग हार-घात क्रिया और मूल क्रिया-महत्तमापवर्तन और लघुतमा पवर्त्य-भिन्न करणियों का रूप भेद-उनके संकलन आदि छ परिकर्म-करणी संवन्धि प्रकीर्णक और असंभाव्य राशिका गणित।

सरल त्रिकोण मिति।

कोण मापने की रीति-त्रिकोण मितीय सम्बन्ध-समकोणाधिक कोणों के त्रिकोण सम्बन्ध-दिये हुये त्रिकोण सम्बन्ध के कोण-मिश्र कोण-घातप्रमापक संख्या-त्रिभुज के कोण और, भुजा का सम्बन्ध-त्रिभुज गणित-क्षेत्रफल आदि। ऊंचाई और दूरी मापने की रीति त्रिकोण मितीय प्रश्न तथा सब के उदाहरण।

रेखा गणित चौथा अध्याय तक जैसा कि यूक्लिड वा वक्लैदिस का लिखा हुआ प्रसिद्ध है।

---

# वर्गियों की सूची

## संस्कृत वर्ग

महामहोपाध्याय पं० गङ्गानाथ झा
श्रीयुत पं० चन्द्रमौल शुक्ल
" पं० चन्द्रशेखर शास्त्री
" पं हरिमंगल मिश्र
" पं० शिवाशंकर त्रिपाठी
" पं० काशीराम
" पं० रामावतार शर्म्मा पांडेय
" प्रोफेसर राजाराम शास्त्री
" पं० चन्द्रधर शर्म्मा गुलेरी

## इंगलिस वर्ग

श्रीयुत प्रो० अभय चरण मुकर्जी

" पं० शिवाधर पांड़े प्रोफेसर
" पं० काली प्रताप दुबे
" पं० डी० ओझा एम० ए० एल० एल० बी०
" घीसू लाल एम० ए० एल० एल० बी०
" चांद करण शारदा बी० ए० एल० एल० बी०

## पुरातत्व वर्ग

श्रीयुत प्रो० हरीराम चन्द्र दिवेकर एम० ए०
" नरेन्द्रदेव एम० ए०
" पं० हीरानन्द शास्त्री एम० ए०
" पं० गौरी शङ्कर हीरा चन्द ओझा।

## मराठी वर्ग

श्रीयुत प्रो० हरीराम चन्द्रदिवेकर एम० ए०
" पं० गोविन्द चिन्तामणि तांवे बी० ए० एल० एल० बी०
" पं० बाबूराव पराडकर
" पं० विनायक चिन्तामणि वैद्य
" पं० माधव राव सप्रे
" पं० गणपति जानकीराम दुबे

## बंगला वर्ग

श्रीयुत पं० अमृत लाल चक्रवर्ती
" महामहोपाध्याय पं० गंगा नाथ झा
" श्रीमती हेमन्त कुमारी चौधरानी
" पं० राधा चरण

## गुजराती वर्ग

श्रीयुत मेहता पं० लज्जाराम शर्म्मा
पं० छगन लाल एम० ए०
" पं० ज्वाला राम पंड्या एम०ए०
" पं० के० सी० पंड्या
" के० एम० झवेरी

# हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को स्थायी समिति के तृतीयाधिवेशन का कार्यविवरण

स्थायी समिति का तृतीयाधिवेशन सम्मेलन—कार्यालय में वैसाख शु० १५ सं० १९७२ को ५ बजे संध्या को हुआ।

निम्न लिखित सदस्य उपस्थित थेः—

( १ ) बाबू रामदास गौड़
( २ ) ठाकुर शिवकुमार सिंह
( ३ ) बा० भगवानदास हालना
( ४ ) पं० चन्द्र शेखर शास्त्री
( ५ ) पं० लक्ष्मी नरायण नागर
( ६ ) बाबू नवाब बहादुर
( ७ ) पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल
( ८ ) बा० लालबिहारी लाल-सतन?
( ९ ) पं० रामजीलाल शार्म्मा
( १० ) पं० द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी
( ११ ) बा० गिरिजा कुमार घोष
( १२ ) बा० राधा मोहन गोकुल जी

सर्व सम्मति से बाबू गिरिजा। कुमार घोष ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

( १ ) सहायक मन्त्री ने पिछले अधिवेशन की कार्रवाई पढ़कर सुनायी जिसमें केवल निम्न प्रस्ताव के अतिरिक्त सर्व सम्मति से स्वीकृत हुवा। निम्न प्रस्तावः

"बा० रामदास गौड़—संयोजक परीक्षासमिति ने प्रस्ताव किया कि परिक्षासमिति के लिये तीन सौ रूपये दिये जायँ, निश्चय हुआ कि शुल्क की आय के अतिरिक्त दो सौ रूपया परीक्षा-समिति को और दिये जायँ"। बहु समिति से स्वीकृत हुआ।

(२) ठाकुर शिवकुमार सिंह का त्याग पत्र उपस्थित किया गया, त्याग पत्र पर विचार होही रहा था कि सम्मेलन के सभापति श्रीयुत पं० श्रीधर पाठक जी पधारे। अतएव बाबू गिरिजा

कुमार घोष ने सभापति का आसन परित्याग कर दिया और पाठक जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया। बहुत वादानुवाद के पश्चात् ठाकुर शिवकुमार सिंह जी का त्याग पत्र स्वीकृत हुआ। इस पर यह अड़चन हुई कि ठाकुर शिवकुमार सिंह के त्याग पत्र के स्वीकृत हो जाने पर पहली मई से संयोजक का कार्य्य कौन करेगा। अतएव इस पर बाबू गिरिजा कुमार घोष ने स्थायी समिति के सभासदी से त्याग पत्र दे दिया और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ। उनके स्थान पर प्रो० व्रजराज निर्वाचित हुए और सर्व सम्मति से वे ही संयोजक नियत हुए।

(३) नन्दकुमार देव शर्म्मा के त्याग पत्र और नवीन सहकारी मन्त्री की नियुक्ति पर विचार किया गया, बहुत वादानुवाद के पश्चात् बहु सम्मति से निश्चय हुआ कि नन्दकुमार देव शर्म्मा का त्याग पत्र पहली मई से स्वीकार किया जाय और मंत्री मण्डल सहायक मंत्री के आए हुए आवेदन पत्रों पर विचार करें।

(४) प्रो० रामदास गौड ने यह प्रस्ताव किया कि जब तक सहायक मन्त्री की नियुक्त न हो तब तक स्थानापन्न सहायक मन्त्री पं० महावीर प्रसाद त्रिपाठी रहें और उन्हें २०) प्रतिशत अलौवंश दिया जाय; तथा उनके स्थानापन्न क्लार्क पं० रामचन्द्र मिश्र नियुक्त किये जायँ. इसका अनुमोदन चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्म्मा ने किया और वह सर्व सम्मति में स्वीकार हुआ।

(५) अरायज नवीसी के कार्य्य के लिये निम्न सज्जनों की एक कमेटी बनाई जायः—

(१) बा० गङ्गा प्रताप
(२) पं० लक्ष्मीनरायण नागर
(३) बा० नवाब बहादुर
(४) ठाकुर शिवकुमार सिंह

(६) समय अधिक हो जाने के कारण परीक्षा की नियमावली में संशोधन का विषय स्थगित रक्खा गया।

सभापति को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई।

# पुस्तकों की लूट
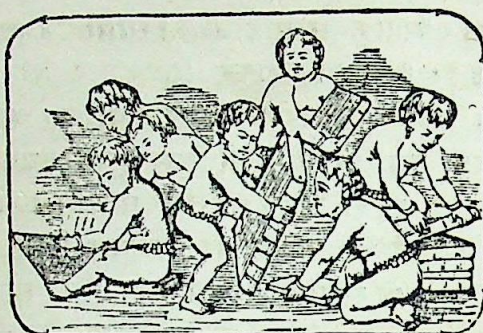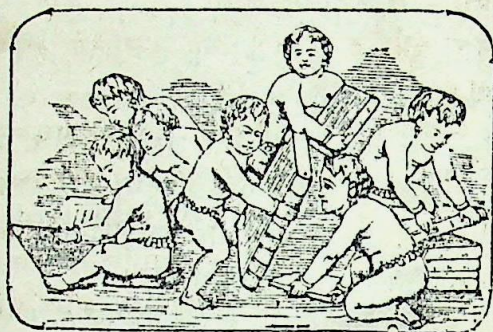
हमारे यहां पंजाब यूनिवर्सिटीकी हिन्दी परीक्षा, १ प्रोफ़ीशेन्सी, ( योग्यता ) और २ हाई प्रोफ़ीशेन्सी, ( उच्च योग्यता ) आदि के ( कोर्स ) पाठ्य पुस्तकें तथा हिन्दी परीक्षाओं के प्रचारक और प्रसिद्धनागरी प्रेमी अमृतसर निवासी—

जगन्नाथ पुच्छरत, एफ़० टी० एस० लिखित पंजाब यूनिवर्सिटी की हिन्दी परीक्षा देने के "नियम" भी छपकर तैयार हैं। हिन्दी प्रेमियों के हितार्थ मूल्य केवल =) दो आने ही रक्खा है। जिन्हें इच्छा हो वह ( लेखक ) से वा निम्न लिखित स्थान से मंगा लें।

विशेष हाल जानने की इच्छा हो तो डाक व्यय के लिये )॥ आध आने का "टिकट" निम्न लिखित स्थान पर भेज पुस्तकों का बड़ा ( सूचीपत्र ) मंगा कर देखें।

पता:—पं तीर्थराम जोशी, बुकसेलर

अध्यक्ष:—

नं० ३ श्री विद्यारत्न पुस्तकालय,

बाज़ार माईसेवा, अमृतसर, (पंजाब)

# "सम्मेलन पत्रिका" के नियम।

१—"सम्मेल पत्रिका" हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन कार्य्यालय प्रयाग, से प्रतिमास प्रकाशित होगी।

२—इसका वार्षिक मूल्य १) रु० इसलिये रक्खा गया है कि सर्वसाधारण इसके ग्राहक हो सकें।

३--इस समय इस में प्रतिमास कुल २४ पृष्ठ ही रहा करेंगे। परन्तु आवश्यकता होने पर कभी कभी पृष्ठ संख्या बढ़ा भी दी जाया करेगी। आगे चलकर यदि इसकी सेवा साहित्य सेवियों को रुचिकर हो, और इसके ग्राहकों का यथोचित संख्या हो जाय तो यही पत्रिका अधिकतर पृष्ठ-संख्याओं में और अधिकतर उन्नत दशा में प्रकाशित की जायगी।

४--इसके प्रबन्ध-विभाग के पत्र- ग्राहक बनने के लिये आवेदन, विज्ञापन-संबन्धी पत्र, मनीआर्डर इत्यादि-मन्त्री, साहित्य-सम्मेलन कार्य्यालय, जानसेनगंज प्रयाग, के नाम भेजे जाने चाहियें।

५—सम्पादक के नाम की चिट्ठियां, बदले के समाचार-पत्रादि समालोचना की पुस्तकें, पत्रिका में प्रकाशित होने के लिये लेखादि भी ऊपर ही के पते से भेजे जाने चाहिये।

# विज्ञापनदाताओं के लिये नियम।

१—"सम्मेलनपत्रिका" में अश्लील विज्ञापनों को स्थान नहीं मिलेगा।

२—विज्ञापन साधारणतः पूरे और आधे पृष्ठ से कम स्थान के लिये स्वीकृत न होंगे।

१—पृष्ठ का मासिक मूल्य ... ४॥) होगा

२—आधे पृष्ठ का " ... २॥) होगा

३—जो लोग १२ संख्याओं में विज्ञापन छपवाने का मूल्य एक साथ भेज देंगे, उनका विज्ञापन एक संख्या में बिना मूल्य छाप दिया जायगा, अर्थात् १२ की जगह १३ बार उनका विज्ञापन छापा जायगा।

४—किसी दशा में पेशगी मूल्य बिना मिले कोई भी विज्ञापन नहीं छापा जायगा।

५—विक्रयार्थ पुस्तकों के विज्ञापनों पर ऊपर दिये हुए मूल्य से कम मूल्य लिया जायगा।

१ पृष्ठ का मूल्य १ मास के लिये ३॥) और

आधे " " २) होगा।

६—अदालतों में लेखकों की नौकरी, अध्यापक अध्यापिकाओं की नौकरी, इत्यादि हिन्दी-प्रचारार्थ नौकरियों के विज्ञापन एक बार बिना मूल्य छाप दिये जायँगे। दूसरी बार और अधिकबार के लिये ऐसे विज्ञापनों का मूल्य केवल १) प्रतिमास होगा। विज्ञापन ८ पंक्तियों से अधिक न हो।

मन्त्री, हि० सा० स० कार्यालय, प्रयाग।

पण्डित ओंकारनाथ वाजपेयी के प्रबन्ध से ओंकार प्रेस, प्रयाग में छपी।

Reg. No. A629.

# सम्मेलन-पत्रिका

## हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

की

## मुखपत्रिका ।

भाग २ } वैशाख संवत् १९७२ { अङ्क ८

### विषय सूची



वार्षिक मूल्य १) ] [ एक संख्या =)

हिन्दी साहित्य सम्मेलन से बाबू नरेन्द्र नारायण सिंह द्वारा प्रकाशित ।

# सम्मेलन के उद्देश्य

(१) हिन्दी साहित्य के अङ्गों की उन्नति का प्रयत्न करना।

(२) देवनागरी लिपि का देश भर में प्रचार करना और देशव्यापी व्यवहारों कार्यों के सुलभ करने के लिये हिन्दी भाषा को राष्ट्र भाषा बनाने का प्रयत्न करना।

(३) हिन्दी को सुगम, मनोरम और लाभदायक बनाने के लिये समय समय पर उसकी शैली के संशोधन और उसकी त्रुटियों और अभावों के दूर करने का प्रयत्न करना।

(४) सरकार, देशीराज्यों, पाठशालाओं, कालेजों, विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थाओं, समाजों, जन समूहों तथा व्यापार, ज़मींदार और अदालतों के कार्य्यों में देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा के प्रचार का उद्योग करते रहना।

(५) हिन्दी के ग्रन्थकारों, लेखकों, पत्रसंपादकों, प्रचारकों और सहायकों को समय समय पर उत्साहित करने के लिये पारितोषिक, प्रशंसापत्र, पदक, उपाधि आदि से सम्मानित करना।

(६) उच्च शिक्षा प्राप्त युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने के लिने प्रयत्न करना।

(७) जहां आवश्यकता समझी जाय वहां पाठशाला, समिति तथा पुस्तकालय स्थापित करने और कराने का उद्योग करना तथा इस प्रकार की वर्त्तमान संस्थाओं की सहायता करना।

(८) हिन्दी साहित्य के विद्वानों को तैयार करने के लिए हिन्दी की उच्च परीक्षाएं लेने का प्रबन्ध करना।

(९) हिन्दी भाषा के साहित्य की वृद्धि के लिए उपयोगी पुस्तकें तैय्यार करना।

(१०) हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के उद्देश्यों की सिद्धि और सफलता के लिए अन्य जो उपाय आवश्यक और उपयुक्त समझे जायँ उन्हें काम में लाना।

---

# सम्मेलन-पत्रिका का उद्देश्य

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता करना, और साहित्य-प्रेमियों से इसी के लिए उपदेश लेना।

# सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति
की ओर से प्रतिमास प्रकाशित।

भाग २ } • वैशाख संवत् १९७२ { अङ्क ८


# हिन्दी संसार

## युद्ध में हिन्दी

युरोप में जो महाभारत हो रहा है, उसमें हिन्दी को भी स्थान मिला है। यों तो भारत वर्ष में युद्ध के कारण हिन्दी के दैनिक पत्र निकले हैं, तथा युद्ध सम्बन्धी कितनी ही पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं; सरकार ने भी प्रेस ब्यूरोद्वारा समर समाचार हिन्दी में प्रकाशित कराके सर्वसाधारण के कुतूहल शान्ति की चेष्टा की है, परन्तु आज पाठकों का ध्यान लण्डन से जो "युद्ध—समाचार" प्रकाशित होने लगा है, उसकी ओर आकर्षित करना चाहते हैं। —"अखबार-ए० जङ्ग"—१६ डेविन शायर एसक्वायर लण्डन से यह "युद्ध समाचार" निकलता है। मोटे काग़ज़ पर लिथोमें छपता है। पर इसकी भाषा अच्छी नहीं होती उसमें अनेक अशुद्धियां रहती हैं नीचे नमूना दिया जाता है:—

यह समाचार पत्र वर्त्तमान संग्राम में जो ब्रीटीस सैन्य शांमिल है उनको अपने घर की खबर पहुंचाने के लिये श्रीमत सरकार की "इन्डिया आफीस के आश्रय में हर सप्ताह मैं दो दफे" "इन्डिया मेन" की आफिस प्रसीद्ध करती है जहां तक युद्ध कायम रहेगा, वहां तक इस पत्र प्रसीद्ध होने वाला है। हिन्दुस्तानके रहने वालों

को यह पत्रसे अपने देशकी सब कुछ खबर मिलजायगी। रण संग्राम के विध २ भागों मैं क्या हो रहा है वह बात भी इधर ही दी जायगी। ब्रीटीश फौज के कोई अफसर या सिपाही अपना अनुभव कीसी दूंसरी विना जो की प्रसीद्ध करने लायक हो हमारी तरफ लिख भेजेगा, हम बहुत एशानमंद होंगी"

खिचड़ी भाषा और अशुद्ध हिज्जे होने पर भी, शुद्ध हिन्दी शब्दों का बहिष्कार नहीं होने पाया है।—हिन्दी को जो मुर्दा भाषा कहते हैं, क्या उनकी आंखें इस "युद्ध समाचार" को पढ़ कर भी नहीं खुलेंगी?—सम्मेलन-कार्य्यालय में "युद्ध-समाचार" की एक प्रति भेजने के लिये, हम सुप्रसिद्ध हिन्दी लेखक, डाक्टर महेन्द्र लाल गर्ग को बहुत बहुत धन्यवाद देते हैं।

---

## डी० ए० वी० हाइस्कूल।

यह सभी जानते हैं कि आर्यसमाजके द्वारा हिन्दीका अच्छा प्रचार हुआ है। आर्यसमाजके प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती, हिन्दी के इतने प्रेमी थे कि उन्होंने गुजराती होने पर भी, अपनी मातृभाषा गुर्जर होने पर भी, हिन्दी मेंही अपने सब ग्रन्थ लिखे थे। पर हमको लाहोरके सहयोगी "प्रभात" में अजमेर निवासीकी निम्न चिट्ठी पढ़ कर अत्यन्त खेद हुआ। चिट्ठी यह है:—

"इन्स्पेक्टर आफ़ स्कूल्स अजमेर मेरवाड़ा की ओर से श्रीमद् दयानन्द स्कूलके मुख्याधिष्ठाताको एक पत्र द्वारा यह सूचना दी गई है कि हिन्दी उर्दू दोनों में से एकको अपने विद्यालयमें स्थान दिया जाना चाहिये, दोनों को नहीं, इस का विचार स्कूल कमेटी द्वारा किया जाने को है। देखें स्कूल कमेटी अपनी मातृभाषाको अपनाती है या यावनी भाषा को! किन्तु ऐसा सुना जाता है कि मुख्याधिष्ठाता साहब उर्दू प्रेमी हैं, क्योंकि आप उर्दू को स्थान देने में अपना कर्त्तव्य पालन कर रहे हैं। इस कारण आप को डी० ए० वी० कालेज लाहोर से शिक्षा ग्रहण करना चाहिये"। यदि यह बात सत्य

है तो दुःखका विषय है, अजमेर के दयानन्द एङ्गलो वैदिक हाईस्कूल के कार्य्य कर्त्ताओं के संवाद दाता के शब्दों में लाहार के डी० ए० वी० कालेज के कार्य्यसञ्चारकों से अवश्य शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये, क्योंकि अजमेर में हिन्दी प्रचार उतना कठिन नहीं है, जितना लाहोर में हैं। यदि सहयोगी "प्रभात" के संवाद-दाता के कहने के अनुसार अजमेर डी० ए० वी० हाईस्कूल के कार्य्यकर्त्ताओं ने कार्य्य किया तो बहुत बुरा होगा, डी० ए० वी० स्कूलजो एक पवित्रात्माका स्मारक है उसमें ऐसाकरना उस पवित्रात्मा के उद्देश्य कोही नष्ट करना नहीं है प्रत्युत उस पवित्रात्मा के प्रति विश्वासघात करना है।

## सहायोगियों का स्वागत

यह निश्चित हो चुका है कि विहार प्रान्त की भाषा हिन्दी है, इस महीने में वहां के दो मासिकपत्रों के दर्शन हुए हैं। हम इन नवीन सहयोगियों का हृदय से स्वागत करते हैं। बांकीपुर के खड्ग विलास प्रेस से 'हरिश्चन्द्र-कला" बड़ी सज धज से निकली है। उक्त प्रेस के अध्यक्ष स्वर्गीय बाबू रामदीन सिंह ने लग भग २६ वर्ष हुए भारतेन्दु जी के स्मारक में उक्त पत्रिका निकाली थी, तब से यह "पत्रिका" समय समय पर प्रकाशित होती रही है, परअब बाबू नरेन्द्र नारायणसिंह की सम्पादकता में नये रूप, नये आकार से प्रकाशित होने लगी है। सम्पादक का परिश्रम सराहनीय है, अनेक लेख और कविताओं के अतिरिक्त-साहित्याचर्य्य पं० चन्द्रशेखर शास्त्री कृत, कौटिल्य के अर्थशास्त्र का अनुवाद अच्छा प्रकाशित हो रहा है। वार्षिक मूल्य तीनरुपये है।

मुजफ़्फरपुर के हिन्दी साहित्य रत्नाकर कार्य्यालय से "सतयुग" को पाकर भी हम बड़े आनन्दित हुए हैं। "सतयुग" के प्रथम अङ्क के देखने सेही प्रतीत होता है कि यह होनहार है। श्रीयुत राधाकृष्ण एम० ए०, बाबू राधामोहन गोकुल जी. पं० रामशरण उपाध्याय बी० ए० और रामावतार शर्म्मा एम० ए० आदि के विविध विषयों पर लेख और कविताएं हैं। इस पत्र का

वार्षिक मूल्य तीन रुपये हैं। आशा है हिन्दी प्रेमियों की सहायता से "सतयुग", सतयुग उपस्थित करने में सफलता प्राप्त करेगा।

## "भारत गीताञ्जलि"

हमारे प्रिय मित्र पं० माधवशुक्ल का नाम हिन्दी प्रेमियों से छिपा हुआ नहीं है। स्थान स्थान पर शुक्ल जी की कविताओं को गान का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आप राष्ट्रीय गीतों के लिखने में सिद्ध-हस्त हैं। आप की कविता सर्वसाधारण को कितनी प्रिय होती है, इसका उदाहरण यह है कि आप की पुस्तकों का दूसरा संस्करण बहुत जल्दी कुछ महीनों में ही होगया है। पुस्तक में कितने ही राष्ट्रीय गीतों का समावेश किया गया है, हम अपने पाठकों से इस पुस्तक को अपने पास रखने का अनुरोध करते हैं।

## प्रान्तिक कान्फरेंस में हिन्दी।

पिछली ईष्टर की छुट्टियों में गोरखपुर में बहुत सी कान्फरेन्सों की चहले पहल हुई थी। साथ ही हिन्दी कान्फरेंस की भी बैठक हुई थी जिसके विषय में अन्यत्र लिखा गया है। हिन्दी कान्फरेन्स के सम्बन्ध में सहयोगी "प्रताप" कहता है कि "चिराग़ तले अन्धेरा" वाली कहावत चरितार्थ हुई है। क्योंकि सहयोगी का कथन है कि प्रान्तिक हिन्दी कान्फरेन्स अन्य कार्य्य छोड़कर—यदि प्रान्तिक राजनैतिक कान्फरेन्स में हिन्दी की चर्चा कराती तो बहुत भारी काम करने में समर्थ होती। कहना तो सहयोगी का ठीक है, परन्तु शायद "प्रताप" को ज्ञात नहीं है अथवा उसके संवाद दाता ने उसको यह समाचार नहीं भेजा है कि प्रान्तिक हिन्दी कान्फरेंस में प्रान्तिक राजनैतिक कान्फरेंस में हिन्दी को स्थान दिलाने की चर्चा हुई थी परन्तु सभापति जी ने यह आज्ञा करके इस विषय को स्थगित कर दिया था कि आज ही मैं एक प्रस्ताव पर हिन्दी बोला था तब श्रीमती एनी बिसेंट ने कहा था "हम नहीं जानतीं कि आपने किस भाषा में भाषण किया है, हमें जब तक सभानेत्री का कार्य करना है, तब तक कृपया अङ्गरेजी में ही सभा की कार्य्य वाही कीजिये"। सभानेत्री जी के इस कथन पर सब लोग शान्त हो गये।

# प्रथम हिन्दी कान्फरेंस

हर्ष है कि अब चारों ओर से विविध प्रकार से हिन्दी की उन्नति के निमित्त उद्योग हो रहे हैं। जब से हिन्दी साहित्य सम्मेलन स्थापित हुआ है, तब से हिन्दी प्रेमियों में नवीन स्फूर्त्ति, नवीन जागृति हुई है। अनेक स्थानों में हिन्दी प्रचार के लिये सभाएं स्थापित हुई हैं। सर्वसाधारण का ध्यान अपनी मातृ-भाषा, अपनी भावीराष्ट्र भाषा को उन्नतावस्था में लाने के लिये विशेष रूप से हो गया है। इस उत्साह, और जागृति का ही फल गोरखपुर की प्रथम हिन्दी कान्फरेंस थी।

दिसम्बर का अन्तिम सप्ताह सभा, सोसाईटियों के लिये विख्यात हो गया है। अनेक सभाएं अपने अधिवेशन दिसंबर के अन्तिम सप्ताह में ही करती हैं, परन्तु पिछले कुछ वर्षों से एप्रिल मास की ईस्टर की छुट्टियों में भी सभाओं की खूब धूम धाम होती है। गोरखपुर में बहुत सी सभाओं की चहल पहल थी। राजनैतिक प्रान्तिक कान्फरेंस, प्रान्तिक समाजिक कान्फरेंस, औद्योगिक कान्फरेंस आदि सभाएं गोरखपुर में हुईं थीं। इन सभाओं के साथ ही साथ इस बार हमारे गोरखपुर के भाइयों के प्रयत्न से एक और प्रान्तिक सभा की नींव पड़ी और यह सभा ही प्रथम प्रान्तिक हिन्दी कान्फरेंस थी। वास्तव में गोरखपुर के हिन्दी प्रेमियों का उत्साह प्रसंसनीय था, और उद्योग सराहनीय था। यहाँ के निवासियों ने कान्फरेंस की सफलता के लिये अत्यन्त परिश्रम किया था और यह लिखते हुए हमें आनन्द होता है कि के हिन्दी प्रेमियों को अपने परिश्रम में अच्छी सफलता प्राप्त हुई।

प्रान्तिक प्रथम हिन्दी कान्फरेंस का अधिवेशन—गोरखपुर में वैशाख कृष्ण २ सं०१९७२ तदनुसार २एप्रिल सन् १९१५ को वहांके अलीनगर मुहल्ले में, श्रीयुत गिरधारी लाल वकील के विशाल भवन के अहाते में हुआ था। शहर तथा गोरखपुर विभाग के गए हुए मान्य सज्जनों के अतिरिक्त बाहर से भी कुछ हिन्दी प्रेमी पहुंचे थे, काशी से बाबू गौरीशंकर प्रसाद–वकील राम कृष्ण जी-बाबू

भगवानदीन जी और बाबू जगमोहन वर्मा ; प्रयाग से बा० भगवान दास हालना और बाबू रुद्रनारायण ; लखनऊ से बाबू पुत्तन लाल विद्यार्थी ; कानपुर से सभापति जी के अतिरिक्त पं० देवी प्रसाद शुक्ल और हरनारायण निगम ; लखीमपुर खेरी से पं० सूर्य्यनारायण दीक्षित बाँकीपुर से पं० रामदहिन मिश्र आदि सज्जनों ने सम्मिलित होकर कान्फरेंस की शोभा बढ़ाई थी। हिन्दी प्रेमियों के अतिरिक्त राजनैतिक प्रान्तिक कान्फरेंस की सभा नेत्री श्रीमती एनी बिसेन्ट, मिस्टर सच्चिदानन्द सिंह, डाक्टर तेजबहादुर सप्रू, बाबू ईश्वरशरण सिंह—सभा में पधारने की कृपा की थी। सभापति थे कानपुर के प्रसिद्ध वकील और साहित्यसेवी राय देवीप्रसाद जी, सभा का कार्य्य आरम्भ लगभग चार बजे से हुआ। स्वागत कारिणी सभा के सभापति बाबू महावीर प्रसाद अग्रवाल का स्वागत सम्बन्धी भाषण हुआ। भाषण में हिन्दी की उन्नति के सम्बन्ध में अनेक बातें कही गईं फिर कई सज्जनों के प्रस्ताव, अनुमोदन और समर्थन करने पर राय देवी प्रसाद पूर्ण ने सभापति का आसन ग्रहण किया। यहां पर एक बात लिखने से रह गई कि सभापति के प्रस्ताव को अनुमोदन करते समय हमारे प्रिय मित्र पं० मन्नन द्विवेदी गजपुरी ने हिन्दी के सम्बन्ध में अपनी रची हुई कविता पढ़ी थी।

सभापति का व्याख्यान कैसा था, इस विषय में हम इतना ही कहना चाहते हैं कि जिन हिन्दी प्रेमियों ने इस बार लखनऊ के सम्मेलन में राय साहब की वक्तृता सुनी थी वे स्वयं ही अनुमान कर लें कि राय साहब की वक्तृता कैसी थी साहित्य के मर्म्मज्ञों के लिये इस वक्तृता में जानने विचारने और मनन करने योग्य अनेक विषय थे। सभापति का भाषण लगभग तीन घंटे हुआ था। पहले उन्होंने मङ्गलाचरण करके यूरोप में जो युद्ध हो रहा है उसकी बात छेड़ते हुये सम्राट की उसमें विजय कामना करते हुये वीर रस के साहित्य पर विशेष बल दिया था उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा था कि शृङ्गार रसकी कविता के

समान ही वीर रस की कविता होनी चाहिये शृङ्गार रस की कविता करने वाले जितने नायिका भेद कर गये हैं उनसे ज्यादा वीर रस की कविता में वीरों के भेद होने चाहिये युद्ध-वीर, दान-वीर, शान्त-वीर, दया-वीर, उद्योग-वीर, बचन-वीर, सेवा वीर, सत्य वीर आदि अनेक प्रकार के वीर बतलाये । साहित्य के सम्बन्ध में आपने कहाः—गिरी हुई जाति वा देश को एकबार फिर उन्नति के ऊंचे आसन पर बैठने के लिये उत्साह देना उत्तेजित करना और धीरता पूर्वक उद्योग करना साहित्य का गुण है । सभी प्रकार के सुधार और संशोधन में प्रवृत्त करना साहित्य का गुण है । कुटुम्ब समाज और देश की सेवा के लिये तत्पर कर देना साहित्य का गुण है । धर्म के अभिमुख करना अधर्म से निवृत्त करना मनुष्य कर्त्तव्य को स्मरण कराना संसार मात्र को कुटुम्ब वत् दरसा कर उसका हितकारी बनाना, धन, बल, यश, प्रतिष्ठा प्राप्त कराना कहां तक कहें. मनुष्य जन्म को सफल कराना गिरे हुए जीव को उद्र्ध्व-गामी बनाकर ब्रम्हपद तक पहुंचाना साहित्य ही का गुण है । फिर भला वीरता का प्रकरण इससे बाहर कैसे" ? सभापति जी ने वीर रस की कविता के अतिरिक्त—देशी भाषाएं शिक्षा का माध्यम बनाई जांय इस विषय पर भी अपनी वक्तृता में बहुत सी बातें कही थीं । इस विषय में जितनी शङ्काएं की जाती हैं उनका भली भांति समाधान किया था । प्राथमिक शिक्षा की भी आपने आवश्य-कता दिखलायी थी । तात्पर्य यह कि सभापति जी का व्याख्यान सर्वाङ्ग पूर्ण था ।

सभापति जी के व्याख्यानों के पश्चात् प्रस्तावों की बारी आई । पहले जो दो प्रस्ताव उनमें से एक वर्त्तमान युद्ध के सम्बन्ध में और दूसरा हिन्दी हितैषियों की मृत्यु के सम्बन्ध मे था, सभापति द्वारा उपस्थित किया गया तीसरा प्रस्ताव—देशी भाषाओं द्वारा शिक्षा विषयक था, इसको पं० नन्दकुमार देवशर्म्मा ने उप स्थित किया था, पं० सूर्य्यनारायण दीक्षित और पं० रमाकान्त मालवीय ने इस का अनुवेदन और समर्थन किया था. चौथा प्रस्ताव-अदालतों में हिन्दीके सम्बन्ध में था, इसको काशीके प्रसिद्ध

वकाल बाबू गौरी शङ्कर प्रसाद बी० ए० ने उपस्थित किया था। उपस्थित करते समय उन्होंने अदालतों में नागरी प्रचार की अवश्यकता पर युक्ति पूर्ण वक्तृता दी। अपनी वक्तृता में बाबू गौरीशङ्कर प्रसाद जी ने यह एक बड़े मार्के की बात कही कि अदालतों में नागरी के काग़ज़ पत्र दाखिल करने के लिये वकीलों के अतिरिक्त मुवक्किलों को भी चेष्टा करनी चाहिये। यदि मुवक्किल अदालतों में नागरी में ही काग़ज़ दाख़िल करना चाहें तो लाचार होकर वकीलों को दाख़िल करना ही पड़ेगा क्योंकि यह रोटी का सवाल है। वक्ता महाशय ने नवयुवक वकीलों से इस का बीड़ा उठाने के लिये अपील की। गोरखपुर के बा० अभययनन्दन प्रसाद ने उक्त प्रस्ताव का अनुमोदन करते समय गोरखपुर का कुछ अपना अनुभव सुनाया। पांचवा प्रस्ताव प्रचलित शिक्षा प्रणाली में हिन्दी के स्थानक विषय पर था—बाबू चण्डीप्रसादने उपस्थित किया और ज्ञानशक्ति के सम्पादक शिवकुमार जी ने अनुमोदन किया। शेष प्रस्ताव हिन्दू विद्यालय में हिन्दी नागरी प्रचार म्युनिसिपल बोर्डों और डिस्ट्रिक्ट बोर्डों में हिन्दी, नोटों, सिक्कों तथा स्टाम्पों पर हिन्दी आदि सभापति जी द्वारा उपस्थित किये गये और स्वीकृत हुए। नियमावली बनाने के लिये एक कमेटी नियुक्ति हुई। श्रीयुत पं० मनन्द्विवेदी गजपुरी बी० ए० ने गोरखपुरी बोली में एक कविता सुनाई, जिसमें देश दशा का अच्छा वर्णन था। पश्चात् सभापति को धन्यवाद देकर सभा विसर्ज्जित हुई।

एक दर्शक

---

## हि० सा० स० की स्थायी समिति के द्वितीयाधिवेशन का कार्य्य विवरण

स्थाई समिति का द्वितीयाधिवेशन सम्मेलन कार्य्यालय प्रयाग में मिती वैसाख कृष्ण २ सं० १९७२ ( २ अप्रेल १९१५ ) को ५ बजे तीसरे पहर के समय हुआ। निम्न लिखित सदस्य उपस्थित थे—

| | |
|---|---|
| श्रीयुत पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी | श्रीयुत बा० रामदास जी गौड़ |
| " " रामजी लाल शर्म्मा | " " नवाब बहादुर |
| " " लक्ष्मी नारायण नागर | " " राधामोहन |
| श्रीयुत बाबू पुरुषोत्तम दास जी टण्डन। | गोकुल जी (कलकत्ता) |

१—(क)—सभापति व उपसभापति महोदयों की अनुपस्थिति में, श्रीयुत पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी जी ने सर्व सम्मति से सभापति का आसन ग्रहण किया।

(ख)—प्रधान मन्त्री ने ता० २५ नवम्बर १९१४ अर्थात् मार्गशीर्ष शुक्ला ८ संवत् १९७१ के अधिवेशन का कार्य विवरण (जो किसी अनिवार्य्य कारण से गत बैठक में न उपस्थित हो सका था) पढ़ा और सर्व्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

(ग)—पुनः प्रधान मन्त्री जी ने पिछलाधिवेशन जो मिती माघ शुक्ला ५ सं० १९७१ को हुआ था उसका कार्य्य विवरण पढ़ कर सुनाया और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

## प्रस्ताव

२—(क) स्थायी समिति के सदस्य श्रीयुत शिवचन्द्र जी भरतिया (इन्दौर) की असामयिक मृत्यु पर शोक प्रकट करती हुई, यह समिति उन के कुटुम्ब के प्रति समवेदना प्रकट करती है।

(ख) निश्चय हुआ कि इनके कुटुम्बियों को समवेदना सूचक पत्र भेजा जाय और स्थायी समिति के रिक्त स्थान पर श्रीयुत पं० गणपति जानकी राम दुबे (ग्वालियर) निर्वाचित किये जाँय।

३—श्रीयुत पं० लक्ष्मीनारायण जी नागर ने आयव्यय का लेखा २६ नवम्बर सन् १९१४ से २८ फ़रवरी सन् १९१५ तक का उपस्थित किया जो सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

४—सम्मेलन के आय व्यय परीक्षक श्रीयुत बाबू गौरीशङ्कर प्रसाद बी०ए०, एल०एल०बी०, का पत्र उपस्थित किया गया जिस में दो विषय विचारार्थ उपस्थित किए गये एक तो वर्ष का आदि और अन्त निश्चय कर देना और दूसरा यह कि "पत्रिका" "परीक्षासमिति" और कार्य्यालय की

तीन पृथक रोकड़ें जो रक्खी जाती हैं न रक्खी जाकर एक ही रोकड़ वही में सब हिसाब रक्खा जाय।

इसपर निश्चय हुआ कि:—

(क) इस समिति के विचार में यही अच्छा है कि सम्मेलन के बैठने के समय उस दिन तक का लेखा उस के समक्ष उपस्थित किया जाय, इस में हानि कुछ नहीं है किन्तु लाभ और सुविधा अधिक है।

(ख) रोकड़ वही एक ही हो, किन्तु पत्रिका और परीक्षा समिति के विभागीय खाते बहियां भी रक्खी जायं जिस से लेखा स्पष्ट रहे।

५—बाबू राधामोहन गोकुलजी ने प्रस्ताव किया कि कार्य्यालय में काम की वृद्धि को देखते एक वैतनिक लेखक बढ़ाये जाने की आवश्यकता प्रतीत होती है अतः १५) २०) मासिक का एक आदमी बढ़ाया जाय। वादानुवाद होने के अनन्तर गोकुल जी ने अपना प्रस्ताव लौटा लिया।

६—नियमावली संशोधन—निश्चय हुआ कि तीन सदस्यों की एक उपसमिति बनाई जाय। जो पूर्ण विचार पूर्वक नियमों का आवश्यक संशोधन कर समिति में उपस्थित करै। तदनुसार निम्न सज्जनों की उपसमिति संगठित की गई।

१ " श्रीयुत पं० श्रीधर जी पाठक संयोजक।
२ " श्री कृष्णजी जोशी।
३ " बा० रामदास जी गौड़।

७—"राम कहानी" पर श्रीयुत पं० श्रीधर जी का पत्र उपस्थित किया गया निश्चय हुआ कि निम्न लिखित सदस्यों की एक उपसमिति बनाई जाय जो सरकारी पाठशालाओं की नियत हिन्दी पाठ्य पुस्तकों को पढ़कर अपनी आलोचनात्मक सम्मति इस समिति में उपस्थित करतो रहा करे।

१—श्रीयुत पं० राम जी लाल शर्म्मा संयोजक।
२ " " लक्ष्मीनारायण जी नागर।
३ " " इन्द्र नारायण जी द्विवेदी।

४ श्रीयुत पं० श्रीकृष्ण जी जोशी
५ " " श्रीधर जी पाठक
६ " बा० पुरुषोत्तम दास जी टंडन
७ " " राधा मोहन गोकुल जी

नोट—पुस्तकें सम्मेलन द्वारा संग्रह करके सदस्यों को पहुचाई जावेंगी।

८—काशी के श्रीयुत पं० रामनारायण जी मिश्र का त्याग पत्र उपस्थित किया गया, निश्चय हुआ कि जब पं० जी आग्रह करते हैं तो उनका त्याग पत्र स्वीकृत हो और उनके के स्थान पर कानपुर के श्रीयुत रायदेवी प्रसाद जी (पूर्ण) सदस्य निर्वाचित किये जाँय।

९—श्रीयुत पं० नन्दकुमार देव शर्म्मा का त्याग पत्र उपस्थित किया गया निश्चय हुआ कि इसका निपटारा मंत्री मंडल पर छोड़ा जाय वह अपनी सुविधा के अनुसार प्रबन्ध करे।

१०—पं० राजमणि त्रिपाठी के दो पत्र उपस्थित किये गये, निश्चय हुआ कि इस पर कार्य्यालय उचित कार्रवाई करे।

११—बाबू रामदास गौड़ संयोजक परीक्षा समिति ने प्रस्ताव किया कि समिति के लिये ३००) दिये जायं; निश्चय हुआ कि २००) शुल्क की आय के अतिरिक्त परीक्षा समिति के संयोजक को दिये जांय।

१२—आरा के बाबू बृजनन्दन सहाय और छपरा के बाबू मथुरा प्रसाद के पत्र उपस्थित किये गये, जिन में इन्हों ने यह प्रस्ताव किया था कि तृतीय सम्मेलन की लेख माला में पं० जीवानन्द शर्म्मा काव्य तीर्थ लिखित—"वैष्णव धर्म का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव शीर्षक लेख में पृष्ठ २४ की बाईं और अन्त की ४ पंक्तियां तथा दाहिनी ओर की पहिली आठवीं और नवीं पक्तियां लेख में से निकाल दी जावें. निश्चय हुआ कि उक्त लेख के आपत्तिजनक शब्दों पर चिप्पी लगा दीजाँय।

नोट—कार्य्यालय से जो पुस्तकें बाहर जाँय, वह देख ली जाँय कि इस आज्ञा का पालन हुआ है या नहीं।

१३—कलकत्ते के पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी का बंगाल के प्रति

निधियों के सम्बन्ध में पत्र उपस्थित किया गया। निश्चय हुआ कि मंत्री इसका उचित उत्तर दें।

सभापति को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई।

---

# उत्तर भारत में द्रविड़ भाषाओं का प्रभाव

( लेखक—श्रीयुत बाबू गिरिजा कुमार घोष )

आज कल हम लोग तामिल और तेलगू की भाषाओं को नहीं समझते। परन्तु सम्भव है कि द्रविड़ देश की भाषाओं का प्रभाव कुछ न कुछ उत्तर भारत की भाषाओं पर भी पड़ा होगा। वर्त्तमान भाषा की उत्पत्ति के इतिहास के लिये बंगाल के विद्वान द्रविड़ उपादानों का भी अनुसन्धान कर रहे हैं। और जब उड़ीसा और बंगाल में द्राविड़ी उपादानों का पता चला है, तो क्या आश्चर्य यदि बिहार वा समीपस्थ दूसरे प्रान्तों में भी इनका कुछ न कुछ पता लग जावे। हिन्दी के लिए इसके खोज का उद्योग कौन करेगा?

तामिल भाषा अब मद्रास नगर और उसके दक्षिण और दक्षिण-पश्चिमी प्रान्त में प्रचलित पाई जाती है। तमलुक एक समय बंगाल के समुद्रतट पर बहुत बड़ा और ऐश्वर्यशाली नगर था। तामिल भाषियों के किसी समय तमलुक में रहने की बात सुनी जाती है। किसी समय अन्ध्रदेश के राजा लोग, सारे भारतवर्ष के राजाधिराज माने जाते थे, और उस समय अवश्य ही सारी प्राचीन आर्य्य भाषा पर आन्ध्र भाषा का प्रभाव पड़ा होगा। इसी बात का, और वर्त्तमान हिन्दी पर आन्ध्र भाषा का कुछ या कहां तक प्रभाव पड़ा होगा इसका भी निर्णय करना भाषातत्वान्वेषियों का कर्त्तव्य है। बहुत से अर्थ शून्य शब्द और स्थानों के नाम पाये जाते हैं, जिनका सम्बन्ध सम्भव है कि खोज करने से अनार्य्य भाषाओं से पाया जावे। आर्य्य अनार्य्य का संघर्ष इस देश में बराबर होता रहा है। कालिदास—वर्णित इन्दुमती के स्वयंवर में द्रविड़कुल से उत्पन्नपाण्डुराज को आर्य्यकुमारी के पाणिग्रहण का उपयोगी बतलाया गया है। संस्कृत में भी विद्वानों ने द्रविड़

शब्दों के प्रवेश के चिन्ह पाये हैं। हिन्दी शब्द "घोड़ा" तेलेगू "गुर्रा-मू" से निकला हुआ जान पड़ता है। घोटक पहले संस्कृत नहीं था। "गुर्रा-मू" गुजरात में "घोड़ो" हुआ। बाबू विजयचन्द्र मजुमदार का कथन है कि "अनार्य तृणमात्रभोजी "घोड़ा" आर्य्य मन्दुरा में आकर अतिरिक्त व्यज्जन और दाना के बल से 'घोटक' बन गया। बरिशाल में घोड़ा को अब भी गुर्रा कहते हैं"। पंडितवर विजय बाबू की तालिका से हिन्दी भाषा से सम्भवतः सम्बन्ध रखने वाले कुछ शब्द ये हैं:—

| हिन्दी | उड़िया | वङ्गला | तेलेगु | तामिल | |
|---|---|---|---|---|---|
| अकाल | —— | आकाल | —— | आकालि | काल शब्द से दुर्भिक्ष का कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। |
| चिकनी या चिकना | —= | —— | चक्कनी | | |
| बिल्ली | विलेइ | विड़ाल या बेराल | विल्ली | बुलइ या पुलइ | प्राचीन पाली में वैदिक और प्राचीन संस्कृत का "मार्जार" "विलार" और 'विड़ाल' के रूप में मिलता है। 'विड़ाल' शब्द अर्व्वाचीन संस्कृतही में व्यवहृत हुआ है। |
| —— | —— | —— | वेदुरु | ———— | वेदरू बांस को कहते हैं। इसी के रंग से संस्कृत "वैदुर्य्य" की उत्पत्ति है। |

---

# प्राचीन मुसलमानी बंगला के दृष्टान्त

( ले० श्रीयुत बाबू गिरिजा कुमार घोष )

हिन्दी रसिकों को मालूम होगा कि बंगला साहित्य के भंडार के पुष्ट करने के लिए बंगाल के हिन्दू मुसलमान दोनों सम्प्रदाय के लोग एक मत होकर कार्य कर रहे हैं—आज ही नहीं, बहुत पुराने समय से। वहां उर्दू फ़ारसी का प्रभाव मातृभाषा पर कुछ भी चोट नहीं पहुंचा सका। परन्तु खेद की बात है कि हिन्दी के भाग्य में यह सुख नहीं बदा है। दो एक इने गिने मुसलमान सज्जनों के सिवाय सारी मुसलमान मंडली हिन्दी का परिहार ही करना अच्छा समझती है।

मुसलमानी बंगला के कुछ दृष्टांत हिन्दी पाठकों के विनोद के लिये यहां पर दिये जाते हैं। मतलब आप ही जहां तक हो समझ लिया जावे—

इमाम सागर से—

(१)

अल्ला रसूलेर यदि कृपादृष्टि पानु।
बाङ्गाला हइते इमाम सागर शुनानु॥
शेख नुवाकु अली से विदित संसार।
ताहार तनय शेख फरीद खोन्दकार॥ इत्यादि॥

(२)

आमार आरज एक सभार हुजूरे।
पुस्तके ताकिव हइया निबे सबे सिरे॥
तहकीक करिया सबे सिरे निबे भाइ।
कमी बेसी कर यदि आल्लार दोहाइ॥
हादी से लेखा आछे शुन हो ममिन॥

....................................

करिनु शायरी पुंथि ( पोथी ) बड़ई मुशकिले।
इमाम सागर नांहं मिले काकिना संसारे॥
बाङ्गाला जबाने ताजा पुंथि इमामेर।
तादाते करिनू शेखी कर बराबर॥ इत्यादि॥

फतिमार सूरत् नामा नामक पुस्तक से—

आरम्भः—

विच् मिल्लाहे रहमानि रहिम।
प्रथमे आल्लार नाम करिये स्मरण।
रसूल चरणे मुइ ( मैं ) मागि निवेदन॥
शुन नर सब आम्हि ( हम ) एक कथा बुलो।
जेन फातिमार रूप देखिलेन्त आली॥
एक दिन आली गेल वक्करेर घर।
दरजाते ( द्वार पर) जाइ आली डाके (पुकारे) उश्चस्वर॥
इत्यादि।

स्मरण रहे कि ये दृष्टान्त मुसलमानी धर्मग्रन्थों से उद्धृत किये गये हैं। बंगाल के मुसलमान सैकड़ों वर्षों से मातृभाषा बंगला ही में अपने धर्म्म ग्रन्थों तक का अनुवाद करने लगे थे। इसके उपरान्त, हिन्दी की भांति, बंगला में भी मुसलमानों ने वैष्णव धर्म्म विषयों पर कविताएं की थीं।

## परीक्षा-समिति का दूसरा अधिवेशन

परीक्षा समिति का दूसरा अधिवेशन संयोजक की सूचनानुसार मि० वै० कृ० २ स० १९७२ तदनुसार ता० २ अप्रैल सन् १९१५ को दिन को ११ बजे आरम्भ हुआ जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे।

१—श्रीयुत पं० इन्द्र नारायण द्विवेदी।
२ " " राम जी लाल शर्म्मा।
३ " बा० पुरुषोत्तमदास टंडन।
४ " " राम दास गौड़ संयोजक।

पूर्व वितरित कार्य्य क्रम के अनुसार पहिले प्रथमा परीक्षा के आवेदन पत्रों पर विचार हुआ सभी आवेदन पत्र स्वीकृत हुए और काशी, कानपुर और हरदोई का नाम केन्द्र में सम्मिलित किया गया।

मध्यमा परीक्षा के आवेदन पत्रों पर इस लिये विचार न हो सका कि आवेदकों में बहुतों ने इस बात का कोई विश्वासनीय प्रमाण नहीं दिया था कि उन्होंने हिन्दी वा संस्कृत वा दोनों लेकर मैट्रिक, स्कूल लीविङ्ग वा इन्ट्रेंस की परीक्षा पास की है अथवा किसी विशेष योग्यता के कारण मध्यमा परीक्षा में बैठने के अधिकारी हैं। पं० इन्द्र नारायण द्विवेदी ने सम्मेलन पत्रिका में छपी हुई यह भूल दिखाई कि आवेदन पत्र और शुल्क भेजने की अन्तिम तिथि ३१ मई है और इस कारण अनेक आवेदक भ्रम वश अब तक आवेदन पत्र नहीं भेज सके। सर्व सम्मति से यह निश्चय हुआ कि इस भूल के प्रतीकार में समस्त दैनिकों और प्रसिद्ध २ साप्ताहिक पत्रों में तुरन्त प्रकाशित करा दिया जाय कि आवेदन पत्र और शुल्क जो इस भूल के कारण ३१ मार्च तक नहीं भेजे जा सके हैं १५ अप्रैल सन् १९१५

तक स्वीकार कर लिए जावेंगे इस मन्तव्य के अनुसार कार्य्यालय से साइक्लोस्टाइल करा के कार्ड उसी समय भेज दिए गए।

२—निश्चय हुआ कि १९७३ और १९७४ की परीक्षाएं अगस्त के महीने में पहिले रविवार को आरम्भ हों। यदि पहले रविवार को १ प्रतिपदा हो तो परीक्षा दूसरे रविवार को आरम्भ हो यह भी निश्चय हुआ कि प्रतिदिन एक प्रश्नपत्र दिया जाय और प्रत्येक प्रश्नपत्र ३ घन्टे से अधिक का न हो।

३—निश्चय हुआ कि सं० १९७३ की परीक्षाओं में सम्मिलित होने वालों के शुल्कसहित आवेदन पत्र सं० १९७२ की चैत्र कृष्ण ३० ता० २ अप्रैल सन् १९१६ तक आ जाने चाहिये।

४—निश्चय हुआ कि उपनियम आठ की पहली पंक्ति से ३ पंक्ति तक, "उत्तीर्णता" शबद से "परीक्षा में" शब्द तक काट दिया जाय तथा चौथी पंक्ति में "सब विषयों के अङ्क मिला कर" यह शब्द भी काट दिये जांय और उपनियम २६ में 'मध्यमा' के स्थान में "उत्तमा और मध्यमा" लिखा जाय तथा १२ उपनियम के अंतरगत यह नियम और बढ़ाए जाँय —

(अ) प्रति वर्ष की परीक्षा के लिये समिति पहले से ही परीक्षा केन्द्रों को नियुक्ति करेगी किन्तु उसे अधिकार होगा कि शुल्क आजाने की तिथि के एक मास बाद तक निर्द्दिष्ट केन्द्रों में से कुछ के नाम निकाल दे अथवा उनकी नामावली में और भी नाम जोड़ दे।

(इ) उत्तमा परीक्षा के लिए एक मात्र केन्द्र प्रयाग राज ही होगा।

(उ) शुल्क सहित आवेदन पत्र भेजने की तिथि परीक्षारम्भ की तिथि से कम से कम ३ मास पहले से होगी जिसकी सूचना समिति पूर्वोक्त तिथि से कम से कम २ मास पहिले विवरण पत्रिका तथा सम्मेलन पत्रिका द्वारा दे देगी।

५—निश्चय हुआ कि पृष्ट १२ की पहिली पंक्ति में एक के स्थान में २ और पृष्ट १६ में तीसरी पंक्ति में ४ के स्थान में २ छपना चाहिये था इस भूल का सुधार कर दिया जाय।

६—निश्चय हुआ कि १६ वें नियम के धारा (अ) के अनुसार स्थायी समिति के सदस्यों से निम्नलिखित परिवर्त्तन के लिए जवाबी कार्ड द्वारा सम्मतियां मांगी जायँ—

"नियम १५ में" परीक्षा से दो महीने, इन शब्दों के स्थान में 'समिति द्वारा नियत तिथि पर वा उस से' यह शब्द रक्खे जायँ तथा नियम १६ में 'परीक्षा स्थान शब्द के नीचे' यह शब्द और लिखे जायँ 'निर्वाचित विषय' यदि उत्तमा व मध्यमा परीक्षा हो" ।

७—उत्तमा परीक्षा के विषयमें यह मन्तव्य निश्चित हुआ कि "जिस विषय को परीक्षार्थी परीक्षार्थ चुनेगा उस विषय में उसे एक निबन्ध लिखकर जो छपे हुए डबल क्राउन १६ पेजी के २०० पृष्ठों से कम न होगा परीक्षा से २ मास पूर्व संयोजक के पास भेज देना होगा। इस लेख के न पहुंचने पर अथवा समिति द्वारा अयोग्य समझे जाने पर समिति को अधिकार होगा कि उस वर्ष की उत्तमा परीक्षा में लेखक परीक्षार्थी को सम्मिलित न होने दे निबन्ध आरम्भ करने के लिये पहले उसकी संक्षिप्त विषय सूची लिखकर संयोजक से अनुमति ले लेना आवश्यक होगा।

८—यह निश्चित हुआ कि उत्तमा परीक्षा निम्नलिखित विषयों में से किसी एक में ली जा सकेगी:—

(१) हिन्दी साहित्य जिसमें मराठी बंगला गुजराती इन तीनों में किसी दो भाषा से साधारण अभिज्ञता अन्तर्गत होगी।

(२) संस्कृत साहित्य जिसमें मराठी बंगला गुजराती इन तीनों में किसी दो भाषा से साधारण अभिज्ञता अन्तर्गत होगी।

(३) अंग्रेजी साहित्य जिसमें मराठी बंगला गुजराती इन तीनों में किसी दो भाषा से साधारण अभिज्ञता अन्तर्गत होगी।

(४) इतिहास जिसमें वैकल्पिक विषय होंगे।

(५) गणित ( जो कम से कम अंग्रेजी के बी०एस० सी० की

योग्यता का होगा)।

( ६ ) दर्शन जिस में वैकल्पिक विषय होंगे।

( ७ ) विज्ञान जिसमें वैकल्पिक विषय होंगे।

( ८ ) अर्थशास्त्र।

( ९ ) ज्योतिष भारतीय पाश्चात्य दोनों।

(१०) पुरातत्व जिसमें पाली और प्राकृति की पूरी अभिज्ञता सम्मिलित होगी।

९—उपर्युक्त दसों विषयों तथा मध्यमा के समस्त विषयों में प्रत्येक की परीक्षार्थियों की सूचनार्थ, बृहत अनुक्रमणी वर्गियोंसे बनवा कर परीक्षा समिति के सभासदों के पास भेजी जाय और उन की अनुमति अगली समिति में उपस्थित की जाय।

१०—वर्गों में यह छः वर्ग और बढ़ाये जायँ अंग्रेजी साहित्य, संस्कृत साहित्य, पुरातत्व, मराठी, बंगला और गुजराती और संयोजक उपर्युक्त वर्गियों की सूची बना कर उनकी स्वीकृत लेले।

समयाभाव से परीक्षकों की नियुक्ति पर विचार न होसका और न वर्गियों की सूची उपस्थित की जासकी। अतएव निश्चय हुआ कि अधिवेशन स्थगित होकर फिर १८ अप्रैल को ६ बजे सायंकाल में बैठे।

११—तारीख़ १८-४-१५ को परीक्षा समति का कार्य्य पुनः सुप्रारम्भ हुआ निम्न लिखित वर्गियों की सूची स्वीकृत हुई। मध्यमा के परीक्षार्थियों के आवेदन पत्र स्वीकृत हुए। परीक्षकों की सूची बनायी गयी और निश्चय हुआ कि संयोजक पत्रव्योहार करके उचित प्रबन्ध करें।

१२—यह निश्चय हुआ कि परीक्षार्थिनियों के लिए प्रथमा से हमीर-हठ निकाल दियो जाय तथा मिश्र बन्धु विनोदके निम्नलिखित अंश ही मध्यमा के साहित्य के चौथे प्रश्न पत्र के लिये पढ़े जायँ।

( पहिला भाग )

१३—( पृष्ठ १५ से ८४ ) ( पृष्ठ १०५ से ३५३ तक ) ( ३६३ से लेकर ३८४ तक ) ( ३८८ से लेकर ४०१ तक ) (४१३ से ४१६ तक)

## दूसरा भाग

१४-निम्नलिखित कवि और लेखकः—

सेनापति, मलूकदास, बेनी, महाराजा जसवंत, नीलकंठ, बिहारी, मतिराम, सबलसिंह, भूषण, कुलपति सुखदेव, कालिदास, महाराज छत्रसाल, आजर, अनन्द, निवाज, वृन्द, देव, बैताल, आलम, शेख, गुरू गोविन्दसिंह, पठान सुलतान, लाल, घन आनन्द, श्रीपति, महाराज विश्वनाथ सिंह, घाघ, नागरीदास, चरणदास, दास, तोष, रसलीन, गिरधर, नूर मुहम्मद, ठाकुर, गुमान, दूलह, राजा भगवंतराय खीची, सूदन, सुन्दरि कुवरि, दत्त, बृजवासी दास, गोकुलनाथ, गोपीनाथ, बोधा, लल्लूजी लाल, सदल मिश्र, पद्माकर, ग्वाल, सूर्य मल ।

## तीसरा भाग

( पृष्ठ १०७३ से १०८० ) ( १२२५ से लेकर १२४६ तक )

१५-तथा निम्नलिखित कवियों और लेखकों का वर्णनः—

द्विजदेव, काष्ठ जिह्वा स्वामी, गिरधर दास, पजनेश, महाराजा रघुराज सिंह, राजाशिव प्रसाद, बाबा रघुनाथ दास, लेखराज, महर्षिदयानन्द, राजा लक्ष्मनसिंह, ललिराम, बालकृष्णभट्ट, हरिश्चन्द्र, श्रीनिवास दास, शिवसिंह सेंगर, अम्बिका दत्त व्यास, सुधाकर, प्रताप नरायण मिश्र, देवकी नन्दन खत्री ।

१६-कई आवेदकों ने प्रार्थना की है कि गणित के परीक्षा विषयों की विस्तृतसूची प्रकाशित की जाय अतः निम्न लिखित सूची प्रस्तुत की गई और प्रकाशनार्थ स्वीकृत हुई ।

बीज गणित

परिभाषा—संकलन-व्यवकलन-कोष्ठ-गुणन-भागहार-घातक्रिया-मूल-क्रिया-प्रकीर्णक-महत्तमा पवर्तन-लघुतमा पवर्त्य-बीजात्मक भिन्न पदों काव्युत्पादन-भिन्न पदों का रूप भेद-भिन्न पदों का संकलन और व्यवकलन-भिन्न पदों का गुणा-भिन्न पदों का भागहार-भिन्न पदों का घात क्रिया-भिन्न पदों की मूलक्रिया-भिन्न संबन्धि प्रकीर्णक-समीकरण काव्युत्पादन—एक वर्ण एक घात समीकरण-अनेक वर्ण एक घात समीकरण—एक घात समीकरण संबन्धिप्रश्न-इष्ट

कर्म और द्वीष्ट कर्म-करणी का व्युत्पादन-करणियों का रूप भेद, उनका संकलन और व्यवकलन-गुणन और भाग हार-घात क्रिया और मूल क्रिया-महत्तमापवर्तन और लघुतमा पवर्त्य-भिन्न करणियों का रूप भेद-उनके संकलन आदि छ परिकर्म-करणी संबन्धि प्रकीर्णक और असंभाव्य राशिका गणित।

सरल त्रिकोण मिति।

कोण मापने की रीति–त्रिकोण मितीय सम्बन्ध-समकोणाधिक कोणों के त्रिकोण सम्बन्ध-दिये हुये त्रिकोण सम्बन्ध के कोण-मिश्र कोण-घातप्रमापक संख्या-त्रिभुज के कोण और भुजा का सम्बन्ध-त्रिभुज गणित-क्षेत्रफल आदि। ऊंचाई और दूरी मापने की रीति त्रिकोण मितीय प्रश्न तथा सब के उदाहरण।

रेखा गणित चौथा अध्याय तक जैसा कि यूक्लिड वा वक्लैदिस का लिखा हुआ प्रसिद्ध है।

---

# वर्गियों की सूची

## संस्कृत वर्ग

महामहोपाध्याय पं० गङ्गानाथ झा
श्रीयुत पं० चन्द्रमौल शुक्ल
" पं० चन्द्रशेखर शास्त्री
" पं हरिमंगल मिश्र
" पं० शिवाशंकर त्रिपाठी
" पं० काशीराम
" पं० रामावतार शर्म्मा पांडेय
" प्रोफेसर राजाराम शास्त्री
" पं० चन्द्रधर शर्म्मा गुलेरी

## इंगलिस वर्ग

श्रीयुत प्रो० अभय चरण मुकर्जी

,, पं० शिवाधर पांड़े प्रोफेसर
,, पं० काली प्रताप दुबे
,, पं० डी० ओझा एम० ए० एल० एल० बी०
,, घीसू लाल एम० ए० एल० एल० बी०
,, चांद करण शारदा बी० ए० एल० एल० बी०

## पुरातत्व वर्ग

श्रीयुत प्रो० हरीराम चन्द्र दिवेकर एम० ए०
,, नरेन्द्रदेव एम० ए०
,, पं० हीरानन्द शास्त्री एम० ए०
,, पं० गौरी शङ्कर हीरा चन्द ओझा

## मराठी वर्ग

श्रीयुत प्रो० हरीराम चन्द्रदिवेकर एम० ए०
,, पं० गोविन्द चिन्तामणि तांवे बी० ए० एल० एल० बी०
,, पं० बाबूराव पराडकर
,, पं० विनायक चिन्तामणि वैद्य
,, पं० माधव राव सप्रे
,, पं० गणपति जानकीराम दुबे

## बंगला वर्ग

श्रीयुत पं० अमृत लाल चक्रवर्ती
,, महामहोपाध्याय पं० गंगा नाथ झा
,, श्रीमती हेमन्त कुमारी चौधरानी
,, पं० राधा चरण

## गुजराती वर्ग

श्रीयुत मेहता पं लज्जाराम शर्म्मा
पं० छगन लाल एम० ए०
,, पं० ज्वाला राम पंड्या एम०ए०
,, पं० के० सी० पंड्या
,, के० एम० झवेरी

# हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति के तृतीयाधिवेशन का कार्यविवरण

स्थायी समिति का तृतीयाधिवेशन सम्मेलन—कार्य्यालय में वैसाख शु० १५ सं० १९७२ को ५ बजे संध्या को हुआ।

निम्न लिखित सदस्य उपस्थित थेः—

( १ ) बाबू रामदास गौड़
( २ ) ठाकुर शिवकुमार सिंह
( ३ ) बा० भगवानदास हालना
( ४ ) पं० चन्द्र शेखर शास्त्री
( ५ ) पं० लक्ष्मी नरायण नागर
( ६ ) बाबू नवाब बहादुर
( ७ ) पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल
( ८ ) बा० लालबिहारी लाल-सतना
( ९ ) पं० रामजीलाल शार्म्मा
( १० ) पं० द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी
( ११ ) बा० गिरिजा कुमार घोष
( १२ ) बा० राधा मोहन गोकुल जी

सर्व सम्मति से बाबू गिरिजा कुमार घोष ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

( १ ) सहायक मन्त्री ने पिछले अधिवेशन की कार्रवाई पढ़कर सुनायी जिसमें केवल निम्न प्रस्ताव के अतिरिक्त सर्व सम्मति से स्वीकृत हुवा। निम्न प्रस्तावः

"बा० रामदास गौड़—संयोजक परीक्षासमिति ने प्रस्ताव किया कि परिक्षासमिति के लिये तीन सौ रुपये दिये जायँ, निश्चय हुआ कि शुल्क की आय के अतिरिक्त दो सौ रूपया परीक्षा-समिति को और दिये जायँ"। बहु समिति से स्वीकृत हुआ।

(२) ठाकुर शिवकुमार सिंह का त्याग पत्र उपस्थित किया गया, त्याग पत्र पर विचार होही रहा था कि सम्मेलन के सभापति श्रीयुत पं० श्रीधर पाठक जी पधारे। अतएव बाबू गिरिजा

कुमार घोष ने सभापति का आसन परित्याग कर दिया और पाठक जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया। बहुत वादानुवाद के पश्चात् ठाकुर शिवकुमार सिंह जी का त्याग पत्र स्वीकृत हुआ। इस पर यह अड़चन हुई कि ठाकुर शिवकुमार सिंह के त्याग पत्र के स्वीकृत हो जाने पर पहली मई से संयोजक का कार्य्य कौन करेगा। अतएव इस पर बाबू गिरिजा कुमार घोष ने स्थायी समिति के सभासदी से त्याग पत्र दे दिया और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ। उनके स्थान पर प्रो० व्रजराज निर्वाचित हुए और सर्व सम्मति से वे ही संयोजक नियत हुए।

(३) नन्दकुमार देव शर्म्मा के त्याग पत्र और नवीन सहकारी मन्त्री की नियुक्ति पर विचार किया गया, बहुत वादानुवाद के पश्चात् बहु सम्मति से निश्चय हुआ कि नन्दकुमार देव शर्म्मा का त्याग पत्र पहली मई से स्वीकार किया जाय और मंत्री मण्डल सहायक मंत्री के आए हुए आवेदन पत्रों पर विचार करें।

(४) प्रो० रामदास गौड़ ने यह प्रस्ताव किया कि जब तक सहायक मन्त्री की नियुक्त न हो तब तक स्थानापन्न सहायक मन्त्री पं० महाबीर प्रसाद त्रिपाठी रहें और उन्हें २०) प्रतिशत अलौवंश दिया जाय। तथा उनके स्थानापन्न क्लार्क पं० रामचन्द्र मिश्र नियुक्त किये जायँ. इसका अनुमोदन चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्म्मा ने किया और वह सर्व सम्मति में स्वीकार हुआ।

(५) अरायज नवीसी के कार्य्य के लिये निम्न सज्जनों की एक कमेटी बनाई जायः—

(१) बा० गङ्गा प्रताप
(२) पं० लक्ष्मीनारायण नागर
(३) बा० नवाब बहादुर
(४) ठाकुर शिवकुमार सिंह

(६) समय अधिक हो जाने के कारण परीक्षा की नियमावली में संशोधन का विषय स्थगित रक्खा गया।

सभापति को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई।

# पुस्तकों की लूट

हमारे यहां पंजाब यूनिवर्सिटीकी हिन्दी परीक्षा, १ प्रोफ़ीशेन्सी, ( योग्यता ) और २ हाई प्रोफ़ीशेन्सी, ( उच्च योग्यता ) आदि के ( कोर्स ) पाठ्य पुस्तकें तथा हिन्दी परीक्षाओं के प्रचारक और प्रसिद्धनागरी प्रेमी अमृतसर निवासी—

जगन्नाथ पुष्करत, एफ़० टी० एस० लिखित पंजाब यूनिवर्सिटी की हिन्दी परीक्षा देने के "नियम" भी छपकर तैयार हैं। हिन्दी प्रेमियों के हितार्थ मूल्य केवल =) दो आने ही रक्खा है। जिन्हें इच्छा हो वह ( लेखक ) से वा निम्न लिखित स्थान से मंगा लें।

विशेष हाल जानने की इच्छा हो तो डाक व्यय के लिये )॥ आध आने का "टिकट" निम्न लिखित स्थान पर भेज पुस्तकों का बड़ा ( सूचीपत्र ) मंगा कर देखें।

पता:—पं तीर्थराम जोशी, बुकसेलर

अध्यक्ष:—

नं० ३ श्री विद्यारत्न पुस्तकालय,

बाज़ार माईसेवा, अमृतसर, (पंजाब)

# "सम्मेलन पत्रिका" के नियम।

१—"सम्मेल पत्रिका" हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन कार्य्यालय प्रयाग, से प्रतिमास प्रकाशित होगी।

२—इसका वार्षिक मूल्य १) रु० इसलिये रक्खा गया है कि सर्वसाधारण इसके ग्राहक हो सकें।

३--इस समय इस में प्रतिमास कुल २४ पृष्ठ ही रहा करेंगे। परन्तु आवश्यकता होने पर कभी कभी पृष्ठ संख्या बढ़ा भी दी जाया करेगी। आगे चलकर यदि इसकी सेवा साहित्य सेवियों को रुचिकर हो, और इसके ग्राहकों का यथोचित संख्या हो जाय तो यही पत्रिका अधिकतर पृष्ठ-संख्याओं में और अधिकतर उन्नत दशा में प्रकाशित की जायगी।

४--इसके प्रबन्ध-विभाग के पत्र- ग्राहक बनने के लिये आवेदन, विज्ञापन-सम्बन्धी पत्र, मनीआर्डर इत्यादि-मन्त्री, साहित्य-सम्मेलन कार्य्यालय, जानसेनगंज प्रयाग, के नाम भेजे जाने चाहियें।

५—सम्पादक के नाम की चिट्ठियां, बदले के समाचार-पत्रादि समालोचना की पुस्तकें, पत्रिका में प्रकाशित होने के लिये लेखादि भी ऊपर ही के पते से भेजे जाने चाहिये।

# विज्ञापनदाताओं के लिये नियम।

१—"सम्मेलनपत्रिका" में अश्लील विज्ञापनों को स्थान नहीं मिलेगा।

२—विज्ञापन साधारणतः पूरे और आधे पृष्ठ से कम स्थान के लिये स्वीकृत न होंगे।

१—पृष्ठ का मासिक मूल्य ... ३॥) होगा

२—आधे पृष्ठ का ... २॥) होगा।

३—जो लोग १२ संख्याओं में विज्ञापन छपवाने का मूल्य एक साथ भेज देंगे, उनका विज्ञापन एक संख्या में बिना मूल्य छाप दिया जायगा, अर्थात् १२ की जगह १३ बार उनका विज्ञापन छापा जायगा।

४—किसी दशा में पेशगी मूल्य बिना मिले कोई भी विज्ञापन नहीं छापा जायगा।

५—विक्रयार्थ पुस्तकों के विज्ञापनों पर ऊपर दिये हुए मूल्य से कम मूल्य लिया जायगा।

१ पृष्ठ का मूल्य १ मास के लिये ३॥) और

आधे " " २) होगा।

६—अदालतों में लेखकों की नौकरी, अध्यापक अध्यापिकाओं की नौकरी, इत्यादि हिन्दी-प्रचारार्थ नौकरियों के विज्ञापन एक बार बिना मूल्य छाप दिये जायँगे। दूसरी बार और अधिक बार के लिये ऐसे विज्ञापनों का मूल्य केवल १) प्रतिमास होगा। विज्ञापन ८ पंक्तियों से अधिक न हो।

मन्त्री, हि० सा० स० कार्यालय, प्रयाग।

पण्डित ओंकारनाथ वाजपेयी के प्रबन्ध से ओंकार प्रेस प्रयाग में छपी।

Reg. No. A-629.

# सम्मेलन-पत्रिका

## हिन्दीसाहित्य-सम्मेलन की

### मुखपत्रिका

भाग २ } श्रावण संवत् १९७२ { अङ्क ११

### विषय-सूची



वा० मू० १) ] [ एक प्र० =)

सम्पादक पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी ।

# सम्मेलन के उद्देश्य

(१) हिन्दी-साहित्य के अङ्गों की उन्नति का प्रयत्न करना।

(२) देवनागरी लिपि का देश भर में प्रचार करना और देश-व्यापी व्यवहारों तथा कार्यों के सुलभ करने के लिये हिन्दी भाषा को राष्ट्र-भाषा बनाने का प्रयत्न करना।

(३) हिन्दी को सुगम, मनोरम और लाभदायक बनाने के लिए समय समय पर उसकी शैली के संशोधन तथा उसकी त्रुटियों और अभावों के दूर करने का प्रयत्न करना।

(४) सरकार, देशीराज्यों, पाठशालाओं, कालेजों, विश्व-विद्यालयों और अन्य संस्थाओं, समाजों, जन-समूहों तथा व्यापार, ज़मींदारी और अदालतों के कार्य्यों में देवनागरी-लिपि और हिन्दी-भाषा के प्रचार का उद्योग करते रहना।

(५) हिन्दी के ग्रन्थकारों, लेखकों, पत्रसंपादकों, प्रचारकों और सहायकों को समय समय पर उत्साहित करने के लिये पारि-तोषिक, प्रशंसापत्र, पदक, उपाधि आदि से सम्मानित करना।

(६) उच्च-शिक्षा प्राप्त युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने के लिये प्रयत्न करना।

(७) जहां आवश्यकता समझी जाय वहां पाठशाला, समिति तथा पुस्तकालय स्थापित करने और कराने का उद्योग करना तथा इस प्रकार की वर्त्तमान संस्थाओं की सहायता करना।

(८) हिन्दी-साहित्य के विद्वानों को तैयार करने के लिए हिन्दी की उच्च-परीक्षाएं लेने का प्रबन्ध करना।

(९) हिन्दीभाषा के साहित्य की वृद्धि के लिए उपयोगी पुस्तकें तैय्यार कराना।

(१०) हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के उद्देश्यों की सिद्धि और सफलता के लिये अन्य जो उपाय आवश्यक और उपयुक्त समझे जायँ उन्हें काम में लाना।

---

# सम्मेलन-पत्रिका का उद्देश्य

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता करना, और साहित्य प्रेमियों से इसी के लिए उपदेश लेना।

# सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति
की ओर से प्रतिमास प्रकाशित।

भाग २ } श्रावण संवत् १९७२ { अङ्क ११

## अभ्युदय और मर्यादा

हमारे हिन्दी-भाषा-भाषी भाइयों को विदित ही है कि मर्यादा और अभ्युदय ये दोनों पत्र "अभ्युदयप्रेस" प्रयाग से प्रकाशित होते थे, दोनों ही का सम्पादन हमारे देश के गौरवस्वरूप श्रीमान् माननीय पं० मदनमोहन मालवीय जी के भतीजे पं० कृष्णकान्त मालवीय करते थे सम्पादन कैसा होता था इस विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं, हिन्दी संसार को इसका पूरा ज्ञान है। दोनों ही अपने देश की राजनीति, धर्मनीति एवं समाजनीति के सुधारक थे दोनों का प्रकृति और पुरुष का सा सम्बन्ध था। अभ्युदय अपने भाइयों की सेवा में कभी प्रति सप्ताह कभी सप्ताह में दो बार और कभी प्रति दिन पहुंचता था तो मर्यादा प्रतिमास पहुंचती थी। जिन बातों की कमी अभ्युदय के पढ़ने में रह जाती थी उनकी पूर्ति मर्यादाबद्ध लेखों से मर्यादा अवश्य ही करदेती थी। यद्यपि अभ्युदय के साथ मर्यादा का जन्म नहीं हुआ तथापि अभ्युदय एवं मर्यादा के उद्देश्य एक ही थे। जिस प्रकार परमपुरुष परमात्मा अपनी सृष्टि की रचना के निमित्त अपनी प्रकृति को प्रकट करता है उसी प्रकार अभ्युदय ने अपने भाइयों को उठाने के लिये अपनी राजनीति धर्मनीति एवं समाजनीति रूपिणी सृष्टि के सुधारने के लिये और अपने कार्यों को अग्रसर करने के निमित्त अपनी प्रकृति स्वरूपा मर्यादा को प्रकट किया था।

जिस समय हमारे भारत हितैषी लार्डकर्जन की कृपा से देश में राजनैतिक उथला पुथल मच रही थी, नवयुवकों—विशेष कर विद्यार्थियों में देश प्रेम की लहरें सीमा को नाँघ कर भी हिलोरें मार रही थीं, चारों ओर से स्वदेशी आन्दोलन और वायकाट की आवाज ऊँची होती चली जा रही थी, कांग्रेस भी अपने प्रस्तावों में वायकाट का वायकाट नहीं कर सकी, स्थान स्थान पर जोशीले और राष्ट्रीयभाव के फैलाने वाले नए नए पत्र और पत्रिकायें प्रकाशित होने लगगयीं थीं, गरम दल की प्रबलता ने सर्वसाधारण में नरमदल के प्रति लोगों में घृणा उत्पन्न करने लग गयी थी। राजा और प्रजा दोनों के सच्चे हितैषियों का समय चिन्ता और संकट के साथ कट रहा था, उसी समय राजा और प्रजा के हित के विचार से, दोनों दल के लोगों को समुचित सम्मति देने के लिए, हमारे दूरदर्शी माननीय मालवीयजी ने 'अभ्युदय' को जन्म दिया था। जिस समय हमारे प्रान्त में भी विदेश के कुछ फिरे दिमागवालों की छाया सी पड़ने लग गयी थी और बङ्गीय अधिकारियों के समान हमारे प्रान्तों के अधिकारियों को भी दमननीति जैसी भयङ्कर और व्यर्थ की कार्यवाहियों के प्रारम्भ करने की आवश्यकता प्रतीत होने लग गयी थी, उसी समय राजा और प्रजा के बीच में मध्यस्थ का काम करने के लिये उक्त मा० मालवीय जी ने 'अभ्युदय' को जन्म दिया था। जिस समय उच्च शिक्षा की अड़चने लोगों को अखरने लग गयीं थीं और सुधार के बदले विगाड़ के रूपमें १६ वर्ष की अवस्था के समान मेट्रिक के विद्यार्थियों के लिये नियम बनाकर मानो उनके मार्ग में वाधायें डाली गयीं थीं और सर्वसाधारण—विशेष कर के शिक्षित समाज को उस नीति के मर्मबेधी बाणका घाव व्याकुल कर रहा था, उसी समय "हिन्दूविश्वविद्यालय" की स्थापना करने की घोषणा देकर देश निवासियों को आश्वासन देने के लिये माननीय मालवीय जी ने 'अभ्युदय' को जन्म दिया था। जिस समय देश में आर्यसमाज और भारतधर्म—महामण्डल के उपदेशकों के विषमय उपदेशों से हिन्दू जाति में पारस्परिक द्वेषाग्नि की ज्वाला निकलने लगगयी थी, बड़े बड़े विद्वानों के व्याख्यानों में भी अपने भाइयों के प्रति घृणा करने वाली गालियों पर तालियां वजने लगगयीं थीं इतना ही नहीं मुकद्दमें वाज़ी और फ़ौजदारी की भी नौवत आने लगगयी थी,

उसी समय मा० मालवीय जीने सनातनधर्म के रूप में उन दोनों दलों के बीच में मध्यस्थ का काम करने के लिये 'अभ्युदय' को जन्म दिया था। कहां लो गिनावें जिस समय हमारे देश के राजा और प्रजा एवं प्रजा और प्रजा में आपस के मनोमालिन्यही नहीं विद्रोहाग्नि की ज्वाला भी प्रवलता धारण कर रही थी, उसी समय शान्ति स्थापित करके अपने देश के उत्थान के उद्देश्य से ही माननीय मालवीय जी ने 'अभ्युदय' को जन्म दिया था।

संसार में प्रायः देखा जाता है कि जिस उद्देश्य से जो कार्य किया जाता है उसमें पूर्णतया सफलता नहीं होती. किन्तु 'अभ्युदय' के लिए यह अभिमान की बात है कि उसका जन्म जिस उद्देश्य से हुआ था उसमें वह सदैव सफल रहा। माननीय मालवीय जी का गौरव हमारे देश निवासियों के हृदय पर उतना ही है जितना कि देश के सच्चे नेता के प्रति देश निवासियों के हृदय पर होना चाहिये। अधिकांश हमारे हिन्दी-भाषा-भाषी भाइयों को उनके अमृतमय उपदेश, अपने हित की बातें और नीतियों की कठिन समस्याओं के उत्तर पाने का द्वार एक मात्र 'अभ्युदय' ही था क्योंकि नतो सर्व० साधारण ही को और न माननीय मालवीय जी को ऐसा अवसर मिल सकता है कि उपदेश और कठिन समस्याओं के उत्तर स्वयं जाकर या आकर अपने कानों से सुन सकें या व्याख्यान द्वारा सुना सकें, ऐसी दशा में राजा और प्रजा के हित के लिए 'अभ्युदय' की कितनी बड़ी आवश्यकता है यह बतलाने की आवश्यकता नहीं प्रतीत होती।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारी हिन्दी-भाषा का एकही ( अभ्युदय ) पत्र था जिसका सञ्चालन एक माननीय नेता के द्वारा होता था, इस पत्र के लिये जितना आदर का स्थान प्रजा के हृदय पर था हम कह सकते हैं और विश्वास के साथ कह सकते हैं, कि उससे कम आदर का स्थान उदार और न्याय एवं सत्य के प्रेमी अधिकारियों के हृदय पर भी न था। इसके प्रमाण में गवर्नमेंट की रिपोर्टें और 'अभ्युदय' के लिए जो दिल्ली दर्बार का; आमन्त्रण पत्र आया था पर्याप्त है। अवश्य ही 'अभ्युदय' ने अपने ७॥ वर्षों में जिन कार्यों को कर दिखलाया है उनके लिए उसको अभिमान करने का अवसर है। जो 'अभ्युदय'

राजा प्रजा के और भाई भाई के बीच में बढ़ते हुवे विद्वेष को शान्त करता था जो 'अभ्युदय' अपने भाइयों को जितने प्रेम और पाण्डित्य से हित की बातें समझाता था—उचित मार्ग पर चलने का उपदेश देता था और न माननेवालों की गालियां सुनते हुए भी अपने मुख से—कभी कटुवचन नहीं निकालता था, उतनेही प्रेम उतनेहीं पाण्डित्य से नहीं नहीं उससे भी कहीं अधिक प्रेमपूर्ण पाण्डित्य से राजा एवं राजकर्मचारियों को भी उपदेश देता था। उचित मार्ग बतलाता था और अपने उग्रनीति के धारण करनेवाले भाइयों की गालियां भी सुनता था, आश्चर्य, कि उस पर आंखें क्यों और किसने लगायीं? वह शत्रुही किसका था? यह अनहोनी समझ में नहीं आती। जो गुण 'अभ्युदय' में थे वे 'अभ्युदय' में ही थे उसके लिए अधिक लिखना व्यर्थ है किन्तु लिखते खेद होता है पश्चात्ताप होता है और आश्चर्य होता है कि हमारी गवर्नमेण्ट की कृपा से ऐसे पत्र का भी इस समय अस्त सा हो रहा है. साथही 'छायेव' के समान ही मर्यादा भी अपना दर्शन अब नहीं दे रही है। जिस प्रकार सूर्य के साथ ही साथ ऊषा की लालिमा भी आती और जाती है उसी प्रकार "अभ्युदय" के साथही साथ मर्यादा भी इस समय अदृश्य हो रही है। यद्यपि हमारे ज्योतिष का सिद्धान्त है कि छोटे मोटे ग्रह अस्त हुआ करते हैं किन्तु जिनसे सारे संसार में प्रकाश फैलता है और जो प्राणी मात्र के जीवन स्वरूप हैं उन भगवान सूर्य-नारायण का अस्त कभी नहीं होता। यद्यपि प्रतिदिन कुछ समय के लिए हमें सूर्यनारायण की मूर्ति दृष्टिगोचर नहीं होती तथापि उस समय में (रात्रि में) भी वे अस्त नहीं होते। जिस समय हमारे और भगवान सूर्य के मध्य में पृथ्वी की आड़ पड़ जाती है उसी समय हमें उनके दर्शन नहीं होते किन्तु हमारे भारतवर्ष के सौभाग्य से प्रत्येक २४ घण्टे के बीच में वे एक बार १०—१५ घण्टों के लिए अवश्य ही दर्शन देते हैं। हां कभी कभी ऐसा भी समय आजाता है कि सूर्यभगवान में ग्रहण लग जाता है और दिन में भी कुछ समय के लिए वे अदृश्य अथवा म्लानकान्ति हो जाते हैं, उसके कारण भी उनके दोस्त ही होते हैं। पुराणों में तो ग्रहण का हेतु राहु की छाया बतलायी गई है किन्तु गणितवेत्ता और प्रत्यक्षवादीगण केवल उसी को न मानकर सूर्य में ग्रहण लगानेवाला चन्द्रमा को भी कहते हैं—जिन को

सूर्य ही चमकाया करते हैं। ठीक ही है कलिकाल में सज्जनों से भी उपकार का बदला अपकार से मिलता है। मेरा तो विश्वास है कि 'अभ्युदय' को अस्त करनेवाला संसार में कोई नहीं है, वह सूर्य हैं हां उसकी किरणों से जिनको प्रकाश मिलता है अथवा यों कहें कि जो 'अभ्युदय' रूपी सूर्य के न रहने पर देश की स्थिति के यथार्थ समाचार रूपी प्रकाश को न पासकेंगे उन्हीं के द्वारा 'अभ्युदय' में यह ग्रहण लगा है। कुछ समयों के लिए हमें 'अभ्युदय' के दर्शन भले ही न हों किन्तु अभ्युदय का अस्त नहीं हो सकता उसका अस्त होना उतनाही असम्भव है कि जितना सूर्य भगवान का।

'अभ्युदय' के अध्यक्ष हमारे माननीय मालवीय जी हैं। गवर्नमेंएट को ता० २६ जून सन् १९१५ के अभ्युदय के किसी लेख पर सन्देह हुआ है और उसने ३० जुलाई सन् १९१५ को अभ्युदय प्रेस के अध्यक्ष की हैसियत से उक्त मालवीय जी को २५००) की ज़मानत देने के लिए नोटिस दी थी। माननीय मालवीय जी ने उस आज्ञा को उचित नहीं समझा जैसा कि उनके पत्र ( ८—८—१५ ) से विदित होता है जो उन्होंने संयुक्तप्रान्त की सरकार के चीफ सेक्रेटरी के पास भेजा है। अवश्य ही अपने सिद्धान्त पर दृढ़ रहना सत्पुरुषों का धर्म है। माननीय मालवीय जी के विचार से जब गवर्नमेंएट का ज़मानत मांगना अनुचित है तब उस अनुचित आज्ञा का पालन करना कहां तक उचित हो सकता है पाठक स्वयं विचार कर सकते हैं। साथही अपने न्यायानुमोदित आन्दोलन के सिद्धान्तानुसार गवर्नमेंएट की सब प्रकार की आज्ञा का पालन करना भी आवश्यक है, अतएव माननीय मालवीय जी ने अभ्युदय प्रेस को बन्द कर देना उचित समझा और भौमवार ता० १० अगस्त से अभ्युदय प्रेस बन्द कर दिया गया। यद्यपि इस कार्य में गवर्नमेंएट ने जल्दी में आकर विचार नहीं किया मा० मालवीय जी के पत्र से जो गवर्नमेंएट और प्रजा के हित हो सकते थे वे किसी कम्पनी के या यों कहें कि सर्वसाधारण के पत्र से कदाचित नहीं हो सकते क्योंकि जो कार्य मध्यस्थ द्वारा हो सकते हैं वे स्वयं वादी प्रतिवादी द्वारा नहीं हो सकते अस्तु—'अभ्युदय' प्रेस के बन्द होने के साथही साथ 'अभ्युदय' पत्र और 'मर्यादा' का निकलना भी बन्द हो गया है, इतनाही नहीं 'अभ्युदय' से उत्तम उत्तम पुस्तकें भी अब

नहीं निकल सकेंगी। यह हिन्दी भाषा भाषी भाइयों के लिए बहुत ही दुःख का विषय है। हमारे हिन्दी प्रेमी भाइयों में उत्साह है, वीरता है और दान वीरता है, अनेक लोगों की इच्छा थी कि हम लोग रुपया दे डालें, मा० मालवीय जी को जमानत के रुपये न देने पड़ें और प्रेस बन्द न हो। परन्तु मामला तो रुपये का नहीं-सिद्धान्त का है ऐसी दशा में ज़मानत देकर प्रेस चलाने की अपेक्षा प्रेस बन्द करना ही उचित समझा गया है। फिर भी 'अभ्युदय' और 'मर्यादा' का निकलना बन्द नहीं होगा और होना भी न चाहिये। अब प्रेस और पत्रों के लिए कम्पनी बनायी जा रही है। कम्पनी का मूलधन २५०००) का २५०० हिस्सों में रक्खा गया है। जिस तेजी से इस समय हिस्से बिक रहे हैं और हिन्दी प्रेमी भाई उत्साह दिखा रहे हैं उससे अनुमान होता है कि कम्पनी के हिस्से बात की बातमें बिक जायंगे। इतना अवश्य ही हम कहेंगे कि जिस हिन्दी प्रेमी का रुपया इस कम्पनी में-स्वार्थ की दृष्टि से नहीं सेवा की दृष्टि से लगेगा उसे हम बड़भागी कहेंगे क्योंकि ऐसी दशा में हम यदि कम्पनी के हिस्सों के रुपये से भी 'अभ्युदय' की सेवा न कर सकें तो हमारे समान कृतघ्न और दूसरा कौन होगा।

---

## हिन्दी-बन्दना

[ ले० श्रीयुत रामचन्द्र मिश्र ]

जय जयति जय मातृभाषा नागरी गुनआगरी,
सुखकारिणी मनहारिणी सुठिविमलकीर्ति उजागरी।
स्वर मंजु मृदु व्यञ्जन विविध वररेख लेख विहारणी,
नखशिखअलंकृत मुकुट चामर छत्रःछविमय धारिणी॥
तेरा निरादर हम सबों ने मूर्खतावश जो किया,
जगदीश न्यायी ने हमें उस पाप का प्रतिफल दिया।
हम अब तेरी सेवा से वंचित हो न रहना चाहते,
सुख, पुण्य, धर्म महान तेरी ही शरण में मानते॥
हे नागरी माता! करो दुख दूर पाप क्षमा करो,
बल, वीर्य, धैर्य प्रदान कर सब निवलता मेरी हरो।

कर्तव्य से मुख अब न मोड़ें चित्त की यह धारना,
सर्वस्व अर्पण करदिखा दें पूर्णव्रत की पालना ॥
विनती हमारी आप से है भारतीयो, कान दो,
इस राष्ट्रभाषा भव्य के विस्तार पर अब ध्यान दो ।
यह नागरी ही राष्ट्रधर्म-प्रवाह का इक स्रोत है,
इस के उदय से फैलती राष्ट्रीयता की जोत है ॥
होकर खड़े हम भ्रातृगण सब एक झंडे के तले,
आओ परस्पर प्रेम से परिपूर्ण मिल जाएं गले ।
इस राष्ट्रभाषा, एक जनता का विकास अपार हो,
जय मातृभाषा मातृभाषा ही का जयजयकार हो ॥
प्रान्तीयता का अन्धकार प्रकाश से भगने लगा,
इस देश में अब प्रेमभाव उदार हो जगने लगा ॥
हिन्दी हमारी हिन्द में आसन सुखद लहने लगी,
राष्ट्रीयता की सुखद शीतल वायु भी बहने लगी ॥
साहस दिखाया उचित अपने उच्चभाव विचार का,
मरहठे गुजरातियों ने मातृप्रेम प्रचार का ।
आदर्श सब प्रान्तों का अपनी कीर्ति से है बन रही ॥
सब को जगाने की है मानो मनमें उस के ठन रही ॥
उस राजपूताने में हिन्दीप्रेम कैसा बढ़ रहा,
हिन्दू व हिन्दुस्थान पर जो आदि से है मर रहा ।
यह राष्ट्रभाषा सुखमयी निजबेलि अब फैला रही,
भारत के इस उद्यान में कैसे सुमन, फल ला रही ॥
जो सो रहा हो जागना उसका नितान्त अवश्य है,
संसार में प्राणी कोई हो इस नियम के वश्य है ।
इसही नियम से जागने का समय अपना आगया,
आलस्य है यद्यपि, तथापि प्रकाश रविका छा गया ॥
कर्तव्य में यदि तुम सभी तत्पर रहोगे सर्वदा,
भर जायगी द्रुत हिन्द हिन्दी हिन्दुओं में सम्पदा ॥
तुम एक ही माता की गोदी के सभी सन्तान हो,
भारतनिवासी एकभाषी हों कि तब कल्यान हो ॥

एवमस्तु

---

# हिन्दी की विलक्षण एकता

( ले० श्रीयुत पं० गयादत्तत्रिपाठी बी० ए०, प्रयाग )

साधारणतः उत्तरीय हिन्दुस्थान में जितनी भाषाएँ बोली जाती हैं सब हिन्दी भाषा के अन्तर्गत हैं—परन्तु ये सब भाषाएँ देश और स्थान के भेद से भिन्न भिन्न हैं—विचार करने से स्पष्ट होता है कि हम लोगों की मातृभाषा बहुत थोड़े ही दूर दूर पर बदल जाती है, जो भाषा प्रयाग की है वह भाषा प्रयाग के पूर्व मिरज़ापुर तथा पश्चिम में फ़तेहपुर की नहीं है यदि और विशेष ध्यान दिया जाता है तो प्रकट होता है कि प्रयाग में भी इस भाषा के कई स्वरूप हो रहे हैं।

साधारण प्रकार से हिन्दी भाषा के पूर्व्वीय हिन्दी और पश्चिमीय हिन्दी के दो भेद हैं। पूर्व्वीय हिन्दी का जन्म मागधी की गोद में है और पश्चिमीय हिन्दी सूरसेनी भाषा की पुत्री है। सूरसेनी तथा मागधी दोनों प्राकृत भाषाएं संस्कृत भाषा की पुत्री हैं इस वंशावली से यह सिद्ध होता है कि पूर्व्वीय तथा पश्चिमीय हिन्दी ये दोनों भाषाएं संस्कृत की प्रपौत्री हैं। मागधी भाषा का मुख्य स्थान पूर्व में पाटलिपुत्र अर्थात पटना था और सूरसेनी भाषा का मुख्य स्थान पश्चिम में मुरादाबाद मेरठ प्रभृति के समीप में था। पूर्व्वीय और पश्चिमीय देश के बीच अवध में इन दोनों भाषाओं के मेल से एक तीसरी भाषा हो गयी थी जो अवधी भाषा व अर्धमागधी भाषा के नाम से प्रसिद्ध है। इस अर्धमागधी के अन्तर्गत प्रयाग की भी हिन्दी है। ऊपर कह आये हैं कि देश देश के भेद से भाषा के रूप में भी भेद पाया जाता है। इस विषय में और सूक्ष्म विचार करने से यह भी प्रगट होता है कि थोड़ी ही दूर में अर्थात् प्रत्येक प्रान्त नगर व परगना की बोली में भी भिन्नता है इसी प्रकार ज़िला प्रयाग के प्रत्येक कोने में लोगों की बोली बदल गयी है।

ज़िला प्रयाग के स्वाभाविक तीन विभाग हैं। अर्थात् यमुना पार, गंगापार और गंगा एवं यमुना का मध्यदेश—अन्तर्वेद वा दुआबा परगना बारा और खैरागढ़ को छोड़ कर सम्पूर्ण प्रयाग मण्डल में अवधी भाषा बोली जाती है और बारा व खैरागढ़ में जो भाषा है वह बघेली और भोजपुरी भाषा का रूपान्तर है। प्रयाग जैसे बड़े

नगर के निकट होने से कुछ कुछ उर्दू भाषा का भी मेल हो रहा है ज़िला के मध्यभाग की भाषा अर्थात् वह भाषा जो चायल और झूंसी के परगने में बोली जाती है अवधी-भाषा है, डाक्टर ग्रीअर्सन साहब ने मध्यप्रयाग की भाषा अर्थात् परगना चायल और झूंसी की भाषा का उदाहरण इस प्रकार दिया है :—

"एक मनई के दुइ बेटवा रहेन। छोटका बेटवा बाप से कहेस ए बाप धन का हिस्सा जवन हमका चाही हमका देह। तब धन उनका बांट देहेस। थोरे दिन बीते छोटका बेटवा सब बटोरि के बड़ी दूर चलगवा। उहां आपन धन सब खराब कै दिहिस और वह देश में काल पड़ गवा। तब वह भूखन मरै लाग"।

गंगापार में उत्तर और पश्चिम की ओर परगना सिकंदरा, मिरज़ापुरचौहारी, नवाबगंज और सोरांव में तथा मध्यभाग के परगना कड़ा, करारी, और अथर्वन में जो भाषा बोली जाती है वह ऊपर लिखी हुई मध्यभाग की भाषा से कुछ भिन्न है, यहां की भाषा बैसवारी-भाषा से बहुत मिलती है। इस भाषा का उदाहरण उक्त डाक्टर साहब ने इस प्रकार दिया है।

"ऐसे ऐसे दुइ परोसिन मेहरारू रहैं। एक के लरिका बाला रहेन और एक के न रहैं। आंधी आई बड़े ज़ोर। कहिन कि चलो बहिन आव बिनी। सो एक तो आंव बिनै लागी जौनी के लरिका रहैं। और जौनी के लरिका ना रहैं झांड़ी मां कोइ का लरिका उड़ि के आवा रहै परा रहै। तौ उइ गईं उठाय लिहिन भारै पोछै लागीं लै गईं घरै सेवा करै लागी। बियाह किहिन गौन लै आईं। वहि-के माथे घर-की गिरस्ती छोड़ि दिहिन और खाइ-का करै और खवावै। जो कुछ बचै करोवन पोंछन सो बुढ़िया का देइ। सो उइ दुबराइ लागीं। तौ लरिका पूंछिन कि हमार अम्मा काहे दुबराइ लागीं। तौ उइ कहिन की खाइ-का तौ मैं सब कुछ देत-हौं जब चाहौ तब परतिग्यां लै लेव मोरि। तौ एक दिन परधियाने तौ सेंदुर टिकुली की डिबिया दिखावै की अम्मा और लै लेव। तौ उइ कहिन कि भय्या अब तुम देव। मैं अघाय गयुं। तौ बेटवा दौरि-कै देखिसि सेंदुर टिकुली-कै डिबिया। तौ पकरि-कै झोंटी पीटैं लाग। तौ उनकी महतारी हाथ जोरिन की अब ना मारो। आंधी पानी ना आवत तौ बगियै ना जातिउं। ऐसा पुत्र कहां पौतिउं। कौरो को देत।"

परगना खैरागढ़ के उत्तर टप्पाचौरासी के निकट और परगना करछना, मह और किवाई की भाषा मध्यप्रयाग की भाषा से कुछ भिन्न हो कर पूर्व में मिरज़ापुर की भाषा से बहुत मेल खाती है, इस भाषा को प्रयाग के लोग "पुरबिया-बोली" कहते हैं परन्तु

यथार्थ में यह पुरविया नहीं है। इस भाषा को भी अवधी-भाषा कहना ही उचित प्रतीत होता है।

इस भाषा का नमूना भी डाक्टर ग्रीअर्सन की उक्त पुस्तक से उद्धृत किया जाता है :—

"ऐसे ऐसे एक राजा रहैं। सो राजा-के एक रानी रहीं। हसैं तौ फूल गिरैं और रोवैं तौ मोती झड़ै। राजा के एक लौंडी रही। रानी-का विदा कराइ कै राजा-के मकान-को चली। बीच में रानी पिआसी भईं। लौंडी कहेन की खांड़ खाइ लेव। रानी खांड खायेन पिआस न बुतान। तब लौंडी कहिस की तुम आपन पोसाक जौन पहिरे हा तौन हम-का उतार कै आवै देउ। सो तुम हमार पहिर लेउ पानी ले-आवउ तलाव से। जो रानी तलाव पर गईं पानी पीऐ सो लौंडी छिप-के डोली मां बैठी कहारन का हुकुम दै दीन की चलो। कहारन डोला लै चलें। रानी बीच मां पानी पी-के आईं। तो रोवै लागीं। रोवत रहीं कि एक मिस्त्री मिला। कहेस क्यों बेटी तुम क्यों रोती हो। तो बतावै लागीं की हम अपने मां बाप से विदा भयेन तो हमसे लौंडी छल किहिस। मिस्त्री उन-का ले वाये लैगा एक बरामन-के घर मां टिकाय दिहिस। लौंडी वांदी उनका लगाए दिहिस। जो खिजमत करै लागी। सो मालिन हार लावै लागी। और हुआं राजा-के इहां लौंडी-हूका हार देव जात रहै। रानी तो सूप भर मोती देइँ और एकठो केवँलगट्टा का फूल देइँ। और लौंडी एक डबल का महीना देइँ। तो एक वेर राजा के यहां पहुंचने में बेर हो गई। मालिन का हार नहीं लीना। तौ मालिन कहेस की एक मिस्त्री एक औरत लेवाइ लै आवा है और वेटी के समान राखे हैं। सो उनसे हम सूप भर मोती पाइत है। तो ऊनाही तेहा करतीं। एक डबल मिला और न मिला। तोहरे हांथ फूल वेचले कौन फायदा। इन बातन का राजा कतौं कतौं पता पायेन व खोज किहेन सो मालुम भा कि लौंडी है। रानी बढ़ई के मकान-मां है। तब राजा बढ़ई के इह गये औ रानी का चेरौरी किहेन। तब अपने मकान का लेवाइ लाये। जस उनका दिन फिरा तस सब का दिन फिरै।"

परगना वारा और परगना खैरागढ़ के (टप्पाचौरासी को छोड़ कर) जो भाषा बोली जाती है वह बघेली-भाषा के नाम से प्रसिद्ध है। शुद्धभाव से यह बघेली-भाषा नहीं है यह भाषा बघेलखंड, मिरज़ापुर व प्रयागनगर की भाषाओं की मिश्रितभाषा है। इस भाषा का नमूना उक्त डाक्टर साहब ने इस प्रकार दिया है :—

ऐसे ऐसे एक सीगठ वो बाघ रहैं। दूनौ जने खेती किहेन काटेन मीजन। सीगठ कहेन की तरे का लेवे की ऊपर का। बघउ कहेन की हम तरे-का लेव। तब सीगठ कहेन की बाघराम हम तुमार असमंगी करव। बरा, भात, फुलौरी सीगठराम बनाइ कर धइ दिहेन। बाघराम खाइन। बाघ कहेसि की सीगठराम, अब हम तुमार

असमंगी करित है। तब बाघराम डेठुरा मेठुरा चुरइ कर सीगठ के आगे धइ दिहेन। सीगठ वो बाघ-के बीच में एक अहिर सब बात सुनत रहा। अहिरवा कहेसि की बाघ की असमंगी नाही बनि परी। सीगठराम की असमंगी बनि परी है। बघऊ कहिन कि हम तुमका खाब, चबाव, हमार गीला कि हवह। तब अहिरऊ अपनी महतारी से कहेन की हे माई। हम का बाघ आज धिरये वा की तुम का हम खाइलेव। तब उंकर महतारी कहेस कि दहजरा के नाती कैसे। ( क्रमशः )

———:o:———

# समालोचना

[ ले० श्रीयुत गिरिजाकुमार घोष ]

"फ़िज़ी द्वीप में मेरे २१ वर्ष" लेखक पंडित तोताराम सनाढ्य प्रकाशक—भारती-भवन, फ़ीरोज़ाबाद—आगरा। क्रौन ८ पेजी १६८ पृष्ठ। मूल्य कुल छः आना।

भगवान श्रीकृष्ण का कथन है कि जब जब संसार में धर्म की ग्लानि होती है, तब तब दुष्टों को दंड देने और धर्म की रक्षा के लिए भगवान अवतार ले कर संसार को डूबने से बचाते हैं। इसी दैवी नियम के अनुसार जब जब प्रकृति को किसी प्रकार का भारी दुःख पहुंचता है, तब तब मनुष्य जाति के हृदयों में उस दुःख को हटाने के लिए भगवान की सत्ता जग उठती है और अभाव के साथ साथ उसके मिटाने का उपाय भी सूझने लग जाता है। भोले भाले ग्रामवासी स्त्री पुरुषों को "अरकाटी" लोग जिस प्रकार बहका-कर टापुओं को भेजा करते हैं, हम लोग जान कर भी इस महा-भयङ्कर अनीति को अनजान कर देते हैं।

इन्ही अरकाटियों के दुराचरणों को हिन्दीभाषी-संसार के सामने प्रकट करने के लिए ग्रन्थकार का अवतार हुआ था। तोता-राम जी जिस समय बालक ही थे। इसी प्रयाग की कोतवाली के सामने वाले बाज़ार से एक अरकाटी ने इनको फुसला कर प्रयाग से कलकत्ता और कलकत्ते से समुद्रपार फ़ीज़ी के टापू में देशान्त-रित कर दिया। घर पर इनकी बुढ़िया अभागिनी माता रह गयी। भाई को इनकी दुर्दशा का पता लगा तो बेचारा समाचार सुनते ही तड़पकर मरगया और इस पढ़े लिखे ब्राह्मण बालक को अंग-रेज़-मालिक का घर भरने के लिए खेत में कड़ी मेहनत करनी

पड़ी। पेट भर खाने को भी कभी न मिलता। काम कम होता तो मज़दूरी के टके कटजाते। इस प्रकार अनेक दुःख सहते हुए अभागे तोताराम ने फ़ीज़ी में २१ वर्ष काटे, अब वे फिर घर लौट सके हैं। परन्तु जीवन का मुख्य भाग इनका देशान्तर में कुली का काम करते बीत गया। इस दुःख की कथा और श्वेतवर्ण-दानवों की दानवी लीला के सत्य वर्णनों के पढ़ते पढ़ते नेत्रों से अकस्मात आंसू निकल आते हैं, शरीर पर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इस महापाप-पूर्ण गुलामी की प्रथा की जड़ कैसे उखड़ेगी सोचते सोचते कलेजा कांप उठता है। प्रयाग में भी अरकाटियों की एक कुलीडीपो है। जी में आता है कि उसमें घुसकर अरकाटियों का समुचित सत्कार करें। परन्तु जब दक्षिण-अफ़रीका में हिन्दुस्थानी-कुलियों पर घोर अत्याचार रोका जा सका, तब आशा होती है कि हमारी न्यायी सरकार के कानों में दूसरे टापू वाले अभागे भारतवासी-कुलियोंके मर्मस्पर्शी आर्त्तनाद भी अवश्य पहुंचेंगे और सरकार उनके दुःखों को अवश्य दूर करेगी। सरकार के कानों में इन दुःख की कथाओं के पहुंचाने के लिये घोर आन्दोलन की आवश्यकता है, और जब तक सरकार की ओर से इस अनर्थ का मिटा देना सम्भव न हो तब तक अरकाटियों की ठगविद्या से बचने के लिए ग्रामीण और नागरिक, भोले भाले स्त्री पुरुषों को सावधान करने की भी बड़ी भारी आवश्यकता है। यह कार्य समस्त पढ़े लिखे मनुष्यों का है। इसी पुण्यकार्य में सहायता देने के लिए आलोचित पुस्तक का प्रकाश हुआ है। हिन्दी के अक्षरमात्र का भी जिसको ज्ञान है उसे तोताराम जी की पुस्तक मगवा कर पढ़नी चाहिये। हमारी तो राय यह है कि ऐसी पुस्तकें और भी प्रकाशित हों, और प्रत्येक के १००० नहीं कम से कम दस दस हज़ार प्रतियां छाप कर गावों में विना मूल्य बांटी जावें और भारत माता के सपूत धनाढ्य लोग अभागे ग्रामीणों को सावधान करने के लिये अपनी थैलियाँ खोल कर ऐसी पुस्तकें प्रकाशित करवावें और इस लोक में यश और परलोक में पुण्य के भागी बने। जो लोग धनी नहीं हैं उनको छः ही आने पैसे लगा कर इस पुस्तक की एक एक प्रति मंगवा कर पढ़नी और अपने परिचित शिक्षित अशिक्षित स्त्री पुरुषों को पढ़कर सुनानी चाहिए। इस पुस्तक की अभी १००० प्रतियां छपी हैं। परन्तु इस

का विषय ऐसा मर्मभेदी है, इसकी कथाएं ऐसे अच्छे ढंग से लिखी गयीं हैं, कि हमको आशा है कि पहले संस्करण की सब प्रतियां झटपट निकल जायंगी। हिन्दू, मुसलमान,—भारतवासी मात्र को यह पुस्तक पढ़नी चाहिए। उत्साह मिलेगा, पुस्तक छपवाने का खर्च मिल सकेगा तो ग्रन्थकार टापुओं की ओर भी कथाएं प्रचार कर सकेंगे।

——:o:——

## सम्मेलन की वर्तमान स्थयीसमिति का चौथा अधिवेशन

स्थायीसमिति का चौथा अधिवेशन सम्मेलन-कार्य्यालय में मि० श्रावण शु० २, सं० १९७२ ता० १२ अगस्त सन् १९१५ को संध्या समय ५ बजे हुआ, जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे।

१ श्रीयुत पं० श्रीकृष्ण जी जोशी।
२ ,, पं० रामजीलाल शर्म्मा।
३ ,, पं० द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी।
४ ,, पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी।
५ ,, पं० लक्ष्मीनारायण नागर।
६ ,, बाबू भगवानदास हालना।
७ ,, प्रो० व्रजराज बहादुर।
८ ,, पं० चन्द्रशेखर शास्त्री।
९ ,, पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल।
१० ,, बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन।

सर्व सम्मति से श्रीयुत पं० श्रीकृष्ण जोशी जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया। निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किया गया और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

(१) इस समिति के सदस्य, हिन्दी-साहित्य के स्तम्भ और देश के सेवकों में अग्रगण्य स्वर्गवासी राय देवीप्रसाद जी पूर्ण की असामयिक मृत्यु से हिन्दी-भाषा और देश की जो हानि हुई है उस पर यह समिति अत्यन्त शोक प्रकाश करती है और उनके दुःखी कुटुम्बियों के साथ समबेदना प्रकट करती है।

निम्नलिखित दूसरा प्रस्ताव उपस्थित किया गया और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

(२) हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक और सम्पादक स्वर्गवासी पं०

तुलसीराम स्वामी की असामयिक मृत्यु पर यह समिति अत्यन्त शोक और उनके कुटुम्बियों के साथ समवेदना प्रकट करती है।

( ३ ) निश्चय हुआ कि प्रथम मन्तव्य की एक प्रति रायदेवीप्रसाद पूर्ण के कुटुम्बियों के पास और द्वितीय मन्तव्य की एक प्रति पं० तुलसीराम स्वामी के कुटुम्बियों के पास भेजी जाय।

( ४ ) गत अधिवेशन का कार्य्य विवरण पढ़ कर सुनाया गया और स्वीकृत हुआ।

( ५ ) सहायकमंत्री ने निम्नलिखित आयव्यय का हिसाब उपस्थित किया, आयव्यय के निरीक्षक ने मि० मार्गशीर्ष शु० ६ सं० १६७१ ता० २३ नवम्बर सन् १६१४ ई० से मिती ज्येष्ठ कृष्ण ३ सं० १६७२ ता० ३१ मई सन् १६१५ ई० तक का हिसाब जांचा था, वह सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

व्यय का चिट्ठा

| आय | | व्यय | |
|---|---|---|---|
| ४७६०।-)१/२ | पिछली बचत | ५२१-)॥ | कार्यालय ख़र्च |
| १४५६।=) | हिन्दी पैसा फण्ड | ३१६॥) | हिन्दी लेखकों का वेतन |
| १५) | सम्बद्ध सभाओं का शुल्क | २६॥-)॥ | काग़ज़ छपाई |
| १३।=) | वकालतनामा की बिक्री | ३३॥-)॥ | स्टाम्प तार |
| ४७) | सम्मेलन की रिपोर्ट की बिक्री | ३॥=) | फुटकल ख़र्च |
| ११।-)।१ | व्याज | २४≡)॥। | स्टेशनरी (सामान) |
| ५॥)॥ | बा० राधामोहन गोकुल जी की पुस्तकों की बिक्री | ३५) | सौअजान और एक सुजान की छपाई |
| १२) | रामप्रकाश ओझा से वापस मिला | १६४॥)। | सम्मेलन पत्रिका |
| ४५) | हिन्दी के संदेश की बिक्री | ॥=)। | पुस्तकालय |
| ४६७।-)॥ | परीक्षासमिति के शुल्क आदि से | | |
| =) | अनिरुद्धसिंह | ११२६॥-)॥। | |
| ॥)॥ | सामान | ५७३४॥≡)।१ | बाक़ी |
| | | ३५८८॥≡) | फिक्स्डडिपाजिट |
| | | १४७६।≡)॥। | सेविङ्ग बैङ्क खाता |
| | | ५०४-)॥१/२ | चलताखाता में |
| | | १६२।≡) | बचत नगदी |
| ६८६४॥-)१ | | ६८६४॥-)१ | |

(६-क) प्रोफ़िशियन्सी-परीक्षाओं की उप-समिति-द्वारा उपस्थित उस मसविदे पर विचार हुआ जो उसने संयुक्त-प्रान्त की गवर्नमेंट के पास भेजने के लिए तैयार किया था सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि मसविदा बहुत योग्यता से बनाया गया है। उसके लिए समिति उपसमिति के सदस्यों को धन्यबाद देती है किन्तु समिति के विचार में इसप्रकार से मसविदे में परिवर्तन होना आवश्यक है कि परीक्षाएं केवल सरकारी और Recognized और aided स्कूलों के अध्यापकों के लिए रहें और केवल पारितोषिक देने के हेतु ली जांय पारितोषिक के साथ प्रमाण पत्र भी दिया जाय। इस प्रकार परिवर्तन कर उपसमिति फिर मसविदे को आगामी स्थायीसमिति में उपस्थित करे।

(ख) उपसमिति के सदस्यों में जो एक स्थान रायदेवीप्रसाद जी पूर्ण के स्वर्गवास होने के कारण रिक्त हुआ है उस स्थान पर निश्चय हुआ कि पं० श्रीकृष्ण जोशी नियत किये जांय।

(७) परीक्षासमिति के इस प्रस्ताव पर कि अब जो सहायक-मंत्री रक्खा जाय वह ऐसी योग्यता रखता हो कि परीक्षा-समिति के संयोजक का भी काम कर सके निश्चय हुआ कि जहां तक सम्भव हो जो सहायकमंत्री रक्खा जाय ऐसा हो जो संयोजक को सहायता दे सके।

(८) परीक्षासमिति के नियमों के परिवर्तन के प्रस्ताव पर विचार हुआ:—सर्व सम्मति सेनिश्चय हुआकि यह प्रस्ताव स्थायी-समिति की अगली बैठक में फिर रक्खा जाय, क्योंकि परीक्षा-समिति के नियम १९ (अ) के अनुसार इस बैठक में आधे सदस्यों की सम्मति परिवर्तन के पक्ष में (तथा विपक्ष में) अभी तक नहीं आयी है।

(९) आगामी सम्मेलन का क्या प्रबन्ध हो इस विषय पर विचार हुआ। प्रधानमंत्री जी ने जबलपुर और खंडवा के आये हुए तार जिनमें आगामी सम्मेलन को निमंत्रित किया गया है उपस्थित किया, साथही लाहौर के पं० यज्ञदत्त जी का तार भी उपस्थित किया, जिसमें उन्होंने यह सूचना दी है कि लाहौर में स्वागतकारिणीसभा संगठित हो गयी है। लाहौर

के श्रीयुत रोशनलाल जी का पत्र भी उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने यह कहा है कि लाहौर वालों की इच्छा सम्मेलन लाहौर में करने की है।

निश्चय हुआ कि यह समिति मध्यप्रदेश के सज्जनों को उनके उत्साह और निमंत्रण के लिए बहुत धन्यवाद देती है किन्तु समिति के विचार में उचित यही होगा कि जहां तक सम्भव हो लाहौर में ही आगामी सम्मेलन करने का यत्न किया जाय।

(१०) प्रान्तीय हिन्दी सभा गोरखपुर का पत्र सम्मेलन से सम्बन्ध कराने के विषय में उपस्थित किया गया।

निश्चय हुआ कि सभा का सम्बन्ध सम्मेलन से किया जाय।

(११) सर्वसम्मति से राय देवीप्रसाद जी पूर्ण के स्थान पर पं० वेंकटेशनारायण त्रिपाठी स्थायीसमिति के सदस्य नियुक्त किये गये।

(१२) सहायकमंत्री के पद के लिए आये हुए प्रार्थना पत्रों पर विचार हुआ और सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि सहायकमंत्री की नियुक्ति के लिए प्रधानमंत्री जी को अधिकार दिया जाय कि योग्य पुरुष को सहायकमंत्री के पद पर नियुक्त करलें।

(१३) प्रधानमंत्री जी के प्रस्ताव पर सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि मंत्री का जो एक स्थान रिक्त है उसके लिए श्रीयुत पं० कृष्णनारायण राव लँघाटे वकील हाईकोर्ट से प्रार्थना की जाय कि वर्तमान वर्ष के लिए वे मंत्री का पद स्वीकार करें। (लँघाटेजी ने मन्त्री का पद स्वीकार कर लिया है)।

(१४) सभापति को धन्यवाद देकर बैठक समाप्त हुई।

———:o:———

## परीक्षा-समिति का तीसरा अधिवेशन।

परीक्षासमिति का तीसरा साधारण-अधिवेशन संयोजक की सूचनानुसार मि० आषाढ़ कृष्ण १४ सं० १९७२ को संध्यासमय ४ बजे से सम्मेलन कार्यालय में हुआ जिसमें निम्नलिखित सज्जन उपस्थित थे:—

श्रीयुत पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी।
श्रीयुत पं० रामजी लाल शर्म्मा।
श्रीयुत बा० रामदास गौड़।

श्रीयुत बा० ब्रजराज संयोजक।

कार्यवाही का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:—

प्रथमा तथा मध्यमा परीक्षाओं के प्रश्नपत्रों पर विचार तथा उनका यथोचित संशोधन किया गया। प्रोफेसर पं० रामावतार शर्मा साहित्याचार्य जी ने मध्यमा के लिए इतिहासविषय का प्रश्नपत्र बहुत विलम्ब से भेजा इस कारण उनके प्रश्नपत्र आने के प्रथम ही उक्त विषय का प्रश्नपत्र संयोजक जी ने विशेष प्रार्थना द्वारा प्रो० रामदास गौड़ से बनवालिया था अतएव परीक्षा में साहित्याचार्य जी का प्रश्नपत्र नहीं रक्खा जा सका और गौड़ जी का ही प्रश्नपत्र रक्खा गया।

सं० १९७३ की प्रथमा और मध्यमा परीक्षाओं के लिए परीक्षकों की नियुक्ति पर विचार हुआ और निश्चय हुआ कि जो लोग इस सं० १९७२ की परीक्षाओं में परीक्षक हैं उन्हीं को पत्र लिख कर संयोजक पूछें, यदि वे परीक्षक होना स्वीकार करें तो संयोजक उन्हीं से प्रश्न पत्र बनाने के लिये प्रार्थना करें, यदि उनमें से कोई महाशय परीक्षक होना स्वीकार न करें तो संयोजक जी उनके स्थान पर उस विषय के परीक्षकों की वैकल्पिक नामावली में से किसी योग्य पुरुष को नियत करलें। उत्तमापरीक्षा के लिए कोई परीक्षक नहीं चुने गये और यह निश्चय हुआ कि जिस समय उत्तमा के परीक्षार्थियों के लेख आवेंगे उस समय लेख के विषयानुसार उत्तमा के लिए परीक्षक नियत कर लिये जावेंगे क्योंकि अभी कोई आवश्यकता नहीं है।

श्रीयुत पं० शुकदेव बिहारी मिश्र के पत्र पर विचार किया गया और तदनुसार कुछ उपनियमों में परिवर्तन भी किये गये जिसका विवरण संशोधित विवरणपत्रिका में दिया जायगा।

श्रीयुत बाबू गोकुलप्रसाद वर्मा जी के पत्र पर विचार करके निश्चय हुआ कि परीक्षासमिति प्रत्येक प्रान्त में जहां आवश्यकता हो परीक्षाकेन्द्र बनाने के लिए उद्यत है परन्तु नियमानुसार केन्द्र ऐसे स्थान पर बनाया जायगा जहां यथेष्ट संख्या में परीक्षार्थी हों और परीक्षाओं का यथोचित प्रबन्ध हो सके।

निश्चय हुआ कि सम्मेलन की स्थायी-समिति से प्रार्थना की जाय कि अब से जो वैतनिक सहायक-मन्त्री सम्मेलन के लिए रक्खा

जाय वह इतना योग्य हो कि परीक्षासमिति के संयोजक का भी काम कर सके।

निश्चय हुआ कि समिति संयोजक जी को अधिकार देती है कि बार्हस्पत्य-रचित 'अक्षरलीला' नाम की लेखमाला को वे पुस्तकाकार छपवा लें।

विवरणपत्रिका के लिए निश्चय हुआ कि संयोजक जी संशोधित विवर-णपत्रिका छपवा लें और उसका मूल्य ।) रक्खें। इस वार की विवरण-पत्रिका में निम्न लिखित विषय रहेंगे।

(१) डेढ़ वर्ष का पञ्चाङ्ग ( श्रावण से लेकर अगले वर्ष के माघ तक )

(२) समिति की नियमावली।

(३) " " उपनियमावली।

(४) गत वर्षों के प्रश्नपत्र।

(५) गत वर्षों के उत्तीर्ण विद्यार्थियों की नामावली।

(६) गत वर्षों के संयोजक की रिपोर्ट।

(७) संवत् १९७३, १९७४ और १९७५ की परीक्षाओं के विषय और पाठ्यग्रन्थों का विवरण।

(८) परीक्षासमिति के वर्गियों की नामावली।

सर्वसम्मति से संवत् १९७२ की परीक्षाओं के लिए श्रीगोपालनारायण सेन बी० ए० गणक नियत किये गये।

उपनियमों का संशोधन इस प्रकार किया गया:—

(१) उपनियम ३ में 'आवश्यकता हो तो' के बाद से 'अपने और किसी एक सदस्य के हस्ताक्षर' तक निकाल दिया जाय।

(२) उपनियम ५ में '~) में मिल सकेगी' की जगह '।) में मिल सके'।

(३) उपनियम ८ में 'उत्तमापरीक्षा में.........प्राप्त करने होंगे' यह पूरा पूरा निकाल दिया जाय।

(४) उपनियम १० में 'प्रत्येक प्रश्नपत्र प्रायः १०० अङ्कों का होगा और प्रत्येक' इतना अंश प्रारम्भही में और जोड़ दिया जाय।

(५) उपनियम १९ ( क ) में 'तीन सप्ताह' के स्थान में 'छः सप्ताह' कर दिया जाय।

(६) उपनियम १६ (ख) में 'उसका फल' और 'गणक' के बीच में '२१ दिन के भीतर' इतना और जोड़ दिया जाय।

(७) उपनियम २० (झ) के अन्त में 'और सूचना संयोजक को देना' इतना अंश और जोड़ दिया जाय।

(८) उपनियम २१ (ङ) में 'चिन्ह' के आगे 'तथा हस्ताक्षर' इतना और बढ़ा दिया जाय।

(९) उपनियम २२ (च) में '४ मास' के स्थान पर 'दो मास' कर दिया जाय।

निम्न लिखित उपनियम नवीन बनाये गये:—

२७—परीक्षासमिति को अधिकार होगा कि पहले से नियत किये हुए विषयों और पाठ्यग्रन्थों में परीक्षातिथि से कम से कम छः मास पहले यदि आवश्यकता हो तो हेर फेर करसके और उसकी सूचना परीक्षार्थियों के लिए समाचार-पत्रों तथा सम्मेलन-पत्रिका में प्रकाश कर दे।

२८—परीक्षार्थियों के शुल्क की रसीदें तथा उत्तीर्ण होने पर प्रमाणपत्र व उपाधिपत्र वैरङ्ग पोष्ट द्वारा भेजे जांयगे।

२९—परीक्षार्थियों के लिए केन्द्र तथा परीक्षा के विषय का परिवर्तन यदि परीक्षार्थी चाहें तो शुल्क-प्राप्ति की नियत तिथि से ३० दिन के भीतर ही आवेदनपत्र आने पर हो सकेगा। अधिक समय बीत जाने पर कोई परिवर्तन न हो सकेगा।

३०—इस नियम में उत्तमा परीक्षा विषयक प्रस्ताव परीक्षा-समिति का रहेगा (?)

निश्चय हुआ कि मध्यमा-परीक्षा के वैकल्पिक विषयों में वैद्यक भी समिलित किया जाय और अङ्गरेज़ी एवं संस्कृत से अनुवाद ये दोनों विषय वैकल्पिक विषयकी सूची में से निकाल दिये जाय (?)

प्रथमा तथा मध्यमा परीक्षाओं के लिए पाठ्यग्रन्थों में परिवर्तन किया गया (जो संशोधित विवरणपत्रिका में छपेगा) और उत्तमा-परीक्षा के प्रत्येक विषय के लिए विवरण बनाया गया। इति

——:o:——

# परीक्षासमिति का चतुर्थ अधिवेशन ।

संयोजक जी की सूचनानुसार परीक्षासमिति का चतुर्थ साधारण अधिवेशन मि० श्रावण शुक्ल २ सं० १९७२ (१२ । ८ । १५) को सन्ध्या समय ४ बजेसे सम्मेलन-कार्यालय में प्रारम्भ हुआ । जिसमें निम्नलिखित सज्जन उपस्थित थे :—

(१) बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन ।
(२) ठाकुर शिवकुमार सिंह ।
(३) पं० रामजीलाल शर्मा ।
(४) प्रो० व्रजराजबहादुर संयोजक ।
(५) पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी ।

संयोजक जी ने सूचना दी 'कि बहुत से ऐसे पत्र आये हैं जिन में उन परीक्षार्थियों की ओर से प्रार्थना की गयी है जो इस वर्ष की परीक्षा का शुल्क देकर भी परीक्षा में सम्मिलित नहीं हुए हैं 'उनका शुल्क लौटा दिया जावे अथवा उनको उसी शुल्क के द्वारा सं० १९७३ की परीक्षा में बैठने का अधिकार दिया जावे'। साथ ही संयोजक जी ने यह भी बतलाया कि उन परीक्षार्थियों के परीक्षा के सम्बन्ध में समिति को जो जो व्यय करने आवश्यक थे सब किये जा चुके हैं तथा परीक्षक अवैतनिक होते हैं अतएव यदि परीक्षासमिति परीक्षार्थियों की उपर्युक्त प्रार्थना स्वीकार करेगी तो परीक्षासमिति की बहुत बड़ी आर्थिक हानि होगी (परीक्षासमिति के उपनियम १३ के अनुसार शुल्क बापस नहीं दिया जा सकता) अतएव सर्वसम्मति से यह निश्चय हुआ कि परीक्षार्थियों का शुल्क लौटाया न जाय और न इस शुल्क के बदले में उनको सं० १९७३ की परीक्षा में बैठने का अधिकार दिया जावे । क्योंकि उन परीक्षार्थियों की परीक्षा के सम्बन्ध में समिति को जो कुछ खर्च करना था सो वह कर चुकी है अब दोबारा नहीं कर सकती ।

संयोजक जी ने समिति के गत अधिवेशन का कार्य विवरण सुनाया पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी ने उसमें त्रुटि बतलायी कि मध्यमा के परीक्षा-विषयों में से संस्कृत तथा अङ्गरेज़ी से अनुवाद ये दोनों विषय निकाले नहीं गये थे' निश्चय हुआ कि यह कार्य-विवरण

परीक्षासमिति के आगामी अधिवेशन में स्वीकृति के लिये पुनः उपस्थित किया जाय।

बाबू पुरुषोत्तमदासजी टण्डन के प्रस्तावपर सर्वसम्मतिसे निश्चय हुआ कि मध्यमा के परीक्षा-विषयों में संस्कृत और अङ्गरेजी से अनुवाद ये दोनों विषय पूर्ववत् सम्मिलित किये जांय। इति

——:o:——

# परीक्षासमिति और प्रतिज्ञात पदक

हिन्दी-साहित्य सम्मेलन ( लखनऊ ) के पञ्चम बार्षिक-अधिवेशन के समय ता० २६ दिशम्बर सन् १९१४ ई० को जिन सज्जनों ने परीक्षासमिति के परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थियों को प्रथमा एवं मध्यमा परीक्षा के सम्बन्ध में पदक या दान देने की प्रतिज्ञा की थी उनकी नामावली नीचे दी जाती है। इस वर्ष की परीक्षा हो गयी और आशानुरूप अधिक संख्या में यद्यपि विद्यार्थी परीक्षा में सम्मिलित नहीं हो सके तथापि गत वर्ष की अपेक्षा कई गुनी अधिक सङ्ख्या होनेसे परीक्षा-समिति की सर्वप्रियता पर विश्वास होता है। परीक्षा का फल भी बहुत शीघ्र प्रकाशित होने वाला है। हम आशा और प्रार्थना करते हैं कि जिन सज्जनों ने परीक्षासमितिके सम्बन्धमें पदक या जो कुछ दान देने की प्रतिज्ञा की है वे शीघ्र ही सम्मेलन कार्यालय में भेज दें अथवा भेज देने की सूचना दे दें जिसमें पत्रिका की अगली संख्या में हम परीक्षा फल के साथ साथ दाता महाशयों की दान शीलता का भी उल्लेख कर सकें।

प्रतिज्ञा करने वाले सज्जनों की नामावली और प्रतिज्ञात दान

[१] पं० गोकुलचन्द्शर्मा, धर्मसमाज, हाईस्कूल–अलीगढ़ (रजत-पदक)

[२] जागेश्वरप्रसाद नन्दे, हिन्दी-साहित्य-रत्नाकरकार्यालय मुजफ्फ़रपुर [रजतपदक]

[३] पं० हीरानन्द शास्त्री, [रजतपदक]।

[४] पं० सुमेरूचन्द्र शर्मा सनाढ्य, महमदपुर पो० सन्डीला ज़ि० हरदोई [ रजतपदक ]

[५] पं० रामसेवक पाण्डेय मन्त्री श्रीसनातनधर्म-सभा, बहरायच [ रजतपदक ]

[६] हिन्दी-प्रवर्द्धिनी सभा. शाहजहांपुर [ रजतपदक ]

[७] पं० बदरीनाथशर्मा वैद्य, मिरज़ापुर, ( ५) मू० की हिन्दी की पुस्तकें )

[८] पं० रामप्रसाद जी मिश्र सम्पादक जीवन, कानपुर, [ रजत-पदक—प्रतिवर्ष ]

[९] पुरुषोत्तम जी; मैनेजर तिरहुत पुस्तक भण्डार, मुजफ्फ़रपुर, [ रजतपदक ]

[१०] पं० शिवविहारीलाल जी वाजपेयी, लखनऊ, [ रजतपदक ]

[११] पं० लालमणिजी वैद्य, झींझक, [ स्वर्णपदक ]

[१२] दयाचन्द्रजी जैन बी० ए० कालीचरण, हाईस्कूल लखनऊ, [रजतपदक]

[१३] पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी, बुद्धिपुरी, जि० प्रयाग, [१० विद्यार्थियों का शुल्क]

[१४] पं० रामाधार बाजपेयी, कोटवा, जिला प्रयाग [५) नगद]

[१५] ठाकुर युगलसिंह, वीकानेर, सूरसागरतालाव, [रजतपदक]

[१६] श्यामवती देवी, [रजतपदक—प्रतिवर्ष]

[१७] पं० रामेश्वर त्रिवेदी, कालविन तालुकदार स्कूल, लखनऊ, [मध्यमा के कोर्स की सब पुस्तकें]

[१८] पं० शिवबीहारीलाल जी वाजपेयी प्रोप्राइटर, अवधवासी लखनऊ [स्वर्णपदक] दोबारा।

[१९] बाबू मुरलीधर जी टण्डन, चौक लखनऊ, [स्वर्णपदक]

[२०] पं० रामचन्द्र शुक्ल, फोर्थइयर कैनिङ्ग-कालिज़, लखनऊ, [७) मू० की पुस्तकें]

[२१] नीलकण्ठ द्वारकाप्रसाद अध्यक्ष, भारतभूषण प्रेस, फतेहगञ्ज, लखनऊ ( तत्वबोधिनीटीका—सहित सिद्धान्तकौमुदी तथा साहित्यदर्पण )

[२२] हकीम वर्मा, मथुरा, [रजतपदक]

[२३] श्रीनारायण मिश्र, हेडक्लर्क एक्ज़्यूक्यूटिव इञ्जीनियर आफिस शाहजहांपुर।

[२४] हिन्दी ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय, गिरगांव बम्बई (१०) की पुस्तकें)
[२५] बाबू लक्ष्मणप्रसाद श्रीवास्तव, [रजतपदक]
[२६] बा० गङ्गाप्रसाद गुप्त [रजतपदक]
[२७] पं० शिवरत्न शुक्ल बछरावी [कुछ पुस्तकें]
[२८] पं०प्यारेलाल गौड़, मैनेजर नारायणसमिति और गौड़हितकारी [११) की पुस्तकें]
[२९] कन्हैयालाल माहौर, मंत्री माहौरवैश्यसभा, तिलहर [५) नगद]
[३०] मनीराम कपूर, कानपुर [रजतपदक]
[३१] ओङ्कारबक्स वैद्य, रियासत राजगढ़ सी०आई० ए० [रजतपदक]
[३२] केदारनाथ, धेनुगांव वेलवा–बस्ती ( १०) मू० की पुस्तकें)
[३३] पं० शिवदयालु द्विवेदी, सीतापुर ( रजतपदक )
[३४] भाग्यवती स्त्री पं० रामाधीन मि० कोइला व्यवसायी, बादशाही-नाका कानपुर, (चांदी की एक कटोरी)
[३५] व्रजनन्दनसहाय मन्त्री नागरीप्रचारणी सभा, आरा, (सभा की ओर से प्रकाशित सभी पुस्तकों की एक एक प्रति)
[३६] पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, दारागंज प्रयाग, (रजतपदक)
[३७] बा० गोकुलानन्दप्रसाद वर्मा, सम्पादक आत्मविद्या आदि, बांकीपुर ( रजतपदक )
[३८] हिन्दी-साहित्यसभा, लश्कर, गवालियर (रजतपदक)
[३९] बा० सरयूप्रसाद महाजन, गया, (रजतपदक)
[४०] पं० रमाबाई अध्यापिका, नजीराबाद, (रजतपदक)
[४१] पं० रामेश्वरप्रसाद शर्मा, सहकारीमंत्री सरस्वती (रजतपदक)
[४२] पं० नर्मदाशङ्कर शुक्ल, वावड़िया नीमाड़, मध्यप्रान्त (रजतपदक)
[४३] पं० जगन्नाथदास विशारद, भरतपुर, (रजतपदक)
[४४] श्रीमती रामप्यारी देवी, मुख्याध्यापिका, (रजतपदक)
[४५] सेठ बंशीधर, बुलन्दशहर, (५) नगद)
[४६] पं० रामजीलाल शर्मा, प्रयाग, (विद्यार्थी का चित्र और परिचय अपने पत्र—विद्यार्थी में छाप देंगे)
[४७] चतुर्वेदी पं० जगन्नाथ प्रसाद जी, (सुवर्णपदक)
[४८] पं० हीरानन्द जी, (रजतपदक)

[४९] पं० ओंकारनाथ वाजपेयी, प्रयाग (रजतपदक)
[५०] पं० श्रीनारायण मिश्र, गणेशगंज लखनऊ, (सुवर्णपदक)
[५१] पं० रघुबरदयालु जी डिप्टीकलेक्टर, नरही लखनऊ, (रजतपदक)
[५२] पं० नन्दकिशोर फुरसवा, कानपुर, (रजतपदक)
[५३] स्वा० ब्लाकटानन्द, आगरा, (१ स्वर्णपदक और १ रजतपदक) ये मर गये

ऊपर की नामावली यद्यपि बहुत जांच के साथ लिखी गयी है तथापि सम्भव है कि किसी नाम या पता में भ्रम हो क्योंकि प्रतिज्ञा पत्र जो प्रायः पेनसिल के लिखे हुए थे उनमें कहीं कहीं शब्दों के पढ़ने में निश्चय नहीं होता था इस लिए प्रार्थना है कि यदि किसी महाशय के नाम या पता में कुछ त्रुटि हो तो मुझे सूचित करदें, अगली संख्या में उसका संशोधन कर दिया जायगा।

प्रायः अधिकांश प्रतिज्ञाओं में कुछ न कुछ शर्त लगी हुई हैं इससे यह तो हम नहीं कह सकते कि वे प्रतिज्ञात रुपया अथवा वस्तु सम्मेलन में अवश्यही भेजदें किन्तु इतना हम अवश्य जानना चाहते हैं कि प्रतिज्ञाता अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार पदक, रुपया अथवा पुस्तक आदि प्रतिज्ञात वस्तु देने के लिए तैयार हैं जिस में उनकी शर्तके अनुसार निश्चय करके उनको सूचना दी जा सके।

——:o:——

## सूचना।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन,
प्रयाग।
मि० भाद्रपद्र कृ० १, १९७२

महाशय,

रविवार मि० कार्तिक कृ० २, १९७२ ता० २४-१०-'१५को हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायीसमिति की एक बैठक होगी। नियमावली के नियम २९ वें के अनुसार आगामि सम्मेलन के सभापति के आसन के लिये ५ उपयुक्त सज्जनों की सूची बनायी जायगी। आपसे निवेदन है कि कृपाकर अपनी सम्मति के अनुसार ५ सज्जनों की सूची भेज दें।

सहायकमंत्री

# सम्पादकीय-विचार

## सम्मेलन

इस वर्ष सम्मेलन का छठवां अधिवेशन लाहौर में होगा। गत अङ्क में एक संयुक्तप्रान्तीय सदस्य का इसी सम्बन्ध में पत्र छपा था। यद्यपि समय बहुत पिछड़ गया है और लाहौर के निमन्त्रणदाताओं का कर्तव्य था कि वे २३ वें नियम के अनुसार अब से बहुत पहले स्वागतकारिणीसभा का सङ्गठन करलेते, तथापि लाहौर की वर्तमान स्थिति पर ध्यान देने से इस समय भी स्वागत-कारिणी-सभा का बन जाना कुछ अधिक असावधानी का काम नहीं कहा जा सकता।

## सम्मेलन का समय और सभापति

सम्मेलन के अधिवेशन के लिए शीघ्र ही समय का निश्चय करना आवश्यक है और इस विषय में हम भारत-मित्र के मत से पूर्णतः सहमत हैं कि अधिकसम्मति पर काम करना चाहिये। अभी तक लोगों को इसीमें सन्देह था कि सम्मेलन का छठवां अधिवेशन इसी वर्ष लाहौर में होगा, किन्तु अब स्वागतकारिणी-सभा बन गयी है तो अधिवेशन के समय पर विचार करने का अवसर देना ही होगा। अभी तक कोई लेखमाला की सूची भी नहीं तैयार हुई है, उसके तैयार होने पर योग्य लेखकों को निबन्ध लिखने के लिए भी कुछ समय की आवश्यकता होगी, इस लिए समय की न्यूनता में ये सब काम अधूरे रह जाँयगे। सभापति के सम्बन्ध में स्थायी-समिति की सूचना आप अन्यत्र पढ़ेंगे जो इसी अङ्क में प्रकाश की गयी है। आशा है कि सम्मति-दातागण अपनी अपनी सम्मति से शीघ्र ही इन कार्यों को निपटा लेगें।

## सम्मेलन के कार्य

सम्मेलन के कार्यों को अग्रसर करने के लिए यद्यपि समय समय पर अनेक समितियां बनायी गयीं हैं, उनके द्वारा कुछ कार्य भी हुआ है, तथापि जैसा होना चाहिये था वैसा कार्य हुआ नहीं, क्योंकि अब तक नीचे लिखी ११ समितियां बनायी जा चुकी हैं:—

(१) वर्णविचारसमिति (इसका सङ्गठन दो बार हुआ है)।
(२) लिङ्गविचार-समिति।

( ३ ) आलोचक-समिति ।
( ४ ) नियमसंशोधिनी-समिति ।
( ५ ) परीक्षासमिति ।
( ६ ) परीक्षानियम के निर्माण करनेवाली समिति ।
( ७ ) राजकार्योपयोगी हिन्दीशब्द निर्माण करने वाली समिति ।
( ८ ) लिटररी ईयरबुक-समिति ।
( ९ ) हिन्दीप्रचारार्थ प्रतिनिधि-वर्ग-समिति ।
( १० ) हिन्दीपरीक्षा-क्रमनिर्धारिणी-समिति ।
( ११ ) अरायजनवासी की शिक्षा देनेवाली समिति ।

आप देखेंगे कि इनमें कई एक समितियां ऐसी हैं कि जिनका जन्ममात्र हुआ है;जहां तक मुझे ज्ञात है कार्यक्षेत्रमें वे उतरीही नहीं। हम समितियों के संयोजक महाशयों से प्रार्थना करते हैं कि वे कृपा करके अपनी अपनी रिपोर्ट हमारे पास भेजदें जिसमें अगली संख्या में हम उनको कृतज्ञता-पूर्वक प्रकाश करदें और हिन्दी संसार देखे कि आप लोग हिन्दी-साहित्य की कैसी सेवा कर रहे हैं। जिन महानुभावों ने किसी कारणविशेष से अब तक कार्य का प्रारम्भ नहीं किया है उनको चाहिये कि अगले अधिवेशन तक वे अपना कार्य कम से कम इतना करलें कि सम्मेलन में उनके कार्यों की रिपोर्टें दी जा सकें। जिन समितियों ने अपनी रिपोर्टें सम्मेलन को भेज दीं हैं उनके सम्बन्ध में स्थायीसमिति को अपने विचार निश्चय करके प्रकाश कर देने चाहियें, जिसमें वास्तविक कार्यों में विलम्ब न हो। इनमें कुछ समितियाँ ऐसी भी हैं जिनको निरन्तर कार्य करना है—जैसे परीक्षासमिति, आलोचकसमिति, प्रतिनिधिवर्गसमिति और अरायजनवीसी की शिक्षा देनेवाली समिति ; किन्तु इनमें परीक्षासमिति के अतिरिक्त अन्यसमितियों के वास्तविक कार्य अभी तक दृष्टिगोचर नहीं हुए हैं।

नवीं समिति के बन जाने ही पर इस वर्ष सम्मेलन ने उपदेशक रखने की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया। यह सत्य है कि उपदेशक के अन्वेषण की ओर स्थायी समिति का ध्यान बराबर बना रहा, किन्तु कोई योग्य उपदेशक की प्राप्ति ही नहीं हुई, फिर भी इस ओर अधिक ध्यान नहीं दिया गया। गत वर्ष स्वा० सत्यदेव जी के द्वारा जो प्रचार का कार्य हुआ था सो पाठकों से छिपा नहीं है। इस वर्ष भी प्रधान मन्त्री द्वारा प्रचार के कुछ कार्य हुए हैं, किन्तु जैसा होना चाहिये था वैसा प्रचार नहीं हो सका। सारांश यह कि

उपदेशक के अभाव से हमें प्रचार का समाचार सुनाने का सौभाग्यही नहीं प्राप्त हुआ। हम आशा करते हैं कि अब इस समिति के संयोजक बाबू भगवानदास जी हालना इस ओर ध्यान देंगे और सम्मेलन के अधिवेशन तक बहुत कुछ प्रचार का कार्य्य कर लेंगे।

## परीक्षा-समिति

इस समिति का कार्य उत्तमता से चल रहा है। यह अपने कार्यों से अपने को लोकप्रिय बनाने में अधिक सफल हुई है। गतवर्ष की प्रथमापरीक्षा में केवल २८ परीक्षार्थियों ने प्रार्थनापत्र और शुल्क भेजे थे और इस वर्ष प्रथमा में १६५ और मध्यमा में ४४ विद्यार्थियों ने प्रार्थनापत्र और शुल्क भेजे हैं। इस आशातीत उन्नति को देख कर समिति के कार्यों से यद्यपि सन्तोष होता है तथापि हमें यह समाचार सुन कर खेद हुआ है कि इन २०९ प्रार्थियों में से केवल ८८ परीक्षार्थी परीक्षा में बैठ सके हैं। १२१ परीक्षार्थियों की कमी का कारण अभीतक ठीक २ ज्ञात नहीं हुआ। यद्यपि व्यवस्थापकों की सूचना से हमें अभी तक यह विदित नहीं हुआ है कि कितने परीक्षार्थी इस वर्ष की परीक्षाओं में सम्मिलित हुए हैं, तथापि यह समाचार सत्य है कि मध्यमा में १५ और प्रथमा में ७३ परीक्षार्थी बैठे हैं। अवश्यही परीक्षासमिति को इस शोचनीय न्यूनता के कारण का पता लगाना चाहिये। इस वर्ष की परीक्षा का विशेष वृत्तान्त अगली संख्या में विशेष रूप से दिया जायगा।

## अभ्युदय

हमें अभी समाचार मिला है कि अभ्युदय कार्यालय को तार द्वारा सूचना मिली है कि हमारे संयुक्त प्रान्त की सरकार ने जो अभ्युदय के अध्यक्ष मा० मालवीयजी को २५००) की जमानत की नोटिस दी थी वह मामला तै होगया। हमारे विचारशील सर जेम्स मेष्टन साहब की सरकार ने अपनी नोटिसवापस लेली और मा० मालवीयजी की ही अध्यक्षता में अब अभ्युदय पुनः निकलेगा। इसके लिए हम अपनी संयुक्त-प्रान्तकी सरकार और मा० मालवीयजी को बधाई देते हैं। अवश्य ही हमारी सरकार की यह उदार-नीति अन्य प्रान्त कीसरकारों के लिए अनुकरणीय होनी चाहिये।

## प्राप्तिस्वीकार और सम्मेलन

अब तक सम्मेलन में उदार-दाताओं ने इतनी अधिक पुस्तकें भेजी हैं कि जिनकी प्राप्ति-स्वीकृत करें तो उसमें हमारे कई फार्म लगजायँ, इस कारण हम अधिक संख्या में प्रति अङ्क में प्राप्ति स्वीकार करने का निश्चय करते हैं और आशा है कि आगामी सम्मेलन तक हम सभी पुस्तकों का प्राप्ति स्वीकार कर सकेंगे। समालोच्य पुस्तकों की समालोचना के देने काभी प्रबन्ध कर दिया गया है और अबसे प्रत्येक अङ्कमें समालोचना निकला करेगी।

## पुस्तकों की प्राप्तिस्वीकृति ।

[ पूर्वप्रकाशित से आगे ]

| | पुस्तक का नाम | लेखक | नाम पुस्तकदाता | मूल्य |
|---|---|---|---|---|
| २७३ | बनारस का इतिहास | रामचन्द्र वर्मा | बाबू बालमुकुन्द वर्मा काशी | -) |
| २७४ | आदर्शहिन्दूरमणी | लाला भगवानदीन | ,, | ।) |
| २७५ | श्रीशास्त्री जी के दो व्याख्यान | श्रीस्वामी राममिश्र जी | ,, | ॥=) |
| २७६ | भोंदू जाट और पादरी साहब | | बाबूराम शर्मा इटावा | )। |
| २७७ | पांच पैर की गौ | मंगल देव साधु | ,, | )। |
| २७८ | धर्म-शिक्षा | दर्शनानन्द सरस्वती | ,, | -) |
| २७९ | महर्षिवियोग शोक | ज्वालादत्त शर्मा | ,, | ≡) |
| २८० | पाखण्डमतकुठार | सत्यानन्द सरस्वती | ,, | )। |
| २८१ | अग्निहोत्रविधि | | ,, | )॥ |
| २८२ | सत्यसङ्गीत | गणेशीलाल त्रिपाठी | ,, | )। |
| २८३ | पुराण-शिक्षा | | ,, | )। |
| २८४ | भजन-परीक्षा | दौलतराम शर्मा | ,, | -)॥। |
| २८५ | ईसाईमत परीक्षा | दर्शनानन्द सरस्वती | ,, | -)। |
| २८६ | स्त्रीशिक्षा के लाभ | गणेशप्रसाद शर्मा | ,, | -)॥ |
| २८७ | रजस्वला विवाह-विवेक | ,, | ,, | -) |
| २८८ | सज़ीवन बूटी | बाबूराम शर्म्मा | ,, | ।) |
| २८९ | वेश्यादोष दर्पण | ,, | ,, | ।-) |
| २९० | कन्यासुधार | इन्द्रदत्त शर्म्मा | ,, | =)॥। |
| २९१ | जैनीपण्डितों से प्रश्न | दर्शनानन्द सरस्वती | ,, | -)। |
| २९२ | स्वमंतव्यप्रकाश | श्रीदयानन्द सरस्वती | बाबूराम शर्मा इटावा | )॥ |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| २९२ | स्वमन्तव्यप्रकाश | श्रीदयानन्द सरस्वती | बाबूराम शर्मा इटावा | )॥ |
| २९३ | धर्म प्रचार | लेखराम शर्म्मा | " | )॥ |
| २९४ | ईसाईविद्वानों से प्रश्न | दर्शनानन्द सरस्वती | " | )। |
| २९५ | मद्यदर्पण | " | " | -) |
| २९६ | आर्योद्देशरत्नमाला | " | " | -)। |
| २९७ | रामायणसार | " | " | -)। |
| २९८ | भजनकड़ाका | " | " | )॥ |
| २९९ | पीयूषलहरी | बाबूराम शर्म्मा | " | )॥। |
| ३०० | देवनागरी-वर्णमाला | " | " | -)। |
| ३०१ | पहाड़ा | " | " | |
| ३०२ | गाज़ीमियां की पूजा | जगतनरायण शर्म्मा | " | -)॥ |
| ३०३ | मांसभक्षण-निषेध | " | " | -)। |
| ३०४ | बालशिक्षावली | " | " | )॥ |
| ३०५ | भोगवाद | दर्शनानन्द सरस्वती | " | )। |
| ३०६ | जीवसान्त-विवेक | इन्द्रमणिकृत | " | -) |
| ३०७ | साङ्गीत-महाभारत | " | " | ।-)॥ |
| ३०८ | वेश्यालीला | बाबूराम शर्म्मा | " | )॥ |
| ३०९ | मृतकश्राद्ध | " | " | )। |
| ३१० | स्त्रीभजनमाला | " | " | -) |
| ३११ | आरती | बाबूराम शर्मा इटावा | " | -)। |
| ३१२ | सत्यार्थविवेक निरीक्षण | " | " | ।) |
| ३१३ | जगत की उत्पत्ति स्थिति प्रलय | गणेशप्रसाद शर्म्मा | " | ≡) |
| ३१४ | अन्त्येष्टिकर्म-पद्धति | नन्दकिशोर देव | " | -)॥ |
| ३१५ | स्वर्गमेंमहासभा | रुद्रदत्त शर्म्मा | " | ।) |

| | पुस्तक का नाम | लेखक | नाम पुस्तकदाता | मूल्य |
|---|---|---|---|---|
| ३१६ | सामाजिक स्तुति | गणेशप्रसाद शर्म्मा | बाबूराम शर्माइटावा | |
| ३१७ | सत्यधर्म विचार | ” | ” | -)॥ |
| ३१८ | धर्मबलिदान | बाबूराम शर्म्मा | ” | =) |
| ३१९ | कुरीतिनिवारण | ” | ” | =)॥ |
| ३२० | जैनमत का उत्पतिकाल | ” | ” | )॥ |
| ३२१ | वंदनाशतक | हरिश्चन्द्र कुलश्रेष्ठ | ” | -) |
| ३२२ | गोकरुणानिधि | श्रीस्वामीदयानन्द सरस्वती | ” | -) |
| ३२३ | पतिव्रता माहात्म्य | श्यामलाल शर्म्मा | ” | ≡)॥ |
| ३२४ | गङ्गादितीर्थ-विचार | भीमसेन शर्म्मा | ” | -) |
| ३२५ | स्वस्तिपुण्याहवाचनम् | ” | ” | -) |
| ३२६ | सुमित्रा | सरयूप्रसाद वाजपेयी | ” | =) |
| ३२७ | वैशेषिकदर्शनम् | कणादिमुनि | ” | १।) |
| ३२८ | पुराणलीला | गणेशप्रसादशर्म्मा | ” | १) |
| ३२९ | आत्मानन्द | सरयूप्रसाद वाजपेयी | ” | -) |
| ३३० | क्षत्री धर्मप्रकाश | कु०बलदेवसिंह चौहान | ” | -)॥ |
| ३३१ | मोक्ष की पुड़िया | चौ० हरीरामसिंह | ” | -)॥ |
| ३३२ | सत्योपदेश-भजनावली | रामप्रकाश | ” | -) |
| ३३३ | श्रीकृष्णोपदेश | मूलचन्द शर्म्मा | ” | ॥=) |
| ३३४ | आर्यमतमार्तंड नाटक | रुद्रदत्त शर्म्मा | बाबूराम शर्म्मा | ≡) |
| ३३५ | पुराणपरीक्षा | ” | ” | =) |
| ३३६ | सत्यभास्कर | कुंजविहारीलाल शर्म्मा | ” | -) |
| ३३७ | कंठी जनेऊ का विवाह | रुद्रदत्त शर्म्मा | ” | =) |
| ३३८ | ऐतिहासिक-निरीक्षण | लेखराम शर्म्मा | ” | |
| ३३९ | ” दूसराभाग | ” | ” | -)। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ३४९ | दशनियम शिखरणी | ज्वालादत्त शर्म्मा | ,, | =) |
| ३४० | वाजसनेयोपनिषद् | ,, | ,, | -) |
| ३४१ | यज्ञोपवीतशङ्का-समाधान | ,, | ,, | =) |
| ३४२ | पुरुषसूक्त | ,, | ,, | =) |
| ३४३ | शान्तिसरोवर | बलदेवसिंह शर्म्मा | ,, | |
| ३४४ | राम पंचाशिका | हरिश्चन्द्र कुलश्रेष्ठ | ,, | -) |
| ३४५ | शास्त्रार्थ खुर्जा | ,, | ,, | -)॥ |
| ३४६ | ,, विशऽगढ़ | ,, | ,, | -)॥ |
| ३४७ | स्वर्ग में सब्जेक्ट कमेटी | रुद्रदत्त शर्म्मा | ,, | -) |
| ३४८ | सङ्गीत-स्वरोदय | पुरन्दरसिंह वर्मा | ,, | |
| ३४९ | विषलता | धर्मपाल बी० ए० | ,, | -) |
| ३५० | वैदिकधर्म प्रचार | राय ठाकुरदत्त | ,, | ≡) |
| ३५१ | जैनमत दर्शन | ,, | ,, | -) |
| ३५२ | पञ्च महायज्ञ | ,, | ,, | -) |
| ३५३ | दयानन्द चरित्तम् | लेखराम | ,, | |
| ३५४ | भीषण भविष्य | गो० लक्ष्मण चार्य्य | गो० लक्ष्मणाचार्य्य | |
| ३५५ | स्मृति प्रमाण | ,, | ,, | -) |
| ३५६ | पद्य प्रबन्ध | मैथिलीशरण गुप्त | बा० रामकिशोर | ॥=) |
| ३५७ | एकता दर्शन | हरिदास खंडेलवार | बा० पुरुषोत्तमतास टंडन | |
| ३५८ | शान्ता | पं० ओंकारनाथ वाजपेयी | ,, | ॥) |
| ३५९ | लक्ष्मी | ,, | ,, | -) |
| ३६० | महानन्द विद्यांकुर | लाला महानन्द | ,, | =) |
| ३६१ | प्राचीन भारत वासियों का वैदेशिकव्यवहार और विदेशयात्रा | पं० उदयनारायण वाजपेयी | हिन्दी गंगप्रसारक मडली खंडवा | ॥) |

| | पुस्तक का नाम | लेखक | नाम पुस्तक दाता | मूल्य |
|---|---|---|---|---|
| ३६२ | वीर होरेशश | बा० रघुनाथप्रसाद कपूर | हिन्दी ग्रंथप्रसारकमंडली, खंडवा | =) |
| ३६३ | सौंदर्योपासक | बा० ब्रजनन्दनसहाय वकील | ब्रजनन्दसहाय | ॥।) |
| ३६४ | मनोविनोद तृतीय खंड | पं० श्रीधरपाठक | पं० श्रीधरपाठक | |
| ३६५ | भाषाप्रबोध चौथा भाग | पं० विहारीलाल चौबे | पं० विहारीलाल चौबे | ।=) |
| ३६६ | " ३ भाग | " | " | ≡) |
| ३६७ | डा० रिचर्डसन का जीवनचरित्र | हरशङ्करप्रसाद उपाध्याय | " | ≡) |
| ३६८ | रामावतार | विहारीलाल चौबे | " | -) |
| ३६९ | व्यङ्कटविहार तुलसीभूषण | " | " | |
| ३७० | बालोपहार | " | " | -)॥। |
| ३७१ | " | " | " | =) |
| ३७२ | मूल सूत्रबोध व्याकरण | " | " | ॥=) |
| ३७३ | सुन्दर सरोजिनी | देवीप्रसाद शर्मा, चम्पारन | बा० पुरुषोत्तमदास टंडन | ।-) |
| ३७४ | श्रीमद्भागवत गीतार्थसंग्रह | पं० द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी | पं० द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी | ।) |
| ३७५ | भारत मही | गदाधर सिंह | प्रकाशक बुकडिपो | |
| ३७६ | जापानी राज्य व्यवस्था | " | " | ।) |
| ३७७ | सम्राट जार्ज पंचम की जीवनी | ठा० शिवकुमार सिंह | बा० पुरुषोत्तमदास टंडन | |
| ३७८ | " बड़ी | " | " | ।-) |
| ३७९ | " | " | " | )॥। |
| ३८० | भारतवर्ष का अर्वाचीन इतिहास | पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल | नागरीप्रवर्द्धिनी सभा | १) |
| ३८१ | श्रमहरा | कालीचरण सिंह | कालीचरण सिंह | |
| ३८२ | वैद्यक की उन्नति किस प्रकार होगी | पूनमचन्द वैद्य | पूनमचन्द वैद्य | |
| ३८३ | सिद्धान्तसार | पूनमचन्द जैन | पूनमचन्द जैन | ≡)॥ |
| ३८४ | उपश्रुति शकुन | पं० तनसुखराम | पं० तनसुखराम | -)॥ |

# सम्मेलन पत्रिका के नियम

१—यह पत्रिका सम्मेलन कार्य्यालय प्रयाग से प्रतिमास प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य १) रु० इसलिये रक्खा गया है सर्वसाधारण इसके ग्राहक हो सकें।

२—अभी इस में प्रतिमास कुल २४ पृष्ठ ही रहा करेंगे। आवश्यकता होने पर पृष्ठ संख्या बढ़ा भी दी जाया करेगी। आगे चल कर यदि इसकी सेवा साहित्यिकों को रुचिकर हुई, और ग्राहकों की यथोचित संखया हो गयी तो अधिकतर पृष्ठ-संख्याओं में और अधिकतर उन्नत दशा में प्रकाशित की जायगी।

३—इसके प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र और रुपये आदि तथा सम्पादन सम्बन्धी पत्र, पुस्तकें परिवर्त्तन के पत्रादि सब "मन्त्री सम्मेलन-कार्यालय, प्रयाग" के नाम आना चाहिये।

## विज्ञापन छपाई के नियम

६ मास अथवा उससे अधिक दिनों के लिये

| | १ पृष्ठ, | आधा पृष्ठ | और चौथाई पृष्ठके लिये |
|---|---|---|---|
| कवर पेज पर | ५) | ३) | २) |
| साधारण पेज पर | ४) | २॥) | १॥) |

विशेष बातें जाननी हों तो मन्त्री जी से पूछिये।

## क्रोड़पत्र बटाई के नियम

आधा तोला तक अथवा इससे कम के लिये ... १०)
१ तोला के विज्ञापन के लिये ... १२)

**मंत्री, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग**

---

नोट—विज्ञापन के ऊपर यह छपा होना चाहिये कि अमुक-मास की "सम्मेलन-पत्रिका" का क्रोड़पत्र और उसमें यथोचित समाचार भी होनें चाहियें।

# सम्मेलन कार्य्यालय की नयी और अत्यन्त उपयोगी पुस्तकें

## नागरी अंक और अक्षर

इस ग्रन्थ में अङ्कों और अक्षरों की उत्पत्ति पर जो बड़े गवेषणा पूर्ण लेख प्रथम और द्वितीय सम्मेलन में पढ़े गये थे, संकलित हैं। हिन्दी में ऐसी दूसरी पुस्तक है ही नहीं। मूल्य ≡)

## इतिहास

यह ग्रन्थ पं० विष्णुशास्त्री चिपलूणकर के प्रसिद्ध निबन्ध का अनुवाद है। मध्यमा के पाठ्य ग्रन्थों में होने के अतिरिक्त यह अत्यन्त रोचक है। इतिहास का वास्तविक महत्व इससे जाना जाता है। मूल्य ≡)

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम वर्ष का विवरण | ।) | नागरी अंक और अक्षर | ≡) |
| द्वितीय वर्ष ,, | ।) | सौ अजान और एक सुजान | ।≡) |
| तृतीय वर्ष ,, | ।=) | पिङ्गल का फलक (प्रथमा के लिये) | -) |
| प्रथम सम्मेलन की लेखमाला | ।।।) | गद्य काव्य मीमांसा | ।) |
| द्वितीय ,, ,, | १) | ऊजड़ ग्राम | ।) |
| तृतीय ,, ,, | ।।।) | विज्ञान प्रवेशिका | ≡) |
| चतुर्थ ,, ,, | ।।।) | यूरोप का संक्षिप्त इतिहास | ।≡) |
| पञ्चम ,, ,, | ।।) | अलंकार प्रकाश | १।।।) |
| नीति दर्शन ,, | ।।।) | सूर्य्य सिद्धान्त | २) |
| लाजपतराय की जीवनी | १) | विवरण पत्रिका १९७२ (छप रही है) | ।) |
| हिन्दी का संदेश | -) | | |
| इतिहास | ≡) | | |

**मंत्री—हिन्दी साहित्य सम्मेलन कार्यालय**

**प्रयाग।**

पं० ओंकारनाथ वाजपेयी के प्रबन्ध से ओंकार प्रेस, प्रयाग में छपकर हिन्दी साहित्य सम्मेलन से श्रीनरेन्द्र नारायणसिंह द्वारा प्रकाशित।

Reg. No. A-629.

# सम्मेलन-पत्रिका

## हिन्दीसाहित्य-सम्मेलन की

### मुखपत्रिका

भाग २ | श्रावण संवत् १९७२ | अङ्क ११

### विषय-सूची



वा० मू० १) ] [ एक प्र० =)

सम्पादक पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी ।

# सम्मेलन के उद्देश्य

( १ ) हिन्दी-साहित्य के अङ्गों की उन्नति का प्रयत्न करना।

( २ ) देवनागरी लिपि का देश भर में प्रचार करना और देश-व्यापी व्यवहारों तथा कार्यों के सुलभ करने के लिये हिन्दी भाषा को राष्ट्र-भाषा बनाने का प्रयत्न करना।

( ३ ) हिन्दी को सुगम, मनोरम और लाभदायिक बनाने के लिए समय समय पर उसकी शैली के संशोधन तथा उसकी त्रुटियों और अभावों के दूर करने का प्रयत्न करना।

( ४ ) सरकार, देशीराज्यों, पाठशालाओं, कालेजों, विश्व-विद्यालयों और अन्य संस्थाओं, समाजों, जन-समूहों तथा व्यापार, ज़मींदारी और अदालतों के कार्य्यों में देवनागरी-लिपि और हिन्दी-भाषा के प्रचार का उद्योग करते रहना।

( ५ ) हिन्दी के ग्रन्थकारों, लेखकों, पत्रसंपादकों, प्रचारकों और सहायकों को समय समय पर उत्साहित करने के लिये पारितोषिक प्रशंसापत्र, पदक, उपाधि आदि से सम्मानित करना।

( ६ ) उच्च-शिक्षा प्राप्त युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्प[न्न] करने और बढ़ाने के लिये प्रयत्न करना।

( ७ ) जहां आवश्यकता समझी जाय वहां पाठशाला, समिति तथा पुस्तकालय स्थापित करने और कराने का उद्योग करना तथा इस प्रकार की वर्त्तमान संस्थाओं की सहायता करना।

( ८ ) हिन्दी-साहित्य के विद्वानों को तैयार करने के लिए हिन्दी की उच्च-परीक्षाएं लेने का प्रबन्ध करना।

( ९ ) हिन्दीभाषा के साहित्य की वृद्धि के लिए उपयोगी पुस्तकें तैय्यार कराना।

( १० ) हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के उद्देश्यों की सिद्धि और सफलता के लिये अन्य जो उपाय आवश्यक और उपयुक्त समझे जायँ उन्हें काम में लाना।

---

# सम्मेलन-पत्रिका का उद्देश्य

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता करना, और साहित्य प्रेमियों से इसी के लिए उपदेश लेना।

# सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति
की ओर से प्रतिमास प्रकाशित।

भाग २ | श्रावण संवत् १९७२ | अङ्क ११

## अभ्युदय और मर्यादा

हमारे हिन्दी-भाषा-भाषी भाइयों को विदित ही है कि मर्यादा और अभ्युदय ये दोनों पत्र "अभ्युदयप्रेस" प्रयाग से प्रकाशित होते थे, दोनों ही का सम्पादन हमारे देश के गौरवस्वरूप श्रीमान् माननीय पं० मदनमोहन मालवीय जी के भतीजे पं० कृष्णकान्त मालवीय करते थे सम्पादन कैसा होता था इस विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं, हिन्दी संसार को इसका पूरा ज्ञान है। दोनों ही अपने देश की राजनीति, धर्मनीति एवं समाजनीति के सुधारक थे दोनों का प्रकृति और पुरुष का सा सम्बन्ध था। अभ्युदय अपने भाइयों की सेवा में कभी प्रति सप्ताह कभी सप्ताह में दो वार और कभी प्रति दिन पहुंचता था तो मर्यादा प्रतिमास पहुंचती थी। जिन बातों की कमी अभ्युदय के पढ़ने में रह जाती थी उनकी पूर्ति मर्यादाबद्ध लेखों से मर्यादा अवश्य ही करदेती थी। यद्यपि अभ्युदय के साथ मर्यादा का जन्म नहीं हुआ तथापि अभ्युदय एवं मर्यादा के उद्देश्य एक ही थे। जिस प्रकार परमपुरुष परमात्मा अपनी सृष्टि की रचना के निमित्त अपनी प्रकृति को प्रकट करता है उसी प्रकार अभ्युदय ने अपने भाइयों को उठाने के लिये अपनी राजनीति धर्मनीति एवं समाजनीति रूपिणी सृष्टि के सुधारने के लिये और अपने कार्यों को अग्रसर करने के निमित्त अपनी प्रकृति स्वरूपा मर्यादा को प्रकट किया था।

जिस समय हमारे भारत हितैषी लार्डकर्जन की कृपा से देश में राजनैतिक उथला पुथल मच रही थी, नवयुवकों—विशेष कर विद्यार्थियों में देश प्रेम की लहरें सीमा को नाँघ कर भी हिलोरें मार रही थीं, चारों ओर से स्वदेशी आन्दोलन और वायकाट की आवाज ऊँची होती चली जा रही थी, कांग्रेस भी अपने प्रस्तावों में वायकाट का वायकाट नहीं कर सकी, स्थान स्थान पर जोशीले और राष्ट्रीयभाव के फैलाने वाले नए नए पत्र और पत्रिकायें प्रकाशित होने लगगयीं थीं, गरम दल की प्रबलता ने सर्वसाधारण में नरमदल के प्रति लोगों में घृणा उत्पन्न करने लग गयी थी। राजा और प्रजा दोनों के सच्चे हितैषियों का समय चिन्ता और संकट के साथ कट रहा था, उसी समय राजा और प्रजा के हित के विचार से, दोनों दल के लोगों को समुचित सम्मति देने के लिए, हमारे दूरदर्शी माननीय मालवीयजी ने 'अभ्युदय' को जन्म दिया था। जिस समय हमारे प्रान्त में भी विदेश के कुछ फिरे दिमागवालों की छाया सी पड़ने लग गयी थी और बङ्गीय अधिकारियों के समान हमारे प्रान्तों के अधिकारियों को भी दमननीति जैसी भयङ्कर और व्यर्थ की कार्यवाहियों के प्रारम्भ करने की आवश्यकता प्रतीत होने लग गयी थी, उसी समय राजा और प्रजा के बीच में मध्यस्थ का काम करने के लिये उक्त मा० मालवीय जी ने 'अभ्युदय' को जन्म दिया था। जिस समय उच्च शिक्षा की अड़चने लोगों को अखरने लग गयीं थीं और सुधार के बदले बिगाड़ के रूप में १६ वर्ष की अवस्था के समान मेट्रिक के विद्यार्थियों के लिये नियम बनाकर मानो उनके मार्ग में बाधायें डाली गयीं थीं और सर्वसाधारण—विशेष कर के शिक्षित समाज को उस नीति के मर्मवेधी बाण का घाव व्याकुल कर रहा था, उसी समय "हिन्दूविश्वविद्यालय" की स्थापना करने की घोषणा देकर देश निवासियों को आश्वासन देने के लिये माननीय मालवीय जी ने 'अभ्युदय' को जन्म दिया था। जिस समय देश में आर्यसमाज और भारतधर्म—महामण्डल के उपदेशकों के विषमय उपदेशों से हिन्दू जाति में पारस्परिक द्वेषाग्नि की ज्वाला निकलने लगगयी थी, बड़े बड़े विद्वानों के व्याख्यानों में भी अपने भाइयों के प्रति घृणा करने वाली गालियों पर तालियां बजने लगगयीं थीं इतना ही नहीं मुकद्दमें बाज़ी और फ़ौजदारी की भी नौबत आने लगगयी थी,

उसी समय मा० मालवीय जीने सनातनधर्म के रूप में उन दोनों दलों के बीच में मध्यस्थ का काम करने के लिये 'अभ्युदय' को जन्म दिया था। कहां लो गिनावें जिस समय हमारे देश के राजा और प्रजा एवं प्रजा और प्रजा में आपस के मनोमालिन्यही नहीं विद्रोहाग्नि की ज्वाला भी प्रबलता धारण कर रही थी, उसी समय शान्ति स्थापित करके अपने देश के उत्थान के उद्देश्यसे ही माननीय मालवीय जी ने 'अभ्युदय' को जन्म दिया था।

संसार में प्रायः देखा जाता है कि जिस उद्देश्य से जो कार्य किया जाता है उसमें पूर्णतया सफलता नहीं होती, किन्तु 'अभ्युदय' के लिए यह अभिमान की बात है कि उसका जन्म जिस उद्देश्य से हुआ था उसमें वह सदैव सफल रहा। माननीय मालवीय जी का गौरव हमारे देश निवासियों के हृदय पर उतना ही है जितना कि देशके सच्चे नेता के प्रति देश निवासियों के हृदय पर होना चाहिये। अधिकांश हमारे हिन्दी-भाषा-भाषी भाइयों को उनके अमृतमय उपदेश, अपने हित की बातें और नीतियों की कठिन समस्याओं के उत्तर पाने का द्वार एक मात्र 'अभ्युदय' ही था क्योंकि नतो सर्व-साधारण ही को और न माननीय मालवीय जी को ऐसा अवसर मिल सकता है कि उपदेश और कठिन समस्याओं के उत्तर स्वयं जाकर या आकर अपने कानों से सुन सकें या व्याख्यान द्वारा सुना सकें, ऐसी दशा में राजा और प्रजा के हित के लिए 'अभ्युदय' की कितनी बड़ी आवश्यकता है यह बतलाने की आवश्यकता नहीं प्रतीत होती।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारी हिन्दी-भाषा का एकही (अभ्युदय) पत्र था जिसका सञ्चालन एक माननीय नेता के द्वारा होता था, इस पत्र के लिये जितना आदर का स्थान प्रजा के हृदय पर था हम कह सकते हैं और विश्वास के साथ कह सकते हैं, कि उससे कम आदर का स्थान उदार और न्याय एवं सत्य के प्रेमी अधिकारियों के हृदय पर भी न था। इसके प्रमाण में गवर्नमेण्ट की रिपोर्टें और 'अभ्युदय' के लिए जो दिल्ली दर्बार का; आमन्त्रण पत्र आया था पर्याप्त है। अवश्य ही 'अभ्युदय' ने अपने ७॥ वर्षों में जिन कार्यों को कर दिखलाया है उनके लिए उसको अभिमान करने का अवसर है। जो 'अभ्युदय'

राजा प्रजा के और भाई भाई के बीच में बढ़ते हुवे विद्वेष को शान्त करता था जो 'अभ्युदय' अपने भाइयों को जितने प्रेम और पाण्डित्य से हित की बातें समझाता था—उचित मार्ग पर चलने का उपदेश देता था और न माननेवालों की गालियां सुनते हुए भी अपने मुख से—कभी कटुवचन नहीं निकालता था, उतनेही प्रेम उतनेहीं पाण्डित्य से नहीं नहीं उससे भी कहीं अधिक प्रेमपूर्ण पाण्डित्य से राजा एवं राजकर्मचारियों को भी उपदेश देता था। उचित मार्ग बतलाता था और अपने उग्रनीति के धारण करनेवाले भाइयों की गालियां भी सुनता था, आश्चर्य, कि उस पर आंखें क्यों और किसने लगायीं? वह शत्रुही किसका था? यह अनहोनी समझ में नहीं आती। जो गुण 'अभ्युदय' में थे वे 'अभ्युदय' में ही थे उसके लिए अधिक लिखना व्यर्थ है किन्तु लिखते खेद होता है पश्चात्ताप होता है और आश्चर्य्य होता है कि हमारी गवर्नमेण्ट की कृपा से ऐसे पत्र का भी इस समय अस्त सा हो रहा है, साथही 'छायेव' के समान ही मर्यादा भी अपना दर्शन अब नहीं दे रही है। जिस प्रकार सूर्य के साथ ही साथ ऊषा की लालिमा भी आती और जाती है उसीप्रकार "अभ्युदय" के साथही साथ मर्यादा भी इस समय अदृश्य हो रही है। यद्यपि हमारे ज्योतिष का सिद्धान्त है कि छोटे मोटेग्रह अस्त हुआ करते हैं किन्तु जिनसे सारे संसार में प्रकाश फैलता है और जो प्राणी मात्र के जीवन स्वरूप हैं उन भगवान सूर्य-नारायण का अस्त कभी नहीं होता। यद्यपि प्रतिदिन कुछ समय के लिए हमें सूर्यनारायण की मूर्ति दृष्टिगोचर नहीं होती तथापि उस समय में (रात्रि में) भी वे अस्त नहीं होते। जिस समय हमारे और भगवान सूर्य के मध्य में पृथ्वी की आड़ पड़ जाती है उसी समय हमें उनके दर्शन नहीं होते किन्तु हमारे भारतवर्ष के सौभाग्य से प्रत्येक २४ घण्टे के बीच में वे एक बार १०—१५ घण्टों के लिए अवश्य ही दर्शन देते हैं। हां कभी कभी ऐसा भी समय आजाता है कि सूर्यभगवान में ग्रहण लग जाता है और दिन में भी कुछ समय के लिए वे अदृश्य अथवा म्लानकान्ति हो जाते हैं, उसके कारण भी उनके दोस्त ही होते हैं। पुराणों में तो ग्रहण का हेतु राहु की छाया बतलायी गई है किन्तु गणितवेत्ता और प्रत्यक्षवादीगण केवल उसी को न मानकर सूर्य में ग्रहण लगानेवाला चन्द्रमा को भी कहते हैं-जिन को

सूर्य ही चमकाया करते हैं। ठीक ही है कलिकाल में सज्जनों से भी उपकार का बदला अपकार से मिलता है। मेरा तो विश्वास है कि 'अभ्युदय' को अस्त करनेवाला संसार में कोई नहीं है, वह सूर्य है हां उसकी किरणों से जिनको प्रकाश मिलता है अथवा यों कहें कि जो 'अभ्युदय' रूपी सूर्य के न रहने पर देश की स्थिति के यथार्थ समाचार रूपी प्रकाश को न पासकेंगे उन्हीं के द्वारा 'अभ्युदय' में यह ग्रहण लगा है। कुछ समयों के लिए हमें 'अभ्युदय' के दर्शन भले ही न हों किन्तु अभ्युदय का अस्त नहीं हो सकता उसका अस्त होना उतनाही असम्भव है कि जितना सूर्य भगवान का।

'अभ्युदय' के अध्यक्ष हमारे माननीय मालवीय जी हैं। गवर्नमेण्ट को ता० २६ जून सन् १६१५ के अभ्युदय के किसी लेख पर सन्देह हुआ है और उसने ३० जुलाई सन् १६१५ को अभ्युदय प्रेस के अध्यक्ष की हैसियत से उक्त मालवीय जी को २५००) की ज़मानत देने के लिए नोटिस दी थी। माननीय मालवीय जी ने उस आज्ञा को उचित नहीं समझा जैसा कि उनके पत्र (८—८—१५) से विदित होता है जो उन्होंने संयुक्तप्रान्त की सरकार के चीफ सेक्रेटरी के पास भेजा है। अवश्य ही अपने सिद्धान्त पर दृढ़ रहना सत्पुरुषों का धर्म है। माननीय मालवीय जी के विचार से जब गवर्नमेण्ट का ज़मानत मांगना अनुचित है तब उस अनुचित आज्ञा का पालन करना कहां तक उचित हो सकता है पाठक स्वयं विचार कर सकते हैं। साथही अपने न्यायानुमोदित आन्दोलन के सिद्धान्तानुसार गवर्नमेण्ट की सब प्रकार की आज्ञा का पालन करना भी आवश्यक है, अतएव माननीय मालवीय जी ने अभ्युदय प्रेस को बन्द कर देना उचित समझा और भौमवार ता० १० अगस्त से अभ्युदय प्रेस बन्द कर दिया गया। यद्यपि इस कार्य में गवर्नमेण्ट ने जल्दी में आकर विचार नहीं किया मा० मालवीय जी के पत्र से जो गवर्नमेण्ट और प्रजा के हित हो सकते थे वे किसी कम्पनी के या यों कहें कि सर्वसाधारण के पत्र से कदाचित नहीं हो सकते क्योंकि जो कार्य मध्यस्थ द्वारा हो सकते हैं वे स्वयं वादी प्रतिवादी द्वारा नहीं हो सकते अस्तु—'अभ्युदय' प्रेस के बन्द होने के साथही साथ 'अभ्युदय' पत्र और 'मर्यादा' का निकलना भी बन्द हो गया है, इतनाही नहीं 'अभ्युदय' से उत्तम उत्तम पुस्तकें भी अब

नहीं निकल सकेंगी। यह हिन्दी भाषा भाषी भाइयों के लिए बहुत ही दुःख का विषय है। हमारे हिन्दी प्रेमी भाइयों में उत्साह है, वीरता है और दान वीरता है, अनेक लोगों की इच्छा थी कि हम लोग रुपया दे डालें, मा० मालवीय जी को जमानत के रुपये न देने पड़ें और प्रेस बन्द न हो। परन्तु मामला तो रुपये का नहीं-सिद्धान्त का है ऐसी दशा में ज़मानत देकर प्रेस चलाने की अपेक्षा प्रेस बन्द करना ही उचित समझा गया है। फिर भी 'अभ्युदय' और 'मर्यादा' का निकलना बन्द नहीं होगा और होना भी न चाहिये। अब प्रेस और पत्रों के लिए कम्पनी बनायी जा रही है। कम्पनी का मूलधन २५०००) का २५०० हिस्सों में रक्खा गया है। जिस तेजी से इस समय हिस्से बिक रहे हैं और हिन्दी प्रेमी भाई उत्साह दिखा रहे हैं उससे अनुमान होता है कि कम्पनी के हिस्से बात की बातमें बिक जायंगे। इतना अवश्य ही हम कहेंगे कि जिस हिन्दी प्रेमी का रुपया इस मम्पनी में-स्वार्थ की दृष्टि से नहीं सेवा की दृष्टि से लगेगा उसे हम बड़भागी कहेंगे क्योंकि ऐसी दशा में हम यदि कम्पनी के हिस्सों के रुपये से भी 'अभ्युदय' की सेवा न कर सकें तो हमारे समान कृतघ्न और दूसरा कौन होगा।

---

## हिन्दी-बन्दना

[ ले० श्रीयुत रामचन्द्र मिश्र ]

जय जयति जय मातृभाषा नागरी गुनआगरी,
सुखकारिणी मनहारिणी सुठिविमलकीर्ति उजागरी।
स्वर मंजु मृदु व्यञ्जन विविध वररेख लेख विहारणी,
नखशिखअलंकृत मुकुट चामर छत्रछविमय धारिणी॥
तेरा निरादर हम सबों ने मूर्खतावश जो किया,
जगदीश न्यायी ने हमें उस पाप का प्रतिफल दिया।
हम अब तेरी सेवा से वंचित हो न रहना चाहते,
सुख, पुण्य, धर्म महान तेरी ही शरण में मानते॥
हे नागरी माता! करो दुख दूर पाप क्षमा करो,
बल, वीर्य, धैर्य प्रदान कर सब निबलता मेरी हरो।

कर्तव्य से मुख अब न मोड़ें चित्त की यह धारना,
सर्वस्व अर्पण करदिखा दें पूर्णव्रत की पालना ॥
विनती हमारी आप से है भारतीयो, कान दो,
इस राष्ट्रभाषा भव्य के विस्तार पर अब ध्यान दो ।
यह नागरी ही राष्ट्रधर्म-प्रवाह का इक स्रोत है,
इस के उदय से फैलती राष्ट्रीयता की जोत है ॥
होकर खड़े हम भ्रातृगण सब एक झंडे के तले,
आओ परस्पर प्रेम से परिपूर्ण मिल जाएं गले ।
इस राष्ट्रभाषा, एक जनता का विकास अपार हो,
जय मातृभाषा मातृभाषा ही का जयजयकार हो ॥
प्रान्तीयता का अन्धकार प्रकाश से भगने लगा ,
इस देश में अब प्रेमभाव उदार हो जगने लगा ॥
हिन्दी हमारी हिन्द में आसन सुखद लहने लगी,
राष्ट्रीयता की सुखद शीतल वायु भी बहने लगी ॥
साहस दिखाया उचित अपने उच्चभाव विचार का,
मरहठे गुजरातियों ने मातृप्रेम प्रचार का ।
आदर्श सब प्रान्तों का अपनी कीर्ति से है बन रही ॥
सब को जगाने की है मानो मनमें उस के ठन रही ॥
उस राजपूताने में हिन्दीप्रेम कैसा बढ़ रहा,
हिन्दू व हिन्दुस्थान पर जो आदि से है मर रहा ।
यह राष्ट्रभाषा सुखमयी निजबेलि अब फैला रही,
भारत के इस उद्यान में कैसे सुमन, फल ला रही ॥
जो सो रहा हो जागना उसका नितान्त अवश्य है,
संसार में प्राणी कोई हो इस नियम के बश्य है ।
इसही नियम से जागने का समय अपना आगया,
आलस्य है यद्यपि, तथापि प्रकाश रविका छा गया ॥
कर्तव्य में यदि तुम सभी तत्पर रहोगे सर्वदा,
भर जायगी द्रुत हिन्द हिन्दी हिन्दुओं में सम्पदा ॥
तुम एक ही माता की गोदी के सभी सन्तान हो,
भारतनिवासी एकभाषी हों कि तव कल्यान हो ॥

एवमस्तु

---

# हिन्दी की विलक्षण एकता

( ले० श्रीयुत पं० गयादत्तत्रिपाठी बी० ए०, प्रयाग )

साधारणतः उत्तरीय हिन्दुस्थान में जितनी भाषाएँ बोली जाती हैं सब हिन्दी भाषा के अन्तर्गत हैं—परन्तु ये सब भाषाएँ देश और स्थान के भेद से भिन्न भिन्न हैं—विचार करने से स्पष्ट होता है कि हम लोगों की मातृभाषा बहुत थोड़े ही दूर दूर पर बदल जाती है, जो भाषा प्रयाग की है वह भाषा प्रयाग के पूर्व्व मिरज़ापुर तथा पश्चिम में फ़तेहपुर की नहीं है यदि और विशेष ध्यान दिया जाता है तो प्रकट होता है कि प्रयाग में भी इस भाषा के कई स्वरूप हो रहे हैं।

साधारण प्रकार से हिन्दी भाषा के पूर्व्वीय हिन्दी और पश्चिमीय हिन्दी के दो भेद हैं। पूर्व्वीय हिन्दी का जन्म मागधी की गोद में है और पश्चिमीय हिन्दी सूरसेनी भाषा की पुत्री है। सूरसेनी तथा मागधी दोनों प्राकृत भाषाएं संस्कृत भाषा की पुत्री हैं इस वंशावली से यह सिद्ध होता है कि पूर्व्वीय तथा पश्चिमीय हिन्दी ये दोनों भाषाएं संस्कृत की प्रपौत्री हैं। मागधी भाषा का मुख्य स्थान पूर्व में पाटलिपुत्र अर्थात पटना था और सूरसेनी भाषा का मुख्य स्थान पश्चिम में मुरादाबाद मेरठ प्रभृति के समीप में था। पूर्व्वीय और पश्चिमीय देश के बीच अवध में इन दोनों भाषाओं के मेल से एक तीसरी भाषा हो गयी थी जो अवधी भाषा व अर्धमागधी भाषा के नाम से प्रसिद्ध है। इस अर्धमागधी के अन्तर्गत प्रयाग की भी हिन्दी है। ऊपर कह आये हैं कि देश देश के भेद से भाषा के रूप में भी भेद पाया जाता है। इस विषय में और सूक्ष्म विचार करने से यह भी प्रगट होता है कि थोड़ी ही दूर में अर्थात् प्रत्येक प्रान्त नगर व परगना की बोली में भी भिन्नता है इसी प्रकार ज़िला प्रयाग के प्रत्येक कोने में लोगों की बोली बदल गयी है।

ज़िला प्रयाग के स्वाभाविक तीन विभाग हैं। अर्थात् यमुना पार, गंगापार और गंगा एवं यमुना का मध्यदेश—अन्तर्वेद वा दुआबा परगना बारा और खैरागढ़ को छोड़ कर सम्पूर्ण प्रयाग मण्डल में अवधी भाषा बोली जाती है और बारा व खैरागढ़ में जो भाषा है वह बघेली और भोजपुरी भाषा की रूपान्तर है। प्रयाग जैसे बड़े

नगर के निकट होने से कुछ कुछ उर्दू भाषा का भी मेल हो रहा है ज़िला के मध्यभाग की भाषा अर्थात् वह भाषा जो चायल और झूंसी के परगने में बोली जाती है अवधी-भाषा है, डाक्टर ग्रीअर्सन साहब ने मध्यप्रयाग की भाषा अर्थात् परगना चायल और झूंसी की भाषा का उदाहरण इस प्रकार दिया है :—

"एक मनई के दुइ बेटवा रहेन। छोटका बेटवा बाप से कहेस ए बाप धन का हिस्सा जवन हमका चाही हमका देह। तब धन उनका बांट देहेस। थोरे दिन बीते छोटका बेटवा सब बटोरि के बड़ी दूर चलागवा। उहां आपन धन सब खराब कै दिहिस और वह देश में काल पड़ गवा। तब वह भूखन मरै लाग''।

गंगापार में उत्तर और पश्चिम की ओर परगना सिकंदरा, मिरज़ापुरचौहारी, नवाबगंज और सोरांव में तथा मध्यभाग के परगना कड़ा, करारी, और अथर्वन में जो भाषा बोली जाती है वह ऊपर लिखी हुई मध्यभाग की भाषा से कुछ भिन्न है, यहां की भाषा वैसवारी-भाषा से बहुत मिलती है। इस भाषा का उदाहरण उक्त डाक्टर साहब ने इस प्रकार दिया है।

"ऐसे ऐसे दुइ परोसिन मेहरारू रहैं। एक के लरिका बाला रहेन और एक के न रहैं। आंधी आई बड़े ज़ोर। कहिन कि चलौ बहिन आव बिनी। सो एक तौ आंव बिनै लागी जौनी के लरिका रहैं। और जौनी के लरिका ना रहैं झाड़ी मां कोइ का लरिका उड़ि के आवा रहै परा रहै। तौ उइ गईं उठाय लिहिन झारैं पोछैं लागीं लै गईं घरै सेवा करै लांगी। बियाह किहिन गौन लै आईं। वहि-के माथे घर-की गिरस्ती छोड़ि दिहिन और खाइ-का करै और खवावै। जो कुछ बचै करोवन पोंछन सो बुढ़िया का देइ। सो उइ दुबराइ लागीं। तौ लरिका पूछिन कि हमार अम्मा काहे दुबराइ लागीं। तौ उइ कहिन की खाइ-का तौ मैं सब कुछ देत-हौं जब चाहौ तब परतिग्यां लै लेव मोरि। तौ एक दिन परधियाने तौ सेंदुर टिकुली की डिबिया दिखावै की अम्मा और लै लेव। तौ उइ कहिन कि भय्या अब तुम देव। मैं अघाय गयुं। तौ बेटवा दौरि-कै देखिसि सेंदुर टिकुली-कै डिबिया। तौ पकरि-कै झोंटी पीटैं लाग। तौ उनकी महतारी हाथ जोरिन की अब ना मारौ। आंधी पानी ना आवत तौ बगियै ना जातिउँ। ऐसा पुत्र कहां पौतिउं। कौरो को देत।"

परगना खैरागढ़ के उत्तर टप्पाचौरासी के निकट और परगना करछना, मह और किवाई की भाषा मध्यप्रयाग की भाषा से कुछ भिन्न हो कर पूर्व में मिरज़ापुर की भाषा से बहुत मेल खाती है, इस भाषा को प्रयाग के लोग "पुरबिया-बोली" कहते हैं परन्तु

यथार्थ में यह पुरबिया नहीं है। इस भाषा को भी अवधी-भाषा कहना ही उचित प्रतीत होता है।

इस भाषा का नमूना भी डाक्टर ग्रीअर्सन की उक्त पुस्तक से उद्धृत किया जाता है :—

"ऐसे ऐसे एक राजा रहैं। सो राजा-के एक रानी रहीं। हँसैं तौ फूल गिरैं और रोवैं तौ मोती झड़ैं। राजा के एक लौंडी रही। रानी का बिदा कराइ कै राजा-के मकान-को चली। बीच में रानी पिआसी भईं। लौंडी कहेन की खांड़ खाइ लेव। रानी खांड खायेन पिआस न बुतान। तब लौंडी कहिस की तुम आपन पोसाक जौन पहिरे हा तौन हम-का उतार कै आवै देउ। सो तुम हमार पहिर लेउ पानी ले-आवउ तलाव से। जो रानी तलाव पर गईं पानी पीने सो लौंडी छिप-के डोली मां बैठी कहारन का हुकुम दै दीन की चलो। कहारन डोला लै चलें। रानी बीच मां पानी पी-के आईं। तो रोवै लागीं। रोवत रहीं कि एक मिस्त्री मिला। कहेस क्यों बेटी तुम क्यों रोती हो। तो बतावै लागीं की हम अपने मां बाप से विदा भयेन सो हमसे लौंडी छल किहिस। मिस्त्री उन-का ले वाये लैगा एक बरामन-के घर मां टिकाय दिहिस। लौंडी बांदी उनका लगाए दिहिस। जो खिजमत करै लागी। सो मालिन हार लावै लागी। और हुआं राजा-के इहां लौंडी-क्का हार देव जात रहै। रानी तो सूप भर मोती देइँ और एकठो केवँलगट्टा का फूल देइँ। और लौडी एक डबल का महीना देइँ। तौ एक बेर राजा के यहां पहुंचने में बेर हो गई। मालिन का हार नहीं लीना। तौ मालिन कहेस की एक मिस्त्री एक औरत लेवाइ लै आवा है और बेटी के समान राखे हैं। सो उनसे हम सूप भर मोती पाइत है। तो ऊनाही तेहा करतीं। एक डबल मिला और न मिला। तोहरे हांथ फूल बेचले कौन फायदा। इन बातन का राजा कतौं कतौं पता पायेन व खोज किहेन सो मालुम भा कि लौंडी है। रानी बढ़ई के मकान-मां है। तब राजा बढ़ई के इह गये औ रानी का चेरौरी किहेन। तब अपने मकान का लेवाइ लाये। जस उनका दिन फिरा तस सब का दिन फिरै।"

परगना बारा और परगना खैरागढ़ के (टप्पाचौरासी को छोड़ कर) जो भाषा बोली जाती है वह बघेली-भाषा के नाम से प्रसिद्ध है। शुद्धभाव से यह बघेली-भाषा नहीं है यह भाषा बघेलखंड, मिरज़ापुर व प्रयागनगर की भाषाओं की मिश्रितभाषा है। इस भाषा का नमूना उक्त डाक्टर साहब ने इस प्रकार दिया है:—

ऐसे ऐसे एक सीगठ वो बाघ रहैं। दूनौ जने खेती किहेन काटेन मीजन। सीगठ कहेन की तरे का लेवे की ऊपर का। बघउ कहेन की हम तरे-का लेब। तब सीगठ कहेन की बाघराम हम तुमार असमंगी करब। बरा, भात, फुलौरी सीगठराम बनाइ कर धइ दिहेन। बाघराम खाइन। बाघ कहेसि की सीगठराम, अब हम तुमार

असमंगी करित है। तब बाघराम डेठुरा मेठुरा चुराइ कर सोगठ के आगे धइ दिहेन। सीगठ वो बाघ के बीच में एक अहिर सब बात सुनत रहा। अहिरवा कहेसि की बाघ की असमंगी नाही बनि परी। सीगठराम की असमंगी बनि परी है। बघऊ कहिन कि हम तुमका खाब, चबाव, हमार गीला कि हवह। तब अहिरऊ अपनी महतारी से कहेन की हे माई। हम का बाघ आज धिरये वा की तुम का हम खाइलेव। तब उंकर महतारी कहेस कि दहजरा के नाती कैसे। ( क्रमशः )

——:o:——

# समालोचना

[ ले० श्रीयुत गिरिजाकुमार घोष ]

"फ़िज़ी द्वीप में मेरे २१ वर्ष" लेखक पंडित तोताराम सनाढ्य प्रकाशक—भारती-भवन, फीरोज़ाबाद—आगरा। क्रौन ८ पेजी १६८ पृष्ठ। मूल्य कुल छः आना।

भगवान श्रीकृष्ण का कथन है कि जब जब संसार में धर्म की ग्लानि होती है, तब तब दुष्टों को दंड देने और धर्म की रक्षा के लिए भगवान अवतार ले कर संसार को डूबने से बचाते हैं। इसी दैवी नियम के अनुसार जब जब प्रकृति को किसी प्रकार का भारी दुःख पहुंचता है, तब तब मनुष्य जाति के हृदयों में उस दुःख को हटाने के लिए भगवान की सत्ता जग उठती है और अभाव के साथ साथ उसके मिटाने का उपाय भी सूझने लग जाता है। भोले भाले ग्रामवासी स्त्री पुरुषों को "अरकाटी" लोग जिस प्रकार बहका-कर टापुओं को भेजा करते हैं, हम लोग जान कर भी इस महा-भयङ्कर अनीति को अनजान कर देते हैं।

इन्हीं अरकाटियों के दुराचरणों को हिन्दीभाषी-संसार के सामने प्रकट करने के लिए ग्रन्थकार का अवतार हुआ था। तोता-राम जी जिस समय बालक ही थे। इसी प्रयाग की कोतवाली के सामने वाले बाज़ार से एक अरकाटी ने इनको फुसला कर प्रयाग से कलकत्ता और कलकत्ते से समुद्रपार फ़ीज़ी के टापू में देशान्त-रित कर दिया। घर पर इनकी बुढ़िया अभागिनी माता रह गयी। भाई को इनकी दुर्दशा का पता लगा तो बेचारा समाचार सुनते ही तड़पकर मरगया और इस पढ़े लिखे ब्राह्मण बालक को अंग-रेज़-मालिक का घर भरने के लिए खेत में कड़ी मेहनत करनी

पड़ी। पेट भर खाने को भी कभी न मिलता। काम कम होता तो मज़दूरी के टके कटजाते। इस प्रकार अनेक दुःख सहते हुए अभागे तोताराम ने फ़ीज़ी में २१ वर्ष काटे, अब वे फिर घर लौट सके हैं। परन्तु जीवन का मुख्य भाग इनका देशान्तर में कुली का काम करते बीत गया। इस दुःख की कथा और श्वेतवर्ण-दानवों को दानवी लीला के सत्य वर्णनों के पढ़ते पढ़ते नेत्रों से अकस्मात आंसू निकल आते हैं, शरीर पर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इस महापाप-पूर्ण गुलामी की प्रथा की जड़ कैसे उखड़ेगी सोचते सोचते कलेजा कांप उठता है। प्रयाग में भी अरकाटियों की एक कुलीडीपो है। जी में आता है कि उसमें घुसकर अरकाटियों का समुचित सत्कार करें। परन्तु जब दक्षिण-अफ़रीका में हिन्दुस्थानी-कुलियों पर घोर अत्याचार रोका जा सका, तब आशा होती है कि हमारी न्यायी सरकार के कानों में दूसरे टापू वाले अभागे भारतवासी-कुलियोंके मर्मस्पर्शी आर्त्तनाद भी अवश्य पहुंचेंगे और सरकार उनके दुःखों को अवश्य दूर करेगी। सरकार के कानों में इन दुःख की कथाओं के पहुंचाने के लिये घोर आन्दोलन की आवश्यकता है, और जब तक सरकार की ओर से इस अनर्थ का मिटा देना सम्भव न हो तब तक अरकाटियों की ठगविद्या से बचने के लिए ग्रामीण और नागरिक, भोले भाले स्त्री पुरुषों को सावधान करने की भी बड़ी भारी आवश्यकता है। यह कार्य समस्त पढ़े लिखे मनुष्यों का है। इसी पुण्यकार्य में सहायता देने के लिए आलोचित पुस्तक का प्रकाश हुआ है। हिन्दी के अक्षरमात्र का भी जिसको ज्ञान है उसे तोताराम जी की पुस्तक मगवा कर पढ़नी चाहिये। हमारी तो राय यह है कि ऐसी पुस्तकें और भी प्रकाशित हों, और प्रत्येक के १००० नहीं कम से कम दस दस हज़ार प्रतियां छाप कर गावों में विना मूल्य बांटी जावें और भारत माता के सपूत धनाढ्य लोग अभागे ग्रामीणों को सावधान करने के लिये अपनी थैलियाँ खोल कर ऐसी पुस्तकें प्रकाशित करवावें और इस लोक में यश और परलोक में पुण्य के भागी बने। जो लोग धनी नहीं हैं उनको छः ही आने पैसे लगा कर इस पुस्तक की एक एक प्रति मंगवा कर पढ़नी और अपने परिचित शिक्षित अशिक्षित स्त्री पुरुषों को पढ़कर सुनानी चाहिए। इस पुस्तक की अभी १००० प्रतियां छपी हैं। परन्तु इस

का विषय ऐसा मर्मभेदी है, इसकी कथाएं ऐसे अच्छे ढंग से लिखी गयीं हैं, कि हमको आशा है कि पहले संस्करण की सब प्रतियां झटपट निकल जायंगी। हिन्दू, मुसलमान,—भारतवासी मात्र को यह पुस्तक पढ़नी चाहिए। उत्साह मिलेगा, पुस्तक छपवाने का खर्च मिल सकेगा तो ग्रन्थकार टापुओं की ओर भी कथाएं प्रचार कर सकेंगे।

——:०:——

# सम्मेलन की वर्तमान स्थयीसमिति का चौथा अधिवेशन

स्थायीसमिति का चौथा अधिवेशन सम्मेलन-कार्य्यालय में मि० श्रावण शु० २, सं० १९७२ ता० १२ अगस्त सन् १९१५ को संध्या समय ५ बजे हुआ, जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे।

१ श्रीयुत पं० श्रीकृष्ण जी जोशी।
२ ,, पं० रामजीलाल शर्म्मा।
३ ,, पं० द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी।
४ ,, पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी।
५ ,, पं० लक्ष्मीनारायण नागर।
६ ,, बाबू भगवानदास हालना।
७ ,, प्रो० ब्रजराज बहादुर।
८ ,, पं० चन्द्रशेखर शास्त्री।
९ ,, पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल।
१० ,, बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन।

सर्व सम्मति से श्रीयुत पं० श्रीकृष्ण जोशी जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया। निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किया गया और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

(१) इस समिति के सदस्य, हिन्दी-साहित्य के स्तम्भ और देश के सेवकों में अग्रगण्य स्वर्गवासी राय देवीप्रसाद जी पूर्ण की असामयिक मृत्यु से हिन्दी-भाषा और देश की जो हानि हुई है उस पर यह समिति अत्यन्त शोक प्रकाश करती है और उनके दुःखी कुटुम्बियों के साथ समवेदना प्रकट करती है।

निम्नलिखित दूसरा प्रस्ताव उपस्थित किया गया और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

(२) हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक और सम्पादक स्वर्गवासी पं०

तुलसीराम स्वामी की असामयिक मृत्यु पर यह समिति अत्यन्त शोक और उनके कुटुम्बियों के साथ समवेदना प्रकट करती है।

( ३ ) निश्चय हुआ कि प्रथम मन्तव्य की एक प्रति रायदेवीप्रसाद पूर्ण के कुटुम्बियों के पास और द्वितीय मन्तव्य की एक प्रति पं० तुलसीराम स्वामी के कुटुम्बियों के पास भेजी जाय।

( ४ ) गत अधिवेशन का कार्य्य विवरण पढ़ कर सुनाया गया और स्वीकृत हुआ।

( ५ ) सहायकमंत्री ने निम्नलिखित आयव्यय का हिसाब उपस्थित किया, आयव्यय के निरीक्षक ने मि० मार्गशीर्ष शु० ६ सं० १९७१ ता० २३ नवम्बर सन् १९१४ ई० से मिती ज्येष्ठ कृष्ण ३ सं० १९७२ ता० ३१ मई सन् १९१५ ई० तक का हिसाब जांचा था, वह सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

व्यय का चिट्ठा

| आय | | व्यय | |
|---|---|---|---|
| ४७६०।-)१/२ | पिछली बचत | ५२१-)॥ | कार्यालय ख़र्च |
| १४५६।=) | हिन्दी पैसा फण्ड | ३१६॥) | हिन्दी लेखकों का वेतन |
| १५) | सम्बद्ध सभाओं का शुल्क | २६॥-)॥ | काग़ज़ छपाई |
| १३।=) | वकालतनामा की बिक्री | ३३॥-)॥ | स्टाम्प तार |
| ४७) | सम्मेलन की रिपोर्ट की बिक्री | ३॥=) | फुटकल ख़र्च |
| ११।-)।१ | व्याज | २४=)॥ | स्टेशनरी (सामान) |
| ५॥)॥ | बा० राधामोहन गोकुल जी की पुस्तकों की बिक्री | ३५) | सौअजान और एक सुजान की छपाई |
| १२) | रामप्रकाश ओझा से वापस मिला | १६४॥)। | सम्मेलन पत्रिका |
| ४५) | हिन्दी के संदेश की बिक्री | ॥=)। | पुस्तकालय |
| ४६७।-)॥ | परीक्षासमिति के शुल्क आदि से | ११२६॥-)॥ | |
| =) | अनिरुद्धसिंह | ५७३४॥=)।१ | बाक़ी |
| ॥)॥ | सामान | ३५८८॥=) | फिक्सड डिपाजिट |
| | | १४७६।=)॥ | सेविङ्ग बेङ्क खाता |
| | | ५०४-)॥१/२ | चलताखाता में |
| | | १६२।=) | बचत नगदी |
| ६८६४॥-)१ | | ६८६४॥-)१ | |

(६-क) प्रोफ़िशियन्सी-परीक्षाओं की उप-समिति-द्वारा उपस्थित इस मसविदे पर विचार हुआ जो उसने संयुक्त-प्रान्त की गवर्नमेंट के पास भेजने के लिए तैयार किया था सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि मसविदा बहुत योग्यता से बनाया गया है। उसके लिए समिति उपसमिति के सदस्यों को धन्यवाद देती है किन्तु समिति के विचार में इसप्रकार से मसविदे में परिवर्तन होना आवश्यक है कि परीक्षाएं केवल सरकारी और Recognized और aided स्कूलों के अध्यापकों के लिए रहें और केवल पारितोषिक देने के हेतु ली जांय पारितोषिक के साथ प्रमाण पत्र भी दिया जाय। इस प्रकार परिवर्तन कर उपसमिति फिर मसविदे को आगामी स्थायीसमिति में उपस्थित करे।

(ख) उपसमिति के सदस्यों में जो एक स्थान रायदेवीप्रसाद जी पूर्ण के स्वर्गवास होने के कारण रिक्त हुआ है उस स्थान पर निश्चय हुआ कि पं० श्रीकृष्ण जोशी नियत किये जांय।

(७) परीक्षासमिति के इस प्रस्ताव पर कि अब जो सहायक-मंत्री रक्खा जाय वह ऐसी योग्यता रखता हो कि परीक्षा-समिति के संयोजक का भी काम कर सके निश्चय हुआ कि जहां तक सम्भव हो जो सहायकमंत्री रक्खा जाय ऐसा हो जो संयोजक को सहायता दे सके।

(८) परीक्षासमिति के नियमों के परिवर्तन के प्रस्ताव पर विचार हुआ:—सर्व सम्मति सेनिश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव स्थायीसमिति की अगली बैठक में फिर रक्खा जाय, क्योंकि परीक्षा-समिति के नियम १९ (अ) के अनुसार इस बैठक में आधे सदस्यों की सम्मति परिवर्तन के पक्ष में (तथा विपक्ष में) अभी तक नहीं आयी है।

(९) आगामी सम्मेलन का क्या प्रबन्ध हो इस विषय पर विचार हुआ। प्रधानमंत्री जी ने जबलपुर और खंडवा के आये हुए तार जिनमें आगामी सम्मेलन को निमंत्रित किया गया है उपस्थित किया, साथही लाहौर के पं० यज्ञदत्त जी का तार भी उपस्थित किया, जिसमें उन्होंने यह सूचना दी है कि लाहौर में स्वागतकारिणी सभा संगठित हो गयी है। लाहौर

के श्रीयुत रोशनलाल जी का पत्र भी उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने यह कहा है कि लाहौर वालों की इच्छा सम्मेलन लाहौर में करने की है।

निश्चय हुआ कि यह समिति मध्यप्रदेश के सज्जनों को उनके उत्साह और निमंत्रण के लिए बहुत धन्यवाद देती है किन्तु समिति के विचार में उचित यही होगा कि जहां तक सम्भव हो लाहौर में ही आगामी सम्मेलन करने का यत्न किया जाय।

(१०) प्रान्तीय हिन्दी सभा गोरखपुर का पत्र सम्मेलन से सम्बन्ध कराने के विषय में उपस्थित किया गया।

निश्चय हुआ कि सभा का सम्बन्ध सम्मेलन से किया जाय।

(११) सर्वसम्मति से राय देवीप्रसाद जी पूर्ण के स्थान पर पं० वेंकटेशनारायण त्रिपाठी स्थायीसमिति के सदस्य नियुक्त किये गये।

(१२) सहायकमंत्री के पद के लिए आये हुए प्रार्थना पत्रों पर विचार हुआ और सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि सहायकमंत्री की नियुक्ति के लिए प्रधानमंत्री जी को अधिकार दिया जाय कि योग्य पुरुष को सहायकमंत्री के पद पर नियुक्त करलें।

(१३) प्रधानमंत्री जी के प्रस्ताव पर सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि मंत्री का जो एक स्थान रिक्त है उसके लिए श्रीयुत पं० कृष्णनारायण राव लँघाटे वकील हाईकोर्ट से प्रार्थना की जाय कि वर्तमान वर्ष के लिए वे मंत्री का पद स्वीकार करें। (लँघाटेजी ने मन्त्री का पद स्वीकार कर लिया है)।

(१४) सभापति को धन्यवाद देकर बैठक समाप्त हुई।

——:o:——

## परीक्षा-समिति का तीसरा अधिवेशन।

परीक्षासमिति का तीसरा साधारण-अधिवेशन संयोजक की सूचनानुसार मि० आषाढ़ कृष्ण १४ सं० १९७२ को संध्यासमय ४ बजे से सम्मेलन कार्यालय में हुआ जिसमें निम्नलिखित सज्जन उपस्थित थे :—

श्रीयुत पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी।
श्रीयुत पं० रामजी लाल शर्म्मा।
श्रीयुत बा० रामदास गौड़।

श्रीयुत बा० व्रजराज संयोजक।
कार्यवाही का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:—

प्रथमा तथा मध्यमा परीक्षाओं के प्रश्नपत्रों पर विचार तथा उनका यथोचित संशोधन किया गया। प्रोफेसर पं० रामावतार शर्मा साहित्याचार्य जी ने मध्यमा के लिए इतिहासविषय का प्रश्नपत्र बहुत विलम्ब से भेजा इस कारण उनके प्रश्नपत्र आने के प्रथम ही उक्त विषय का प्रश्नपत्र संयोजक जी ने विशेष प्रार्थना द्वारा प्रो० रामदास गौड़ से बनवालिया था अतएव परीक्षा में साहित्याचार्य जी का प्रश्नपत्र नहीं रक्खा जा सका और गौड़ जी का ही प्रश्नपत्र रक्खा गया।

सं० १९७३ की प्रथमा और मध्यमा परीक्षाओं के लिए परीक्षकों की नियुक्ति पर विचार हुआ और निश्चय हुआ कि जो लोग इस सं० १९७२ की परीक्षाओं में परीक्षक हैं उन्हीं को पत्र लिख कर संयोजक पूछें, यदि वे परीक्षक होना स्वीकार करें तो संयोजक उन्हीं से प्रश्न पत्र बनाने के लिये प्रार्थना करें, यदि उनमें से कोई महाशय परीक्षक होना स्वीकार न करें तो संयोजक जी उनके स्थान पर उस विषय के परीक्षकों की वैकल्पिक नामावली में से किसी योग्य पुरुष को नियत करलें। उत्तमापरीक्षा के लिए कोई परीक्षक नहीं चुने गये और यह निश्चय हुआ कि जिस समय उत्तमा के परीक्षार्थियों के लेख आवेंगे उस समय लेख के विषयानुसार उत्तमा के लिए परीक्षक नियत कर लिये जावेंगे क्योंकि अभी कोई आवश्यकता नहीं है।

श्रीयुत पं० शुकदेव विहारी मिश्र के पत्र पर विचार किया गया और तदनुसार कुछ उपनियमों में परिवर्तन भी किये गये जिसका विवरण संशोधित विवरणपत्रिका में दिया जायगा।

श्रीयुत बाबू गोकुलप्रसाद वर्मा जी के पत्र पर विचार करके निश्चय हुआ कि परीक्षासमिति प्रत्येक प्रान्त में जहां आवश्यकता हो परीक्षाकेन्द्र बनाने के लिए उद्यत है परन्तु नियमानुसार केन्द्र ऐसे स्थान पर बनाया जायगा जहां यथेष्ट संख्या में परीक्षार्थी हों और परीक्षाओं का यथोचित प्रबन्ध हो सके।

निश्चय हुआ कि सम्मेलन की स्थायी-समिति से प्रार्थना की जाय कि अब से जो वैतनिक सहायक-मन्त्री सम्मेलन के लिए रक्खा

जाय वह इतना योग्य हो कि परीक्षासमिति के संयोजक का भी काम कर सके।

निश्चय हुआ कि समिति संयोजक जी को अधिकार देती है कि बार्हस्पत्य-रचित 'अक्षरलीला' नाम की लेखमाला को वे पुस्तकाकार छपवा लें।

विवरणपत्रिका के लिए निश्चय हुआ कि संयोजक जी संशोधित विवर-णपत्रिका छपवा लें और उसका मूल्य ।) रक्खें। इस वार की विवरण-पत्रिका में निम्न लिखित विषय रहेंगे।

(१) डेढ़ वर्ष का पञ्चाङ्ग ( श्रावण से लेकर अगले वर्ष के माघ तक )

(२) समिति की नियमावली।

(३) ,, ,, उपनियमावली।

(४) गत वर्षों के प्रश्नपत्र।

(५) गत वर्षों के उत्तीर्ण विद्यार्थियों की नामावली।

(६) गत वर्षों के संयोजक की रिपोर्ट।

(७) संवत् १९७३, १९७४ और १९७५ की परीक्षाओं के विषय और पाठ्यग्रन्थों का विवरण।

(८) परीक्षासमिति के वर्गियों की नामावली।

सर्वसम्मति से संवत् १९७२ की परीक्षाओं के लिए श्रीगोपालनारायण सेन बी० ए० गणक नियत किये गये।

उपनियमों का संशोधन इस प्रकार किया गयाः—

(१) उपनियम ३ में 'आवश्यकता हो तो' के बाद से 'अपने और किसी एक सदस्य के हस्ताक्षर' तक निकाल दिया जाय।

(२) उपनियम ५ में '-) में मिल सकेगी' की जगह '।) में मिल सके'।

(३) उपनियम ८ में 'उत्तमापरीक्षा में........प्राप्त करने होंगे' यह पूरा पूरा निकाल दिया जाय।

(४) उपनियम १० में 'प्रत्येक प्रश्नपत्र प्रायः १०० अङ्कों का होगा और प्रत्येक' इतना अंश प्रारम्भही में और जोड़ दिया जाय।

(५) उपनियम १९ ( क ) में 'तीन सप्ताह' के स्थान में 'छः सप्ताह' कर दिया जाय।

(६) उपनियम १९ (ख) में 'उसका फल' और 'गणक' के बीच में '२१ दिन के भीतर' इतना और जोड़ दिया जाय।

(७) उपनियम २० (ञ) के अन्त में 'और सूचना संयोजक को देना' इतना अंश और जोड़ दिया जाय।

(८) उपनियम २१ (ङ) में 'चिन्ह' के आगे 'तथा हस्ताक्षर' इतना और बढ़ा दिया जाय।

(९) उपनियम २२ (च) में '४ मास' के स्थान पर 'दो मास' कर दिया जाय।

निम्न लिखित उपनियम नवीन बनाये गये:—

२७—परीक्षासमिति को अधिकार होगा कि पहले से नियत किये हुए विषयों और पाठ्यग्रन्थों में परीक्षातिथि से कम से कम छः मास पहले यदि आवश्यकता हो तो हेर फेर करसके और उसकी सूचना परीक्षार्थियों के लिए समाचार-पत्रों तथा सम्मेलन-पत्रिका में प्रकाश कर दे।

२८—परीक्षार्थियों के शुल्क की रसीदें तथा उत्तीर्ण होने पर प्रमाणपत्र व उपाधिपत्र बैरङ्ग पोष्ट द्वारा भेजे जांयगे।

२९—परीक्षार्थियों के लिए केन्द्र तथा परीक्षा के विषय का परिवर्तन यदि परीक्षार्थी चाहें तो शुल्क-प्राप्ति की नियत तिथि से ३० दिन के भीतर ही आवेदनपत्र आने पर हो सकेगा। अधिक समय बीत जाने पर कोई परिवर्तन न हो सकेगा।

३०—इस नियम में उत्तमा परीक्षा विषयक प्रस्ताव परीक्षा-समिति का रहेगा (?)

निश्चय हुआ कि मध्यमा-परीक्षा के वैकल्पिक विषयों में वैद्यक भी समिलित किया जाय और अङ्गरेज़ी एवं संस्कृत से अनुवाद ये दोनों विषय वैकल्पिक विषयकी सूची में से निकाल दिये जाय (?)

प्रथमा तथा मध्यमा परीक्षाओं के लिए पाठ्यग्रन्थों में परिवर्तन किया गया ( जो संशोधित विवरणपत्रिका में छपेगा ) और उत्तमा-परीक्षा के प्रत्येक विषय के लिए विवरण बनाया गया। इति

——:०:——

# परीक्षासमिति का चतुर्थ अधिवेशन ।

संयोजक जी की सूचनानुसार परीक्षासमिति का चतुर्थ साधारण अधिवेशन मि० श्रावण शुक्ल २ सं० १९७२ (१२। ८। १५) को सन्ध्या समय ४ बजेसे सम्मेलन-कार्यालय में प्रारम्भ हुआ। जिसमें निम्नलिखित सज्जन उपस्थित थे :—

(१) बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन।
(२) ठाकुर शिवकुमार सिंह।
(३) पं० रामजीलाल शर्मा।
(४) प्रो० व्रजराजबहादुर संयोजक।
(५) पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी।

संयोजक जी ने सूचना दी 'कि बहुत से ऐसे पत्र आये हैं जिन में उन परीक्षार्थियों की ओर से प्रार्थना की गयी है जो इस वर्ष की परीक्षा का शुल्क देकर भी परीक्षा में सम्मिलित नहीं हुए हैं 'उनका शुल्क लौटा दिया जावे अथवा उनको उसी शुल्क के द्वारा सं० १९७३ की परीक्षा में बैठने का अधिकार दिया जावे'। साथ ही संयोजक जी ने यह भी बतलाया कि उन परीक्षार्थियों के परीक्षा के सम्बन्ध में समिति को जो जो व्यय करने आवश्यक थे सब किये जा चुके हैं तथा परीक्षक अवैतनिक होते हैं अतएव यदि परीक्षासमिति परीक्षार्थियों की उपर्युक्त प्रार्थना स्वीकार करेगी तो परीक्षासमिति की बहुत बड़ी आर्थिक हानि होगी (परीक्षासमिति के उपनियम १३ के अनुसार शुल्क वापस नहीं दिया जा सकता) अतएव सर्वसम्मति से यह निश्चय हुआ कि परीक्षार्थियों का शुल्क लौटाया न जाय और न इस शुल्क के बदले में उनको सं० १९७३ की परीक्षा में बैठने का अधिकार दिया जावे। क्योंकि उन परीक्षार्थियों की परीक्षा के सम्बन्ध में समिति को जो कुछ खर्च करना था सो वह कर चुकी है अब दोबारा नहीं कर सकती।

संयोजक जी ने समिति के गत अधिवेशन का कार्य विवरण सुनाया पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी ने उसमें त्रुटि बतलायी कि मध्यमा के परीक्षा-विषयों में से संस्कृत तथा अङ्गरेज़ी से अनुवाद ये दोनों विषय निकाले नहीं गये थे' निश्चय हुआ कि यह कार्य-विवरण

परीक्षासमिति के आगामी अधिवेशन में स्वीकृति के लिये पुनः उपस्थित किया जाय।

बाबू पुरुषोत्तमदासजी टण्डन के प्रस्ताव पर सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि मध्यमा के परीक्षा-विषयों में संस्कृत और अङ्गरेजी से अनुवाद ये दोनों विषय पूर्ववत् सम्मिलित किये जांय। इति

——:o:——

# परीक्षासमिति और प्रतिज्ञात पदक

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ( लखनऊ ) के पञ्चम वार्षिक-अधिवेशन के समय ता० २६ दिशम्बर सन् १९१४ ई० को जिन सज्जनों ने परीक्षासमिति के परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थियों को प्रथमा एवं मध्यमा परीक्षा के सम्बन्ध में पदक या दान देने की प्रतिज्ञा की थी उनकी नामावली नीचे दी जाती है। इस वर्ष की परीक्षा हो गयी और आशानुरूप अधिक संख्या में यद्यपि विद्यार्थी परीक्षा में सम्मिलित नहीं हो सके तथापि गत वर्ष की अपेक्षा कई गुनी अधिक सङ्ख्या होने से परीक्षा-समिति की सर्वप्रियता पर विश्वास होता है। परीक्षा का फल भी बहुत शीघ्र प्रकाशित होने वाला है। हम आशा और प्रार्थना करते हैं कि जिन सज्जनों ने परीक्षासमिति के सम्बन्धमें पदक या जो कुछ दान देने की प्रतिज्ञा की है वे शीघ्र ही सम्मेलन कार्यालय में भेज दें अथवा भेज देने की सूचना दे दें जिसमें पत्रिका की अगली संख्या में हम परीक्षा फल के साथ साथ दाता महाशयों की दान शीलता का भी उल्लेख कर सकें।

प्रतिज्ञा करने वाले सज्जनों की नामावली और प्रतिज्ञात दान

[१] पं० गोकुलचन्द्रशर्मा, धर्मसमाज, हाईस्कूल—अलीगढ़ (रजत-पदक)

[२] जागेश्वरप्रसाद नन्दे, हिन्दी-साहित्य-रत्नाकरकार्यालय मुजफ्फ़रपुर [रजतपदक]

[३] पं० हीरानन्द शास्त्री, [रजतपदक]।

[४] पं० सुमेरूचन्द्र शर्मा सनाढ्य, महमदपुर पो० सन्डीला ज़ि० हरदोई [ रजतपदक ]

[५] पं० रामसेवक पाण्डेय मन्त्री श्रीसनातनधर्म-सभा, वहरायच [रजतपदक]

[६] हिन्दी-प्रवर्द्धिनी सभा. शाहजहांपुर [रजतपदक]

[७] पं० बदरीनाथशर्मा वैद्य, मिरज़ापुर,।( ५) मू० की हिन्दी की पुस्तकें )

[८] पं० रामप्रसाद जी मिश्र सम्पादक जीवन, कानपुर, [रजत-पदक—प्रतिवर्ष]

[९] पुरुषोत्तम जी; मैनेजर तिरहुत पुस्तक भण्डार, मुजफ्फ़रपुर, [रजतपदक]

[१०] पं० शिवविहारीलाल जी बाजपेयी, लखनऊ, [रजतपदक]

[११] पं० लालमणिजी वैद्य, झींझक, [स्वर्णपदक]

[१२] दयाचन्द्रजी जैन बी० ए० कालीचरण, हाईस्कूल लखनऊ, [रजतपदक]

[१३] पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी, बुद्धिपुरी, जि० प्रयाग, [१० विद्या-र्थियों का शुल्क]

[१४] पं० रामाधार बाजपेयी, कोटवा, जिला प्रयाग [५) नगद]

[१५] ठाकुर युगलसिंह, बीकानेर, सूरसागरतालाव, [रजतपदक]

[१६] श्यामवती देवी, [रजतपदक—प्रतिवर्ष]

[१७] पं० रामेश्वर त्रिवेदी, कालविन तालुकदार स्कूल, लखनऊ, [मध्यमा के कोर्स की सब पुस्तकें]

[१८] पं० शिवबीहारीलाल जी बाजपेयी प्रोप्राइटर, अवधवासी लखनऊ [स्वर्णपदक] दोबारा।

[१९] बाबू मुरलीधर जी टण्डन, चौक लखनऊ. [स्वर्णपदक]

[२०] पं० रामचन्द्र शुक्ल, फोर्थइयर कैनिङ्ग-कालिज़ लखनऊ, [७) मू० की पुस्तकें]

[२१] नीलकण्ठ द्वारकाप्रसाद अध्यक्ष भारतभूषण प्रेस, फतेहगञ्ज, लखनऊ ( तत्वबोधिनीटीका—सहित सिद्धान्तकौमुदी तथा साहित्यदर्पण )

[२२] हकीम वर्मा, मथुरा, [रजतपदक]

[२३] श्रीनारायण मिश्र, हेडक्लर्क एक्ज्यूक्यू इञ्जीनियर आफिस शाहजहांपुर।

[२४] हिन्दी ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय, गिरगांव बम्बई (१०) की पुस्तकें)
[२५] बाबू लक्ष्मणप्रसाद श्रीवास्तव, [रजतपदक]
[२६] बा० गङ्गाप्रसाद गुप्त [रजतपदक]
[२७] पं० शिवरत्न शुक्ल बछरावी [कुछ पुस्तकें]
[२८] पं०प्यारेलाल गौड़, मैनेजर नारायणसमिति और गौड़हितकारी [११) की पुस्तकें]
[२९] कन्हैयालाल माहौर, मंत्री माहौरवैश्यसभा, तिलहर [५) नगद]
[३०] मनीराम कपूर, कानपुर [रजतपदक]
[३१] ओङ्कारबक्स वैद्य, रियासत राजगढ़ सी०आई० ए० [रजतपदक]
[३२] केदारनाथ, धेनुगांव वेलवा—बस्ती ( १०) मू० की पुस्तकें)
[३३] पं० शिवदयालु द्विवेदी, सीतापुर ( रजतपदक )
[३४] भाग्यवती स्त्री पं० रामाधीन ति० कोइला व्यवसायी, बादशाही-नाका कानपुर, (चांदी की एक कटोरी)
[३५] व्रजनन्दनसहाय मन्त्री नागरीप्रचारणी सभा, आरा, (सभा की ओर से प्रकाशित सभी पुस्तकों की एक एक प्रति)
[३६] पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, दारागंज प्रयाग, (रजतपदक)
[३७] बा० गोकुलानन्दप्रसाद वर्मा, सम्पादक आत्मविद्या आदि, बांकीपुर ( रजतपदक )
[३८] हिन्दी-साहित्यसभा, लश्कर, गवालियर (रजतपदक)
[३९] बा० सरयूप्रसाद महाजन, गया, (रजतपदक)
[४०] पं० रमाबाई अध्यापिका, नजीराबाद, (रजतपदक)
[४१] पं० रामेश्वरप्रसाद शर्मा, सहकारीमंत्री सरस्वती (रजतपदक)
[४२] पं० नर्मदाशङ्कर शुक्ल, बावड़िया नीमाड़, मध्यप्रान्त (रजतपदक)
[४३] पं० जगन्नाथदास विशारद, भरतपुर, (रजतपदक)
[४४] श्रीमती रामप्यारी देवी, मुख्याध्यापिका, (रजतपदक)
[४५] सेठ वंशीधर, बुलन्दशहर, (५) नगद)
[४६] पं० रामजीलाल शर्मा, प्रयाग, (विद्यार्थी का चित्र और परिचय अपने पत्र—विद्यार्थी में छाप देंगे)
[४७] चतुर्वेदी पं० जगन्नाथ प्रसाद जी, (सुवर्णपदक)
[४८] पं० हीरानन्द जी, (रजतपदक)

[४६] पं० ओंकारनाथ वाजपेयी, प्रयाग (रजतपदक)
[५०] पं० श्रीनारायण मिश्र, गणेशगंज लखनऊ, (सुवर्णपदक)
[५१] पं० रघुवरदयालु जी डिप्टीकलेक्टर, नरही लखनऊ, (रजत-पदक)
[५२] पं० नन्दकिशोर फुरसवा, कानपुर, (रजतपदक)
[५३] स्वा० ब्लाकटानन्द, आगरा, (१ स्वर्णपदक और १ रजतपदक) ये मर गये

ऊपर की नामावली यद्यपि बहुत जांच के साथ लिखी गयी है तथापि सम्भव है कि किसी नाम या पता में भ्रम हो क्योंकि प्रतिज्ञा पत्र जो प्रायः पेनसिल के लिखे हुए थे उनमें कहीं कहीं शब्दों के पढ़ने में निश्चय नहीं होता था इस लिए प्रार्थना है कि यदि किसी महाशय के नाम या पता में कुछ त्रुटि हो तो मुझे सूचित करदें, अगली संख्या में उसका संशोधन कर दिया जायगा।

प्रायः अधिकांश प्रतिज्ञाओं में कुछ न कुछ शर्त लगी हुई हैं इससे यह तो हम नहीं कह सकते कि वे प्रतिज्ञात रुपया अथवा वस्तु सम्मेलन में अवश्यही भेजदें किन्तु इतना हम अवश्य जानना चाहते हैं कि प्रतिज्ञाता अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार पदक, रुपया अथवा पुस्तक आदि प्रतिज्ञात वस्तु देने के लिए तैयार हैं जिस में उनकी शर्तके अनुसार निश्चय करके उनको सूचना दी जा सके।

——:o:——

## सूचना ।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन,
प्रयाग।
मि० भाद्रपद्र कृ० १, १९७२

महाशय,

रविवार मि० कार्तिक कृ० २, १९७२ ता० २४-१०-'१५को हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायीसमिति की एक बैठक होगी । नियमावली के नियम २९ वें के अनुसार आगामि सम्मेलन के सभापति के आसन के लिये ५ उपयुक्त सज्जनों की सूची बनायी जायगी । आपसे निवेदन है कि कृपाकर अपनी सम्मति के अनुसार ५ सज्जनों की सूची भेज दें।

सहायकमंत्री

# सम्पादकीय-विचार

## सम्मेलन

इस वर्ष सम्मेलन का छठवां अधिवेशन लाहौर में होगा। गत अङ्क में एक संयुक्तप्रान्तीय सदस्य का इसी सम्बन्ध में पत्र छपा था। यद्यपि समय बहुत पिछड़ गया है और लाहौर के निमन्त्रणदाताओं का कर्तव्य था कि वे २३ वें नियम के अनुसार अब से बहुत पहले स्वागतकारिणीसभा का सङ्गठन करलेते, तथापि लाहौर की वर्तमान स्थिति पर ध्यान देने से इस समय भी स्वागत-कारिणी-सभा का बन जाना कुछ अधिक असावधानी का काम नहीं कहा जा सकता।

## सम्मेलन का समय और सभापति

सम्मेलन के अधिवेशन के लिए शीघ्र ही समय का निश्चय करना आवश्यक है और इस विषय में हम भारत-मित्र के मत से पूर्णतः सहमत हैं कि अधिकसम्मति पर काम करना चाहिये। अभी तक लोगों को इसीमें सन्देह था कि सम्मेलन का छठवां अधिवेशन इसी वर्ष लाहौर में होगा, किन्तु अब स्वागतकारिणी-सभा बन गयी है तो अधिवेशन के समय पर विचार करने का अवसर देना ही होगा। अभी तक कोई लेखमाला की सूची भी नहीं तैयार हुई है, उसके तैयार होने पर योग्य लेखकों को निबन्ध लिखने के लिए भी कुछ समय की आवश्यकता होगी, इस लिए समय की न्यूनता में ये सब काम अधूरे रह जाँयगे। सभापति के सम्बन्ध में स्थायी-समिति की सूचना आप अन्यत्र पढ़ेंगे जो इसी अङ्क में प्रकाश की गयी है। आशा है कि सम्मति-दातागण अपनी अपनी सम्मति से शीघ्र ही इन कार्यों को निपटा लेगें।

## सम्मेलन के कार्य

सम्मेलन के कार्यों को अग्रसर करने के लिए यद्यपि समय समय पर अनेक समितियां बनायी गयीं हैं, उनके द्वारा कुछ कार्य भी हुआ है, तथापि जैसा होना चाहिये था वैसा कार्य हुआ नहीं, क्योंकि अब तक नीचे लिखी ११ समितियां बनायी जा चुकी हैं:—

(१) वर्णविचारसमिति (इसका सङ्गठन दो बार हुआ है)।
(२) लिङ्गविचार-समिति।

( ३ ) आलोचक-समिति ।
( ४ ) नियमसंशोधिनी-समिति ।
( ५ ) परीक्षासमिति ।
( ६ ) परीक्षानियम के निर्माण करनेवाली समिति ।
( ७ ) राजकार्योपयोगी हिन्दीशब्द निर्माण करने वाली समिति ।
( ८ ) लिटररी ईयरबुक-समिति ।
( ९ ) हिन्दीप्रचारार्थ प्रतिनिधि-वर्ग-समिति ।
(१०) हिन्दीपरीक्षा-क्रमनिर्धारिणी-समिति ।
(११) अरायजनवासी की शिक्षा देनेवाली समिति ।

आप देखेंगे कि इनमें कई एक समितियां ऐसी हैं कि जिनका जन्ममात्र हुआ है; जहां तक मुझे ज्ञात है कार्यक्षेत्रमें वे उतरीही नहीं। हम समितियों के संयोजक महाशयों से प्रार्थना करते हैं कि वे कृपा करके अपनी अपनी रिपोर्ट हमारे पास भेजदें जिसमें अगली संख्या में हम उनको कृतज्ञता-पूर्वक प्रकाश करदें और हिन्दी संसार देखे कि आप लोग हिन्दी-साहित्य की कैसी सेवा कर रहे हैं। जिन महानुभावों ने किसी कारणविशेष से अब तक कार्य का प्रारम्भ नहीं किया है उनको चाहिये कि अगले अधिवेशन तक वे अपना कार्य कम से कम इतना करलें कि सम्मेलन में उनके कार्यों की रिपोर्टें दी जा सकें। जिन समितियों ने अपनी रिपोर्टें सम्मेलन को भेज दीं हैं उनके सम्बन्ध में स्थायीसमिति को अपने विचार निश्चय करके प्रकाश कर देने चाहियें, जिसमें वास्तविक कार्यों में विलम्ब न हो। इनमें कुछ समितियाँ ऐसी भी हैं जिनको निरन्तर कार्य करना है—जैसे परीक्षासमिति, आलोचकसमिति, प्रतिनिधिवर्गसमिति और अरायजनवासी की शिक्षा देनेवाली समिति; किन्तु इनमें परीक्षासमिति के अतिरिक्त अन्यसमितियों के वास्तविक कार्य अभी तक दृष्टिगोचर नहीं हुए हैं।

नवीं समिति के बन जाने ही पर इस वर्ष सम्मेलन ने उपदेशक रखने की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया। यह सत्य है कि उपदेशक के अन्वेषण की ओर स्थायी समिति का ध्यान बराबर बना रहा, किन्तु कोई योग्य उपदेशक की प्राप्तिही नहीं हुई, फिर भी इस ओर अधिक ध्यान नहीं दिया गया। गत वर्ष स्वा० सत्यदेव जी के द्वारा जो प्रचार का कार्य हुआ था सो पाठकों से छिपा नहीं है। इस वर्ष भी प्रधान मन्त्री द्वारा प्रचार के कुछ कार्य हुए हैं, किन्तु जैसा होना चाहिये था वैसा प्रचार नहीं हो सका। सारांश यह कि

उपदेशक के अभाव से हमें प्रचार का समाचार सुनाने का सौभाग्यही नहीं प्राप्त हुआ। हम आशा करते हैं कि अब इस समिति के संयोजक बाबू भगवानदास जी हालना इस ओर ध्यान देंगे और सम्मेलन के अधिवेशन तक बहुत कुछ प्रचार का कार्य्य कर लेंगे।

## परीक्षा-समिति

इस समिति का कार्य उत्तमता से चल रहा है। यह अपने कार्यों से अपने को लोकप्रिय बनाने में अधिक सफल हुई है। गतवर्ष की प्रथमापरीक्षा में केवल २८ परीक्षार्थियों ने प्रार्थनापत्र और शुल्क भेजे थे और इस वर्ष प्रथमा में १६५ और मध्यमा में ४४ विद्यार्थियों ने प्रार्थनापत्र और शुल्क भेजे हैं। इस आशातीत उन्नति को देख कर समिति के कार्यों से यद्यपि सन्तोष होता है तथापि हमें यह समाचार सुन कर खेद हुआ है कि इन २०९ प्रार्थियों में से केवल ८८ परीक्षार्थी परीक्षा में बैठ सके हैं। १२१ परीक्षार्थियों की कमी का कारण अभीतक ठीक २ ज्ञात नहीं हुआ। यद्यपि व्यवस्थापकों की सूचना से हमें अभी तक यह विदित नहीं हुआ है कि कितने परीक्षार्थी इस वर्ष की परीक्षाओं में सम्मिलित हुए हैं, तथापि यह समाचार सत्य है कि मध्यमा में १५ और प्रथमा में ७३ परीक्षार्थी बैठे हैं। अवश्यही परीक्षासमिति को इस शोचनीय न्यूनता के कारण का पता लगाना चाहिये। इस वर्ष की परीक्षा का विशेष वृत्तान्त अगली संख्या में विशेष रूप से दिया जायगा।

## अभ्युदय

हमें अभी समाचार मिला है कि अभ्युदय कार्यालय को तार द्वारा सूचना मिली है कि हमारे संयुक्त प्रान्त की सरकार ने जो अभ्युदय के अध्यक्ष मा० मालवीयजी को २५००) की जमानत की नोटिस दी थी वह मामला तै होगया। हमारे विचारशील सर जेम्स मेष्टन साहब की सरकार ने अपनी नोटिसवापस लेली और मा० मालवीयजी की ही अध्यक्षता में अब अभ्युदय पुनः निकलेगा। इसके लिए हम अपनी संयुक्त-प्रान्तकी सरकार और मा० मालवीयजी को बधाई देते हैं। अवश्य ही हमारी सरकार की यह उदार-नीति अन्य प्रान्त कीसरकारों के लिए अनुकरणीय होनी चाहिये।

## प्राप्तिस्वीकार और सम्मेलन

अब तक सम्मेलन में उदार-दाताओं ने इतनी अधिक पुस्तकें भेजी हैं कि जिनकी प्राप्ति-स्वीकृत करें तो उसमें हमारे कई फार्म लगजायँ, इस कारण हम अधिक संख्या में प्रति अङ्क में प्राप्ति स्वीकार करने का निश्चय करते हैं और आशा है कि आगामी सम्मेलन तक हम सभी पुस्तकों का प्राप्ति स्वीकार कर सकेंगे। समालोच्य पुस्तकों की समालोचना के देने काभी प्रबन्ध कर दिया गया है और अबसे प्रत्येक अङ्कमें समालोचना निकला करेगी।

## पुस्तकों की प्राप्तिस्वीकृति ।

[ पूर्वप्रकाशित से आगे ]

| | पुस्तक का नाम | लेखक | नाम पुस्तकदाता | मूल्य |
|---|---|---|---|---|
| २७३ | बनारस का इतिहास | रामचन्द्र वर्मा | बाबू बालमुकुन्द वर्मा काशी | -) |
| २७४ | आदर्शहिन्दूरमणी | लाला भगवानदीन | " | =) |
| २७५ | श्रीशास्त्री जी के दो व्याख्यान | श्रीस्वामी राममिश्र जी | " | ॥=) |
| २७६ | भोंदू जाट और पादरी साहब | | बाबूराम शर्मा इटावा | )। |
| २७७ | पाँच पैर की गौ | मंगल देव साधु | " | -)। |
| २७८ | धर्म-शिक्षा | दर्शनानन्द सरस्वती | " | -) |
| २७९ | महर्षिवियोग शोक | ज्वालादत्त शर्मा | " | ≡) |
| २८० | पाखण्डमतकुठार | सत्यानन्द सरस्वती | " | )। |
| २८१ | अग्निहोत्रविधि | | " | )॥ |
| २८२ | सत्यसङ्गीत | गणेशीलाल त्रिपाठी | " | )। |
| २८३ | पुराण-शिक्षा | | " | )। |
| २८४ | भजन-परीक्षा | दौलतराम शर्मा | " | -)।।। |
| २८५ | ईसाईमत परीक्षा | दर्शनानन्द सरस्वती | " | -)। |
| २८६ | स्त्रीशिक्षा के लाभ | गणेशप्रसाद शर्मा। | " | -)॥ |
| २८७ | रजस्वला विवाह-विवेक | " | " | -) |
| २८८ | सञ्जीवन बूटी | बाबूराम शर्म्मा | " | ।) |
| २८९ | वेश्यादोष दर्पण | " | " | ।-) |
| २९० | कन्यासुधार | इन्द्रदत्त शर्म्मा | " | =)॥ |
| २९१ | जैनीपण्डितों से प्रश्न | दर्शनानन्द सरस्वती | " | -)॥ |
| २९२ | स्वमन्तव्यप्रकाश | श्रीदयानन्द सरस्वती | बाबूराम शर्मा इटावा | )॥ |
| २९३ | धर्म प्रचार | लेखराम शर्म्मा | " | )॥ |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| २९१ | जैनीपण्डितों से प्रश्न | दर्शनानन्द सरस्वती | " | ‑)। |
| २९२ | स्वमन्तव्यप्रकाश | श्रीदयानन्द सरस्वती | बाबूराम शर्मा इटावा | )॥ |
| २९३ | धर्म प्रचार | लेखराम शर्म्मा | " | )॥ |
| २९४ | ईसाईविद्वानों से प्रश्न | दर्शनानन्द सरस्वती | " | )। |
| २९५ | मद्यतर्पण | " | " | ‑) |
| २९६ | आर्योद्देशरत्नमाला | " | " | ‑)। |
| २९७ | रामायणसार | " | " | )। |
| २९८ | भजनकड़ाका | " | " | )॥ |
| २९९ | पीयूषलहरी | बाबूराम शर्म्मा | " | )॥। |
| ३०० | देवनागरी-वर्णमाला | " | " | ‑)। |
| ३०१ | पहाड़ा | " | " | |
| ३०२ | गाजीमियां की पूजा | जगतनरायण शर्म्मा | " | ‑)॥ |
| ३०३ | मांसभक्षण-निषेध | " | " | ‑)। |
| ३०४ | बालशिक्षावली | " | " | )॥ |
| ३०५ | भोगवाद | दर्शनानन्द सरस्वती | " | )। |
| ३०६ | जीवसान्त-विवेक | इन्द्रमणिकृत | " | ‑) |
| ३०७ | साङ्गीत-महाभारत | " | " | ।‑)। |
| ३०८ | वेश्यालीला | बाबूराम शर्म्मा | " | )॥ |
| ३०९ | मृतकश्राद्ध | " | " | )। |
| ३१० | स्त्रीभजनमाला | " | " | ‑) |
| ३११ | आरती | बाबूराम शर्मा इटावा | " | )। |
| ३१२ | सत्यार्थविवेक निरीक्षण | " | " | ।) |
| ३१३ | जगत की उत्पत्ति स्थिति प्रलय | गणेशप्रसाद शर्म्मा | " | ≡) |
| ३१४ | अन्त्येष्टिकर्म-पद्धति | नन्दकिशोर देव | " | ‑)॥ |
| ३१५ | स्वर्गमेंमहासभा | रुद्रदत्त शर्म्मा | " | ‑) |

| | पुस्तक का नाम | लेखक | नाम पुस्तकदाता | मूल्य |
|---|---|---|---|---|
| ३१६ | सामाजिक स्तुति | गणेशप्रसाद शर्म्मा | बाबूराम शर्मा इटावा | |
| ३१७ | सत्यधर्म विचार | ” | ” | -)॥ |
| ३१८ | धर्मवलिदान | बाबूराम शर्म्मा | ” | =) |
| ३१९ | कुरीतिनिवारण | ” | ” | =)॥ |
| ३२० | जैनमत का उत्पतिकाल | ” | ” | )। |
| ३२१ | वंदनाशतक | हरिश्चन्द्र कुलश्रेष्ठ | ” | -) |
| ३२२ | गोकरुणानिधि | श्रीस्वामीदयानन्द सरस्वती | ” | -) |
| ३२३ | पतिव्रता माहात्म्य | श्यामलाल शर्म्मा | ” | ≡)॥ |
| ३२४ | गङ्गादितीर्थ-विचार | भीमसेन शर्म्मा | ” | -) |
| ३२५ | स्वस्तिपुण्याहवाचनम् | ” | ” | -) |
| ३२६ | सुमित्रा | सरयूप्रसाद वाजपेयी | ” | =) |
| ३२७ | वैशेषिकदर्शनम् | कणादिमुनि | ” | १।) |
| ३२८ | पुराणलीला | गणेशप्रसादशर्म्मा | ” | १) |
| ३२९ | आत्मानन्द | सरयूप्रसाद वाजपेयी | ” | -) |
| ३३० | क्षत्री धर्मप्रकाश | कु० बलदेवसिंह चौहान | ” | -)॥ |
| ३३१ | मोत की पुड़िया | चौ० हरीरामसिंह | ” | -)॥ |
| ३३२ | सत्योपदेश-भजनावली | रामप्रकाश | ” | -) |
| ३३३ | श्रीकृष्णोपदेश | मूलचन्द शर्मा | ” | ॥=) |
| ३३४ | आर्यमतमार्तंड नाटक | रुद्रदत्त शर्मा | बाबूराम शर्मा | ≡) |
| ३३५ | पुराणपरीक्षा | ” | ” | =) |
| ३३६ | सत्यभास्कर | कुंजविहारीलाल शर्मा | ” | -) |
| ३३७ | कंठी जनेऊ का विवाह | रुद्रदत्त शर्मा | ” | =) |
| ३३८ | ऐतिहासिक-निरीक्षण | लेखराम शर्म्मा | ” | |
| ३३९ | ” दूसरा भाग | ” | ” | -)। |
| ३३९ | दशनियम शिखरणी | ज्वालादत्त शर्म्मा | | |
| ३४० | वाजसनेयोपनिषद् | | ” | ≡) |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ३३९ | दशनियम शिखरणी | ज्वालादत्त शर्म्मा | ” | ≡) |
| ३४० | वाजसनेयोपनिषद् | ” | ” | -) |
| ३४१ | यज्ञोपवीतशङ्का-समाधान | ” | ” | =) |
| ३४२ | पुरुषसूक्त | ” | ” | =) |
| ३४३ | शान्तिसरोवर | ” | ” | |
| ३४४ | राम पंचाशिका | बलदेवसिंह शर्म्मा | ” | |
| ३४५ | शास्त्रार्थ खुर्जा | हरिश्चन्द्र कुलश्रेष्ठ | ” | -) |
| ३४६ | ” विशऽगढ़ | ” | ” | -)॥ |
| ३४७ | स्वर्ग में सब्जेक्ट कमेटी | ” | ” | -)॥ |
| ३४८ | सङ्गीत-स्वरोदय | रुद्रदत्त शर्म्मा | ” | -) |
| ३४९ | विषलता | पुरन्दरसिंह वर्मा | ” | |
| ३५० | वैदिकधर्म प्रचार | धर्मपाल बी० ए० | ” | ) |
| ३५१ | जैनमत दर्शन | राय ठाकुरदत्त | ” | ॥) |
| ३५२ | पञ्च महायज्ञ | ” | ” | -) |
| ३५३ | दयानन्द चरित्तम् | ” | ” | -) |
| ३५४ | भीषण भविष्य | लेखराम | ” | |
| ३५५ | स्मृति प्रमाण | गो० लक्ष्मण चार्य्य | गो० लक्ष्मणाचार्य्य | |
| ३५६ | पद्य प्रबन्ध | ” | ” | -) |
| ३५७ | एकता दर्शन | मैथिलीशरण गुप्त | बा० रामकिशोर | ॥) |
| ३५८ | शान्ता | हरिदास खंडेलवार | बा० पुरुषोत्तमदास टंडन | ॥) |
| ३५९ | लक्ष्मी | पं० ओंकारनाथ वाजपेयी | ” | ) |
| ३६० | महानन्द विद्यांकुर | ” | ” | ) |
| ३६१ | प्राचीन भारत वासियों का वैदिदेशिकव्यवहार और विदेशयात्रा | लाला महानन्द<br>पं० उदयनारायण वाजपेयी | ”<br>हिन्दी गंगप्रसारक मडली खंडवा | ॥) |

| | पुस्तक का नाम | लेखक | नाम पुस्तक दाता | मूल्य |
|---|---|---|---|---|
| ३६२ | वीर होरेशश | बा० रघुनाथप्रसाद कपूर | हिन्दी ग्रंथप्रसारकमंडली, खंडवा | =) |
| ३६३ | सौंदर्योपासक | बा० ब्रजनन्दनसहाय वकील | ब्रजनन्दसहाय | \|\|\|) |
| ३६४ | मनोविनोद तृतीय खंड | पं० श्रीधरपाठक | पं० श्रीधरपाठक | |
| ३६५ | भाषाप्रवोध चौथा भाग | पं० विहारीलाल चौबे | पं० विहारीलाल चौबे | \|=) |
| ३६६ | " ३ भाग | " | " | ≡) |
| ३६७ | डा० रिचर्डसन का जीवनचरित्र | हरशङ्करप्रसाद उपाध्याय | " | ≡) |
| ३६८ | रामावतार | विहारीलाल चौबे | " | \|) |
| ३६९ | व्यङ्कटविहार तुलसीभूषण | " | " | |
| ३७० | बालोपहार | " | " | -)\|\|\| |
| ३७१ | " | " | " | =) |
| ३७२ | मूल सूत्रबोध व्याकरण | " | " | \|=) |
| ३७३ | सुन्दर सरोजिनी | देवीप्रसाद शर्मा, चम्पारन | बा० पुरुषोत्तमदास टंडन | \|-) |
| ३७४ | श्रीमद्भागवत गीतार्थसंग्रह | पं० द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी | पं० द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी | \|) |
| ३७५ | भारत मही | गदाधर सिंह | प्रकाशक बुकडिपो | |
| ३७६ | जापानी राज्य व्यवस्था | " | " | \|) |
| ३७७ | सम्राट जार्ज पंचम की जीवनी | ठा० शिवकुमार सिंह | बा० पुरुषोत्तमदास टंडन | |
| ३७८ | " बड़ी | " | " | \|-) |
| ३७९ | " | " | " | )\|\|\| |
| ३८० | भारतवर्ष का अर्वाचीन इतिहास | पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल | नागरीप्रवर्द्धिनी सभा | १) |
| ३८१ | श्रमहरा | कालीचरण सिंह | कालीचरण सिंह | |
| ३८२ | वैद्यक की उन्नति किस प्रकार होगी | पूनमचन्द वैद्य | पूनमचन्द वैद्य | |
| ३८३ | सिद्धान्तसार | पूनमचन्द जैन | पूनमचन्द जैन | ≡)\|\| |
| ३८४ | उपश्रुति शकुन | पं० तनसुखराम | पं० तनसुखराम | -)\|\|\| |

# सम्मेलन पत्रिका के नियम

१—यह पत्रिका सम्मेलन कार्यालय प्रयाग से प्रतिमास प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य १) रु० इसलिये रक्खा गया है कि सर्वसाधारण इसके ग्राहक हो सकें।

२—अभी इस में प्रतिमास कुल २४ पृष्ठ ही रहा करेंगे। आवश्यकता होने पर पृष्ठ संख्या बढ़ा भी दी जाया करेगी। आगे चल कर यदि इसकी सेवा साहित्यिकों को रुचिकर हुई, और ग्राहकों की यथोचित संख्या हो गयी तो अधिकतर पृष्ठ-संख्याओं में और अधिकतर उन्नत दशा में प्रकाशित की जायगी।

३—इसके प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र और रुपये आदि तथा सम्पादन सम्बन्धी पत्र, पुस्तकें परिवर्तन के पत्रादि सब "मन्त्री सम्मेलन-कार्यालय, प्रयाग" के नाम आना चाहिये।

## विज्ञापन छपाई के नियम

६ मास अथवा उससे अधिक दिनों के लिये

| | १ पृष्ठ, | आधा पृष्ठ | और चौथाई पृष्ठके लिये |
|---|---|---|---|
| कवर पेज पर | ५) | ३) | २) |
| साधारण पेज पर | ४) | २॥) | १।) |

विशेष बातें जाननी हों तो मन्त्री जी से पूछिये।

## क्रोड़पत्र बटाई के नियम

आधा तोला तक अथवा इससे कम के लिये ... १०)
१ तोला के विज्ञापन के लिये ... १२)

**मंत्री, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग**

---

नोट—विज्ञापन के ऊपर यह छपा होना चाहिये कि अमुक-मास की "सम्मेलन-पत्रिका" का क्रोड़पत्र और उसमें यथोचित समाचार भी होनें चाहियें।

# सम्मेलन कार्य्यालय की नयी और अत्यन्त उपयोगी पुस्तकें

## नागरी अंक और अक्षर

इस ग्रन्थ में अङ्कों और अक्षरों की उत्पत्ति पर जो बड़े गवेषणापूर्ण लेख प्रथम और द्वितीय सम्मेलन में पढ़े गये थे, संकलित हैं। हिन्दी में ऐसी दूसरी पुस्तक है ही नहीं। मूल्य ≡)

## इतिहास

यह ग्रन्थ पं० विष्णुशास्त्री चिपलूणकर के प्रसिद्ध निबन्ध का अनुवाद है। मध्यमा के पाठ्य ग्रन्थों में होने के अतिरिक्त यह अत्यन्त रोचक है। इतिहास का वास्तविक महत्व इससे जाना जाता है। मूल्य ≡)

| | |
|---|---|
| प्रथम वर्ष का विवरण | ।) |
| द्वितीय वर्ष ,, | ।) |
| तृतीय वर्ष ,, | ।=) |
| प्रथम सम्मेलन की लेखमाला | ।।।) |
| द्वितीय ,, ,, | १) |
| तृतीय ,, ,, | ।।।) |
| चतुर्थ ,, ,, | ।।।) |
| पञ्चम ,, ,, | ।।) |
| नीति दर्शन .. | ।।।) |
| लाजपतराय की जीवनी | १) |
| हिन्दी का संदेश | -) |
| इतिहास | ≡) |
| नागरी अंक और अक्षर | ≡) |
| सौ अजान और एक सुजान | ।=) |
| पिङ्गल का फलक (प्रथमा के लिये) | -) |
| गद्य काव्य मीमांसा | ।) |
| ऊजड़ ग्राम | ।) |
| विज्ञान प्रवेशिका | ≡) |
| यूरोप का संक्षिप्त इतिहास | ।≡) |
| अलंकार प्रकाश | १।।।) |
| सूर्य्य सिद्धान्त | २) |
| विवरण पत्रिका १९७२ (छप रही है) | ।) |

**मंत्री—हिन्दी साहित्य सम्मेलन कार्यालय**

**प्रयाग।**

पं० ओंकारनाथ वाजपेयी के प्रबन्ध से ओंकार प्रेस प्रयाग में छपकर हिन्दी साहित्य-सम्मेलन से श्रीनरेन्द्र नारायणसिंह द्वारा प्रकाशित।

Reg. No. A-629.

# सम्मेलन-पत्रिका

## हिन्दीसाहित्य-सम्मेलन की

### मुखपत्रिका

भाग २ } भाद्र संवत् १९७२ { अङ्क १२

विषय-सूची



वा० मू० १) ] [ एक प्र०

सम्पादक—पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी ।

# सम्मेलन के उद्देश्य

( १ ) हिन्दी-साहित्य के अङ्गों की उन्नति का प्रयत्न करना।

( २ ) देवनागरी-लिपि का देश भर में प्रचार करना और देश व्यापी व्यवहारों तथा कार्यों के सुलभ करने के लिये हिन्दी भाषा को राष्ट्र-भाषा बनाने का प्रयत्न करना।

( ३ ) हिन्दी को सुगम, मनोरम और लाभदायक बनाने के लिए समय समय पर उसकी शैली के संशोधन तथा उसकी त्रुटियों और अभावों के दूर करने का प्रयत्न करना।

( ४ ) सरकार, देशीराज्यों, पाठशालाओं, कालेजों, विश्व-विद्यालयों और अन्य संस्थाओं, समाजों, जन-समूहों तथा व्यापार, ज़मींदारी और अदालतों के कार्य्यों में देवनागरी-लिपि और हिन्दी-भाषा के प्रचार का उद्योग करते रहना।

( ५ ) हिन्दी के ग्रन्थकारों, लेखकों, पत्रसम्पादकों, प्रचारकों और सहायकों को समय समय पर उत्साहित करने के लिये पारितोषिक, प्रशंसापत्र, पदक, उपाधि आदि से सम्मानित करना।

( ६ ) उच्च-शिक्षा प्राप्त युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने के लिये प्रयत्न करना।

( ७ ) जहाँ आवश्यकता समझी जाय वहाँ पाठशाला, समिति तथा पुस्तकालय स्थापित करने और कराने का उद्योग करना तथा इस प्रकार की वर्त्तमान संस्थाओं की सहायता करना।

( ८ ) हिन्दी-साहित्य के विद्वानों को तैयार करने के लिये हिन्दी की उच्च-परीक्षायें लेने का प्रबन्ध करना।

( ९ ) हिन्दीभाषा के साहित्य की वृद्धि के लिये उपयोगी पुस्तकें तैयार कराना।

( १० ) हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की सिद्धि और सफलता के लिये अन्य जो उपाय आवश्यक और उपयुक्त समझे जायँ उन्हें काम में लाना।

---

# सम्मेलन-पत्रिका का उद्देश्य

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता करना, और साहित्य प्रेमियों से इसी के लिये उपदेश लेना।

# सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति
की ओर से प्रतिमास प्रकाशित

भाग २ } भाद्र संवत् १९७२ { अङ्क १२


## साहित्यसेवी का जीवन

( लेखक—बाबू चांदकरण शारदा, बी०ए०, एल०एल० बी० )

संसार में कौन ऐसा अभागा पुरुष होगा जो सदा दुःखी रहना पसंद करता हो ? यह स्वाभाविक बात है कि मनुष्य सदा अपने जीवन को सुख से व्यतीत करना चाहता है। इसी सुख की टोह में वह मन्दिरों और तीर्थों में भटकता है। अनेक व्यक्ति इन्जीनियरिङ्ग, वकालत, वैद्यक, दूकानदारी इत्यादि को सुख की खान समझ कर इन पेशों की ओर दौड़ते हैं, परन्तु इन व्यवसायों में आकर भी इन को वह सुख का श्रोत जिस की आशा लगाकर इन्हों ने लाखों कष्ट सहन किये थे सूखा मिलता है और फिर यही प्रश्न खड़ा होता है कि संसार में सब से सुखप्रद जीवन किस का है ?

"सुखप्रद जीवन" के लिये "सर हेनरी वाटन" ने निम्नलिखित पद रचा है :—

How happy is he born and taught
That serveth not another's will,
Whose armour is his honest thought
And simple truth his utmost skill.

अर्थात्—उस का जन्म और शिक्षा धन्य है जिस को दूसरों की इच्छा के अनुसार काम नहीं करना पड़ता, जिस का कवच उसका शुद्ध विचार है और सत्यता ही उस का सब से बड़ा कौशल है।

सचमुच ही तुलसीदास जी महाराज के कथनानुसार "पराधीन सपनेहु सुख नाहीं" सुख प्राप्त करने के लिये "स्वाधीनता" और "सत्य" की बड़ी आवश्यकता है। अब हमें यह देखना चाहिये कि साहित्य-सेवी के जीवन में "सर वाटन" रचित उपर्युक्त पद घटता है या नहीं। समाचारपत्रों की जिह्वा काटने वाले प्रेस-एक्ट के विचार को यदि हम थोड़ी देर के लिये भूल जावें और केवल चुपचाप काम करने वाले पुस्तक-रचयिताओं के जीवन की ओर निहारें तो हमें "स्वाधीनता" और "स्वाधीन-विचारों के प्रकट करने की शक्ति" सब ही व्यवसायों से अधिक इस जीवन में मिलेगी।

यदि साहित्यसेवी की इच्छा न हो तो कोई भी प्राणी उस को एक स्थान, एक दल, और एक मनुष्य के साथ रहने को बाध्य नहीं कर सकता। उस के लिये सारी प्रकृति और सारे संसार के विचारों के द्वार खुले हैं। वह अपनी लेखनी रूपी चाभी से प्रत्येक आनन्द-गृह के द्वार को खोल कर वहाँ की सैर कर सकता है। साहित्य-सेवी न केवल वर्त्तमान समय के आनन्द-भवनों और वस्तुओं की सैर कर सकता है प्रत्युत उस के लिये गत शताब्दियों की लाखों आश्चर्य्यजनक बातें सैर करने को पड़ी हैं। वह चाहे तो सारे संसार की सभ्यताओं को एक कतार में खड़ी कर उनके मानसिक चित्र देखे और मालूम करे कि अमुक सभ्यता की गिरावट का क्या कारण है और उस सभ्यता की उन्नति का क्या कारण है? वह चाहे तो "भारतमित्र" के समान "विचार-वैचित्र्य" में या "पाटलीपुत्र" के समान "मनमौजी"-पन में या गोलमालानन्द के समान "इधड़ विधड़" लिखकर आनन्द ले सकता है, क्योंकि पुस्तकें केवल उस मनुष्य के विचारों का संग्रह है जिसने उनको रचा है। इसलिये साहित्यसेवी अपने पुस्तकालय में बैठा हुआ कणाद, गौतम, नारद आदि महर्षियों से बातें कर सकता है, राना प्रताप या भीष्मपितामह से मिल सकता है, प्लेटो की "आत्मा के अमर होने के विषय में" बहस सुन सकता है। वह बैठा बैठा बड़े बड़े जेनरलों और राजाओं से वार्तालाप कर सकता है। निश्चय ही एक सच्चा साहित्यसेवी लाखों करोड़ों मनुष्यों का स्वाधीन राजा है और उसके जीवन के समान सुखप्रद जीवन बिरले ही मनुष्य का होता है

निश्चय ही हम को हिन्दी संसार में सैकड़ों मनुष्य यह कहेंगे कि तुम केवल लोगों को बहकाने के लिये यह सब्ज़बाग़ दिखा रहे हो, साहित्यसेवा के बराबर तो शायद ही किसी और व्यवसाय में दुःख होगा। परन्तु निश्चय रखिये, ऐसे कहने वालों में अधिकतर संख्या उन लोगों की होगी जिनकी पुस्तकें नहीं बिकीं हैं और जिनका व्यायाम न करने के कारण स्वास्थ्य खराब हो गया है तथा खाया पीया कुछ हजम नहीं होता है; या उन लोगों की संख्या होगी जो नाम चाहते हैं और इधर उधर व्याख्यान देने के लिये दौड़ते फिरते हैं।

वे मनुष्य जो चाहते हैं कि सर्वसाधारण में हम यहां देखे जावें वहां देखे जावें और हमारा नाम होवे, उन से सरस्वती रुष्ट हो जाती हैं। उन लोगों का जीवन भी सुखप्रद नहीं हो सकता जो केवल स्वार्थवश होकर रुपया कमाने के लिये लोगों को भड़काने का सदा प्रयत्न करते रहते हैं। उन लोगों का जीवन कलङ्कित है जो केवल अपने ग्राहकों को प्रसन्न रखने के लिये अपने समाचार। पत्रों में अश्लील बातें लिखते हैं या ऐसी बातें लिखते हैं जिन से कि मनुष्यों के सदाचार बिगड़तें हैं।

साहित्यसेवी का जीवन गम्भीर है, उसके आदर्श और विचार उच्च होने चाहिये, सदा न्याय ही सामने रख कर कार्य्य करना चाहिये। सब से अधिक आनन्द साहित्य-सेवी को तब होता है जब कि उसको ज्ञात होता है कि उसकी लेखनी से निकले हुए अमुक लेख या कविता ने दुःखियों को शान्ति प्रदान की है या निराशों को आशा बँधायी है।

यह प्रत्येक समझदार मनुष्य मानेगा कि साहित्य-सेवी के जीवन में भी कई निराशायें-रुकावटें-दुःख इत्यादि होते हैं। किन्तु साहित्य-सेवी के जीवन की रुकावटें और दुःख दूसरे व्यवसायियों की रुकावटों के समान दुःखदायी नहीं होतीं। इन रुकावटों और बाधाओं को पारकर एक अपूर्व आनन्द प्राप्त होता है। जिस प्रकार सोना ज्यों ज्यों तपाया जाता है त्यों त्यों दीप्तिमान निकलता है, उसी प्रकार साहित्यसेवी की प्रशंसा को नहीं सहन करने वाले द्वेषी पुरुष ज्यों ज्यों उसपर मिथ्या दोष लगाकर संसार के सम्मुख मिथ्यावादी

साबित होते हैं त्यों त्यों साहित्य-सेवी की कीर्ति और मुख उज्ज्वल होता जाता है। जिस प्रकार लोहे का टुकड़ा गर्म भट्टी में लाल किया जाकर हथौड़ों से पीटा जाने पर एक सुन्दर तलवार बन जाता है और शत्रुओं को रणभूमि में काटने के लिये सदा तैयार रहता है उसी प्रकार साहित्य-सेवी खण्डनों आलोचनाओं तथा अन्य बाधाओं से सुदृढ़ होकर एक महापराक्रमी पुरुष बन जाता है।

दूसरा दुःख जिस के होने की सम्भावना है वह धनाभाव है, परन्तु साहित्यसेवी थोड़े ही धन में गुज़र कर सकता है। इन्जीनियरों, डाक्टरों और वकीलों के समान उसको ऐश इशरात के सामानों की अधिक आवश्यकता नहीं होती। वह एक छोटे से मकान में सकुटुम्ब रहता हुआ आनन्द से जीवन व्यतीत कर सकता है। सुख और दुःख सदा मनुष्यों के विचारों पर निर्भर हैं। भला जो विचारों में इतना धनवान होगा उसको संसार के बाहरी आडम्बरों की क्या परवा होसकती है? अधिक खाने से या जरीन कपड़े पहिनने से या रबर-टायर गाड़ी या मोटर पर चढ़ने ही से मस्तिष्क बलवान् और विद्वान् नहीं होसकता।

तीसरी बात रही गालियां सुनने की सो यह तो कवियों और लेखकों के साथ सदा होता ही रहता है, चाहे वे भारतवासी हों चाहे यूरपनिवासी। प्लीनी ( Pliny ) ने वरजिल ( Virgil ) को बुरा भला कहा; "सिसेरा" और "प्लूटार्क" ने अरिस्टाटल को बेवकूफ और मूर्ख बताया। "प्लेटो" साहब "डिमोक्रिटस" से इतने क्रुद्ध थे कि वे कहा करते थे कि डिमोक्रिटस की सारी किताबें जलादो। कवि "सफोक्लीस" को उसके बच्चों ने ही पागल बनाया। कवि "होरेस" पर दूसरी किताबों में से चोरी कर लिखने का अपराध लगाया गया। कविवर मिल्टन के जीवन को दुष्ट "सलमेसियस"ने सत्यानाश में मिलाया। हमारे हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापतियों की भी प्रत्येक वर्ष खूब खबर ली जाती है। परन्तु हमको इन बातों से डरना न चाहिये प्रत्युत यह सदा स्मरण रखना चाहिये कि बड़े आदमियों से द्वेष करने वाले मनुष्य बहुत होते हैं। कोई भी पुरुष एक भी बड़े आदमी का उदाहरण नहीं बतला सकता जिस की बुराई करने वाले संसार में पैदा न हुए हों। बड़े बड़े आदमी कहते हैं

कि उस साहित्यसेवी का जीवन जिस से कोई द्वेष न करे ऐसा है जैसे कि मैला स्टेशन की मैलागाड़ी। बड़े बड़े कवियों के छुटभैये कवि सदा शत्रु होते हैं क्योंकि, बड़े कवि प्रायः वे ही होते हैं जिन में जन्म से कविता करने की शक्ति होती है। छोटे कवि बेचारे धीरे धीरे कड़ियां जोड़ा करते हैं, बहुत परिश्रम करते हैं तिस पर भी लोग उनकी कविता पसंद नहीं करते। लोग पसंद भी क्यों करें? उनके पास रुपया और समय वृथा खोने के लिये नहीं है। कविता में कल्पनाशक्ति ( Imagination ) की बड़ी आवश्यकता है और ये छुटभैये कवि या तो पुरानी बातों को बिना रस पीसा करते हैं या पुराने कवियों की किताबों मे से चोरी कर कवि बनना चाहते हैं। दुर्भाग्यवश इस समय हिन्दी के नये कवियों में कल्पनाशक्ति ( Imagination ) इने गिनों में ही है, इसीलिये वे कभी कभी एक दूसरे की बुराई किया करते हैं। इङ्गलॅंड में भी एक समय इन छुटभैये कवियों ने अपनी खूब दुन्दुभी बजायी। शेली ( Shelly ), बायरन, कीट्स ( Keats ) जैसे विद्वान् कवियों का एक दिन भी इन लोगों ने राज-सम्मान नहीं होने दिया; प्रत्युत प्रतिकूल इसके इनको अपनी जन्मभूमि छोड़नी पड़ी। परन्तु लोग बिना गुण वाले राज-सम्मानित कवि की कब परवा करते हैं? इङ्गलिस्तान के पुरुष नयी कविताओं के लिये प्यासे थे। उन्होंने बायरन, शेली और कीट्स की किताबें समुद्रपार से भी मंगा मंगा कर पढ़ीं और उस समय के नामधारी पोयट-लारियट आदि छुटभैये कवियों की बिलकुल परवा न की। इस लिये साहित्य-सेवी को इन छोटे शत्रुओं से कभी नहीं डरना चाहिये और निम्नलिखित कवि के बचनों को सदा स्मरण रखना चाहिये—

You have no enemies, you say !
Alas ! my friend, the boast is poor—
He who has mingled in the fray of duty,
that the brave endure,
Must have made foes ! If you have none,
Small is the work that you have done ;
You've bit no traitor on the hip,

You've dashed no cup from perjured lip,
You've never turned the wrong to right—
You have been a coward in the fight!

अर्थात्—तुम कहते हो कि हमारा कोई शत्रु नहीं है। मित्र! शोक की बात है कि यह तुम्हारा अभिमान मिथ्या है। जो मनुष्य कर्त्तव्य की लड़ाई में सम्मिलित हुआ है और जिस की लड़ाई के कष्ट को वीर लोगों ने सहन किया है, उस के शत्रु अवश्य हुए हैं। यदि तुम्हारे शत्रु नहीं हैं तो जो कुछ तुम ने काम किया है वह बहुत थोड़ा है। तुम ने किसी देशद्रोही को हानि नहीं पहुंचायी, तुम ने किसी बेईमान को बेईमानी से पैदा किये हुए धन के सुख से वञ्चित नहीं किया, तुम ने कभी ग़लत बात को ठीक नहीं किया और तुम संग्राम में कातर रहे हो।

यूरुप में लाखों स्त्रियाँ और पुरुष साहित्यसेवी का जीवन व्यतीत कर अपने जीवन को आनन्द-प्रद बनाते हैं और अपने देश को भी उन्नति के शिखर पर पहुंचाने का प्रयत्न करते हैं, परन्तु दुर्भाग्यवश भारत के अधिकांश ब्राह्मणों ने यह कार्य छोड़कर भिक्षा अथवा दासवृत्ति धारण करली है। और दूसरे पुरुष साहित्य-सेवी-जीवन के आनन्दों को न जानते हुए स्वभावतः केवल चमकते हुए सोने की तरफ़ ही दौड़ते हैं। परमात्मा हमारे देश के नवयुवकों में बल दे ताकि वे वकालत, इञ्जीनियरिङ्ग, डाक्टरी, सौदागरी, इत्यादि के समान साहित्य-सेवी के व्यवसाय में भी प्रविष्ट होकर धन और धर्म कमावें एवम् अपना जीवन आनन्द से व्यतीत करें। साहित्य-सेवी का जीवन सब व्यवसायियों के जीवनसे उच्च और पवित्र है। जिस प्रकार का प्रेम, सहानुभूति, ज्ञान और सभ्यता इस जीवन में प्राप्त होती है उस के कहने की हम में शक्ति नहीं है। इस में पराक्रम बढ़ता है, इस में हमारा सदाचार बनता है और हमारी हिम्मत की जाँच की जाती है। इस में सब से अधिक सत्य को हम स्वयं जानते हैं, पहिचानते हैं और संसार में उसका प्रचार करते हैं। यदि मनुष्य का तन, मन और स्वास्थ्य अच्छा हो और मस्तिष्क में बल हो और तब वह इस साहित्य-सेवी के जीवन में विचरे तो उस का आनन्द, चक्रवर्ती

राजाओं के आनन्द से भी अधिक हो सकता है। प्रिय नवयुवको ! आओ, हिन्दी साहित्य की सेवा कर भारत माता का मुख उज्ज्वल करो, इसी में कल्याण है।

---

# हिन्दी की विलक्षण एकता

( लें० श्रीयुत पं गयादत्तजी त्रिपाठी, बी० ए०, प्रयाग )

[ गतांक से आगे ]

, कैसे खाई। तब अहिरवा ओकर महतारी कोठा पर खाये पियै का दैकर बैठाइ आई। तब बाघ आवा तौ डांक कर कोन पर चला गवा। माचा समेत उठाइ लइ चला। रास्ता में एक बरगद का पेड़ मिला। अहिरऊ बरगद को डार धैकर लटकि रहा। तब बाघ अपनी डेरा पर खाली माचा लैकर चला गा। माचा पटक दिहस। वह में अहिरराम त रहैं न। तब आपन मूड़ कपार कूंचै लाग। और अहिर वही पेड़ तर रहै लाग। वहां सुरागाय रहत रहैं। उन का दिन भर चरावै और उनहीं के दूध पीए। तवन वचै पेड़ पर साँप के बिल में नाइ देइ। बहुत दिन बीते एक सरप फन काढ़िकर बिल से निकला। तब अहिर से कहेस मांग का मांगत है। मोर बड़ी सेवा किहे। तब अहिरऊ कहेन कि हमार दैंह सोने की होइ जाय। और दस बारह गांव के राज देह। तब संपऊ बरदान देके चल भयेन तब अहिरवा के दैंह सोने के होयगा।

एक दिन अहिरराम नदी में नहाए गे। एक वार टूट गा। ओ-का दोना में कइकर नदी में फेंकि दिहेन। ऊ बहत बहत चला गा। राजा के बाबी नहाने आई ऊ देखेस। तब दोना में सेना के बार रहै। तब घर में आइ कर कहेस की जेकर बार सोना के है ऊ मनई कसत होई ओही के साथ वियाह होई। और मूंड़ मूंड़ कर पड़ी। तब एक मेहरारू ओकर टहलुइन कहेस की हम ढूंढ़ लाउब। तब उ बरगद के पेड़ तर ढूंढ़त ढूंड़त पहुंची और वहां रहै लगी। एक कोठिला माटी के पेड़ तर बनाइस। तब आपन सीधा पिसान वहि में धरेस। अहिरराम से एक दिन कहेस की बाबा मोर सीधा निकालि देहि तब अहिर राम कोठिला में घुसगे। तब ऊ मेहरारू

कोठिला ढंगराइ कर राजा के इहां ले आई और अहिर राम के साथ बाबी को वियाह होइगा। कुछ दिन बीते दान दहेज दैकर राजा बाबी का विदा कइ दिहिन। तब अहिरराम बाबी को लइके अपने घर आयेन। गांव वाले ओकरे महतारी से कहेन कि तुमार बेटवा आवा। तब बुढ़िअऊ कहेन कि हमरे बेटवा के बाघ खायेन न रहा। जब बेटवा अपनी महतारी से भेंट किहेस और ओढ़ना कपड़ा लत्ता दिहेस तब ओढ़ कर महतारी खुसी भई।

जैसे राज पाट अहिरऊ का लौटा वैसे सब का लौटे।

इन उदाहरणों से ज्ञात होता है कि यद्यपि शब्दों के उच्चारण में तथा संज्ञा वा सर्वनाम के शब्दों और कहीं कहीं धातु के रूप में भी भेद हो गया है, तथापि प्रत्येक बोलियों में जितने शब्द हैं प्रायः सब की व्युत्पत्तिस्थान एक ही है। इसी विचार को और दूर तक देखने से सिद्ध होगा कि यही सम्बन्ध साधारणतः प्रयाग तथा मिरज़ापुर की भाषा का, और मिरज़ापुर तथा बनारस, बनारस तथा गाधिपुर ( गाजीपुर ) प्रभृति का है। आगे बढ़ते बढ़ते यह भी सिद्ध होता है कि गाधिपुर और विहार की भाषा का भी यही सम्बन्ध है और इसी प्रकार विहार की भाषा का और पूर्व्वीय भाषा अर्थात् बंगाली, उड़िया और आसामी प्रभृति से सम्बन्ध है। यही सम्बन्ध तीनों और दिशाओं की भाषा की ओर देखने से भी सिद्ध होगा। अर्थात् यह कहना अनर्गल नहीं है कि सम्पूर्ण भारतवर्ष की प्रधान भाषा हिन्दी ही है।

उत्तर दिशा में हिमालय से लेकर दक्षिण में नर्मदातक और पश्चिम मे पंजाब देश से लेकर पूर्व में महानन्दानदीतक जितनी आर्य्य-भाषायें बोली जातीं हैं, प्रायः सब हिन्दी-भाषा के नाम से प्रसिद्ध हैं। कोई कोई लोग भूल से विहारी-भाषा की; जो संयुक्तप्रान्त के पूर्वीयभाग में तथा विहारप्रान्त में बोली जाती है, हिन्दीभाषा के वहिर्गत बतलाते हैं। इसी प्रकार बहुत लोग राजपूताना की भाषा को भी हिन्दीभाषा की उपाधि नहीं देते। इन लोगों के मतानुसार हिन्दी भाषा के अन्तर्गत वेही भाषायें हैं जो पञ्जाब में सरहिन्द से लेकर पूर्व में काशी तक बोली जाती हैं, अर्थात् बुंदेली, कन्नौजी, व्रजभाषा· बघेली, अवधी व मागधी प्रभृति। परन्तु यथार्थ में जिस प्रकार देश

व काल के भेद से बुंदेली प्रभृति भाषा के रूप में भेद है, उसी प्रकार बिहारी तथा राजपूताना की भाषा भी हिन्दी भाषा का रूपान्तर मात्र है। इन्हीं सब भाषाओं के मेल से विशिष्ट हिन्दी-भाषा है जो इस समय सम्पूर्ण भारतवर्ष में व्याप रही है। शौर्यक, मागधी तथा पाली प्रभृति भाषायें इसके रूपान्तर मात्र हैं। इस विशिष्ट हिन्दी भाषा के बोलने वाले न केवल पञ्जाब से महानन्दातक, न केवल हिमालय से नर्मदातक, प्रत्युत काश्मीर से वर्मा, तथा नैपाल से कन्याकुमारी तक फैल रहे हैं। जिस प्रकार यूरप में फ्रेंच भाषा प्रधान है उसी प्रकार भारतवर्ष में हिन्दीभाषा का प्राधान्य है।

ऐसी व्यापिनी और विशिष्ट हिन्दीभाषा की उन्नति के साधन क्या क्या हैं, इस विषय पर अनेक विद्वानों ने अपने अपने विचार समय समय पर प्रकट किये हैं; परन्तु हिन्दीभाषा की उन्नति के जितने उपाय हैं उनमें सबसे मुख्य उपाय यह है कि हिन्दीभाषा के प्रेमियों के लिये हिन्दी के सहारे से कोई जीविका का भी साधन हो। इसमें सन्देह नहीं कि अदालतों में हिन्दी के प्रचार होने से अथवा सुलभ एवं छोटे हिन्दी के ग्रन्थ छपने से कुछ हिन्दी के लेखक, कम्पाज़िटर व ग्रन्थकर्त्ताओं का उपकार हो सकता है और हो रहा है। परन्तु इतने काम के साधन के हेतु हमें कितनी कठिनता ( वकीलों की दरबार और प्रेस के स्वामियों की शुश्रूषा करने में) पड़ती है यह प्रत्यक्ष है। इसके सिवाय यदि हिन्दी के प्रेमी अपने कार्य्य का साधन दूसरी ओर से करें तो मेरी समझ में अधिक लाभ होगा। दूसरी ओर से मेरा प्रयोजन यह है कि जितने राजा, महाराजा, ताल्लुकदार, ज़मींदार और कारबारी महाजन प्रभृति हैं उनसे प्रार्थना की जाय और उनपर देशहित का दबाव डाला जाय कि वे अपने यहां के मुख्तारआम और कारपरदाज़ केवल हिन्दी जानने वालों को रक्खें। इसके पहिले परीक्षासमिति का भी यह कर्तव्य होगा कि परीक्षा में जितने विषय रक्खे गये हैं उनमें कुछ घटा बढ़ा कर ऐसे विषय भी रख दिये जायं जिनसे कि हिन्दी-परीक्षा में उत्तीर्ण होने के अनन्तर परीक्षा के प्रभाव से ज़मीन्दारी, कास्तकारी, अदालत के व्यवहार की रीतियाँ, कानून, मालगुज़ारी, तथा कुछ बही खाता और कारबार करने की रीति भी उनको विदित हो जाय ॥ इति ॥

# स्थायीसमिति का कार्य्यविवरण

स्थायीसमिति का पाँचवाँ अधिवेशन सम्मेलन-कार्य्यालय में मिती भाद्र कृ० ११ रविवार, सं० १९७२ ता० ५ सितम्बर सन् १९१५ ई० को सन्ध्या के ५॥ बजे से प्रारम्भ हुआ, जिसमें निम्न-लिखित सदस्य उपस्थित थे।

श्रीयुत पं० श्रीकृष्ण जोशी।
,, लाल रुद्रनाथसिंह धेनुगाँव बस्ती।
,, पं० रामजीलाल शर्म्मा प्रयाग।
,, पं० द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी ,, ।
,, बा० रामदास जी गौड़ ,, ।
,, बा० भगवानदास हालना मिर्ज़ापुर।
,, पं० चन्द्रशेखर शास्त्री प्रयाग।
,, पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी " ।
,, पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल " ।

सर्वसम्मति से पं० श्रीकृष्ण जोशी जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

१—आयव्यय-परीक्षक, आयव्यय की जांच न कर सके थे इसलिये हिसाब उपस्थित नहीं किया गया।

२—आगामी सम्मेलन के समय के सम्बन्ध में विचार हुआ, सम्मतियां देखी गयीं और स्वागतकारिणी-सभा के मन्त्री के पत्र पढ़े गये—जिनमें उन्होंने बहुत आग्रह किया था कि सम्मेलन की तिथियाँ मुहर्रम में रक्खी जाँय। सम्मतियों पर और स्वागतकारिणी-सभा लाहौर की सुविधा पर ध्यान देते हुये स्थायी-समिति ने निश्चय किया कि षष्ठ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन मुहर्रम की छुट्टियों में अर्थात् कार्तिक शु० ९, १० और ११ सोम, मङ्गल तथा बुधवार सं० १९७२ तदनुसार ता० १५, १६ और १७ नवम्बर सन् १९१५ ई० को हो।

३—आगामी सम्मेलन में उपस्थित किये जाने वाले लेखों की सूची बनाने के लिये स्वागत-कारिणी-सभा और सदस्यों के यहाँ से

आयी हुई सूचियाँ पढ़ी गयीं और सर्वसम्मति से निम्न-लिखित विषय सूची स्थिर हुई।

षष्ठ-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के लिए स्थायी-समिति-द्वारा निर्वाचित लेखों के लिये विषयसूची।

(१) प्राचीन भारतवासियों में गणित की उन्नति और उसकी शिक्षा-प्रणाली।
(२) हिन्दी और बङ्गला का सम्बन्ध।
(३) हिन्दी और गुजराती का सम्बन्ध।
(४) हिन्दी और मराठी का सम्बन्ध।
(५) हिन्दी का सङ्गीत-साहित्य।
(६) पञ्जाब और देहली प्रान्तों में हिन्दी-प्रचार करने के उपाय।
(७) सम्मेलन-द्वारा स्थापित हिन्दी-परीक्षाओं की उपयोगिता और उनके कार्य्यक्रम पर विचार।
(८) हिन्दीपत्र-सम्पादन और उसमें सुधार की अपेक्षा।
(९) हिन्दीभाषा-भाषियों और हिन्दी-प्रेमियों का सम्मेलन के प्रति कर्त्तव्य।
(१०) हिन्दीभाषा के लिङ्गभेद पर विचार।
(११) भारतवर्ष में हिन्दी-प्रचारिणी-सभायें, हिन्दी पुस्तकालय, हिन्दी यन्त्रालय और हिन्दी-समाचार-पत्र।
(१२) देवनागरी लिखने में नवीन चिन्हों की आवश्यकता।
(१३) वर्त्तमान हिन्दी का झुकाव।
(१४) कौटिल्य शास्त्र में शासन-पद्धति।
(१५) हिन्दी में गद्य-काव्य।
(१६) हिन्दी में शिशु-शिक्षा सम्बन्धी-पुस्तकें।
(१७) भारतीय-राष्ट्र-निर्माण में हिन्दी का महत्त्व।
(१८) सूरदास
(१९) तुलसीदास
(२०) केशवदास } इन लेखों में ग्रन्थों का परिचय और काव्यों की आलोचना होनी चाहिए।
(२१) हिन्दी-लेख-प्रणाली के विवादग्रस्त विषयों पर विचार।
(२२) शाला, पाठशाला, महाविद्यालयों आदि में शिक्षा का माध्यम हिन्दी होने की आवश्यकता।

(२३) हिन्दीभाषा की कविता की अन्य भाषाओं की कविताओं से तुलना और उसकी भविष्यकाल में उन्नति करने का विचार।

(२४) नागरीलिपि की अन्य लिपियों से तुलना, नागरी के गुण-दोषों का विवेचन तथा उसको सार्वदेशिक उपयोगी-बनाने की सम्भावना।

(२५) हिन्दीभाषा और देवनागरी-लिपि की उत्पत्ति का काल तथा दोनों के परस्पर सम्बन्ध का इतिहास।

(२६) राष्ट्रसुधार में नाटकों का कार्य्य।

(२७) स्त्रीशिक्षा और हिन्दीसाहित्य।

(२८) भविष्य में यह सम्मेलन विस्तृत और अधिकतर उपयोगी हो, इसके लिए क्या करना चाहिये।

(२९) हिन्दी में असभ्यसाहित्य तथा उसके रोकने का प्रयत्न।

(३०) देशी रियासतें तथा हिन्दीभाषा।

(३१) हिन्दीभाषा में संस्कृत के समस्यन्त-पदों के प्रयोगों की मर्य्यादा।

(३२) हिन्दी-साहित्य को अलङ्कृत करने का यत्न कैसे करना चाहिए।

(३३) राज्य-व्यवहार, व्यापार-व्यवहार आदि में हिन्दी।

(३४) मुसलमान और हिन्दी।

(३५) प्रान्तीय सम्मेलनों से लाभ और उनके सङ्गठन की आवश्यकता।

(३६) वैज्ञानिक, पदार्थविद्या, इतिहास, भूगोल आदि उपयुक्त विषयों के प्रामाणिक ग्रन्थोंके अनुवाद की आवश्यकता।

४—निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किया गया और सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ—

"प्रोफिशियन्सी परीक्षाओं की स्कीम के विवरणपत्र के मसौदे में गत अधिवेशन के मन्तव्य के अनुसार पुनर्विचार-द्वारा आवश्यक परिवर्तन करके अन्तिम मसौदा* समिति स्वीकार करती है तथा सभापति महोदय से प्रार्थना करती है कि वे इसे शीघ्र गवर्नमेंट की सेवा में भेजदें।"

*जिसका अनुवाद इसी अङ्क में दिया गया है [ सं० ]।

५—गत अधिवेशन के मन्तव्यानुसार परीक्षासमिति की नियमावली में नियमपरिवर्तन के विषय में नियमानुसार आधे से अधिक सदस्यों की सम्मतियाँ न आने के कारण परिवर्तन नहीं किया जा सका।

६—नागरीप्रचारिणी-सभा-देवरिया, ज़िला गोरखपुर का सम्मेलन के साथ सम्बद्ध होने के लिए प्रार्थना-पत्र उपस्थित किया गया और सहर्ष स्वीकृत हुआ।

७—पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल ने प्रस्ताव किया कि "सम्मेलन की ओर से अवैतनिक निरीक्षक नियत किये जावें जो सम्बद्ध-सभाओं की कार्य्य-प्रणाली का निरीक्षण करके सम्मेलन को सूचना दिया करें तथा अन्य स्थानों में भी हिन्दी प्रचार करने के उपाय करते रहें और ऐसे निरीक्षकों का मार्गव्यय रेलवे के इन्टरक्लाश के हिसाब से दिया जावेगा"। यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

८—पं० द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी ने प्रस्ताव किया कि भविष्य में जो सभायें सम्मेलन से सम्बद्ध होने की प्रार्थना करें उनसे उनकी स्थिति का निदर्शक निम्नलिखित विवरणपत्र भरवाकर मँगवा लिया जाया करे—

(१) सभा का नाम।
(२) स्थान और पूरा पता।
(३) पदाधिकारियों तथा सभासदों की नामावली।
(४) सभा के उद्देश्य और नियमावली की एकप्रति।
(५) आर्थिकस्थिति।
(६) सभा का साधारण कार्य्यक्रम।
(७) पिछली रिपोर्टें, यदि छपी हों अथवा पिछले कार्य्यों का सङ्क्षिप्त विवरण।

यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ और यह भी निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव अगले सम्मेलन में उपस्थित कराकर नियमावली में सम्मिलित कर दिया जावे।

९—पं० द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी ने प्रथमा परीक्षा वाले गणित के प्रश्न-पत्र पर "स्वदेशबान्धव" की टिप्पणी की ओर स्थायी समिति का

ध्यान आकर्षित किया और प्रस्ताव किया कि "परीक्षासमिति से अनुरोध किया जावे कि भविष्य में प्रश्नपत्रों को भलीभाँति देखकर परीक्षा के लिये निर्दिष्ट किया करे"। यह प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकृत हुआ।

१०—लाहौर के षष्ठहिन्दी-सहित्य-सम्मेलन की स्वागत-कारिणी सभा के मन्त्री पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य ने स्थायी-समिति तथा उसके प्रधान मन्त्री पर स्वागत-कारिणी-समिति के सङ्गठन में विलम्ब करवा देने के विषय में जो लेख समाचारपत्रों में प्रकाशित किया था उसके सम्बन्ध में सब चिट्ठियाँ और कागज़पत्र पढ़े गये। सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा का ऐसा लेख वास्तविक वृत्त से परिचित न होने के कारण लिखा जाना प्रतीत होता है। क्योंकि ४ फ़रवरी सन् १९१५ ई० को स्थायीसमिति के कार्य्यालय से लाहौर के दो सज्जनों के पास नियमावली भेजी गयीं थीं। उस के बाद कार्य्यालय में लाहौर से कोई माँग नियमावली के लिये नहीं आयी। प्रत्युत जिन सज्जनों ने निमन्त्रण दिया था कार्य्यालय से भेजे हुए पत्रों के उत्तर तक उनके यहाँ से नहीं आये। प्रधानमन्त्री स्वयं लाहौर गये थे और वहाँ के लोगों से मिले थे। लाला गोपाल चन्द्र से मिलने के बाद प्रधान-मन्त्री कई सज्जनों से मिले थे। उन सज्जन से भी मिले थे जिनके पास कार्य्यालय से नियमावली भेजी गयी थी और जो लाहौर के एक हिन्दीपत्र के सम्पादक थे। प्रधानमन्त्री ने उन से कहा कि बाबू गोपालचन्द्र ने नियमावली माँगी है। तब उक्त सज्जन ने उत्तर दिया कि मेरे पास नियमावली है, मैं लाला गोपालचन्द्र को दिखला दूँगा। और इसके बाद प्रधानमन्त्री लाहौर के एक प्रसिद्ध नेता से मिले थे। जिन सज्जन के पास नियमावली थी वे भी साथ थे। और एक अन्य हिन्दीपत्रिका के सम्पादक भी थे। बातचीत के बाद उन्हीं नेता के समक्ष यह स्थिर होगया था कि शीघ्रही सभा होगी। प्रधानमन्त्री लाहौर में अधिक ठहर न सकते थे, वे चले आये। वहाँ सभा न हुई और न किसी ने कुछ पत्र लिखा। कार्य्यालय से जब जुलाई के आदि में निमन्त्रणदाताओं में से तीन सज्जनों के नाम पत्र भेजे गये तब दो महाशयों ने याद दिलाने पर भी उत्तर न दिया

और एक तीसरे सज्जन ने लिखा कि "हम कुछ नहीं कर सकते, लाहौर वाले हमारे पत्र का उत्तर नहीं देते"। फिर जब प्रधान-मन्त्री ने मध्य-प्रदेश के सज्जनों से तारद्वारा जबलपुर का स्थान सम्मेलन के लिये निश्चय कर लाहौर वालों को तार दिया कि यदि आप लोग सम्मेलन नहीं कर सकते तो स्पष्ट उत्तर दें, हम दूसरा स्थान स्थिर करें, तब वहाँ सभा होकर स्वागत-कारिणी-समिति का सङ्गठन हुआ।

इस मन्तव्य में किसी सज्जन का नाम उनके चित्त को दुःखी न करने के लिये और पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा के इस अनुरोध के कारण कि उनके पत्र के उत्तर में किसी सज्जन का नाम प्रकाशित न किया जाय, नहीं प्रकाशित किया जारहा है।

सभापति को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई।

---

## परीक्षासमिति का पञ्चम अधिवेशन।

संयोजक जी की सूचनानुसार परीक्षासमिति का पञ्चम साधारण अधिवेशन भाद्रपद शुक्ल ११ सं० १९७२ रविवार ता० १९ सितम्बर सन् १९१५ ई० को ५ बजे सन्ध्या समय सम्मेलन कार्यालय में प्रारम्भ हुआ; जिसमें निम्न लिखित सज्जन उपस्थित थे—

(१) श्रीयुत पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी
(२) " पं० रामजीलाल शर्मा
(३) " ठाकुर शिवकुमार सिंह
(४) " बाबू गोपालनारायण सेनसिंह (गणक)
(५) " बाबू ब्रजराज बहादुर (संयोजक)

परीक्षासमिति के सम्मुख गणकजी ने प्रथमा परीक्षा का फल उपस्थित करते हुए कहा कि मध्यमा के कुछ परीक्षकों के पास से अभी तक फल नहीं आये हैं अतएव आज मध्यमा के फलपर विचार नहीं हो सकता। निश्चय हुआ कि जिन परीक्षकों के पाससे फल अभी तक नहीं आये हैं उनको तार द्वारा शीघ्र फल भेजने

के लिये सूचना दे दीजाय और मध्यमा के परीक्षा फल पर विचार का कार्य आगामी बैठक के लिये स्थगित रक्खा जाय। प्रथमा परीक्षा के फल पर विचार प्रारम्भ हुआ किन्तु अङ्कों का यथोचित सङ्कलन नहीं हुआ था इस कारण गणकजी की सम्मति से उसपर विचार करने के लिये दूसरा ( २०-६-१५ ) दिन निश्चय हुआ।

समिति में निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित हुए--

( १ ) बाबू पुरुषोत्तमदास जी टण्डन का यह प्रस्ताव कि— "मध्यमा परीक्षा के वैकल्पिक पाठ्यविषयों में वैद्यक न रक्खा जाय" उपस्थित किया गया और सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि मध्यमा परीक्षा में वैद्यक का रखना आवश्यक है।

( २ ) बाबू रामदास जी गौड़ का वह पत्र पढ़ा गया जिसमें उनका प्रस्ताव था कि "जिन परीक्षार्थियों ने इस वर्ष की परीक्षाओं के लिये शुल्क दिया था किन्तु परीक्षा में नहीं बैठ सके उनको उसी शुल्क के बदले में सन् १९७३ की परीक्षाओं में किस रीति से बैठने का अधिकार देना चाहिये" सर्वसम्मिति से निश्चय हुआ कि आज के विषयों में इस प्रस्ताव का विषय नहीं है इस कारण इस विषय पर आगामी बैठक में विचार किया जायगा।

( ३ ) पं० इन्द्रनारायण द्विवेदीजी का यह प्रस्ताव कि "जो परीक्षार्थी प्रथमा में एक या दो विषयों में अनुत्तीर्ण हुए हों उनको नियम के अनुसार केवल अनुत्तीर्ण विषयों में ही पुनः परीक्षा देनी होगी। केवल एक या दो विषयों के तैयार होने में उनको अधिक समय नहीं लग सकता और बहुत सम्भव है कि वे अपने अनुत्तीर्ण विषयों के साथ साथ मध्यमा की परीक्षा के लिए भी तैयार हो सकें। ऐसी दशा में यदि समिति उन लोगों के अनुत्तीर्ण विषय या विषयों की परीक्षा, मध्यमा की परीक्षा के लिये शुल्क भेजने की अन्तिम-तिथि के प्रथम ले लिया करे तो बड़ी सुविधा हो। और ऐसी परीक्षा के लिए केन्द्र एक मात्र प्रयाग रक्खा जाय जिसमें दोबारा परीक्षा की कठिनता अधिक न बढ़े" सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि यह विषय भी आगामी बैठक के लिए स्थगित रक्खा जाय।

भाद्रपद शुक्ल १२ सं० १९७२ सोमवार ता० २० सितम्बर सन् १९१५ ई० को ५॥ बजे सन्ध्या समय सम्मेलन कार्यालय में पुनः

कार्य प्रारम्भ हुआ और प्रथमा-परीक्षा का फल निश्चित हुआ। इस वर्ष की प्रथमा-परीक्षा में सब मिलाकर ५५ परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए हैं*। प्रथमश्रेणीमें ११, द्वितीयश्रेणी में १९ और तृतीयश्रेणीमें २५।

निश्चय हुआ कि प्रथमा-परीक्षा का फल हिन्दी के दैनिक तथा साप्ताहिक समाचार-पत्रों में प्रकाशनार्थ भेज दिया जाय। इति

---

# समालोचना

( लेखक श्रीमान् पं० धर्मनारायण द्विवेदी बुद्धिपुरी )

## सङ्क्षिप्त महाभारत—

श्रीयुत पं० राजाराम जी प्रोफ़ेसर डी० ए० वी० कालेज-लाहौर की बनायी भाषाटीका और बृहद्भूमिका सहित सङ्क्षिप्त-महाभारत का आदि पर्व इस समय मेरे सामने है। यह पुस्तक आर्षग्रन्थावली की अन्यतम पुस्तक है। प्रोफ़ेसर साहब ने अनेक आर्षग्रन्थों की भाषाटीका की है और प्रायः सभी टीकाओं के बदले में गवर्नमेंट और युनिवर्सिटी की ओर से आपको इनाम भी मिले हैं। पुस्तक डिमाई अठपेजी आकार के २६२ पृष्ठों की है और मूल्य केवल १।=) अधिक नहीं है। कागज़ अच्छा और छपाई भी साधारण है। पुस्तक की भूमिका २३ पृष्ठों की है। भूमिका में बड़े बड़े महत्व के विचार हैं। आपके मत से वास्तविक महाभारत की पुस्तक जिसे व्यास जी ने युद्ध के थोड़े ही समय बाद बनाया था २४००० श्लोकों में थी और इसी आधार पर आपने पूर्ण महाभारत में से केवल २४ सहस्र श्लोकों की टीका करना भी निश्चय किया है। आपके मत से हम सहमत नहीं क्योंकि महाभारत व्यासकृत १ लक्ष श्लोकों की है न कि २४ सहस्र श्लोकों की। जिस स्थान पर २४ सहस्र की चर्चा है उसी स्थान पर स्पष्ट रूप से कहा गया है कि उपाख्यानों के बिना केवल इतिहास भाग २४ सहस्र श्लोकों का है और उपाख्यानों के सहित उसकी सङ्ख्या १ लक्ष श्लोक है ×। स्थान स्थान पर इस बात का प्रमाण मिलता है

---

* उत्तीर्ण परीक्षार्थियों की नामावली स्थानान्तर में दी गयी है।

× देखो—श्रीवेङ्कटेश्वरप्रेस-बम्बई की छपी पुस्तक आदिपर्व के १०१ और १०२ वें श्लोक ( सं० )

कि महाभारत के एक लक्ष श्लोक हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने राजा भोज की एक कल्पित कथा के आधार पर मूल महाभारत के १०००० श्लोक लिखे हैं। प्रोफ़ेसर रामदेव जी गुरुकुल काङ्गड़ी ने अपने भारतवर्ष के इतिहास में भी २४००० श्लोक ही माने हैं किन्तु मेरी समझ में नहीं आता कि ये महानुभाव क्यों ऐसी बे शिर पैर की बातें लिखते हैं। यदि १ लक्ष श्लोक की बात को आप नहीं मानते तो उसी के साथ में लिखे हुये श्लोक के आधार पर २४००० श्लोक कैसे मान सकते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि देश का इतिहास आँख के सामने रख कर यदि महाभारत जैसी बड़ी पुस्तक पर विचार करें तो यह निस्सन्देह मानना पड़ता है कि इसमें के अनेक विषय लोप कर दिये गये होंगे और अनेक विषय मिला दिये गये होंगे। इस विषय में समय समय पर टीकाकारों ने भी विचार किया है। किन्तु कुछ थोड़े से पुनरुक्तस्थलों को छोड़ कर आज यह निर्णय करना कठिन ही नहीं असम्भव है कि इतना अंश क्षेपक है। फिर भी यह निश्चय है कि मूल महाभारत की पुस्तक एक लक्ष श्लोकों की थी और २४००० श्लोकों की कल्पना भ्रमपूर्ण है।

रचना काल पर आपने स्वतन्त्र विचार नहीं किया है। छै प्रकार से लोगों के मत दिखला दिये हैं। मेरे विचार में यह मुख्य विषय था कि जिस पर प्रोफ़ेसर साहब को विशेष रूप से ध्यान देना चाहिये था। जो मत दिखलाये गये हैं वे भी अधूरे रह गये हैं इस लिये रचना काल का निर्णय कुछ भी नहीं हो सका है।

अनुवाद अच्छा हुआ है किन्तु अपने मनमाने ४७ अध्यायों में जो यह आदिपर्व पूरा किया गया है सो ठीक नहीं हुआ। इससे लाभ के बदले हानि होने की सम्भावना है। आपने क्षेपक का जो सिद्धान्त निकाला है वह भ्रमपूर्ण है। जिसे आप सङ्ग्रहकर्ताओं की रचना बतला कर छोड़ रहे हैं वह अंश ग्रन्थ की भूमिका और परिशिष्ट के रूप में मूल ग्रन्थकर्ता की ही रचना है। इसी प्रकार हमारे ऐतिहासिक और पौराणिक संस्कृत ग्रन्थों में भूमिका और परिशिष्ट का होना पाया जाता है। उपाख्यानों की रचना भी प्रायः ब्राह्मण ग्रन्थों के आधार पर स्वयं व्यास जी ने अथवा जिसे हम महाभारत का मूलकर्ता मानें उसीने की है।

पुस्तक अच्छी होने पर भी खोज और इतिहास की दृष्टि से भ्रमोत्पादक है। हम आशा करते हैं कि इसपर हमारे अन्य विद्वान भी विचार करेंगे। क्योंकि इस एकमात्र इतिहासरत्न-महाभारत में यदि ऐसी गड़बड़ी मचेगी तो बड़ा अनर्थ होने का भय है। शुभम्।

## मिश्रबन्धु-विनोद।

इस पुस्तक के प्रथम भाग की समालोचना पत्रिका के पाठक पढ़ चुके हैं। आजकल इसकी समालोचना दैनिक भारतमित्र में विस्तृत रूप से निकल रही है। यदि दैनिक-भारतमित्र के सञ्चालक उसे पुस्तकाकार में छपावें तो बड़ा उपकार हो और हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन अपनी परीक्षा-समिति के पाठ्य-पुस्तकों में जिस प्रकार मिश्र-बन्धुविनोद को रक्खा है उसी प्रकार उसीके साथ साथ उसकी समालोचना को भी पाठ्य-पुस्तकों में रख दे। जिसमें गुण का अंश तो मिश्रबन्धुविनोद से परीक्षार्थी ग्रहण करलें और भ्रमपूर्ण विषयों से बच सकें। मेरा विश्वास है कि मिश्रबन्धु भारतमित्र की समा-लोचना पढ़कर अपनी प्रसन्नता प्रकट किये बिना न रहेंगे क्योंकि समालोचक ने खूब ही विचारपूर्ण प्रायः निष्पक्ष समालोचना की है।

स्थायी-समिति का एक सभा

## हिन्दी-संसार।

(१) ता० १३-६-१५ के अलमोडा अखबार में श्री पण्डित श्री कृष्णपन्त जी ने 'हिन्दी कैसी हो' इस नाम का लेख लिखा है। इस लेख में समाचार पत्रों की हिन्दी-भाषा पर विचार है। लेख उत्तम और हमारे सम्पादक समाज के ध्यान देने योग्य है। प्रायः देखा जाता है कि हमारे सहयोगी अपने पत्रप्रेरकों और लेखकों की भाषा पर ध्यान नहीं देते। इस विषय में हमें सरस्वती के माननीय सम्पादक जी से शिक्षा लेनी चाहिये और यथा सम्भव अपने पत्रकी भाषा में उसके भावोंको दिखला देना चाहिये।

इसी पत्र में नैनीताल में नाटक का प्रसङ्ग लाकर अश्लीलता पर एक लेख था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि नाटकों से देश का सुधार हिन्दी-भाषा का प्रचार आदि सब कुछ हो सकता है किन्तु

नाटक-मण्डलियों में प्रायः अनेक अश्लीलता अथवा इसी प्रकार के अन्य दोषों की बातें सुनने में आती हैं अतएव नाटक-मण्डलियों को बड़ी सावधानी की आवश्यकता है।

(२) सितम्बर सन् १६१५ ई० की हितकारिणी पत्रिका में वर्नाक्यूलर प्राइमरी और मिडिल स्कूलों में पाठ्य पुस्तकें इस नाम का एक लेख प्रकाश हुआ है। लेख बड़े ही महत्व का है। सम्मेलन को चाहिये कि इस विषय में अपनी समालोचक समिति से एक विवरण तैयार कराके प्रबल आन्दोलन करावे। उसी अङ्क में "कालिदासीय रामगिरि का झगड़ा" इस नाम का लेख भी बहुत ही उत्तम और इतिहास एवं खोज के प्रेमी विद्वानों के ध्यान देने योग्य है।

(३) मनोरञ्जन आरा के भाग ३ सं० १–२ में मीमांसादर्शन शीर्षक एक लेख श्रीयुत शरच्चन्द्र घोषाल एम० ए० बी० एल० का बहुत ही विचार पूर्ण निकला है। उसी अङ्क में रामचरित उपाध्याय लिखित सीता-सन्देश नाम की छोटी सी कविता स्रग्धरा छन्द में मेघदूत के ढङ्ग की अच्छी है। प्रायः सभी छन्दों के अन्त का चरण उपदेशमय है। विशेष कर १–६ और ६, ११, १२ तथा १४–२० सङ्ख्या वाले छन्दों के अन्तिम चरण बहुत ही अच्छे हैं।

(४) मानभूम ज़िले के सदर सबडिविजन के स्कूलों और कचेहरियों में हिन्दी को भी स्थान देने के लिये वहाँ के कुछ सज्जनों ने प्रार्थना की थी।.........वहाँ के बङ्गालियों ने उसके विरुद्ध प्रार्थना की। अनन्तर बाबू शरच्चरण सेन ने विहार व्यवस्थापक सभा में इसके सम्बन्ध में प्रश्न किया। उत्तर में सरकार की ओर से कहा गया कि सदर में हिन्दी का प्रचार करना अनावश्यक है। हम नहीं जानते इस अनावश्यकता का कारण क्या है क्योंकि सरकार ने उसे बताने की कृपा नहीं की (दै० भा० मित्र सं० ४ अं० १४८)

हमारे बङ्गाली भाइयों को चाहिये कि वे राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि नागरी का विरोध करके विहारियों को व्यर्थ ही हानि पहुंचाने और उन से वैमनस्य बढ़ाने की सी भूल न करें। और साथ ही विहारियों को चाहिये कि वे अपने प्रबल आन्दोलन से यह दिखला दें कि सदर में वस्तुतः हिन्दी का प्रचार करना अत्या-

वश्यक है। सरकार का उत्तर ब्रह्मवाक्य नहीं है। यदि हमको सचमुच आवश्यकता होगी तो सरकार को झख मार के हिन्दी का प्रचार करना ही पड़ेगा।

(५) दतिया राज्य में हिन्दी का सम्मान। जयाजीप्रताप में हमें यह पढ़ कर अत्यन्त आनन्द हुआ है कि दतिया के वर्तमान महाराज श्रीमान लोकेन्द्रगोविन्दसिंहजी ने अपने राज्य के समस्त कागज़पत्रों का हिन्दी-भाषा और देवनागरी लिपि में लिखने के लिये आज्ञा दे दी है। अवश्य ही महाराज को हम इस कर्तव्य-पालन के लिये बधाई देते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वे अन्यान्य हमारे हिन्दू राजाओं को सुबुद्धि दें कि वे उक्त महराज का अनुकरण करके अपना कर्तव्य पालन करें।

(६) मिथिलामिहिर और हिन्दी भाषा। मिथिलामिहिर दरभङ्गा से निकलने वाला साप्ताहिक पत्र है। कुछ दिनों से इसका कुछ अंश मैथिलिभाषा और देवनागरी-लिपि में प्रकाश होता है। पहले इसकी भाषा केवल हिन्दी थी। यद्यपि इस प्रकार के पत्रों से नागराक्षर का प्रचार होना कहा जा सकता है तथापि हिन्दी-भाषा जानने वाले मैथिलभाइयों को राष्ट्रभाषा हिन्दी की ओर से मुख मोड़ाना ठीक नहीं प्रतीत होता। हम नहीं समझते कि जब यह पत्र केवल हिन्दी-भाषा में छपता था तब उससे क्या हानि होती थी। हमसे एक मैथिल विद्वान से बातें हुईं तो वे कहने लगे कि ऐसा कोई पढ़ा लिखा मैथिल न होगा जो हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि को समझ और पढ़ न सकता हो। ऐसी दशा में हम आशा करते हैं कि मिथिलामिहिर के सञ्चालकगण पुनः अपनी चाल को पलट देंगे और अपने पत्र को एकदेशीय भाषा का पत्र न बना कर सर्वदेशीय बनाने का उद्योग करेंगे।

(७) सिन्धप्रान्त में हिन्दी। सिन्धप्रान्त-कराँची का हिन्दी-साहित्य भवन, अपने प्रान्त में हिन्दी का अच्छा काम कर रहा है। अभी भाद्रकृष्ण ८ और ९ रवि एवं सोमवार को इसका तृतीयवार्षिकोत्सव निरुक्तभूषण स्वामी श्रीअद्वैतानन्द सरस्वती जी के सभापतित्व में मनाया गया। भवन के मन्त्री श्रीयुत वल्लभदास जी उत्साही पुरुष हैं हम आशा करते हैं कि आप भवन की उन्नति करने

में कोई उद्योग उठा न रक्खेंगे।

(८) हिन्दी और सभायें। हमारे देश का सौभाग्य है और हिन्दी संसार के लिये यह गौरव की बात है कि आज हमारी जितनी जातीय अथवा धार्मिक आदि सभायें हैं उन समस्त सभाओं (कुछ को छोड़ कर) के कार्यविवरण तथा उनके मुखपत्र—मासिकपत्र हिन्दी भाषा और देवनागरी अक्षरों में ही निकलते हैं।

# सम्पादकीय-विचार

## सम्मेलन का समय

लाहौर निवासियों की सुविधा और आग्रह की ओर ध्यान देकर स्थायी-समिति ने षष्ठ अधिवेशन का समय मुहर्रम की छुट्टी में कार्तिक शुक्ल ९, १० और ११ सोम, मङ्गल एवं बुधवार सं० १९७२ तदनुसार १५, १६ और १७ नवम्बर को निश्चय किया है। मुहर्रम की छुट्टी में लोगों का मत है कि अधिक प्रदेशों के लोग सम्मेलन में न जा सकेंगे। भारतमित्र ने स्पष्ट लिखा है कि बङ्गाल और विहार के लोगों का जाना असम्भव है। दूसरा समय बड़े दिन की छुट्टी का हो सकता था किन्तु इस समय जिन लोगों के नाम सभापति के सम्बन्ध में लिये जा रहे हैं उनमें अधिकांश वेही लोग हैं जिनका काङ्गरेस में—विशेष करके इस वर्ष की काङ्गरेस में जाना आवश्यक समझा जाता है और बड़े दिन की छुट्टी में काङ्गरेसभी होगी। ऐसी अवस्था में समय पर पुनः विचार करते हुये हम यही कहते हैं कि सभापति के विचार से ही अब समय के लिये पुनः विचार करना उत्तम होगा। समय के सम्बन्ध में तो मेरी यही सम्मति है कि सदा के लिये सम्मेलन की कोई तिथि नियत कर दी जाँय। चाहे उस समय में सरकारी कार्यालयों में तातील हो वा नहो इस बात का विचार बिलकुल छोड़ दिया जाय। क्योंकि जितने हमारे हिन्दीप्रेमी भाई सम्मेलन में सम्मिलित होते हैं उनमें अधिकांश ऐसे ही हैं कि यदि सम्मेलन के लिये उन्हें सरकारी कामों से अवकाश लेना पड़े तो वे बड़ी प्रसन्नता से ले सकते हैं और इस प्रकार हम लोगों की सम्मेलन सम्बन्धी निज की तातील ही पृथक् हो जायगी अन्यथा एक न एक झगड़ा लगा ही रहेगा।

## सभापति

सभापति के सम्बन्ध में अब तक जितने नाम लिये गये हैं उनमें प्रायः नीचे लिखे अनुसार पाँच प्रकार के लोग हैः—

( १ ) हिन्दी साहित्य के विद्वान और सेवक।
( २ ) हिन्दी से सहानुभूति रखने वाले राजे महाराजे।
( ३ ) हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानने वाले तथा हिन्दी के सहायक राजनैतिक नेता।
( ४ ) हिन्दी जानने वाले अङ्गरेज़ी तथा संस्कृत के योग्य विद्वान
( ५ ) हिन्दी से सहानुभूति रखने वाले मुसलमान भाई।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि लाहौर का सम्मेलन जैसी हम लोगों को आशा थी एक अपूर्व सम्मेलन होता, यदि बीच की कुछ दुर्घटनायें न हुई होतीं फिर भी हमारी आशा कम नहीं हुई है। अभ्युदय ने जैसी सम्मति दी है कि सफलता के लिये सभापति का व्यक्तित्व भी एक प्रधान कारण है अक्षरशः सत्य है। अतएव लाहौर सम्मेलन के अनुरूप यदि सभापति का चुनाव हुआ तो सम्मेलन की सफलता में कुछ भी सन्देह नहीं है।

जहाँतक हमने विचार किया सभापति के लिये वे ही उपयुक्त होंगे जिनमें नीचे लिखे अनुसार आवश्यक और वैकल्पिक गुण हों—

( १ ) हिन्दी में व्याख्यान देने की योग्यता ( आवश्यक )
( २ ) हिन्दी के प्रति राष्ट्रभाषा की ममता "
( ३ ) प्रतिभावान् "
( ४ ) सम्मेलन में धार्मिक और राजनैतिक विवादों से विराग
( ५ ) राजे, महाराजे, धनी मानी ( वैकल्पिक )
( ६ ) किसी भाषा के योग्य विद्वान "
( ७ ) राजनीति, धर्मनीति अथवा समाजनीति के नेता "

सारांश यह कि सभापति के पद के लिए प्रधान पाँच गुणों की आवश्यकता है 'प्रतिभा, राष्ट्रभाषा ( हिन्दी ) की ममता, हिन्दी में वक्तृत्वशक्ति, सम्मेलन के क्षेत्र में धार्मिक और राजनैतिक विवादों से विराग तथा ३ वैकल्पिक विषयों ( राज्याधिकार, विद्याधिकार अथवा नेतृत्वाधिकार ) में से किसी भी एक विषय की योग्यता।

इस प्रकार के सर्वगुणसम्पन्न महानुभावों की हमारे सौभाग्य से देश में कमी नहीं है। किन्तु लाहौर के लिये उक्त तीन वैकल्पिक गुणों में से किस गुण वाले महानुभाव की आवश्यकता है इस बात को लाहौर की स्वागत-कारिणीसभा जितना विचार सकेगी उतना हम नहीं विचार सकते। स्थायी-समिति ने कार्तिक कृष्ण २ रविवार सं० १९७२ (२४-१०-१५) को सभापति के पाँच नामों की सूची बनाने का निश्चय किया है। हम आशा करते हैं कि इस बीच में हमारे हिन्दीप्रेमी भाई अपना अपना मत प्रकाश करके उसकी सहायता करेंगे।

## विषय-सूची

इसबार के सम्मेलन की विषयसूची बहुत बड़ी है। जितना ही थोड़ा समय है विषयसूची उतनी ही अधिक बड़ी है। लोग कहते हैं कि यदि एक एक विषय के एक एक भी लेख आजायँ तो स्वागतकारिणी सभा को उनका छपाना असम्भव हो जाय और एक बहुत बड़ा पोथा तैयार हो जाय। अब तक जितनी लेखमालायें छपीं हैं उन सब में प्रयाग की लेखमाला बड़ी है किन्तु यदि सभी विषयों पर लेख लिखे जायँगे तो लाहौर का लेख माला उसको भी मात कर देगी। मेरे विचार में स्थायीसमिति ने लम्बी सूची बनाने में भूल नहीं की यदि छोटी सूची बनायी जाती तो सम्भव था कि इन थोड़े विषयों पर लेख लिखने वाले विद्वान् कम मिलते और छोटी से भी छोटी लेखमाला न तैयार हो सकती। लम्बी सूची होने से विषय अधिक आगये हैं और अधिक लोग उसमें योग दे सकेंगे और अन्य वर्षों की अपेक्षा लेखमाला छोटी न रह सकेगी। सूची के विषय भी कोई अनावश्यक नहीं है।

## स्वागतकारिणी-सभा और उसका विवरण

आतिथ्यसत्कार में स्वागतकारिणी सभाओं को अधिक व्यय करना पड़ता है अतएव सम्मेलन के पश्चात् स्वागतकारिणी-सभायें धन हीन हो जातीं हैं और नियम २४ के अनुसार लेखों और सम्मेलन के विवरण का छपाना स्वा० का० सभा का ही काम है। विवरण के दोनों भाग छपाने में व्यय भी कम नहीं होता। साथ ही

यह भी अनुभूत बात है कि अधिवेशन के हो जाने पर कार्यकर्ताओं में उत्साह भी शेष नहीं रह जाता और बचनदत्त चन्दे की रक़में भी प्रायः बचनदत्त ही रह जाती हैं, उनके हस्तगत होने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होता। ऐसी दशा में बड़ी गड़बड़ी होती है। फिर सबसे अधिक कठिनाई इस बात की होती है कि निर्धन स्वा. का. सभायें अपना विवरण समय पर छपा नहीं सकतीं। भागलपुर और लखनऊ की स्वागतकारिणी सभायें इसके उदाहरण हैं। अतएव मेरी सम्मति यह है कि सारी स्वागतका० सभाओं को चाहिये कि वे वचनदत्त चन्दे की आशा पर अपनी धूमधाम न किया करें। उनके हस्तगत जितना धन हो उसमें से विवरण छपाने आदि के समान आवश्यक खर्च के लिये धन सब से प्रथम पृथक् करदें और शेष धन के अनुसार अधिवेशन में व्यय किया करें। अन्यथा दो दो तीन तीन वर्ष लों विवरण न छपने से लोगों की दृष्टि में उनका किया कराया सब बराबर हो जाता है और ऊपर से उनपर आलस्य का दोष मढ़ा जाता है। मेरे विचार में स्वा० का० सभाओं के हाथ में विवरण छपाने का भार ही न होना चाहिये और नियम २४ के अन्तिम भाग **"इसी सभा का काम होगा"** के स्थान में **"स्थायी-समिति का काम होगा किन्तु छपाई आदि का जो खर्च होगा वह कुल धन स्वा. का. सभा अपने विवरण के साथ हीउसे देगी"** कर देना चाहिये। ऐसा करने से विवरण के छपने में भी विलम्ब न होगा और सभी विवरण की पुस्तकें एक प्रकार की छपेंगी। स्थायी-समिति के कार्यकर्ता स्थायी होते हैं किन्तु स्वा०का०सभा के कार्यकर्ता स्थायी नहीं होते। अतएव स्वा०का० सभा के आलस्य का बोझ पीछे से कुछ ही व्यक्तियों पर पड़ता है जिसमें उनको बड़ी कठिनाई होती है। हम आशा करते हैं कि स्थायीसमिति मेरे इस आवश्यक प्रस्ताव की ओर ध्यान देगी और आगामी सम्मेलन के समय में नियम २४ में परिवर्तन कराने के लिए उद्योग करेगी।

## उपसमितियाँ

(१) प्रोफ़िशियन्सी-परीक्षाओं की उपसमिति ने अपना कार्य

पूरा कर दिया। उसने जो शिक्षा-क्रम का मसौदा तैयार किया है और जिसे स्थायीसमिति ने स्वीकार कर के गवर्नमेंट के पास भेजा है उसका अनुवाद इसी अङ्क में दिया जाता है। अवश्य ही इसके लिये हम उपसमिति के सभासदों को—विशेष कर बाबू रामदास जी गौड़ एम० ए० महाशय को धन्यवाद देगें कि उन्होने बड़े परिश्रम से इस आवश्यक कार्य्य को पूरा किया है। किन्तु उस मसौदे के छठे नियम की कोई आवश्यकता न थी अतः हम उस नियम के अनुकूल नहीं है।

(२) परीक्षासमिति का कार्य भी उत्तमता से चल रहा है। इस वर्ष के उत्तीर्ण परीक्षार्थियों की नामावली अन्यत्र आप पढ़ेंगे। ठीक ठीक अब तक यह ज्ञात नहीं हुआ कि अधिकांश परीक्षार्थी शुल्क दे कर भी परीक्षा में सम्मिलित क्यों नहीं हुये। गत अङ्क में हमने लिखा था कि प्रथमा में केवल ७३ परीक्षार्थी सम्मिलित हुये हैं किन्तु अब ज्ञात हुआ है कि वस्तुतः ७८ सम्मिलित हुये थे और उन में ५५ उत्तीर्ण हुये हैं। विशेष हर्ष की बात यह है कि उत्तीर्णों की इस सङ्ख्या में ४ देवियों के नाम हैं। वे देवियाँ सब की सब प्रयाग की थीं। इनकी परीक्षा का केन्द्र आर्यकन्या-पाठशाला मुट्ठीगंज-प्रयाग था और परीक्षार्थिनियों में उक्त पाठशाला की प्रधान अध्यापिका श्रीमती यशोदादेवी का नाम भी है। अवश्य ही अन्यान्य कन्या पाठशालाओं को हमारी इस अग्रगामिनी आर्यकन्यापाठशाला का अनुकरण करना चाहिये। मध्यमा में १५ में से १० परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुये हैं ६ प्रथम श्रेणी में और ४ द्वितीय श्रेणी में।

परीक्षा-समिति के प्रश्नपत्र और उनपर परीक्षकों तथा संयोजक जी की सम्मतियाँ आगामी अङ्क में दी जायँगी।

(३) समालोचक-उपसमिति। जहाँ तक मुझे ज्ञात है इसके संयोजक पं० रामजीलाल शर्मा ने अब तक कुछ कार्य प्रारम्भ ही नहीं किया है। हाँ इस समिति के सभ्यों के नाम एक सरक्यूलर निकला था कि "राम कहानी" के सम्बन्ध में अभी तक आप लोगोंने अपनी सम्मति नहीं दी, किन्तु सभापतिजी की आज्ञा है कि लौटती डाक से अपनी सम्मति भेजदें। इस विषय में लोगों की राय है कि संयोजकजी को ही लिखा पढ़ी करनी चाहिये थी। सभापति महाराज भी

समिति के एक साधारण सभ्य हैं अतएव उन्हें इतना कष्ट न उठाना चाहिये। अधिक से अधिक उनको चाहिये कि वे सभापति की योग्यता से समिति के संयोजक को लिखें और संयोजक अन्य सभासदों से पूछें? क्योंकि कार्य नियमानुसार होना चाहिये समिति को इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये कि जिस रामकहानी का प्रस्ताव लखनऊ के सम्मेलन में से उठा लिया गया था और स्थायी समिति ने भी जिसके लिए सम्मति नहीं दी थी क्या समिति को उसी रामकहानी की ही कहानी कहनी चाहिये? समिति को चाहिये कि वह स्कूल की सभी पाठ्य पुस्तकों को एक दृष्टि से देखे, राम-कहानी भी उसमें आही जायगी, अन्यथा लोगों को भ्रम होता है कि किसी कारणविशेष से ही राम-कहानी पर लोगों के दाँत लगे हुए हैं। हम आशा करते हैं कि हमारे मित्र पं० रामजीलाल शर्मा अपने कर्तव्य की ओर ध्यान देंगे और समिति को आगे चलाने के लिये उद्योग करेंगे।

(४) हिन्दी प्रचारार्थ प्रतिनिधिवर्ग-समिति के संयोजक बाबू भगवान दासजी हालना अपनी समिति को कार्यरूप में लाने के लिये विचार कर रहे हैं आशा है कि हमें इस समिति के शुभ कार्यों का विवरण प्रकाश करने का अवसर शीघ्र ही मिलेगा।

दुःख के साथ कहना पड़ता है कि शेष ७ समितियों के कुछ भी समाचार हमें आज तक नहीं मिले। अवश्य ही हमारी स्थायी-समिति को चाहिये कि वह अपनी उपसमितियों से लिखा पढ़ी करके कार्यविवरण प्राप्त करे।

## सम्बद्ध-सभायें

अब तक नियम ३—(३) के अनुसार सम्मेलन की सम्बद्ध सभायें २४ हैं। नामावली के देखने से ज्ञात होता है कि उसमें 'बङ्गाल, बिहार, अवध, युक्तप्रान्त, राजपूताना और पञ्जाब' की सभाओं के अतिरिक्त 'बम्बई, बरार, मध्यप्रान्त, मद्रास' आदि भारत के दक्षिणीय प्रान्तों की सभाओं की चर्चा नहीं है। क्या इन दक्षिणीय प्रान्तों में हमारी नागरी प्रचार का उद्देश्य रखने वाली सभायें नहीं हैं? और यदि हैं तो क्या वे सम्मेलन से सम्बद्ध होना अपना कर्तव्य नहीं समझतीं? ऐसी दशा में हमारा दक्षिणीय भारत सम्मेलन के प्रभाव

से शून्य प्रतीत होता है। हमारे दक्षिण भारत के हिन्दी-प्रेमीभाइयों को विशेष कर उन प्रान्तों के स्थायी-समिति के सभासदों को चाहिये कि वे अपनेयहाँ की सभाओं को सम्मेलन से सम्बद्ध करावें ऐसा करने से उन सभाओं का गौरव बढ़ेगा और उनके द्वारा सम्मेलन अपने उद्देश्यों को विस्तृत क्षेत्र में फैला सकेगा। स्थायी-समिति को भी चाहिये कि वह उन प्रान्तों में अपने उपदेशक भेजकर सभायें स्थापित करावे और जो सभायें विद्यमान हैं उनको सम्मेलन से सम्बद्ध कराने का प्रबन्ध करे। यह कार्य अत्यावश्यक है।

## पदक और परीक्षा

जिन महानुभावों ने परीक्षोत्तीर्ण परीक्षार्थियों को पदक देने के वचन दिये थे उन में से कुछ लोगों के पत्र और पदक के लिये रुपये आ रहे हैं। इस विषय का विवरण कि किन किन परीक्षार्थियों को कौन कौन से पदक आदि उपहार मिले हैं हम आगामी सङ्ख्या में दिखलावेंगे। किन्तु वचन-दाताओं से एक वार हम फिर अनुरोध करते हैं कि वे शीघ्र कार्यालय से लिखा पढ़ी करके अपने सात्विक दान का निश्चय कर लें जिसमें सम्मेलन के प्रथम हम उनके प्रशंसनीय दान की सूचना पत्रिका में दे सकें।

गत अङ्क में भ्रम से हमने सं० २८ में पं० प्यारेलाल गौड़-मैनेजर नारायण-समिति और गौड़ हितकारी के दान के सम्बन्ध में १) की पुस्तक लिखा था किन्तु बात यों है कि हमारी प्रथमा और मध्यमा में जितने परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए हैं उन सबों को वे ॥=) मूल्य की आरोग्यता पद्धति पुस्तक की एक एक प्रति देंगे।

## अदालतों में नागरी प्रचार

सम्मेलन की ओर से इस समय ८ स्थानों में प्रचार का काम हो रहा है और ७ वैतनिक तथा २ अवैतनिक लेखक अदालतों में नागरी के कागजपत्र दाखिल कर रहे हैं। सम्मेलन को इसके लिये ५१) मासिकखर्च करना पड़ता है। नवम्बर सन् १९१४ ई० से अब तक (इसमें कहीं कहीं का जनवरी सन् १९१५

ई० से ही कार्य है ) सब मिला कर ११,६२२ कागज नागरी अक्षरों में लिख कर दाखिल किये गये हैं। इस कार्य में सब से अधिक सङ्ख्या कानपुर और उसके पीछे बाँदा की है। हमारे विचार में जहाँ जहाँ हमारी सम्बद्ध सभायें हैं कम से कम उन स्थानों में विशेष करके संयुक्त-प्रान्त और विहार के प्रान्तों में अवश्य ही अदालत में नागरी का प्रचार होना चाहिये। इसके लिये स्थायी-समिति को अपनी सम्बद्ध-सभाओं से लिखा पढ़ी करके निश्चय करना चाहिये कि वे सभायें इस कार्य में कितनी सहायता देंगी और सम्मेलन से वे कितनी सहायता लेना चाहती हैं। नागरी प्रचार का कार्य सन्तोष जनक नहीं है। केवल प्रयाग में कम से कम इतना कागज दाखिल होना चाहिये था जितना सर्वत्र का मिला कर दाखिल हुआ है। इस ओर हमारे मित्र बाबू नवाब बहादुर साहब वकील हाई-कोर्ट प्रयाग, विशेष रूप से ध्यान देरहे हैं हम आशा करते हैं कि अन्यान्य महाशय भी ध्यान देने की कृपा करेंगे। अवश्यही उपर्युक्त कागजों के दाखिला की सङ्ख्या पूरी नहीं है, हमारे प्रयाग ही में अधिकांश कागज निजकी तौर पर भी नागरी में ही दाखिल होते हैं सम्मेलन को जिनका पता नहीं है। फिर भी जहाँ पर सम्मेलन का प्रधान कार्यालय है वहाँ की कचेहरियों में तो नागरी प्रचार की धूम मच जानी चाहिये थी।

## प्रान्तीय-सम्मेलन

इस समय राजपूताना के लिये प्रान्तीय-सम्मेलन कराने के उद्योग में कुछ उत्साही पुरुषों के लेख निकल रहे हैं। आगरा प्रान्तीय ( जिला ) सम्मेलन का होना भी निश्चय हो गया है। अभी गत वैशाख मास में गोरखपुर में प्रान्तीय-सम्मेलन बड़ी धूम धाम से हो ही चुका है। अतएव हमें विचार करना चाहिये कि प्रान्तीय सम्मेलनों की कितनी आवश्यकता है? और यदि है तो उसका सम्बन्ध हमारे हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से किस प्रकार का होना चाहिये। वे स्थायी होंगे अथवा अस्थायी। हम आशा करते हैं कि सम्मेलन की स्थायी-समिति इस पर विचार करेगी और आवश्यकता होने पर प्रान्तीय-सम्मेलन के कार्यकर्ताओं को अपनी सम्मति प्रकट करेगी।

अभ्युदय। आनन्द की बात है कि अभ्युदय पुनः अपने देश की सेवा के लिये हिन्दी-संसार में पूर्ववत् आगया है और गवर्नमेण्ट ने अपनी आज्ञा लौटा ली है। मर्यादा और अभ्युदय अब दोनों अपने समय पर निकलने लगे हैं।

---

## हिन्दी योग्यता ( प्रोफिशियन्सी ) परीक्षाओं का मसविदा

पञ्चम हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने जिसका अधिवेशन लखनऊ में हुआ था २८ नवम्बर सन् १९१४ ई० के तेरहवें प्रस्ताव के अनुसार, निम्न-लिखित सज्जनों की एक उपसमिति हिन्दी-परीक्षार्थ एक मसविदा तैयार करने के लिये और सयुक्त-प्रान्त की गवर्नमेंट के पास उसके २५ अगस्त सन् १९१४ ई० के प्रस्ताव नम्बर ( २ ) के चौथे पैरे* के अनुसार भेजने के लिये सङ्गठित किया।

(१) बाबू रामदास गौड़ एम० ए० ( संयोजक )।

(२) पं० श्यामविहारी मिश्र एम० ए०।

(३) पं० रामनारायण मिश्र बी० ए०।

(४) बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०।

(५) पं० हरिश्चन्द्र विद्यालङ्कार।

(६) ठा० शिवकुमार सिंह।

---

* "यह कहा जा सकता है कि यद्यपि सरजेम्स मेष्टन, नये मिडिल कोर्स में संस्कृत अथवा फ़ारसी पढ़ाने के विरुद्ध हैं जब कि हिन्दी उर्दू की शिक्षा में बहुत कुछ करना बाकी है तथापि यदि एक उचित मसविदा तैयार हो तो वे स्वर्गवासी राय बहादुर बाबू गङ्गाप्रसाद वर्म्मा के उच्च हिन्दी उर्दू की योग्यता परीक्षाओं के संस्थापन के प्रस्ताव को हर प्रकार की सहायता देने को तैयार हैं।

उपर्युक्त प्रस्ताव की चर्चा मि० जष्टिसपिगट कमेटी की रिपोर्ट में इस प्रकार से की गयी थी ( गवंनमेंट गजट ८ वां हिस्सा सितम्बर सन् १९१३ ई० पृ. ४२८ ) कमेटी के अधिकांश लोग राय बहादुर गङ्गाप्रसाद वर्म्मा के इस प्रस्ताव के पक्ष में थे कि उच्च हिन्दी उर्दू की योग्यता की विशेष परीक्षायें जिनमें उन (हिन्दी, उर्दू) की जननी संस्कृत अफ़ारसी के प्रारम्भिक अंश का समावेश हो अध्यापकों के

(७) राय देवीप्रसाद बी० ए०, बी० एल०, एम० आर० ए० एस०*( स्वर्गवासी )
(८) पं० गोविन्दनारायण मिश्र।
(९) पं० रामजीलाल शर्म्मा।
(१०) पं० शुकदेवबिहारी मिश्र बी० ए०।
(११) बा० पुरुषोत्तम दास टण्डन एम० ए०, एल० एल० बी०।

इस उपसमिति ने २८ जौलाई सन् १९१५ ई० की अपनी अन्तिम बैठक में एक मसविदा उपस्थित किया जिस पर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी-समिति ने अपनी १२ अगस्त और ५ सितम्बर सन् १९१५ ई० की बैठकों में विचार किया और निम्न लिखित मसविदा स्वीकृत हुआ—

हिन्दी-साहित्य की योग्यता (प्रॉफिशियन्सी) परीक्षायें।

(१) शिक्षाविभाग हिन्दी की दो परीक्षायें अर्थात् मध्यमा और उत्तमा लेगा। केवल वेही अध्यापक जो शिक्षाविभाग के अधीन हैं या गवर्नमेंट से सहायता प्राप्त या स्वीकृत पाठशालाओं में काम करते हैं इन परीक्षाओं में सम्मिलित हो सकेंगे।

(२) ये परीक्षायें प्रतिवर्ष एक बार उचित केन्द्रों में होंगी। और परीक्षायें मौखिक तथा लिपिबद्ध होंगी।

(३) नियमितदिन पर या उसके पहले मध्यमा के लिये एक रुपया और उत्तमा के लिये दो रुपया ( शुल्क ) देने पर परीक्षार्थी परीक्षाओं में सम्मिलित किये जावेंगे।

(४) साधारणतः वे ही लोग जो मध्यमा में उत्तीर्ण हुए हैं उत्तमा-परीक्षा में सम्मिलित किये जाँयगे। जिसने इलाहाबाद विश्वविद्यालय की मैट्रिकुलेशन परीक्षा या इसके बराबर की अङ्गरेज़ी को कोई दूसरी परीक्षा या हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा या बनारस संस्कृत-कालेज की मध्यमा परीक्षा

---

लाभार्थ स्थापित की जांय और जिस प्रकार सरकार के अन्य विभाग की नौकरियों में भाषा की उच्च योग्यता के लिये पारितोषिक दिया जाता है वैसे ही इन परीक्षाओं के लिये भी पारितोषिक देकर अध्यापकों को प्रोत्साहित करना चाहिये।

*इनके स्थान में स्थायी-समिति ने अपने आ. शु. २ बृहस्पति के अधिवेशन में श्रीमान् पं. श्रीकृष्ण जोशी जी को चुना है ( सं. )।

को पास किया है, उत्तमा परीक्षा में सम्मिलित किया जा सकता है चाहे उसने मध्यमा परीक्षा पास न की हो।

(५) ये परीक्षायें हिन्दी-भाषा में केवल नागरीलिपि के द्वारा होंगी।

(६) अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी साधारणतः उसी परीक्षा में तीनबार से अधिक बहुत विशेष कारण दिखलाये बिना न सम्मिलित किये जाँयगे।

(७) परीक्षार्थी को नियमित आवेदन पत्र पर हस्ताक्षर करके अपने शुल्क के साथ हिन्दी संयोजक के परीक्षाओं की बोर्ड के पास निम्न लिखित अधिकारियों के द्वारा भेजना होगा।

(१) स्कूलों के इन्स्पेकृर असिस्टेण्ट इन्स्पेक्टर अथवा डिप्टी इन्सपेक्टर।

(२) नार्मल स्कूल के प्रधान अध्यापक।

(३) हाई स्कूल के प्रधान अध्यापक।

(४) कालेज के प्रिंसपल।

(८) शिक्षाविभाग, हिन्दी-योग्यता-परीक्षाओं की एक समिति बनावेगा जिसका सङ्गठन प्रत्येक तीसरे वर्ष होगा। इस समिति में गवर्नमेण्ट द्वारा नियुक्त एक संयोजक और चार सभ्य होंगे जिनमें से दो गवर्नमेंट के मनोनीत होंगे, एक भारतवर्षीय-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी-समिति द्वारा मनोनीत होगा और एक नागरी-प्रचारणी सभा काशी से।

(९) यह समिति अपने प्रबन्ध और कार्यक्रम के लियेउपनियम स्वयं बनालेगी और इसका प्रधान कार्यालय, शिक्षाविभाग के डाइरेक्टर के दफ्तर में होगा।

(१०) मध्यमा परीक्षा में ७ और उत्तमापरीक्षा में ८ प्रश्नपत्र होंगे (केवल उत्तमा परीक्षा में मौखिक परीक्षा होगी) और हर एक प्रश्न पत्र में १०० अङ्क होंगे। परीक्षाओं को पास करने के लिये मध्यमा परीक्षा के प्रत्येक पत्र में कम से कम ३० और उत्तमा परीक्षा के प्रत्येक प्रश्नपत्र में ३५ अङ्क पाना आवश्यक होगा।

(११) प्रत्येक उत्तीर्ण परीक्षार्थी को परीक्षा पास करने का एक प्रमाणपत्र मिलेगा जिस पर संयोजक के हस्ताक्षर होंगे।

(१२) यदि उत्तमा परीक्षा के परीक्षार्थियों के पूर्णाङ्क प्रतिसैकड़ा ७५ या उससे अधिक आवेंगे तो यह समझा जायगा कि उन्होंने "सन्मान" के साथ परीक्षा पास की है और यह उनके प्रमाणपत्र में लिख दिया जायगा।

(१३) मध्यमा-परीक्षा के उत्तीर्ण परीक्षार्थियों में से सबसे अधिक अङ्क पानेवाले ५० परीक्षार्थियों को ५०)—५०) पारितोषिक और उत्तमा परीक्षा के उत्तीर्ण-परीक्षार्थियों में से सबसे अधिक अङ्क पानेवाले ३० परीक्षार्थियों को १००)—१००) का पारितोषिक मिलेगा।

(१४) इन दोनों परीक्षाओं के उत्तीर्ण-परीक्षार्थियों में से सर्वोत्तम परीक्षार्थियों को एक एक स्वर्णपदक भी मिलेगा। इन पारितोषिकों का उल्लेख उनके प्रमाण-पत्रों में रहेगा।

(१५) प्रत्येक परीक्षा में निम्न-लिखित विषय और पत्र होंगे।

### मध्यमा

| पत्र सं० | विषय |
|---|---|
| (१) | मध्यकालीन पद्य |
| (२) | अर्वाचीन पद्य, और छन्द अलङ्कार के सहित |
| (३) | अर्वाचीन और प्राचीन पद्य, व्याकरण और अलङ्कार के सहित |
| (४) | अपठित गद्य और पद्य |
| (५) | लेख |
| (६) | प्रारम्भिक संस्कृत, जिसमें सरल गद्य और पद्य तथा बहुत साधारण व्याकरण होगा |
| (७) | हिन्दी से संस्कृत और सरल संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद |

### उत्तमा

| पत्र सं० | विषय |
|---|---|
| (१) | प्राचीन पद्य और उस समय के हिन्दी पद्य का इतिहास |
| (२) | मध्यकालीन पद्य और उस समय के हिन्दी पद्य का इतिहास |
| (३) | गद्य और हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास |
| (४) | अपठित ( गद्य और पद्य ) |

(५) लेख
(६) साधारण प्राकृत
(७) प्रारम्भिक संस्कृत-गद्य और पद्य
(८) हिन्दी से संस्कृत और संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद

नोट—हिन्दी-साहित्य के प्रश्न-पत्रों में छन्द, अलङ्कार और व्याकरण पर भी प्रश्न होंगे।

## पाठ्य पुस्तकें

### मध्यमा

पत्र सं० पुस्तक

(१) पद्मावत प्रथम चतुर्थांश, रामचरित मानस अयोध्या-काण्ड (तुलसीकृत), सूरसागर प्रथम अष्टमांश, सभा-विलास, रामचन्द्रिका प्रथम अर्द्धांश।

(२) मेघदूत (राजालक्ष्मणसिंह कृत), प्रियप्रवास-प्रथम-चतुर्थांश, मृच्छकटिक (लाला सीताराम), मुद्राराक्षस (हरिश्चन्द्र), श्रान्तपथिक, ज्ञानविनय और काश्मीर सुखमा-छन्द और अलङ्कारसहित।

(३) गुप्तनिबन्धावली (समाचार-पत्रों का इतिहास आदि), सौ अजान और एक सुजान, प्रेमसागर (लल्लूलाल), कहानी ठेठ। हिन्दी की (इन्शा अल्लाखाँ), परीक्षागुरु, हिन्दी-भाषा की उत्पत्ति, निबन्धमालादर्श।

(४) अपठित (गद्य और पद्य)

(५) निबन्ध

(६) संकृत का कोर्स मैट्रिकलेशन के समान

(७) अनुवाद—संस्कृत और हिन्दी

### उत्तमा

पत्र सं० पुस्तक

(१) पृथ्वीराजरासो प्रथम से ग्यारह समय तक, छन्द और अलङ्कार (नागरी-प्रचारिणी सभा काशी)

(२) पद्मावत शेष तीन चतुर्थांश, विनय-पत्रिका—तुलसीदास, काव्य निर्णय-दास, बिहारी की सतसई (बिहारी), कविप्रिया।

( ३ ) सौन्दर्योपासक, प्रतिभा-हिन्दीग्रन्थ रत्नाकर-कार्यालय बम्बई ) चन्द्रकला, भानुकुमार-नाटक--( पूर्णकवि ), हिन्दी-साहित्य का इतिहास (मिश्रबन्धुविनोद का आवश्यक अंश—खंडवा सी. पी. ), नाटक, गद्यकाव्यमीमांसा (पं० अम्बिकादत्त व्यास कृत—सम्मेलन कार्यालय प्रयाग अङ्क और नागराक्षरों की उत्पत्ति-सम्मेलन-कार्यालय प्रयाग।

( ४ ) अपठित (गद्य और पद्य)

( ५ ) निबन्ध

( ६ ) प्राकृत-अष्टाध्यायी ( हेमचन्द्रसूरि ), कर्पूरमञ्जरी या कुछ जातकों की कहानियां।

( ७ ) संस्कृत-इलाहाबाद युनिवर्सिटी के एफ़. ए. कक्षा के समान

( ८ ) अनुवाद-संस्कृत से हिन्दी और हिन्दी से संस्कृत।

———o———

# हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

## सं० १९७२ की

## मध्यमापरीक्षा में

## उत्तीर्ण परीक्षार्थियों की नामावली

( प्राप्त अङ्कों के क्रमानुसार )

| क्रम संख्या | श्रेणी | परीक्षार्थी का नाम | पिता का नाम | निबास स्थान ( पता ) | विवरण |
|---|---|---|---|---|---|
| १३ | प्रथमा | नर्म्मदाप्रसाद मिश्र | पं० ललिताप्रसाद मिश्र | जबलपुर | |
| ४३ | ” | लक्ष्मीधर शुक्ल | पं० सीताराम शुक्ल | लखनऊ | |
| ४६ | ” | प्रयागनारायण(सङ्गम) | पं० ठाकुर प्रसाद | बछ्गाँव-रायबरेली | |
| ३८ | ” | पुत्तनलाल विद्यार्थी | ला० छोटेलाल | लखनऊ | |
| ५ | ” | श्रीकृष्णदत्त शर्म्मा | पं० ब्रजलाल शर्म्मा | ग्रा० तनौरा-आगरा | |
| ६ | ” | रामसूरतसिंह | ........................ | ........................ | |
| ३९ | द्वितीया | बुद्धिसागर वर्म्मा | बा० कन्हैयालाल | खटेली-हरदोई | |
| २० | ” | शालग्राम द्विवेदी | पं०गोकुलप्रसादद्विवेदी | जबलपुर | |
| २ | ” | भागीरथप्रसाददीक्षित | पं०भोलानाथ प्रसाद दीक्षित | कोटा | |
| ३५ | ” | हृदयराम | लाला श्रीराम | फतेहपुर | |

## प्रथमा में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों की नामावली

( प्राप्त अङ्कों के क्रमानुसार )

| क्रम सङ्ख्या | श्रेणी | परीक्षार्थी का नाम | पिता का नाम | ( निवास स्थान ) पता | विवरण |
|---|---|---|---|---|---|
| ११६ | प्रथमा | शिवराम (रमेश) शर्मा | पं० परशुराम शर्म्मा | पाठशाला कुलपहाड़-हमीरपुर | |
| ९६ | ” | जगन्नाथ प्रसाद शर्म्मा | पं० नारायण दास शर्म्मा | ” | |
| ३६ | ” | शम्भुनाथ सेठ | बा० रामभरोस सेठ | २२९ जनरल गञ्ज-कानपुर | |
| १४६ | ” | श्यामदत्त मिश्र | पं० लोधेश्वर मिश्र | परिडतपुरवा पो० प्रयागपुर बहराइच | |
| १२२ | ” | हरदयालु | बा० बलदेवप्रसाद | नायब मुदर्रिस टाउन स्कूल-महोबा | |
| ८ | ” | घनश्यामशर्मा | पं० तोताराम | अध्यापक अछनेरा-आगरा | |
| १६१ | ” | त्रिविक्रममिश्र | पं० हलधर मिश्र | सबअसिस्टैंटसर्जनइनचार्जबिलग्राम हरदोई | |
| १५७ | ” | रामलाल अग्निहोत्री | पं० बलदेवप्रसाद अग्निहोत्री | अध्यापक टौनस्कूल बिलग्राम ज़ि० हरदोई | |
| ८७ | ” | ब्रजमोहन लाल | | | |
| ३५ | ” | रघुवरदयाल मिश्र | पं० बदरीप्रसाद मिश्र | महेश अभ्युदय पाठशाला कानपुर | |
| ३८ | ” | विश्वम्भर मोहले | पं० जानकीप्रसाद मोहले | हटिया-कानपुर | |
| ४१ | द्वितीया | शिवनन्दनलाल पाण्डेय | पं० रामरत्न पाण्डेय | अभ्युदय पाठशाला कानपुर | |
| १०३ | ” | भवानीप्रसाद गुप्त | बा० बच्ची लाल | पाठशाला कुल पहाड़-हमीरपुर | |

| क्रम सङ्ख्या | श्रेणी | परीक्षार्थी का नाम | पिता का नाम | ( निवास स्थान ) पता | विवरण |
|---|---|---|---|---|---|
| १२० | ,, | सुखलाल द्विवेदी | पं० बदरी प्रसाद | हेड मास्टर तहसील स्कूल-महोबा | |
| १५ | ,, | भूरीसिंह पँवार | ठा० चन्द्रहंससिंह | लतीफपुर स्टेट कोटला-आगरा | |
| ३३ | ,, | कालूराम बाजैपेयी | | | |
| ७७ | ,, | मुन्नालाल मिश्र | पं० युगल किशोर मिश्र | तेईखेड़ा नृसिंहपुर सी० पी० | |
| २ | ,, | देवराज शर्मा | पं० मदनमोहन शर्मा | फ़ीरोज़ाबाद-आगरा | |
| ४ | ,, | लक्ष्मीचन्दशर्म्मा पालीवाल | पं० रामकृष्ण शर्म्मा पालीवाल | फ़िरोज़ाबाद पो० फ़ीरोज़ाबाद आगरा | |
| १३० | ,, | ठाकुरदास जैन | श्रीवृन्दाबन जैन | विद्यार्थी श्रीअभिनन्दन दि. जैन पाठशाला-क्षत्रपाल ललितपुर-लखनऊ | |
| १४४ | ,, | शिवप्रसाद शुक्ल | पं० रामनिवाज शुक्ल | गणेशगंज-लखनऊ | |
| ३१ | ,, | गङ्गाप्रसाद गुप्त | बा० मानसिंह अहलमद्दी | मु० दलेल पुरवा-कानपुर | |
| १३ | द्वितीय। | बनवारीलाल पचौरी | पं० वंशीलाल पचौर | दफ़्र कलकृरी, अलीगढ़ सिटी | |
| ६८ | ,, | दामोदरप्रसाद मिश्र | शिवचरण मिश्र | चर्च मिशन-हाईस्कूल जबलपुर | |
| ४५ | ,, | स्वरूपचन्द जैन | पं० शिखरचन्द्र जैन | प्यारेलाल कन्हैयालाल नईसड़क कानपुर | |
| १८ | ,, | रखबचन्द | बा० मन्नालाल | नायबमास्टर कुकड़ेश्वरहोलकरस्टेटइन्दार | |
| ५४ | ,, | मर्यादसिंह | | | |
| १५६ | ,, | शिवदयाल | पं० कालिकाप्रसाद | सहायक-अध्यापक क़स्बाती-पाठशाला हरदोई | |
| ३ | ,, | बाबूलाल शर्मा | पं० शालग्राम पाठक | मोहल्ला जयगंज-अलीगढ़ | |
| १४८ | ,, | श्रीकृष्णस्वरूप श्रोत्रिय | पं० चण्डीबसन्तश्रोत्रिय | कोठी हरसामल मो० बैरूनी खंदक हीवेटरोड लखनऊ | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| २३ | तृतीया | श्रीनिवास मिश्र | पं० लालाराम मिश्र | हिन्दी-पुस्तकालय वेलनगंज आगरा |
| १५० | ,, | त्रिभुवनदत्त शुक्ल | पं० जीवनारायणशुक्ल | ग्रामटेरुआ तहसील व जिला गोंड़ा |
| १० | ,, | जयन्ती सहाय | बाबूरामनारायण | गवर्नमेंट हाई स्कूल एटा |
| ६ | ,, | जगराम गुप्त | ला० मनीराम गुप्त | मु० पो० बमरौली कटरा ज़ि० आगरा |
| ४३ | ,, | शिवशङ्कर दीक्षित | पं० रामस्वरूप दीक्षित | बादशाही नाका कानपुर |
| | ,, | राधाकृष्ण शुक्ल | पं० भगवतीप्रसाद शुक्ल | अभ्युदय पाठशाला-कानपुर |
| ६६ | ,, | गयाप्रसाद तिवारी | पं० परमेश्वरदासजी पुजारी | तेंदू खेड़ा जबलपूर |
| ४६ | ,, | हनुमानसिंह | बा० माड़नसिंह | हेडमास्टर स्कूल दलेलपुरवा कानपुर |
| ८८ | ,, | बनमाली शरण | | |
| ८३ | ,, | विश्वम्भरप्रसाद | पं० गदाधरप्रसाद गौतम | हितकारिणी हाई स्कूल जबलपुर |
| १४ | ,, | भजोरीलाल गुप्त | मुंशी गङ्गारामजी गुप्त | मुख्य अध्यापक पाठशाल नगरकोट |
| ८१ | ,, | रामानुजप्रसाद पटैरया | पं० राधाकृष्ण पटैरया | पटैरया मोहल्ला नरसिंहपुर |
| ६१ | ,, | कमलादेवी | पं० श्रीकृष्णदास | नं० २ काउपर रोड इलाहाबाद |
| १०४ | ,, | यशोदादेवी | पं० कन्हैयालाल | आर्य्य-कन्या-पाठशाला मुट्ठीगंज प्रयाग |
| १५८ | ,, | लालजी | बा० हजारीलाल | सहायक अध्यापक टाउन पाठशाला हरदोई |
| ११८ | ,, | श्यामसुन्दर त्रिपाठी | पं० रामसेवक त्रिपाठी | कनली ज़ि० प्रयाग |
| १०६ | ,, | राधाकृष्ण झिंगरन | पं० बाँकेविहारीलाल | १२० कल्यानीदेवी लेन प्रयाग |

| क्रम संख्या | श्रेणी | परीक्षार्थी का नाम | पिता का नाम | ( निवासस्थान ) पता | विवरण |
|---|---|---|---|---|---|
| ११४ | " | विद्यावती | पं० कृष्णविहारी वाजपेयी | चक-प्रयाग | |
| १२६ | " | जगन्नाथप्रसाद शर्मा | पं० रामप्रसाद शर्मा | मोहम्मद पुर पो० संडीला ज़ि० हरदोई | |
| १०५ | " | रङ्गनाथ द्विवेदी | पं० जीवनारायण द्विवेदी | बुद्धिपुरी पो० सरायआकिल-प्रयाग | |
| १०६ | " | रामसुन्दर त्रिपाठी | पं० गुरुचरण त्रिपाठी | कनैली–ज़ि० प्रयाग | |
| ६४ | " | कुंजबिहारी लाल | बा० लक्ष्मीप्रसाद | चर्च मिशन हाईस्कूल जबलपुर | |
| १५२ | " | नरसिंह लाल गुप्त | बा० नाथूलाल गुप्त | नायब अध्यापक गरउत होलकर | |
| १०० | " | पार्वतीदेवी | बाबू हनुमान प्रसाद सेठ | नं० ७ साउथरोड प्रयाग | |
| ३२ | " | दयाशङ्कर मिश्र | पं० सुन्दरलाल मिश्र | महेश अभ्युदय पाठशाला-कानपुर | |

# सम्मेलन-कार्य्यालय की नयी और अत्यन्त उपयोगी पुस्तकें

## नागरी अङ्क और अक्षर

इस ग्रन्थ में अङ्कों और अक्षरों की उत्पत्ति पर जो बड़े गवेषणा पूर्ण लेख प्रथम और द्वितीय सम्मेलन में पढ़े गये थे, सङ्कलित हैं। हिन्दी में ऐसी दूसरी पुस्तक है ही नहीं। मूल्य ≡)

## इतिहास

यह ग्रन्थ पं० विष्णुशास्त्री चिपलूणकर के प्रसिद्ध निबन्ध का अनुवाद है। मध्यमा के पाठ्य ग्रन्थों में होने के अतिरिक्त यह अत्यन्त रोचक भी है। इतिहास का वास्तविक महत्व इससे जाना जा सकता है। मूल्य ≡)

### अन्य पुस्तकें

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम वर्ष का विवरण | ।) | नागरी अङ्क और अक्षर | ≡) |
| द्वितीय वर्ष ,, | ।) | सौ अजान और एक सुजान | ।=) |
| तृतीय वर्ष ,, | ।=) | पिङ्गल का फलक (प्रथमा के लिये) | -) |
| प्रथम सम्मेलन की लेखमाला | ।।।) | गद्यकाव्यमीमांसा | ।) |
| द्वितीय ,, ,, | १) | ऊजड़ग्राम | ।) |
| तृतीय ,, ,, | ।।।) | विज्ञानप्रवेशिका | ≡) |
| चतुर्थ ,, ,, | ।।।) | यूरोप का सङ्क्षिप्त इतिहास | ।≡) |
| पञ्चम ,, ,, | ।।) | अलङ्कार प्रकाश | १।।।) |
| नीतिदर्शन ,, | ।।।) | सूर्य्यसिद्धान्त | २) |
| लाजपतराय की जीवनी | १) | विवरणपत्रिका १९७३ (छप रही है) | ।) |
| हिन्दी का सन्देश | -) | | |
| इतिहास | ≡) | | |

मन्त्री—हिन्दी साहित्य-सम्मेलन कार्यालय
प्रयाग।

पं० ओंकारनाथ वाजपेयी के प्रबन्ध से ओङ्कार प्रेस प्रयाग में छपकर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से श्रीनरेन्द्रनारायणसिंह द्वारा प्रकाशित।

# सम्मेलन-पत्रिका के नियम

१—यह पत्रिका सम्मेलन कार्य्यालय प्रयाग से प्रतिमास प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य १) रु० इसलिये रक्खा गया है कि सर्वसाधारण इसके ग्राहक हो सकें।

२—अभी इस में प्रतिमास कुल २४ पृष्ठ ही रहा करेंगे। आवश्यकता होने पर पृष्ठ सङ्ख्या बढ़ा भी दी जाया करेगी। आगे चल कर यदि इसकी सेवा साहित्यिका को रुचिकर हुई, और ग्राहकों की यथोचित सङ्ख्या हो गयी तो अधिकतर पृष्ठ-सङ्ख्याओं में और अधिकतर उन्नत दशा में प्रकाशित की जायगी।

३—प्रबन्ध-सम्बन्धी पत्र और रुपये आदि तथा सम्पादन सम्बन्धी पत्र, पुस्तकें परिवर्त्तन के पत्रादि सब "मन्त्री सम्मेलन। कार्यालय, प्रयाग" के नाम आने चाहियें।

## विज्ञापनछपाई के नियम

६ मास अथवा उससे अधिक दिनों के लिये

| | १ पृष्ठ, | आधा पृष्ठ | और चौथाई पृष्ठ के लिये |
|---|---|---|---|
| कवर पेज पर | ५) | ३) | २) |
| साधारण पेज पर | ४) | २॥) | १॥) |

विशेष बातें जाननी हों तो मन्त्री जी से पूछिये।

## क्रोड़पत्र बटाई के नियम

आधा तोला तक अथवा इससे कम के लिये... १०)
१ तोला के विज्ञापन के लिये ... १२)

मन्त्री, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

---

नोट—विज्ञापन के ऊपर यह छपा होना चाहिये कि अमुक मास की "सम्मेलन-पत्रिका" का क्रोड़पत्र और उसमें यथोचित समाचार भी होने चाहिये।

Reg. No. A-629.

# सम्मेलन-पत्रिका

## हिन्दीसाहित्य-सम्मेलन की

### मुखपत्रिका

भाग २ } भाद्र संवत् १९७२ { अङ्क १२

## विषय-सूची



वा० मू० १) ] [ एक प्र० ]

सम्पादक—पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी।

# सम्मेलन के उद्देश्य

(१) हिन्दी-साहित्य के अङ्गों की उन्नति का प्रयत्न करना।

(२) देवनागरी-लिपि का देश भर में प्रचार करना और देश व्यापी व्यवहारों तथा कार्यों के सुलभ करने के लिये हिन्दी भाषा को राष्ट्र-भाषा बनाने का प्रयत्न करना।

(३) हिन्दी को सुगम, मनोरम और लाभदायक बनाने के लिए समय समय पर उसकी शैली के संशोधन तथा उसकी त्रुटियों और अभावों के दूर करने का प्रयत्न करना।

(४) सरकार, देशीराज्यों, पाठशालाओं, कालेजों, विश्व-विद्यालयों और अन्य संस्थाओं, समाजों, जन-समूहों तथा व्यापार, ज़मींदारी और अदालतों के कार्यों में देवनागरी-लिपि और हिन्दी-भाषा के प्रचार का उद्योग करते रहना।

(५) हिन्दी के ग्रन्थकारों, लेखकों, पत्रसम्पादकों, प्रचारकों और सहायकों को समय समय पर उत्साहित करने के लिये पारितोषिक, प्रशंसापत्र, पदक, उपाधि आदि से सम्मानित करना।

(६) उच्च-शिक्षा प्राप्त युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने के लिये प्रयत्न करना।

(७) जहाँ आवश्यकता समझी जाय वहाँ पाठशाला, समिति तथा पुस्तकालय स्थापित करने और कराने का उद्योग करना तथा इस प्रकार की वर्त्तमान संस्थाओं की सहायता करना।

(८) हिन्दी-साहित्य के विद्वानों को तैयार करने के लिये हिन्दी की उच्च-परीक्षायें लेने का प्रबन्ध करना।

(९) हिन्दीभाषा के साहित्य की वृद्धि के लिये उपयोगी पुस्तकें तैयार कराना।

(१०) हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की सिद्धि और सफलता के लिये अन्य जो उपाय आवश्यक और उपयुक्त समझे जायँ उन्हें काम में लाना।

---

# सम्मेलन-पत्रिका का उद्देश्य

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता करना, और साहित्य प्रेमियों से इसी के लिये उपदेश लेना।

# सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति
की ओर से प्रतिमास प्रकाशित

भाग २ } भाद्र संवत् १९७२ { अङ्क १२


## साहित्यसेवी का जीवन

( लेखक—बाबू चांदकरण शारदा, बी०ए०, एल०एल० बी० )

संसार में कौन ऐसा अभागा पुरुष होगा जो सदा दुःखी रहना पसंद करता हो ? यह स्वाभाविक बात है कि मनुष्य सदा अपने जीवन को सुख से व्यतीत करना चाहता है। इसी सुख की टोह में वह मन्दिरों और तीर्थों में भटकता है। अनेक व्यक्ति इनजीनियरिङ्ग, वकालत, वैद्यक, दूकानदारी इत्यादि को सुख की खान समझ कर इन पेशों की ओर दौड़ते हैं, परन्तु इन व्यवसायों में आकर भी इन को वह सुख का श्रोत जिस की आशा लगाकर इन्हों ने लाखों कष्ट सहन किये थे सूखा मिलता है और फिर यही प्रश्न खड़ा होता है कि संसार में सब से सुखप्रद जीवन किस का है ?

"सुखप्रद जीवन" के लिये "सर हेनरी वाटन" ने निम्नलिखित पद रचा है :—

How happy is he born and taught
That serveth not another's will,
Whose armour is his honest thought
And simple truth his utmost skill.

अर्थात्—उस का जन्म और शिक्षा धन्य है जिस को दूसरों की इच्छा के अनुसार काम नहीं करना पड़ता, जिस का कवच उसका शुद्ध बिचार है और सत्यता ही उस का सब से बड़ा कौशल है।

सचमुच ही तुलसीदास जी महाराज के कथनानुसार "पराधीन सपनेहु सुख नाहीं" सुख प्राप्त करने के लिये "स्वाधीनता" और "सत्य" की बड़ी आवश्यकता है। अब हमें यह देखना चाहिये कि साहित्य-सेवी के जीवन में "सर वाटन" रचित उपर्युक्त पद घटता है या नहीं। समाचारपत्रों की जिह्वा काटने वाले प्रेस-एक्ट के विचार को यदि हम थोड़ी देर के लिये भूल जावें और केवल चुपचाप काम करने वाले पुस्तक-रचयिताओं के जीवन की ओर निहारें तो हमें "स्वाधीनता" और "स्वाधीन-विचारों के प्रकट करने की शक्ति" सब ही व्यवसायों से अधिक इस जीवन में मिलेगी।

यदि साहित्यसेवी की इच्छा न हो तो कोई भी प्राणी उस को एक स्थान, एक दल, और एक मनुष्य के साथ रहने को बाध्य नहीं कर सकता। उस के लिये सारी प्रकृति और सारे संसार के विचारों के द्वार खुले हैं। वह अपनी लेखनी रूपी चाभी से प्रत्येक आनन्द-गृह के द्वार को खोल कर वहाँ की सैर कर सकता है। साहित्य-सेवी न केवल वर्त्तमान समय के आनन्द-भवनों और वस्तुओं की सैर कर सकता है प्रत्युत उस के लिये गत शताब्दियों की लाखों आश्चर्य्यजनक बातें सैर करने को पड़ी हैं। वह चाहे तो सारे संसार की सभ्यताओं को एक कतार में खड़ी कर उनके मानसिक चित्र देखे और मालूम करे कि अमुक सभ्यता की गिरावट का क्या कारण है और उस सभ्यता की उन्नति का क्या कारण है? वह चाहे तो "भारतमित्र" के समान "विचार-वैचित्र्य" में या "पाटलीपुत्र" के समान "मनमौजी"-पन में या गोलमालानन्द के समान "इधड़ विधड़" लिखकर आनन्द ले सकता है, क्योंकि पुस्तकें केवल उस मनुष्य के विचारों का संग्रह है जिसने उनको रचा है। इसलिये साहित्यसेवी अपने पुस्तकालय में बैठा हुआ कणाद, गौतम, नारद आदि महर्षियों से बातें कर सकता है, राना प्रताप या भीष्मपितामह से मिल सकता है, प्लेटो की "आत्मा के अमर होने के विषय में" बहस सुन सकता है। वह बैठा बैठा बड़े बड़े जेनरलों और राजाओं से वार्तालाप कर सकता है। निश्चय ही एक सच्चा साहित्यसेवी लाखों करोड़ों मनुष्यों का स्वाधीन राजा है और उसके जीवन के समान सुखप्रद जीवन बिरले ही मनुष्य का होता है

निश्चय ही हम को हिन्दी संसार में सैकड़ों मनुष्य यह कहेंगे कि तुम केवल लोगों को बहकाने के लिये यह सब्ज़बाग़ दिखा रहे हो, साहित्यसेवा के बराबर तो शायद ही किसी और व्यवसाय में दुःख होगा। परन्तु निश्चय रखिये, ऐसे कहने वालों में अधिकतर संख्या उन लोगों की होगी जिनकी पुस्तकें नहीं बिकीं हैं और जिनका व्यायाम न करने के कारण स्वास्थ्य ख़राब हो गया है तथा खाया पीया कुछ हजम नहीं होता है; या उन लोगों की संख्या होगी जो नाम चाहते हैं और इधर उधर व्याख्यान देने के लिये दौड़ते फिरते हैं।

वे मनुष्य जो चाहते हैं कि सर्वसाधारण में हम यहां देखे जावें वहां देखे जावें और हमारा नाम होवे, उन से सरस्वती रुष्ट हो जाती हैं। उन लोगों का जीवन भी सुखप्रद नहीं हो सकता जो केवल स्वार्थवश होकर रुपया कमाने के लिये लोगों को भड़काने का सदा प्रयत्न करते रहते हैं। उन लोगों का जीवन कलङ्कित है जो केवल अपने ग्राहकों को प्रसन्न रखने के लिये अपने समाचार पत्रों में अश्लील बातें लिखते हैं या ऐसी बातें लिखते हैं जिन से कि मनुष्यों के सदाचार बिगड़तें हैं।

साहित्यसेवी का जीवन गम्भीर है, उसके आदर्श और विचार उच्च होने चाहिये, सदा न्याय ही सामने रख कर कार्य्य करना चाहिये। सब से अधिक आनन्द साहित्य-सेवी को तब होता है जब कि उसको ज्ञात होता है कि उसकी लेखनी से निकले हुए अमुक लेख या कविता ने दुःखियों को शान्ति प्रदान की है या निराशों को आशा बँधायी है।

यह प्रत्येक समझदार मनुष्य मानेगा कि साहित्य-सेवी के जीवन में भी कई निराशायें-रुकावटें-दुःख इत्यादि होते हैं। किन्तु साहित्य-सेवी के जीवन की रुकावटें और दुःख दूसरे व्यवसायियों की रुकावटों के समान दुःखदायी नहीं होतीं। इन रुकावटों और बाधाओं को पारकर एक अपूर्व आनन्द प्राप्त होता है। जिस प्रकार सोना ज्यों ज्यों तपाया जाता है त्यों त्यों दीप्तिमान निकलता है, उसी प्रकार साहित्यसेवी की प्रशंसा को नहीं सहन करने वाले द्वेषी पुरुष ज्यों ज्यों उसपर मिथ्या दोष लगाकर संसार के सम्मुख मिथ्यावादी

साबित होते हैं त्यों त्यों साहित्य-सेवी की कीर्ति और मुख उज्ज्वल होता जाता है। जिस प्रकार लोहे का टुकड़ा गर्म भट्टी में लाल किया जाकर हथौड़ों से पीटा जाने पर एक सुन्दर तलवार बन जाता है और शत्रुओं को रणभूमि में काटने के लिये सदा तैयार रहता है उसी प्रकार साहित्य-सेवी खण्डनों आलोचनाओं तथा अन्य बाधाओं से सुदृढ़ होकर एक महापराक्रमी पुरुष बन जाता है

दूसरा दुःख जिस के होने की सम्भावना है वह धनाभाव है, परन्तु साहित्यसेवी थोड़े ही धन में गुज़र कर सकता है। इन्जीनियरों, डाक्टरों और वकीलों के समान उसको ऐश इशरात के सामानों की अधिक आवश्यकता नहीं होती। वह एक छोटे से मकान में सकुटुम्ब रहता हुआ आनन्द से जीवन व्यतीत कर सकता है। सुख और दुःख सदा मनुष्यों के विचारों पर निर्भर हैं। भला जो विचारों में इतना धनवान होगा उसको संसार के बाहरी आडम्बरों की क्या परवा होसकती है? अधिक खाने से या जरीन कपड़े पहिनने से या रबर-टायर गाड़ी या मोटर पर चढ़ने ही से मस्तिष्क बलवान् और विद्वान् नहीं होसकता।

तीसरी बात रही गालियां सुनने की सो यह तो कवियों और लेखकों के साथ सदा होता ही रहता है, चाहे वे भारतवासी हों चाहे यूरपनिवासी। प्लीना ( Pliny ) ने वरजिल ( Virgil ) को बुरा भला कहा; "सिसेरा" और "प्लूटार्क" ने अरिस्टाटल को बेवकूफ और मूर्ख बताया। "प्लेटो" साहब "डिमोक्रिटस" से इतने क्रुद्ध थे कि वे कहा करते थे कि डिमोक्रिटस की सारी किताबें जलादो। कवि "सफोक्लीस" को उसके बच्चों ने ही पागल बनाया। कवि "होरेस" पर दूसरी किताबों में से चोरी कर लिखने का अपराध लगाया गया। कविवर मिल्टन के जीवन को दुष्ट "सलमेसियस"ने सत्यानाश में मिलाया। हमारे हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापतियों की भी प्रत्येक वर्ष खूब खबर ली जाती है। परन्तु हमको इन बातों से डरना न चाहिये प्रत्युत यह सदा स्मरण रखना चाहिये कि बड़े आदमियों से द्वेष करने वाले मनुष्य बहुत होते हैं। कोई भी पुरुष एक भी बड़े आदमी का उदाहरण नहीं बतला सकता जिस की बुराई करने वाले संसार में पैदा न हुए हों। बड़े बड़े आदमी कहते हैं

कि उस साहित्यसेवी का जीवन जिस से कोई द्वेष न करे ऐसा है जैसे कि मैला स्टेशन की मैलागाड़ी। बड़े बड़े कवियों के छुटभैये कवि सदा शत्रु होते हैं क्योंकि, बड़े कवि प्रायः वे ही होते हैं जिन में जन्म से कविता करने की शक्ति होती है। छोटे कवि बेचारे धीरे धीरे कड़ियां जोड़ा करते हैं, बहुत परिश्रम करते हैं तिस पर भी लोग उनकी कविता पसंद नहीं करते। लोग पसंद भी क्यों करें? उनके पास रुपया और समय वृथा खोने के लिये नहीं है। कविता में कल्पनाशक्ति ( Imagination ) की बड़ी आवश्यकता है और ये छुटभैये कवि या तो पुरानी बातों को बिना रस पीसा करते हैं या पुराने कवियों की किताबों मे से चोरी कर कवि बनना चाहते हैं। दुर्भाग्यवश इस समय हिन्दी के नये कवियों में कल्पनाशक्ति ( Imagination ) इने गिनों में हो है, इसीलिये वे कभी कभी एक दूसरे की बुराई किया करते हैं। इङ्गलैंड में भी एक समय इन छुटभैये कवियों ने अपनी खूब दुन्दुभी बजायी। शेली ( Shelly ), बायरन, कीट्स ( Keats ) जैसे विद्वान् कवियों का एक दिन भी इन लोगों ने राज-सम्मान नहीं होने दिया; प्रत्युत प्रतिकूल इसके इनको अपनी जन्मभूमि छोड़नी पड़ी। परन्तु लोग बिना गुण वाले राज-सम्मानित कवि की कब परवा करते हैं ? इङ्गलिस्तान के पुरुष नयी कविताओं के लिये प्यासे थे। उन्होंने बायरन, शेली और कीट्स की किताबें समुद्रपार से भी मंगा मंगा कर पढ़ीं और उस समय के नामधारी पोयट-लारियट आदि छुटभैये कवियों की बिलकुल परवा न की। इस लिये साहित्य-सेवी को इन छोटे शत्रुओं से कभी नहीं डरना चाहिये और निम्नलिखित कवि के बचनों को सदा स्मरण रखना चाहिये—

You have no enemies, you say!<br>
Alas! my friend, the boast is poor—<br>
He who has mingled in the fray of duty, that the brave endure,<br>
Must have made foes! If you have none,<br>
Small is the work that you have done;<br>
You've bit no traitor on the hip,

You've dashed no cup from perjured lip,
You've never turned the wrong to right—
You have been a coward in the fight !'

अर्थात्—तुम कहते हो कि हमारा कोई शत्रु नहीं है। मित्र ! शोक की बात है कि यह तुम्हारा अभिमान मिथ्या है। जो मनुष्य कर्त्तव्य की लड़ाई में सम्मिलित हुआ है और जिस की लड़ाई के कष्ट को वीर लोगों ने सहन किया है, उस के शत्रु अवश्य हुए हैं। यदि तुम्हारे शत्रु नहीं हैं तो जो कुछ तुम ने काम किया है वह बहुत थोड़ा है। तुम ने किसी देशद्रोही को हानि नहीं पहुंचायी, तुम ने किसी बेईमान को बेईमानी से पैदा किये हुए धन के सुख से वञ्चित नहीं किया, तुम ने कभी ग़लत बात को ठीक नहीं किया और तुम संग्राम में कातर रहे हो।

यूरुप में लाखों स्त्रियाँ और पुरुष साहित्यसेवी का जीवन व्यतीत कर अपने जीवन को आनन्द-प्रद बनाते हैं और अपने देश को भी उन्नति के शिखर पर पहुंचाने का प्रयत्न करते हैं, परन्तु दुर्भाग्यवश भारत के अधिकांश ब्राह्मणों ने यह कार्य छोड़कर भिक्षा अथवा दासवृत्ति धारण करली है। और दूसरे पुरुष साहित्य-सेवी-जीवन के आनन्दों को न जानते हुए स्वभावतः केवल चमकते हुए सोने की तरफ़ ही दौड़ते हैं। परमात्मा हमारे देश के नवयुवकों में बल दे ताकि वे वकालत, इञ्जीनियरिङ्ग, डाक्टरी, सौदागरी, इत्यादि के समान साहित्य-सेवी के व्यवसाय में भी प्रविष्ट होकर धन और धर्म कमावें एवम् अपना जीवन आनन्द से व्यतीत करें। साहित्य-सेवी का जीवन सब व्यवसायियों के जीवनसे उच्च और पवित्र है। जिस प्रकार का प्रेम, सहानुभूति, ज्ञान और सभ्यता इस जीवन में प्राप्त होती है उस के कहने की हम में शक्ति नहीं है। इस में पराक्रम बढ़ता है, इस में हमारा सदाचार बनता है और हमारी हिम्मत की जाँच की जाती है। इस में सब से अधिक सत्य को हम स्वयं जानते हैं, पहिचानते हैं और संसार में उसका प्रचार करते हैं। यदि मनुष्य का तन, मन और स्वास्थ्य अच्छा हो और मस्तिष्क में बल हो और तब वह इस साहित्य-सेवी के जीवन में विचरे तो उस का आनन्द, चक्रवर्ती

राजाओं के आनन्द से भी अधिक हो सकता है। प्रिय नवयुवको ! आओ, हिन्दी साहित्य की सेवा कर भारत माता का मुख उज्ज्वल करो, इसी में कल्याण है।

---

# हिन्दी की बिलक्षण एकता

( लें० श्रीयुत पं० गयादत्तजी त्रिपाठी, बी० ए०, प्रयाग )

[ गतांक से आगे ]

कैसे खाई। तब अहिरवा ओकर महतारी कोठा पर खाये पियै का दैकर बैठाइ आई। तब वाघ आवा तौ डांक कर कोन पर चला गवा। माचा समेत उठाइ लइ चला। रास्ता में एक बरगद का पेड़ मिला। अहिरऊ बरगद को डार धैकर लटकि रहा। तब बाघ अपनी डेरा पर खाली माचा लैकर चला गा। माचा पटक दिहस। वह में अहिरराम त रहैं न। तब आपन मूड़ कपार कूंचै लाग। और अहिर वही पेड़ तर रहै लाग। वहां सुरागाय रहत रहैं। उन का दिन भर चरावै और उनहीं के दूध पीए। तवन बचै पेड़ पर साँप के बिल में नाइ देइ। बहुत दिन बीते एक सरप फन काढ़िकर बिल से निकला। तब अहिर से कहेस मांग का मांगत है। मोर बड़ी सेवा किहे। तब अहिरऊ कहेन कि हमार देंह सोने की होइ जाय। और दस बारह गांव के राज देह। तब संपऊ बरदान देके चल भयेन तब अहिरवा के देंह सोने के होयगा।

एक दिन अहिरराम नदी में नहाए गे। एक बार टूट गा। ओका दोना में कइकर नदी में फेंकि दिहेन। ऊ बहत बहत चला गा। राजा के बाबी नहाने आई ऊ देखेस। तब दोना में सोना के बार रहै। तब घर में आइ कर कहेस की जेकर बार सोना के है ऊ मनई कसत होई ओही के साथ वियाह होई। और मूंड़ मूंड़ कर पड़ी। तब एक मेहरारू ओकर टहलुइन कहेस की हम ढूंढ़ लाउव। तब उ बरगद के पेड़ तर ढूंढ़त ढूंड़त पहुंची और वहां रहै लगी। एक कोठिला माटी के पेड़ तर बनाइस। तब आपन सीधा पिसान वहि में धरेस। अहिरराम से एक दिन कहेस की बाबा मोर सीधा निकालि देहि तब अहिर राम कोठिला में घुसगे। तब ऊ मेहरारू

कोठिला ढंगराइ कर राजा के इहां ले आई और अहिर राम के साथ बाबी को वियाह होइगा। कुछ दिन बीते दान दहेज दैकर राजा बावी का विदा कइ दिहिन। तब अहिरराम बावी को लइके अपने घर आयेन। गांव वाले ओकरे महतारी से कहेन कि तुमार वेटवा आवा। तब बुढ़िअऊ कहेन कि हमरे वेटवा के बाघ खायेन न रहा। जब बेटवा अपनी महतारी से भेंट किहेस और ओढ़ना कपड़ा लत्ता दिहेस तब ओढ़ कर महतारी खुसी भई।

जैसे राज पाट अहिरऊ का लौटा वैसे सब का लौटे।

इन उदाहरणों से ज्ञात होता है कि यद्यपि शब्दों के उच्चारण में तथा संज्ञा वा सर्वनाम के शब्दों और कहीं कहीं धातु के रूप में भी भेद हो गया है, तथापि प्रत्येक बोलियों में जितने शब्द हैं प्रायः सब की व्युत्पत्तिस्थान एक ही है। इसी विचार को और दूर तक देखने से सिद्ध होगा कि यही सम्बन्ध साधारणतः प्रयाग तथा मिरज़ापुर की भाषा का, और मिरज़ापुर तथा बनारस, बनारस तथा गाधिपुर ( गाजीपुर ) प्रभृति का है। आगे बढ़ते बढ़ते यह भी सिद्ध होता है कि गाधिपुर और विहार की भाषा का भी यही सम्बन्ध है और इसी प्रकार विहार की भाषा का और पूर्वीय भाषा अर्थात् बंगाली, उड़िया और आसामी प्रभृति से सम्बन्ध है। यही सम्बन्ध तीनों और दिशाओं की भाषा की ओर देखने से भी सिद्ध होगा। अर्थात् यह कहना अनर्गल नहीं है कि सम्पूर्ण भारतवर्ष की प्रधान भाषा हिन्दी ही है।

उत्तर दिशा में हिमालय से लेकर दक्षिण में नर्मदातक और पश्चिम मे पंजाब देश से लेकर पूर्व में महानन्दानदीतक जितनी आर्य्य-भाषायें बोली जातीं हैं, प्रायः सब हिन्दी-भाषा के नाम से प्रसिद्ध हैं। कोई कोई लोग भूल से विहारी-भाषा की; जो संयुक्तप्रान्त के पूर्वीयभाग में तथा विहारप्रान्त में बोली जाती है, हिन्दीभाषा के वहिर्गत वतलाते हैं। इसी प्रकार बहुत लोग राजपूताना की भाषा को भी हिन्दीभाषा की उपाधि नहीं देते। इन लोगों के मतानुसार हिन्दी भाषा के अन्तर्गत वेही भाषायें हैं जो पञ्जाब में सरहिन्द से लेकर पूर्व में काशी तक बोली जाती हैं, अर्थात् बुंदेली, कन्नौजी, ब्रजभाषा, बघेली, अवधी व मागधी प्रभृति। परन्तु यथार्थ में जिस प्रकार देश

व काल के भेद से बुंदेली प्रभृति भाषा के रूप में भेद है, उसी प्रकार विहारी तथा राजपूताना की भाषा भी हिन्दी भाषा का रूपान्तर मात्र है। इन्ही सब भाषाओं के मेल से विशिष्ट हिन्दी-भाषा है जो इस समय सम्पूर्ण भारतवर्ष में व्याप रही है। शौर्यक, मागधी तथा पाली प्रभृति भाषायें इसके रूपान्तर मात्र हैं। इस विशिष्ट हिन्दी भाषा के बोलने वाले न केवल पञ्जाब से महानन्दातक, न केवल हिमालय से नर्मदातक, प्रत्युत काश्मीर से वर्मा, तथा नैपाल से कन्याकुमारी तक फैल रहे हैं। जिस प्रकार यूरप में फ्रेंच भाषा प्रधान है उसी प्रकार भारतवर्ष में हिन्दीभाषा का प्राधान्य है।

ऐसी व्यापिनी और विशिष्ट हिन्दीभाषा की उन्नति के साधन क्या क्या हैं, इस विषय पर अनेक विद्वानों ने अपने अपने विचार समय समय पर प्रकट किये हैं; परन्तु हिन्दीभाषा की उन्नति के जितने उपाय हैं उनमें सबसे मुख्य उपाय यह है कि हिन्दीभाषा के प्रेमियों के लिये हिन्दी के सहारे से कोई जीविका का भी साधन हो। इसमें सन्देह नहीं कि अदालतों में हिन्दी के प्रचार होने से अथवा सुलभ एवं छोटे हिन्दी के ग्रन्थ छपने से कुछ हिन्दी के लेखक, कम्पाज़िटर व ग्रन्थकर्त्ताओं का उपकार हो सकता है और हो रहा है। परन्तु इतने काम के साधन के हेतु हमें कितनी कठिनता (वकीलों की दरबार और प्रेस के स्वामियों की शुश्रूषा करने में) पड़ती है यह प्रत्यक्ष है। इसके सिवाय यदि हिन्दी के प्रेमी अपने कार्य्य का साधन दूसरी ओर से करें तो मेरी समझ में अधिक लाभ होगा। दूसरी ओर से मेरा प्रयोजन यह है कि जितने राजा, महाराजा, ताल्लुक़दार, ज़मींदार और कारवारी महाजन प्रभृति हैं उनसे प्रार्थना की जाय और उनपर देशहित का दबाव डाला जाय कि वे अपने यहां के मुख्तारआम और कारपरदाज़ केवल हिन्दी जानने वालों को रक्खें। इसके पहिले परीक्षासमिति का भी यह कर्तव्य होगा कि परीक्षा में जितने विषय रक्खे गये हैं उनमें कुछ घटा बढ़ा कर ऐसे विषय भी रख दिये जायं जिनसे कि हिन्दी-परीक्षा में उत्तीर्ण होने के अनन्तर परीक्षा के प्रभाव से ज़मीन्दारी, कास्तकारी, अदालत के व्यवहार की रीतियाँ, कानून, मालगुज़ारी, तथा कुछ बही खाता और कारबार करने की रीति भी उनको विदित हो जाय॥ इति॥

# स्थायीसमिति का कार्य्यविवरण

स्थायीसमिति का पाँचवाँ अधिवेशन सम्मेलन-कार्य्यालय में मिती भाद्र कृ० ११ रविवार, सं० १९७२ ता० ५ सितम्बर सन् १९१५ ई० को सन्ध्या के ५॥ बजे से प्रारम्भ हुआ, जिसमें निम्न-लिखित सदस्य उपस्थित थे।

श्रीयुत पं० श्रीकृष्ण जोशी।
,, लाल रुद्रनाथसिंह धेनुगाँव बस्ती।
,, पं० रामजीलाल शर्म्मा प्रयाग।
,, पं० द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी ,, ।
,, बा० रामदास जी गौड़ ,, ।
,, बा० भगवानदास हालना मिर्ज़ापुर।
,, पं० चन्द्रशेखर शास्त्री प्रयाग ।
,, पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी " ।
,, पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल " ।

सर्वसम्मति से पं० श्रीकृष्ण जोशी जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

१—आयव्यय-परीक्षक, आयव्यय की जांच न कर सके थे इसलिये हिसाब उपस्थित नहीं किया गया।

२—आगामी सम्मेलन के समय के सम्बन्ध में विचार हुआ, सम्मतियां देखी गयीं और स्वागतकारिणी-सभा के मन्त्री के पत्र पढ़े गये-जिनमें उन्होंने बहुत आग्रह किया था कि सम्मेलन की तिथियाँ मुहर्रम में रक्खी जाँय। सम्मतियों पर और स्वागतकारिणी-सभा लाहौर की सुविधा पर ध्यान देते हुये स्थायी-समिति ने निश्चय किया कि षष्ठ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन मुहर्रम की छुट्टियों में अर्थात् कार्तिक शु० ९, १० और ११ सोम, मङ्गल तथा बुधवार सं० १९७२ तदनुसार ता० १५, १६ और १७ नवम्बर सन् १९१५ ई० को हो।

३—आगामी सम्मेलन में उपस्थित किये जाने वाले लेखों की सूची बनाने के लिये स्वागत-कारिणी-सभा और सदस्यों के यहाँ से

आयी हुई सूचियाँ पढ़ी गयीं और सर्वसम्मति से निम्न-लिखित विषय सूची स्थिर हुई।

षष्ठ-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के लिए स्थायी-समिति-द्वारा निर्वाचित लेखों के लिये विषयसूची।

(१) प्राचीन भारतवासियों में गणित की उन्नति और उसकी शिक्षा-प्रणाली।
(२) हिन्दी और बङ्गला का सम्बन्ध।
(३) हिन्दी और गुजराती का सम्बन्ध।
(४) हिन्दी और मराठी का सम्बन्ध।
(५) हिन्दी का सङ्गीत-साहित्य।
(६) पञ्जाब और देहली प्रान्तों में हिन्दी-प्रचार करने के उपाय।
(७) सम्मेलन-द्वारा स्थापित हिन्दी-परीक्षाओं की उपयोगिता और उनके कार्य्यक्रम पर विचार।
(८) हिन्दीपत्र-सम्पादन और उसमें सुधार की अपेक्षा।
(९) हिन्दीभाषा-भाषियों और हिन्दी-प्रेमियों का सम्मेलन के प्रति कर्त्तव्य।
(१०) हिन्दीभाषा के लिङ्गभेद पर विचार।
(११) भारतवर्ष में हिन्दी-प्रचारिणी-सभायें, हिन्दी पुस्तकालय, हिन्दी यन्त्रालय और हिन्दी-समाचार-पत्र।
(१२) देवनागरी लिखने में नवीन चिन्हों की आवश्यकता।
(१३) वर्त्तमान हिन्दी का झुकाव।
(१४) कौटिल्य शास्त्र में शासन-पद्धति।
(१५) हिन्दी में गद्य-काव्य।
(१६) हिन्दी में शिशु-शिक्षा सम्बन्धी-पुस्तकें।
(१७) भारतीय-राष्ट्र-निर्माण में हिन्दी का महत्त्व।
(१८) सूरदास
(१९) तुलसीदास
(२०) केशवदास
} इन लेखों में ग्रन्थों का परिचय और काव्यों की आलोचना होनी चाहिए।
(२१) हिन्दी-लेख-प्रणाली के विबादग्रस्त विषयों पर विचार।
(२२) शाला, पाठशाला, महाविद्यालयों आदि में शिक्षा का माध्यम हिन्दी होने की आवश्यकता।

(२३) हिन्दीभाषा की कविता की अन्य भाषाओं की कविताओं से तुलना और उसकी भविष्यकाल में उन्नति करने का विचार।
(२४) नागरीलिपि की अन्य लिपियों से तुलना, नागरीके गुण-दोषों का विवेचन तथा उसको सार्वदेशिक उपयोगी-बनाने की सम्भावना।
(२५) हिन्दीभाषा और देवनागरी-लिपि की उत्पत्ति का काल तथा दोनों के परस्पर सम्बन्ध का इतिहास।
(२६) राष्ट्रसुधार में नाटकों का कार्य्य।
(२७) स्त्रीशिक्षा और हिन्दीसाहित्य।
(२८) भविष्य में यह सम्मेलन विस्तृत और अधिकतर उपयोगी हो, इसके लिए क्या करना चाहिये।
(२९) हिन्दी में असभ्यसाहित्य तथा उसके रोकने का प्रयत्न।
(३०) देशी रियासतें तथा हिन्दीभाषा।
(३१) हिन्दीभाषा में संस्कृत के समस्यन्त-पदों के प्रयोगों की मर्य्यादा।
(३२) हिन्दी-साहित्य को अलङ्कृत करने का यत्न कैसे करना चाहिए।
(३३) राज्य-व्यवहार, व्यापार-व्यवहार आदि में हिन्दी।
(३४) मुसलमान और हिन्दी।
(३५) प्रान्तीय सम्मेलनों से लाभ और उनके सङ्गठन की आवश्यकता।
(३६) वैज्ञानिक, पदार्थविद्या, इतिहास, भूगोल आदि उपयुक्त विषयों के प्रामाणिक ग्रन्थोंके अनुवाद की आवश्यकता।

४—निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किया गया और सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ—

"प्रोफिशियन्सी परीक्षाओं की स्कीम के विवरणपत्र के मसौदे में गत अधिवेशन के मन्तव्य के अनुसार पुनर्विचार-द्वारा आवश्यक परिवर्तन करके अन्तिम मसौदा* समिति स्वीकार करती है तथा सभापति महोदय से प्रार्थना करती है कि वे इसे शीघ्र गवर्नमेंट की सेवा में भेजदें।"

*जिसका अनुवाद इसी अङ्क में दिया गया है [ सं० ]।

५—गत अधिवेशन के मन्तव्यानुसार परीक्षासमिति की नियमावली में नियमपरिवर्तन के विषय में नियमानुसार आधे से अधिक सदस्यों की सम्मतियाँ न आने के कारण परिवर्तन नहीं किया जा सका।

६—नागरीप्रचारिणी-सभा-देवरिया, ज़िला गोरखपुर का सम्मेलन के साथ सम्बद्ध होने के लिए प्रार्थना-पत्र उपस्थित किया गया और सहर्ष स्वीकृत हुआ।

७—पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल ने प्रस्ताव किया कि "सम्मेलन की ओर से अवैतनिक निरीक्षक नियत किये जावें जो सम्बद्ध-सभाओं की कार्य्य-प्रणाली का निरीक्षण करके सम्मेलन को सूचना दिया करें तथा अन्य स्थानों में भी हिन्दी प्रचार करने के उपाय करते रहें और ऐसे निरीक्षकों का मार्गव्यय रेलवे के इन्टरक्लाश के हिसाब से दिया जावेगा"। यह प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकृत हुआ।

८—पं० द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी ने प्रस्ताव किया कि भविष्य में जो सभायें सम्मेलन से सम्बद्ध होने की प्रार्थना करें उनसे उनकी स्थिति का निदर्शक निम्नलिखित विवरणपत्र भरवाकर मँगवा लिया जाया करे—

(१) सभा का नाम।
(२) स्थान और पूरा पता।
(३) पदाधिकारियों तथा सभासदों की नामावली।
(४) सभा के उद्देश्य और नियमावली की एकप्रति।
(५) आर्थिकस्थिति।
(६) सभा का साधारण कार्य्यक्रम।
(७) पिछली रिपोर्टें, यदि छपी हों अथवा पिछले कार्य्यों का सङ्क्षिप्त विवरण।

यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ और यह भी निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव अगले सम्मेलन में उपस्थित कराकर नियमावली में सम्मिलित कर दिया जावे।

९—पं० द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी ने प्रथमा परीक्षा वाले गणित के प्रश्न-पत्र पर "स्वदेशबान्धव" की टिप्पणी की ओर स्थायी समिति का

ध्यान आकर्षित किया और प्रस्ताव किया कि "परीक्षासमिति से अनुरोध किया जावे कि भविष्य में प्रश्नपत्रों को भलीभाँति देखकर परीक्षा के लिये निर्दिष्ट किया करे"। यह प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकृत हुआ।

१०—लाहौर के षष्ठहिन्दी-सहित्य-सम्मेलन की स्वागत-कारिणी सभा के मन्त्री पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य ने स्थायी-समिति तथा उसके प्रधान मन्त्री पर स्वागत-कारिणी-समिति के सङ्गठन में विलम्ब करवा देने के विषय में जो लेख समाचारपत्रों में प्रकाशित किया था उसके सम्बन्ध में सब चिट्ठियाँ और कागज़पत्र पढ़े गये। सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा का ऐसा लेख वास्तविक वृत्त से परिचित न होने के कारण लिखा जाना प्रतीत होता है। क्योंकि ४ फ़रवरी सन् १६१५ ई० को स्थायीसमिति के कार्य्यालय से लाहौर के दो सज्जनों के पास नियमावली भेजी गयीं थीं। उस के बाद कार्य्यालय में लाहौर से कोई माँग नियमावली के लिये नहीं आयी। प्रत्युत जिन सज्जनों ने निमन्त्रण दिया था कार्य्यालय से भेजे हुए पत्रों के उत्तर तक उनके यहाँ से नहीं आये। प्रधानमन्त्री स्वयं लाहौर गये थे और वहाँ के लोगों से मिले थे। लाला गोपालचन्द्र से मिलने के बाद प्रधान-मन्त्री कई सज्जनों से मिले थे। उन सज्जन से भी मिले थे जिनके पास कार्य्यालय से नियमावली भेजी गयी थी और जो लाहौर के एक हिन्दीपत्र के सम्पादक थे। प्रधानमन्त्री ने उन से कहा कि बाबू गोपालचन्द्र ने नियमावली माँगी है। तब उक्त सज्जन ने उत्तर दिया कि मेरे पास नियमावली है, मैं लाला गोपालचन्द्र को दिखला दूँगा। और इसके बाद प्रधानमन्त्री लाहौर के एक प्रसिद्ध नेता से मिले थे। जिन सज्जन के पास नियमावली थी वे भी साथ थे। और एक अन्य हिन्दीपत्रिका के सम्पादक भी थे। बातचीत के बाद उन्हीं नेता के समक्ष यह स्थिर होगया था कि शीघ्रही सभा होगी। प्रधानमन्त्री लाहौर में अधिक ठहर न सकते थे, वे चले आये। वहाँ सभा न हुई और न किसी ने कुछ पत्र लिखा। कार्य्यालय से जब जुलाई के आदि में निमन्त्रणदाताओं में से तीन सज्जनों के नाम पत्र भेजे गये तब दो महाशयों ने याद दिलाने पर भी उत्तर न दिया

और एक तीसरे सज्जन ने लिखा कि "हम कुछ नहीं कर सकते, लाहौर वाले हमारे पत्र का उत्तर नहीं देते"। फिर जब प्रधान-मन्त्री ने मध्य-प्रदेश के सज्जनों से तारद्वारा जबलपुर का स्थान सम्मेलन के लिये निश्चय कर लाहौर वालों को तार दिया कि यदि आप लोग सम्मेलन नहीं कर सकते तो स्पष्ट उत्तर दें, हम दूसरा स्थान स्थिर करें, तब वहाँ सभा होकर स्वागत-कारिणी-समिति का सङ्गठन हुआ।

इस मन्तव्य में किसी सज्जन का नाम उनके चित्त को दुःखी न करने के लिये और पं० ठाकुरदत्त शर्मा के इस अनुरोध के कारण कि उनके पत्र के उत्तर में किसी सज्जन का नाम प्रकाशित न किया जाय, नहीं प्रकाशित किया जारहा है।

सभापति को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई।

---

# परीक्षासमिति का पञ्चम अधिवेशन।

संयोजकजी की सूचनानुसार परीक्षासमिति का पञ्चम साधारण अधिवेशन भाद्रपद शुक्ल ११ सं० १९७२ रविवार ता० १९ सितम्बर सन् १९१५ ई० को ५ बजे सन्ध्या समय सम्मेलन कार्यालय में प्रारम्भ हुआ; जिसमें निम्न लिखित सज्जन उपस्थित थे—

(१) श्रीयुत पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी
(२) " पं० रामजीलाल शर्मा
(३) " ठाकुर शिवकुमार सिंह
(४) " बाबू गोपालनारायण सेनसिंह (गणक)
(५) " बाबू व्रजराज बहादुर (संयोजक)

परीक्षासमिति के सम्मुख गणकजी ने प्रथमा परीक्षा का फल उपस्थित करते हुए कहा कि मध्यमा के कुछ परीक्षकों के पास से अभी तक फल नहीं आये हैं अतएव आज मध्यमा के फलपर विचार नहीं हो सकता। निश्चय हुआ कि जिन परीक्षकों के पाससे फल अभी तक नहीं आये हैं उनको तार द्वारा शीघ्र फल भेजने

के लिये सूचना दे दीजाय और मध्यमा के परीक्षा फल पर विचार का कार्य आगामी बैठक के लिये स्थगित रक्खा जाय। प्रथमा परीक्षा के फल पर विचार प्रारम्भ हुआ किन्तु अङ्कों का यथोचित सङ्कलन नहीं हुआ था इस कारण गणकजी की सम्मति से उसपर विचार करने के लिये दूसरा ( २०-६-१५ ) दिन निश्चय हुआ।

समिति में निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित हुए--

( १ ) बाबू पुरुषोत्तमदास जी टण्डन का यह प्रस्ताव कि— "मध्यमा परीक्षा के वैकल्पिक पाठ्यविषयों में वैद्यक न रक्खा जाय" उपस्थित किया गया और सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि मध्यमा परीक्षा में वैद्यक का रखना आवश्यक है।

( २ ) बाबू रामदास जी गौड़ का वह पत्र पढ़ा गया जिसमें उनका प्रस्ताव था कि "जिन परीक्षार्थियों ने इस वर्ष की परीक्षाओं के लिये शुल्क दिया था किन्तु परीक्षा में नहीं बैठ सके उनको उसी शुल्क के बदले में सन् १६७३ की परीक्षाओं में किस रीति से बैठने का अधिकार देना चाहिये" सर्वसम्मिति से निश्चय हुआ कि आज के विषयों में इस प्रस्ताव का विषय नहीं है इस कारण इस विषय पर आगामी बैठक में विचार किया जायगा।

( ३ ) पं० इन्द्रनारायण द्विवेदीजी का यह प्रस्ताव कि "जो परीक्षार्थी प्रथमा में एक या दो विषयों में अनुत्तीर्ण हुए हों उनको नियम के अनुसार केवल अनुत्तीर्ण विषयों में ही पुनः परीक्षा देनी होगी। केवल एक या दो विषयों के तैयार होने में उनको अधिक समय नहीं लग सकता और बहुत सम्भव है कि वे अपने अनुत्तीर्ण विषयों के साथ साथ मध्यमा की परीक्षा के लिए भी तैयार हो सकें। ऐसी दशा में यदि समिति उन लोगों के अनुत्तीर्ण विषय या विषयों की परीक्षा, मध्यमा की परीक्षा के लिये शुल्क भेजने की अन्तिम-तिथि के प्रथम ले लिया करे तो बड़ी सुविधा हो। और ऐसी परीक्षा के लिए केन्द्र एक मात्र प्रयाग रक्खा जाय जिसमें दोबारा परीक्षा की कठिनता अधिक न बढ़े" सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि यह विषय भी आगामी बैठक के लिए स्थगित रक्खा जाय।

भाद्रपद शुक्ल १२ सं० १६७२ सोमवार ता० २० सितम्बर सन् १६१५ ई० को ५.0 बजे सन्ध्या समय सम्मेलन कार्यालय में पुनः

कार्य प्रारम्भ हुआ और प्रथमा-परीक्षा का फल निश्चित हुआ। इस वर्ष की प्रथमा-परीक्षा में सब मिलाकर ५५ परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए हैं*। प्रथमश्रेणीमें ११, द्वितीयश्रेणी में १९ और तृतीयश्रेणीमें २५।

निश्चय हुआ कि प्रथमा-परीक्षा का फल हिन्दी के दैनिक तथा साप्ताहिक समाचार-पत्रों में प्रकाशनार्थ भेज दिया जाय। इति

---

# समालोचना

( लेखक श्रीमान् पं० धर्मनारायण द्विवेदी बुद्धिपुरी )

## सङ्क्षिप्त महाभारत—

श्रीयुत पं० राजाराम जी प्रोफ़ेसर डी० ए० वी० कालेज–लाहौर की बनायी भाषाटीका और बृहद्भूमिका सहित सङ्क्षिप्त-महाभारत का आदि पर्व इस समय मेरे सामने है। यह पुस्तक आर्षग्रथावली की अन्यतम पुस्तक है। प्रोफ़ेसर साहब ने अनेक आर्षग्रन्थों की भाषाटीका की है और प्रायः सभी टीकाओं के बदले में गवर्नमेंट और युनिवर्सिटी की ओर से आपको इनाम भी मिले हैं। पुस्तक डिमाई अठपेजी आकार के २६२ पृष्ठों की है और मूल्य केवल १।=) अधिक नहीं है। कागज़ अच्छा और छपाई भी साधारण है। पुस्तक की भूमिका २३ पृष्ठों की है। भूमिका में बड़े बड़े महत्व के विचार हैं। आपके मत से वास्तविक महाभारत की पुस्तक जिसे व्यास जी ने युद्ध के थोड़े ही समय बाद बनाया था २४००० श्लोकों में थी और इसी आधार पर आपने पूर्ण महाभारत में से केवल २४ सहस्र श्लोकों की टीका करना भी निश्चय किया है। आपके मत से हम सहमत नहीं क्योंकि महाभारत व्यासकृत १ लक्ष श्लोकों की है न कि २४ सहस्र श्लोकों की। जिस स्थान पर २४ सहस्र की चर्चा है उसी स्थान पर स्पष्ट रूप से कहा गया है कि उपाख्यानों के बिना केवल इतिहास भाग २४ सहस्र श्लोकों का है और उपाख्यानों के सहित उसकी सङ्ख्या १ लक्ष श्लोक है×। स्थान स्थान पर इस बात का प्रमाण मिलता है

---

* उत्तीर्ण परीक्षार्थियों की नामावली स्थानान्तर में दी गयी है।

×देखो—श्रीवेङ्कटेश्वरप्रेस–बम्बई की छपी पुस्तक आदिपर्व के १०१ और १०२ वें श्लोक ( सं० )

कि महाभारत के एक लक्ष श्लोक हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने राजा भोज की एक कल्पित कथा के आधार पर मूल महाभारत के १०००० श्लोक लिखे हैं। प्रोफ़ेसर रामदेव जी गुरुकुल काङ्गड़ी ने अपने भारतवर्ष के इतिहास में भी २४००० श्लोक ही माने हैं किन्तु मेरी समझ में नहीं आता कि ये महानुभाव क्यों ऐसी बे शिर पैर की बातें लिखते हैं। यदि १ लक्ष श्लोक की बात को आप नहीं मानते तो उसी के साथ में लिखे हुये श्लोक के आधार पर २४००० श्लोक कैसे मान सकते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि देश का इतिहास आँख के सामने रख कर यदि महाभारत जैसी बड़ी पुस्तक पर विचार करें तो यह निस्सन्देह मानना पड़ता है कि इसमें के अनेक विषय लोप कर दिये गये होंगे और अनेक विषय मिला दिये गये होंगे। इस विषय में समय समय पर टीकाकारों ने भी विचार किया है। किन्तु कुछ थोड़े से पुनरुक्तस्थलों को छोड़ कर आज यह निर्णय करना कठिन ही नहीं असम्भव है कि इतना अंश क्षेपक है। फिर भी यह निश्चय है कि मूल महाभारत की पुस्तक एक लक्ष श्लोकों की थी और २४००० श्लोकों की कल्पना भ्रमपूर्ण है।

रचना काल पर आपने स्वतन्त्र विचार नहीं किया है। छै प्रकार से लोगों के मत दिखला दिये हैं। मेरे विचार में यह मुख्य विषय था कि जिस पर प्रोफ़ेसर साहब को विशेष रूप से ध्यान देना चाहिये था। जो मत दिखलाये गये हैं वे भी अधूरे रह गये हैं इस लिये रचना काल का निर्णय कुछ भी नहीं हो सका है।

अनुवाद अच्छा हुआ है किन्तु अपने मनमाने ४७ अध्यायों में जो यह आदिपर्व पूरा किया गया है सो ठीक नहीं हुआ। इससे लाभ के बदले हानि होने की सम्भावना है। आपने क्षेपक का जो सिद्धान्त निकाला है वह भ्रमपूर्ण है। जिसे आप सङ्ग्रहकर्ताओं की रचना बतला कर छोड़ रहे हैं वह अंश ग्रन्थ की भमिका और परिशिष्ट के रूप में मूल ग्रन्थकर्ता की ही रचना है। इसी प्रकार हमारे ऐतिहासिक और पौराणिक संस्कृत ग्रन्थों में भूमिका और परिशिष्ट का होना पाया जाता है। उपाख्यानों की रचना भी प्रायः ब्राह्मण ग्रन्थों के आधार पर स्वयं व्यास जी ने अथवा जिसे हम महाभारत का मूलकर्ता मानें उसीने की है।

पुस्तक अच्छी होने पर भी खोज और इतिहास की दृष्टि से भ्रमोत्पादक है। हम आशा करते हैं कि इसपर हमारे अन्य विद्वान भी विचार करेंगे। क्योंकि इस एकमात्र इतिहासरत्न-महाभारत में यदि ऐसी गड़बड़ी मचेगी तो बड़ा अनर्थ होने का भय है। शुभम्।

## मिश्रबन्धु-विनोद।

इस पुस्तक के प्रथम भाग की समालोचना पत्रिका के पाठक पढ़ चुके हैं। आजकल इसकी समालोचना दैनिक भारतमित्र में विस्तृत रूप से निकल रही है। यदि दैनिक-भारतमित्र के सञ्चालक उसे पुस्तकाकार में छपावें तो बड़ा उपकार हो और हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन अपनी परीक्षा-समिति के पाठ्य-पुस्तकों में जिस प्रकार मिश्र-बन्धुविनोद को रक्खा है उसी प्रकार उसीके साथ साथ उसकी समालोचना को भी पाठ्य-पुस्तकों में रख दे। जिसमें गुण का अंश तो मिश्रबन्धुविनोद से परीक्षार्थी ग्रहण करलें और भ्रमपूर्ण विषयों से बच सकें। मेरा विश्वास है कि मिश्रबन्धु भारतमित्र की समा-लोचना पढ़कर अपनी प्रसन्नता प्रकट किये बिना न रहेंगे क्योंकि समालोचक ने खूब ही विचारपूर्ण प्रायः निष्पक्ष समालोचना की है।

स्थायी-समिति का एक सभा

## हिन्दी-संसार।

(१) ता० १३-६-१५ के अलमोडा अखबार में श्री पण्डित श्री कृष्णपन्त जी ने 'हिन्दी कैसी हो' इस नाम का लेख लिखा है। इस लेख में समाचार पत्रों की हिन्दी-भाषा पर विचार है। लेख उत्तम और हमारे सम्पादक समाज के ध्यान देने योग्य है। प्रायः देखा जाता है कि हमारे सहयोगी अपने पत्रप्रेरकों और लेखकों की भाषा पर ध्यान नहीं देते। इस विषय में हमें सरस्वती के माननीय सम्पादक जी से शिक्षा लेनी चाहिये और यथा सम्भव अपने पत्रकी भाषा में उसके भावोंको दिखला देना चाहिये।

इसी पत्र में नैनीताल में नाटक का प्रसङ्ग लाकर अश्लीलता पर एक लेख था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि नाटकों से देश का सुधार हिन्दी-भाषा का प्रचार आदि सब कुछ हो सकता है किन्तु

नाटक-मण्डलियों में प्रायः अनेक अश्लीलता अथवा इसी प्रकार के अन्य दोषों की बातें सुनने में आती हैं अतएव नाटक-मण्डलियों को बड़ी सावधानी की आवश्यकता है।

(२) सितम्बर सन् १९१५ ई० की हितकारिणी पत्रिका में वर्नाक्यूलर प्राइमरी और मिडिल स्कूलों में पाठ्य पुस्तकें इस नाम का एक लेख प्रकाश हुआ है। लेख बड़े ही महत्व का है। सम्मेलन को चाहिये कि इस विषय में अपनी समालोचक समिति से एक विवरण तैयार कराके प्रबल आन्दोलन करावे। उसी अङ्क में "कालिदासीय रामगिरि का झगड़ा" इस नाम का लेख भी बहुत ही उत्तम और इतिहास एवं खोज के प्रेमी विद्वानों के ध्यान देने योग्य है।

(३) मनोरञ्जन आरा के भाग ३ सं० १–२ में मीमांसादर्शन शीर्षक एक लेख श्रीयुत शरच्चन्द्र घोषाल एम० ए० बी० एल० का बहुत ही विचार पूर्ण निकला है। उसी अङ्क में रामचरित उपाध्याय लिखित सीता-सन्देश नाम की छोटी सी कविता स्रग्धरा छन्द में मेघदूत के ढङ्ग की अच्छी है। प्रायः सभी छन्दों के अन्त का चरण उपदेशमय है। विशेष कर १–६ और ९, ११, १२ तथा १४–२० सङ्ख्या वाले छन्दों के अन्तिम चरण बहुत ही अच्छे हैं।

(४) मानभूम ज़िले के सदर सबडिविजन के स्कूलों और कचेहरियों में हिन्दी को भी स्थान देने के लिये वहाँ के कुछ सज्जनों ने प्रार्थना की थी।.........वहाँ के बङ्गालियों ने उसके विरुद्ध प्रार्थना की। अनन्तर बाबू शरच्चरण सेन ने विहार व्यवस्थापक सभा में इसके सम्बन्ध में प्रश्न किया। उत्तर में सरकार की ओर से कहा गया कि सदर में हिन्दी का प्रचार करना अनावश्यक है। हम नहीं जानते इस अनावश्यकता का कारण क्या है क्योंकि सरकार ने उसे बताने की कृपा नहीं की ( दै० भा० मित्र सं० ४ अं० १४८)

हमारे बङ्गाली भाइयों को चाहिये कि वे राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि नागरी का विरोध करके विहारियों को व्यर्थ ही हानि पहुंचाने और उन से वैमनस्य बढ़ाने की सी भूल न करें। और साथ ही विहारियों को चाहिये कि वे अपने प्रबल आन्दोलन से यह दिखला दें कि सदर में वस्तुतः हिन्दी का प्रचार करना अत्या-

वश्यक है। सरकार का उत्तर ब्रह्मवाक्य नहीं है। यदि हमको सचमुच आवश्यकता होगी तो सरकार को झखमार के हिन्दी का प्रचार करना ही पड़ेगा।

(५) दतिया राज्य में हिन्दी का सम्मान। जयाजीप्रताप में हमें यह पढ़ कर अत्यन्त आनन्द हुआ है कि दतिया के वर्तमान महाराज श्रीमान लोकेन्द्रगोविन्दसिंहजी ने अपने राज्य के समस्त कागज़पत्रों को हिन्दी-भाषा और देवनागरी लिपि में लिखने के लिये आज्ञा दे दी है। अवश्य ही महाराज को हम इस कर्तव्य-पालन के लिये बधाई देते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वे अन्यान्य हमारे हिन्दू राजाओं को सुबुद्धि दें कि वे उक्त महराज का अनुकरण करके अपना कर्तव्य पालन करें।

(६) मिथिलामिहिर और हिन्दी भाषा। मिथिलामिहिर दरभङ्गा से निकलने वाला साप्ताहिक पत्र है। कुछ दिनों से इसका कुछ अंश मैथिलिभाषा और देवनागरी-लिपि में प्रकाश होता है। पहले इसकी भाषा केवल हिन्दी थी। यद्यपि इस प्रकार के पत्रों से नागराक्षर का प्रचार होना कहा जा सकता है तथापि हिन्दी-भाषा जानने वाले मैथिलभाइयों को राष्ट्रभाषा हिन्दी की ओर से मुख मोड़ाना ठीक नहीं प्रतीत होता। हम नहीं समझते कि जब यह पत्र केवल हिन्दी-भाषा में छपता था तब उससे क्या हानि होती थी। हमसे एक मैथिल विद्वान से बातें हुईं तो वे कहने लगे कि ऐसा कोई पढ़ा लिखा मैथिल न होगा जो हिन्दी भाषा और देवनागरी-लिपि को समझ और पढ़ न सकता हो। ऐसी दशा में हम आशा करते हैं कि मिथिलामिहिर के सञ्चालकगण पुनः अपनी चाल को पलट देंगे और अपने पत्र को एकदेशीय भाषा का पत्र न बना कर सर्वदेशीय बनाने का उद्योग करेंगे।

(७) सिन्धप्रान्त में हिन्दी। सिन्धप्रान्त-कराँची का हिन्दी-साहित्य भवन, अपने प्रान्त में हिन्दी का अच्छा काम कर रहा है। अभी भाद्रकृष्ण ८ और ९ रवि एवं सोमवार को इसका तृतीयवार्षिकोत्सव निरुक्तभूषण स्वामी श्रीअद्वैतानन्द सरस्वती जी के सभापतित्व में मनाया गया। भवन के मन्त्री श्रीयुत वल्लभदास जी उत्साही पुरुष हैं हम आशा करते हैं कि आप भवन की उन्नति करने

में कोई उद्योग उठा न रक्खेंगे।

(८) हिन्दी और सभायें। हमारे देश का सौभाग्य है और हिन्दी संसार के लिये यह गौरव की बात है कि आज हमारी जितनी जातीय अथवा धार्मिक आदि सभायें हैं उन समस्त सभाओं (कुछ को छोड़ कर) के कार्यविवरण तथा उनके मुखपत्र—मासिकपत्र हिन्दी भाषा और देवनागरी अक्षरों में ही निकलते हैं।

# सम्पादकीय-विचार

## सम्मेलन का समय

लाहौर निवासियों की सुविधा और आग्रह की ओर ध्यान देकर स्थायी-समिति ने षष्ठ अधिवेशन का समय मुहर्रम की छुट्टी में कार्तिक शुक्ल ९, १० और ११ सोम, मङ्गल एवं बुधवार सं० १९७२ तदनुसार १५, १६ और १७ नवम्बर को निश्चय किया है। मुहर्रम की छुट्टी में लोगों का मत है कि अधिक प्रदेशों के लोग सम्मेलन में न जा सकेंगे। भारतमित्र ने स्पष्ट लिखा है कि बङ्गाल और विहार के लोगों का जाना असम्भव है। दूसरा समय बड़े दिन की छुट्टी का हो सकता था किन्तु इस समय जिन लोगों के नाम सभापति के सम्बन्ध में लिये जा रहे हैं उनमें अधिकांश वेही लोग हैं जिनका काङ्गरेस में—विशेष करके इस वर्ष की काङ्गरेस में जाना आवश्यक समझा जाता है और बड़े दिन की छुट्टी में काङ्गरेसभी होगी। ऐसी अवस्था में समय पर पुनः विचार करते हुये हम यही कहते हैं कि सभापति के विचार से ही अब समय के लिये पुनः विचार करना उत्तम होगा। समय के सम्बन्ध में तो मेरी यही सम्मति है कि सदा के लिये सम्मेलन की कोई तिथि नियत कर दी जाँय। चाहे उस समय में सरकारी कार्यालयों में तातील हो वा नहो इस बात का विचार बिलकुल छोड़ दिया जाय। क्योंकि जितने हमारे हिन्दीप्रेमी भाई सम्मेलन में सम्मिलित होते हैं उनमें अधिकांश ऐसे ही हैं कि यदि सम्मेलन के लिये उन्हें सरकारी कामों से अवकाश लेना पड़े तो वे बड़ी प्रसन्नता से ले सकते हैं और इस प्रकार हम लोगों की सम्मेलन सम्बन्धी निज की तातील ही पृथक् हो जायगी अन्यथा एक न एक झगड़ा लगा ही रहेगा।

## सभापति

सभापति के सम्बन्ध में अब तक जितने नाम लिये गये हैं उनमें प्रायः नीचे लिखे अनुसार पाँच प्रकार के लोग हैः—

( १ ) हिन्दी साहित्य के विद्वान और सेवक।
( २ ) हिन्दी से सहानुभूति रखने वाले राजे महाराजे।
( ३ ) हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानने वाले तथा हिन्दी के सहायक राजनैतिक नेता।
( ४ ) हिन्दी जानने वाले अङ्गरेज़ी तथा संस्कृत के योग्य विद्वान
( ५ ) हिन्दी से सहानुभूति रखने वाले मुसलमान भाई।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि लाहौर का सम्मेलन जैसी हम लोगों को आशा थी एक अपूर्व सम्मेलन होता, यदि बीच की कुछ दुर्घटनायें न हुई होतीं फिर भी हमारी आशा कम नहीं हुई है। अभ्युदय ने जैसी सम्मति दी है कि सफलता के लिये सभापति का व्यक्तित्व भी एक प्रधान कारण है अक्षरशः सत्य है। अतएव लाहौर सम्मेलन के अनुरूप यदि सभापति का चुनाव हुआ तो सम्मेलन की सफलता में कुछ भी सन्देह नहीं है।

जहाँतक हमने विचार किया सभापति के लिये वे ही उपयुक्त होंगे जिनमें नीचे लिखे अनुसार आवश्यक और वैकल्पिक गुण हों—

( १ ) हिन्दी में व्याख्यान देने की योग्यता ( आवश्यक )
( २ ) हिन्दी के प्रति राष्ट्रभाषा की ममता "
( ३ ) प्रतिभावान् "
( ४ ) सम्मेलन में धार्मिक और राजनैतिक विवादों से विराग
( ५ ) राजे, महाराजे, धनी मानी ( वैकल्पिक )
( ६ ) किसी भाषा के योग्य विद्वान "
( ७ ) राजनीति, धर्मनीति अथवा समाजनीति के नेता "

सारांश यह कि सभापति के पद के लिए प्रधान पाँच गुणों की आवश्यकता है 'प्रतिभा, राष्ट्रभाषा ( हिन्दी ) की ममता, हिन्दी में वक्तृत्वशक्ति, सम्मेलन के क्षेत्र में धार्मिक और राजनैतिक विवादों से विराग तथा ३ वैकल्पिक विषयों ( राज्याधिकार, विद्याधिकार अथवा नेतृत्वाधिकार ) में से किसी भी एक विषय की योग्यता।

इस प्रकार के सर्वगुणसम्पन्न महानुभावों की हमारे सौभाग्य से देश में कमी नहीं है। किन्तु लाहौर के लिये उक्त तीन वैकल्पिक गुणों में से किस गुण वाले महानुभाव की आवश्यकता है इस बात को लाहौर की स्वागत-कारिणीसभा जितना विचार सकेगी उतना हम नहीं विचार सकते। स्थायी-समिति ने कार्तिक कृष्ण २ रविवार सं० १९७२ (२४-१०-१५) को सभापति के पाँच नामों की सूची बनाने का निश्चय किया है। हम आशा करते हैं कि इस बीच में हमारे हिन्दीप्रेमी भाई अपना अपना मत प्रकाश करके उसकी सहायता करेंगे।

## विषय-सूची

इसवार के सम्मेलन की विषयसूची बहुत बड़ी है। जितना ही थोड़ा समय है विषयसूची उतनी ही अधिक बड़ी है। लोग कहते हैं कि यदि एक एक विषय के एक एक भी लेख आजायँ तो स्वागतकारिणी सभा को उनका छपाना असम्भव हो जाय और एक बहुत बड़ा पोथा तैयार हो जाय। अब तक जितनी लेखमालायें छपीं हैं उन सब में प्रयाग की लेखमाला बड़ी है किन्तु यदि सभी विषयों पर लेख लिखे जायँगे तो लाहौर का लेख माला उसको भी मात कर देगी। मेरे विचार में स्थायीसमिति ने लम्बी सूची बनाने में भूल नहीं की यदि छोटी सूची बनायी जाती तो सम्भव था कि इन थोड़े विषयों पर लेख लिखने वाले विद्वान् कम मिलते और छोटी से भी छोटी लेखमाला न तैयार हो सकती। लम्बी सूची होने से विषय अधिक आगये हैं और अधिक लोग उसमें योग दे सकेंगे और अन्य वर्षों की अपेक्षा लेखमाला छोटी न रह सकेगी। सूची के विषय भी कोई अनावश्यक नहीं है।

## स्वागतकारिणी-सभा और उसका विवरण

आतिथ्यसत्कार में स्वागतकारिणी सभाओं को अधिक व्यय करना पड़ता है अतएव सम्मेलन के पश्चात् स्वागतकारिणी-सभायें धन हीन हो जातीं हैं और नियम २४ के अनुसार लेखों और सम्मेलन के विवरण का छपाना स्वा० का० सभा का ही काम है। विवरण के दोनों भाग छपाने में व्यय भी कम नहीं होता। साथ ही

यह भी अनुभूत बात है कि अधिवेशन के हो जाने पर कार्यकर्ताओं में उत्साह भी शेष नहीं रह जाता और बचनदत्त चन्दे की रक़में भी प्रायः बचनदत्त ही रह जाती हैं, उनके हस्तगत होने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होता। ऐसी दशा में बड़ी गड़बड़ी होती है। फिर सबसे अधिक कठिनाई इस बात की होती है कि निर्धन स्वा. का. सभायें अपना विवरण समय पर छपा नहीं सकतीं। भागलपुर और लखनऊ की स्वागतकारिणी सभायें इसके उदाहरण हैं। अतएव मेरी सम्मति यह है कि सारी स्वागतका० सभाओं को चाहिये कि वे वचनदत्त चन्दे की आशा पर अपनी धूमधाम न किया करें। उनके हस्तगत जितना धन हो उसमें से विवरण छपाने आदि के समान आवश्यक खर्च के लिये धन सब से प्रथम पृथक् करदें और शेष धन के अनुसार अधिवेशन में व्यय किया करें। अन्यथा दो दो तीन तीन वर्ष लों विवरण न छपने से लोगों की दृष्टि में उनका किया कराया सब बराबर हो जाता है और ऊपर से उनपर आलस्य का दोष मढ़ा जाता है। मेरे विचार में स्वा० का० सभाओं के हाथ में विवरण छपाने का भार ही न होना चाहिये और नियम २४ के अन्तिम भाग **"इसी सभा का काम होगा"** के स्थान में **"स्थायी-समिति का काम होगा किन्तु छपाई आदि का जो खर्च होगा वह कुल धन स्वा. का. सभा अपने विवरण के साथ ही उसे देगी"** कर देना चाहिये। ऐसा करने से विवरण के छपने में भी विलम्ब न होगा और सभी विवरण की पुस्तकें एक प्रकार की छपेंगी। स्थायी-समिति के कार्यकर्ता स्थायी होते हैं किन्तु स्वा०का०सभा के कार्यकर्ता स्थायी नहीं होते। अतएव स्वा०का० सभा के आलस्य का बोझ पीछे से कुछ ही व्यक्तियों पर पड़ता है जिसमें उनको बड़ी कठिनाई होती है। हम आशा करते हैं कि स्थायीसमिति मेरे इस आवश्यक प्रस्ताव की ओर ध्यान देगी और आगामी सम्मेलन के समय में नियम २४ में परिवर्तन कराने के लिए उद्योग करेगी।

## उपसमितियाँ

(१) प्रोफ़िशियन्सी-परीक्षाओं की उपसमिति ने अपना कार्य

पूरा कर दिया। उसने जो शिक्षा-क्रम का मसौदा तैयार किया है और जिसे स्थायीसमिति ने स्वीकार कर के गवर्नमेंट के पास भेजा है उसका अनुवाद इसी अङ्क में दिया जाता है। अवश्य ही इसके लिये हम उपसमिति के सभासदों को—विशेष कर बाबू रामदास जी गौड़ एम० ए० महाशय को धन्यवाद देंगे कि उन्होंने बड़े परिश्रम से इस आवश्यक कार्य को पूरा किया है। किन्तु उस मसौदे के छठे नियम की कोई आवश्यकता न थी अतः हम उस नियम के अनुकूल नहीं हैं।

( २ ) परीक्षासमिति का कार्य भी उत्तमता से चल रहा है। इस वर्ष के उत्तीर्ण परीक्षार्थियों की नामावली अन्यत्र आप पढ़ेंगे। ठीक ठीक अब तक यह ज्ञात नहीं हुआ कि अधिकांश परीक्षार्थी शुल्क दे कर भी परीक्षा में सम्मिलित क्यों नहीं हुये। गत अङ्क में हमने लिखा था कि प्रथमा में केवल ७३ परीक्षार्थी सम्मिलित हुये हैं किन्तु अब ज्ञात हुआ है कि वस्तुतः ७८ सम्मिलित हुये थे और उन में ५५ उत्तीर्ण हुये हैं। विशेष हर्ष की बात यह है कि उत्तीर्णों की इस सङ्ख्या में ४ देवियों के नाम हैं। वे देवियाँ सब की सब प्रयाग की थीं। इनकी परीक्षा का केन्द्र आर्यकन्या-पाठशाला मुट्ठीगंज-प्रयाग था और परीक्षार्थिनियों में उक्त पाठशाला की प्रधान अध्यापिका श्रीमती यशोदादेवी का नाम भी है। अवश्य ही अन्यान्य कन्या पाठशालाओं को हमारी इस अग्रगामिनी आर्यकन्यापाठशाला का अनुकरण करना चाहिये। मध्यमा में १५ में से १० परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुये हैं ६ प्रथम श्रेणी में और ४ द्वितीय श्रेणी में।

परीक्षा-समिति के प्रश्नपत्र और उनपर परीक्षकों तथा संयोजक जी की सम्मतियाँ आगामी अङ्क में दी जायँगी।

( ३ ) समालोचक-उपसमिति। जहाँ तक मुझे ज्ञात है इसके संयोजक पं० रामजीलाल शर्मा ने अब तक कुछ कार्य प्रारम्भ ही नहीं किया है। हाँ इस समिति के सभ्यों के नाम एक सरक्यूलर निकला था कि "राम कहानी" के सम्बन्ध में अभी तक आप लोगोंने अपनी सम्मति नहीं दी, किन्तु सभापतिजी की आज्ञा है कि लौटती डाक से अपनी सम्मति भेजदें। इस विषय में लोगों की राय है कि संयोजकजी को ही लिखा पढ़ी करनी चाहियें थी। सभापति महाराज भी

समिति के एक साधारण सभ्य हैं अतएव उन्हें इतना कष्ट न उठाना चाहिये। अधिक से अधिक उनको चाहिये कि वे सभापति की योग्यता से समिति के संयोजक को लिखें और संयोजक अन्य सभासदों से पूछें ? क्योंकि कार्य नियमानुसार होना चाहिये समिति को इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये कि जिस रामकहानी का प्रस्ताव लखनऊ के सम्मेलन में से उठा लिया गया था और स्थायी समिति ने भी जिसके लिए सम्मति नहीं दी थी क्या समिति को उसी रामकहानी की ही कहानी कहनी चाहिये ? समिति को चाहिये कि वह स्कूल की सभी पाठ्य पुस्तकों को एक दृष्टि से देखे, राम-कहानी भी उसमें आहीजायगी, अन्यथा लोगों को भ्रम होता है कि किसी कारण विशेष से ही राम-कहानी पर लोगों के दाँत लगे हुए हैं। हम आशा करते हैं कि हमारे मित्र पं० रामजीलाल शर्मा अपने कर्तव्य की ओर ध्यान देंगे और समिति को आगे चलाने के लिये उद्योग करेंगे।

( ४ ) हिन्दी प्रचारार्थ प्रतिनिधिवर्ग-समिति के संयोजक बाबू भगवान दासजी हालना अपनी समिति को कार्यरूप में लाने के लिये विचार कर रहे हैं आशा है कि हमें इस समिति के शुभ कार्यों का विवरण प्रकाश करने का अवसर शीघ्र ही मिलेगा।

दुःख के साथ कहना पड़ता है कि शेष ७ समितियों के कुछ भी समाचार हमें आज तक नहीं मिले। अवश्य ही हमारी स्थायी-समिति को चाहिये कि वह अपनी उपसमितियों से लिखा पढ़ी करके कार्यविवरण प्राप्त करे।

## सम्बद्ध-सभायें

अब तक नियम ३—( ३ ) के अनुसार सम्मेलन की सम्बद्ध सभायें २४ हैं। नामावली के देखने से ज्ञात होता है कि उसमें 'बङ्गाल, बिहार, अवध, युक्तप्रान्त, राजपूताना और पञ्जाब' की सभाओं के अतिरिक्त 'बम्बई, बरार, मध्यप्रान्त, मद्रास' आदि भारत के दक्षिणीय प्रान्तों की सभाओं की चर्चा नहीं है। क्या इन दक्षिणीय प्रान्तों में हमारी नागरी प्रचार का उद्देश्य रखने वाली सभायें नहीं हैं ? और यदि हैं तो क्या वे सम्मेलन से सम्बद्ध होना अपना कर्तव्य नहीं समझतीं ? ऐसी दशा में हमारा दक्षिणीय भारत सम्मेलन के प्रभाव

से शून्य प्रतीत होता है। हमारे दक्षिण भारत के हिन्दी-प्रेमीभाइयों को विशेष कर उन प्रान्तों के स्थायी-समिति के सभासदों को चाहिये कि वे अपनेयहाँ की सभाओं को सम्मेलन से सम्बद्ध करावें ऐसा करने से उन सभाओं का गौरव बढ़ेगा और उनके द्वारा सम्मेलन अपने उद्देश्यों को विस्तृत क्षेत्र में फैला सकेगा। स्थायी-समिति को भी चाहिये कि वह उन प्रान्तों में अपने उपदेशक भेजकर सभायें स्थापित करावे और जो सभायें विद्यमान हैं उनको सम्मेलन से सम्बद्ध कराने का प्रबन्ध करे। **यह कार्य अत्यावश्यक है।**

## पदक और परीक्षा

जिन महानुभावों ने परीक्षोत्तीर्ण परीक्षार्थियों को पदक देने के वचन दिये थे उन में से कुछ लोगों के पत्र और पदक के लिये रुपये आ रहें हैं। इस विषय का विवरण कि किन किन परीक्षार्थियों को कौन कौन से पदक आदि उपहार मिले हैं हम आगामी सङ्ख्या में दिखलावेंगे। किन्तु वचन-दाताओं से एक वार हम फिर अनुरोध करते हैं कि वे शीघ्र कार्यालय से लिखा पढ़ी करके अपने सात्विक दान का निश्चय कर लें जिसमें सम्मेलन के प्रथम हम उनके प्रशंसनीय दान की सूचना पत्रिका में दे सकें।

गत अङ्क में भ्रम से हमने सं० २८ में पं० प्यारेलाल गौड़–मैनेजर नारायण-समिति और गौड़ हितकारी के दान के सम्बन्ध में १।) की पुस्तक लिखा था किन्तु बात यों है कि हमारी प्रथमा और मध्यमा में जितने परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए हैं उन सबों को वे ॥=) मूल्य की आरोग्यता पद्धति पुस्तक की एक एक प्रति देंगे।

## अदालतों में नागरी प्रचार

सम्मेलन की ओर से इस समय ८ स्थानों में प्रचार का काम हो रहा है और ७ वैतनिक तथा २ अवैतनिक लेखक अदालतों में नागरी के कागजपत्र दाखिल कर रहें हैं। सम्मेलन को इसके लिये ५१) मासिकखर्च करना पड़ता है। नवम्बर सन् १९१४ ई० से अब तक (इसमें कहीं कहीं का जनवरी सन् १९१५

ई० से ही कार्य है ) सब मिला कर ११,६२२ कागज नागरी अक्षरों में लिख कर दाखिल किये गये हैं। इस कार्य में सब से अधिक सङ्ख्या कानपुर और उसके पीछे बाँदा की है। हमारे विचार में जहाँ जहाँ हमारी सम्बद्ध सभायें हैं कम से कम उन स्थानों में विशेष करके संयुक्त-प्रान्त और विहार के प्रान्तों में अवश्य ही अदालत में नागरी का प्रचार होना चाहिये। इसके लिये स्थायी-समिति को अपनी सम्बद्ध-सभाओं से लिखा पढ़ी करके निश्चय करना चाहिये कि वे सभायें इस कार्य में कितनी सहायता देंगी और सम्मेलन से वे कितनी सहायता लेना चाहती हैं । नागरी प्रचार का कार्य सन्तोष जनक नहीं है। केवल प्रयाग में कम से कम इतना कागज दाखिल होना चाहिये था जितना सर्वत्र का मिला कर दाखिल हुआ है। इस ओर हमारे मित्र बाबू नवाब बहादुर साहब वकील हाई-कोर्ट प्रयाग, विशेष रूप से ध्यान देरहे हैं हम आशा करते हैं कि अन्यान्य महाशय भी ध्यान देने की कृपा करेंगे। अवश्यही उपर्युक्त कागजों के दाखिला की सङ्ख्या पूरी नहीं है, हमारे प्रयाग ही में अधिकांश कागज निजकी तौर पर भी नागरी में ही दाखिल होते हैं सम्मेलन को जिनका पता नहीं है । फिर भी जहाँ पर सम्मेलन का प्रधान कार्यालय है वहाँ की कचेहरियों में तो नागरी प्रचार की धूम मच जानी चाहिये थी।

## प्रान्तीय-सम्मेलन

इस समय राजपूताना के लिये प्रान्तीय-सम्मेलन कराने के उद्योग में कुछ उत्साही पुरुषों के लेख निकल रहे हैं। आगरा प्रान्तीय ( जिला ) सम्मेलन का होना भी निश्चय हो गया है। अभी गत वैशाख मास में गोरखपुर में प्रान्तीय-सम्मेलन बड़ी धूम धाम से हो ही चुका है। अतएव हमें विचार करना चाहिये कि प्रान्तीय सम्मेलनों की कितनी आवश्यकता है? और यदि है तो उसका सम्बन्ध हमारे हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से किस प्रकार का होना चाहिये । वे स्थायी होंगे अथवा अस्थायी । हम आशा करते हैं कि सम्मेलन की स्थायी-समिति इस पर विचार करेगी और आवश्यकता होने पर प्रान्तीय-सम्मेलन के कार्यकर्ताओं को अपनी सम्मति प्रकट करेगी।

अभ्युदय। आनन्द की बात है कि अभ्युदय पुनः अपने देश की सेवा के लिये हिन्दी-संसार में पूर्ववत् आगया है और गवर्नमेण्ट ने अपनी आज्ञा लौटा ली है। मर्यादा और अभ्युदय अब दोनों अपने समय पर निकलने लगे हैं।

---

## हिन्दी योग्यता ( प्रोफिशियन्सी ) परीक्षाओं का मसविदा

पञ्चम हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने जिसका अधिवेशन लखनऊ में हुआ था २८ नवम्बर सन् १६१४ ई० के तेरहवें प्रस्ताव के अनुसार, निम्न-लिखित सज्जनों की एक उपसमिति हिन्दी-परीक्षार्थ एक मसविदा तैयार करने के लिये और संयुक्त-प्रान्त की गवर्नमेंट के पास उनके २५ अगस्त सन् १६१४ ई० के प्रस्ताव नम्बर ( २ ) के चौथे पैरे* के अनुसार भेजने के लिये सङ्गठित किया।

( १ ) बाबू रामदास गौड़ एम० ए० ( संयोजक )।

( २ ) पं० श्यामविहारी मिश्र एम० ए०।

( ३ ) पं० रामनारायण मिश्र बी० ए०।

( ४ ) बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०।

( ५ ) पं० हरिश्चन्द्र विद्यालङ्कार।

( ६ ) ठा० शिवकुमार सिंह।

---

* "यह कहा जा सकता है कि यद्यपि सरजेम्स मेष्टन, नये मिडिल कोर्स में संस्कृत अथवा फ़ारसी पढ़ाने के विरुद्ध हैं जब कि हिन्दी उर्दू की शिक्षा में बहुत कुछ करना बाकी है तथापि यदि एक उचित मसविदा तैयार हो तो वे स्वर्गवासी राय बहादुर बाबू गङ्गाप्रसाद वर्म्मा के उच्च हिन्दी उर्दू की योग्यता परीक्षाओं के संस्थापन के प्रस्ताव को हर प्रकार की सहायता देने को तैयार हैं।

उपर्युक्त प्रस्ताव की चर्चा मि० जष्टिसपिगट कमेटी की रिपोर्ट में इस प्रकार से की गयी थी ( गर्वनमेंट गजट ८ वां हिस्सा सितम्बर सन् १६१३ ई० पृ. ४२८ ) कमेटी के अधिकांश लोग राय बहादुर गङ्गाप्रसाद वर्म्मा के इस प्रस्ताव के पक्ष में थे कि उच्च हिन्दी उर्दू की योग्यता की विशेष परीक्षायें जिनमें उन (हिन्दी, उर्दू) की जननी संस्कृत अफ़ारसी के प्रारम्भिक अंश का समावेश हो अध्यापकों के

(७) राय देवीप्रसाद बी० ए०, बी० एल०, एम० आर० ए० एस०*( स्वर्गवासी )

(८) पं० गोविन्दनारायण मिश्र।

(९) पं० रामजीलाल शर्म्मा।

(१०) पं० शुकदेवबिहारी मिश्र बी० ए०।

(११) बा० पुरुषोत्तम दास टण्डन एम० ए०, एल० एल० बी०।

इस उपसमिति ने २८ जौलाई सन् १९१५ ई० की अपनी अन्तिम बैठक में एक मसविदा उपस्थित किया जिस पर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी-समिति ने सपनी १२ अगस्त और ५ सितम्बर सन् १९१५ ई० की बैठकों में विचार किया और निम्न लिखित मसविदा स्वीकृत हुआ—

हिन्दी-साहित्य की योग्यता (प्रोफिशियन्सी) परीक्षायें।

(१) शिक्षाविभाग हिन्दी का दो परीक्षायें अर्थात् मध्यमा और उत्तमा लेगा। केवल वेही अध्यापक जा शिक्षाविभाग के अधीन हैं या गवर्नमेंट से सहायता प्राप्त या स्वीकृत पाठशालाओं में काम करते हैं इन परीक्षाओं में सम्मिलित हो सकेंगे।

(२) ये परीक्षायें प्रतिवर्ष एक वार उचित केन्द्रों में होंगी। और परीक्षायें मौखिक तथा लिपिबद्ध होंगी।

(३) नियमितदिन पर या उसके पहले मध्यमा के लिये एक रुपया और उत्तमा के लिये दो रुपया ( शुल्क ) देने पर परीक्षार्थी परीक्षाओं में सम्मिलित किये जावेंगे।

(४) साधारणतः वे ही लोग जो मध्यमा में उत्तीर्ण हुए हैं उत्तमा-परीक्षा में सम्मिलित किये जाँयगे। जिसने इलाहाबाद विश्वविद्यालय की मैट्रिकुलेशन परीक्षा या इसके बराबर की अङ्गरेज़ी की काई दूसरी परीक्षा या हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा या बनारस संस्कृत-कालेज की मध्यमा परीक्षा

---

लाभार्थ स्थापित की जांय और जिस प्रकार सरकार के अन्य विभाग की नौकरियों में भाषा की उच्च योग्यता के लिये पारितोषिक दिया जाता है वैसे ही इन परीक्षाओं के लिये भी पारितोषिक देकर अध्यापकों को प्रोत्साहित करना चाहिये।

*इनके स्थान में स्थायी-समिति ने अपने आ, शु. २ बृहस्पति के अधिवेशन में श्रीमान् पं. श्रीकृष्ण जोशी जी को चुना है ( सं. )।

को पास किया है, उत्तमा परीक्षा में सम्मिलित किया जा सकता है चाहे उसने मध्यमा परीक्षा पास न की हो।

(५) ये परीक्षायें हिन्दी-भाषा में केवल नागरीलिपि के द्वारा होंगी।

(६) अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी साधारणतः उसी परीक्षा में तीनबार से अधिक बहुत विशेष कारण दिखलाये बिना न सम्मिलित किये जाँयगे।

(७) परीक्षार्थी को नियमित आवेदन पत्र पर हस्ताक्षर करके अपने शुल्क के साथ हिन्दी संयोजक के परीक्षाओं की बोर्ड के पास निम्न लिखित अधिकारियों के द्वारा भेजना होगा।

(१) स्कूलों के इन्स्पेक्टर असिस्टेण्ट इन्स्पेक्टर अथवा डिप्टी इन्सपेक्टर।

(२) नार्मल स्कूल के प्रधान अध्यापक।

(३) हाई स्कूल के प्रधान अध्यापक।

(४) कालेज के प्रिंसपल।

(८) शिक्षाविभाग, हिन्दी-योग्यता-परीक्षाओं की एक समिति बनावेगा जिसका सङ्गठन प्रत्येक तीसरे वर्ष होगा। इस समिति में गवर्नमेण्ट द्वारा नियुक्त एक संयोजक और चार सभ्य होंगे जिनमें से दो गवर्नमेंट के मनोनीत होंगे, एक भारतवर्षीय-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी-समिति द्वारा मनोनीत होगा और एक नागरी-प्रचारणी सभा काशी से।

(९) यह समिति अपने प्रबन्ध और कार्यक्रम के लियेउपनियम स्वयं बनालेगी और इसका प्रधान कार्यालय, शिक्षाविभाग के डाइरेक्टर के दफ्तर में होगा।

(१०) मध्यमा परीक्षा में ७ और उत्तमापरीक्षा में ८ प्रश्नपत्र होंगे ( केवल उत्तमा परीक्षा में मौखिक परीक्षा होगी ) और हर एक प्रश्न पत्र में १०० अङ्क होंगे। परीक्षाओं को पास करने के लिये मध्यमा परीक्षा के प्रत्येक पत्र में कम से कम ३० और उत्तमा परीक्षा के प्रत्येक प्रश्नपत्र में ३५ अङ्क पाना आवश्यक होगा।

(११) प्रत्येक उत्तीर्ण परीक्षार्थी को परीक्षा पास करने का एक प्रमाणपत्र मिलेगा जिस पर संयोजक के हस्ताक्षर होंगे।

(१२) यदि उत्तमा परीक्षा के परीक्षार्थियों के पूर्णाङ्क प्रतिसैकड़ा ७५ या उससे अधिक आवेंगे तो यह समझा जायगा कि उन्होंने "सन्मान" के साथ परीक्षा पास की है और यह उनके प्रमाणपत्र में लिख दिया जायगा।

(१३) मध्यमा-परीक्षा के उत्तीर्ण-परीक्षार्थियों में से सबसे अधिक अङ्क पानेवाले ५० परीक्षार्थियों को ५०)—५०) पारतोषिक और उत्तमा परीक्षा के उत्तीर्ण-परीक्षार्थियों में से सबसे अधिक अङ्क पानेवाले ३० परीक्षार्थियों को १००)—१००) का पारितोषिक मिलेगा।

(१४) इन दोनों परीक्षाओं के उत्तीर्ण-परीक्षार्थियों में से सर्वोत्तम परीक्षार्थियों को एक एक स्वर्णपदक भी मिलेगा। इन पारितोषिकों का उल्लेख उनके प्रमाण-पत्रों में रहेगा।

(१५) प्रत्येक परीक्षा में निम्न-लिखित विषय और पत्र होंगे।

## मध्यमा

| पत्र सं० | विषय |
|---|---|
| (१) | मध्यकालीन पद्य |
| (२) | अर्वाचीन पद्य, और छन्द अलङ्कार के सहित |
| (३) | अर्वाचीन और प्राचीन पद्य, व्याकरण और अलङ्कार के सहित |
| (४) | अपठित गद्य और पद्य |
| (५) | लेख |
| (६) | प्रारम्भिक संस्कृत, जिसमें सरल गद्य और पद्य तथा बहुत साधारण व्याकरण होगा |
| (७) | हिन्दी से संस्कृत और सरल संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद |

## उत्तमा

| पत्र सं० | विषय |
|---|---|
| (१) | प्राचीन पद्य और उस समय के हिन्दी पद्य का इतिहास |
| (२) | मध्यकालीन पद्य और उस समय के हिन्दी पद्य का इतिहास |
| (३) | गद्य और हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास |
| (४) | अपठित ( गद्य और पद्य ) |

( ५ ) लेख
( ६ ) साधारण प्राकृत
( ७ ) प्रारम्भिक संस्कृत-गद्य और पद्य
( ८ ) हिन्दी से संस्कृत और संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद

नोट—हिन्दी-साहित्य के प्रश्न-पत्रों में छन्द, अलङ्कार और व्याकरण पर भी प्रश्न होंगे।

## पाठ्य पुस्तकें

### मध्यमा

पत्र सं० पुस्तक

( १ ) पद्मावत प्रथम चतुर्थांश, रामचरित मानस अयोध्या-काण्ड ( तुलसीकृत ), सूरसागर प्रथम अष्टमांश, सभा-विलास, रामचन्द्रिका प्रथम अर्द्धांश।

( २ ) मेघदूत ( राजालक्ष्मणसिंह कृत ), प्रियप्रवास-प्रथम-चतुर्थांश, मृच्छकटिक ( लाला सीताराम ), मुद्राराक्षस ( हरिश्चन्द्र ), श्रान्तपथिक, ज्ञानविनय और काश्मीर सुखमा-छन्द और अलङ्कारसहित।

( ३ ) गुप्तनिबन्धावली ( समाचार-पत्रों का इतिहास आदि ), सौ अजान और एक सुजान, प्रेमसागर ( लल्लूलाल ), कहानी ठेठ। हिन्दी की ( इन्शा अल्लाखाँ ), परीक्षागुरु, हिन्दी-भाषा की उत्पत्ति, निबन्धमालादर्श।

( ४ ) अपठित (गद्य और पद्य)

( ५ ) निबन्ध

( ६ ) संस्कृत का कोर्स मैट्रिकलेशन के समान

( ७ ) अनुवाद—संस्कृत और हिन्दी

### उत्तमा

पत्र सं० पुस्तक

( १ ) पृथ्वीराजरासो प्रथम से ग्यारह समय तक, छन्द और अलङ्कार ( नागरी-प्रचारिणी सभा काशी )

( २ ) पद्मावत शेष तीन चतुर्थांश, विनय-पत्रिका—तुलसीदास, काव्य निर्णय-दास, बिहारी की सतसई (बिहारी), कविप्रिया।

( ३ ) सौन्दर्योपासक, प्रतिभा-हिन्दीग्रन्थ रत्नाकर-कार्यालय बम्बई ) चन्द्रकला, भानुकुमार-नाटक--( पूर्णकवि ), हिन्दी-साहित्य का इतिहास (मिश्रबन्धुविनोद का आवश्यक अंश—खंडवा सी. पी. ), नाटक, गद्यकाव्यमीमांसा (पं० अम्बिकादत्त व्यास कृत—सम्मेलन कार्यालय प्रयाग अङ्क और नागराक्षरों की उत्पत्ति-सम्मेलन-कार्यालय प्रयाग।

( ४ ) अपठित (गद्य और पद्य)

( ५ ) निबन्ध

( ६ ) प्राकृत-अष्टाध्यायी ( हेमचन्द्रसूरि ), कर्पूरमञ्जरी या कुछ जातकों की कहानियां।

( ७ ) संस्कृत-इलाहाबाद युनिवर्सिटी के एफ. ए. कक्षा के समान

( ८ ) अनुवाद-संस्कृत से हिन्दी और हिन्दी से संस्कृत।

———o———

# हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

## सं० १९७२ की

## मध्यमापरीक्षा में

## उत्तीर्ण परीक्षार्थियों की नामावली

( प्राप्त अङ्कों के क्रमानुसार )

| क्रम संख्या | श्रेणी | परीक्षार्थी का नाम | पिता का नाम | निवास स्थान ( पता ) | विवरण |
|---|---|---|---|---|---|
| १३ | प्रथमा | नर्म्मदाप्रसाद मिश्र | पं० ललिताप्रसाद मिश्र | जबलपुर | |
| ४३ | " | लक्ष्मीधर शुक्ल | पं० सीताराम शुक्ल | लखनऊ | |
| ४६ | " | प्रयागनारायण(सङ्गम) | पं० ठाकुर प्रसाद | बछ्गाँव-रायबरेली | |
| ३८ | " | पुत्तनलाल विद्यार्थी | ला० छोटेलाल | लखनऊ | |
| ५ | " | श्रीकृष्णदत्त शर्म्मा | पं० व्रजलाल शर्म्मा | ग्रा० तनौरा-आगरा | |
| ६ | " | रामसूरतसिंह | ...................... | ........................... | |
| ३६ | द्वितीया | बुद्धिसागर वर्म्मा | बा० कन्हैयालाल | खटेली-हरदोई | |
| २० | " | शालग्राम द्विवेदी | पं०गोकुलप्रसादद्विवेदी | जबलपुर | |
| २ | " | भागीरथप्रसाददीक्षित | पं०भोलानाथ प्रसाद दीक्षित | कोटा | |
| ३५ | " | हृदयराम | लाला श्रीराम | फतेहपुर | |

प्रथमा में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों की नामावली

## प्रथमा में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों की नामावली

( प्राप्त अङ्कों के क्रमानुसार )

| क्रम संख्या | श्रेणी | परीक्षार्थी का नाम | पिता का नाम | ( निवास स्थान ) पता | विवरण |
|---|---|---|---|---|---|
| ११६ | प्रथमा | शिवराम (रमेश)शर्मा | पं० परशुराम शर्म्मा | पाठशाला कुलपहाड़–हमीरपुर | |
| ६६ | ” | जगन्नाथ प्रसाद शर्म्मा | पं० नारायण दास शर्म्मा | ” | |
| ३६ | ” | शम्भुनाथ सेठ | बा० रामभरोस सेठ | २२६ जनरल गञ्ज–कानपुर | |
| १४६ | ” | श्यामदत्त मिश्र | पं० लोधेश्वर मिश्र | पण्डितपुरवा पो० प्रयागपुर बहराइच | |
| १२२ | ” | हरदयालु | बा० बलदेवप्रसाद | नायब मुदर्रिस टाउन स्कूल-महोवा | |
| ८ | ” | घनश्यामशर्मा | पं० तोताराम | अध्यापक अछनेरा-आगरा | |
| १६१ | ” | त्रिविक्रममिश्र | पं० हलधर मिश्र | सबअसिस्टेंटसर्जनइनचाजविलग्राम हरदोई | |
| १५७ | ” | रामलाल अग्निहोत्री | पं० बलदेवप्रसाद अग्निहोत्री | अध्यापक टौनस्कूल विलग्राम ज़ि० हरदोई | |
| ८७ | ” | व्रजमोहन लाल | | | |
| ३५ | ” | रघुबरदयाल मिश्र | पं० बदरीप्रसाद मिश्र | महेश अभ्युदय पाठशाला कानपुर | |
| ३८ | ” | विश्वम्भर मोहले | पं० जानकीप्रसाद मोहले | हटिया-कानपुर | |
| ४१ | द्वितीया | शिवनन्दनलाल पाण्डेय | पं० रामरत्न पाण्डेय | अभ्युदय पाठशाला कानपुर | |
| १०३ | ” | भवानीप्रसाद गुप्त | बा० बच्ची लाल | पाठशाला कुल पहाड़–हमीरपुर | |

| क्रम सङ्ख्या | श्रेणी | परीक्षार्थी का नाम | पिता का नाम | ( निवास स्थान ) पता | विवरण |
|---|---|---|---|---|---|
| १२० | " | सुखलाल द्विवेदी | पं० बदरी प्रसाद | हेड मास्टर तहसील स्कूल—महोबा | |
| १५ | " | भूरीसिंह पँवार | ठा० चन्द्रहंससिंह | लतीफपुर स्टेट कोटला-आगरा | |
| ३३ | " | कालूराम बाजपेयी | | | |
| ७७ | " | मुन्नालाल मिश्र | पं० युगल किशोर मिश्र | तेईखेड़ा नृसिंहपुर सी० पी० | |
| २ | " | देवराज शर्मा | पं० मदनमोहन शर्मा | फ़ीरोज़ाबाद—आगरा | |
| ४ | " | लक्ष्मीचन्द्रशर्म्मा पालीवाल | पं० रामकृष्ण शर्म्मा पालीवाल | फ़िरोज़ाबाद पो० फ़ीरोज़ाबाद आगरा | |
| १३० | " | ठाकुरदास जैन | श्रीवृन्दावन जैन | विद्यार्थी श्रीअभिनन्दन दि. जैन पाठशाला-छत्रपाल ललितपुर-लखनऊ | |
| १४४ | " | शिवप्रसाद शुक्ल | पं० रामनिवाज शुक्ल | गणेशगंज-लखनऊ | |
| ३१ | " | गङ्गाप्रसाद गुप्त | बा०मानसिंह अहलमद्दी | मु० दलेल पुरवा—कानपुर | |
| १३ | द्वितीय। | बनवारीलाल पचौरी | पं० वंशीलाल पचौर | दफ़्तर कलक्टरी, अलीगढ़ सिटी | |
| ६८ | " | दामोदरप्रसाद मिश्र | शिवचरण मिश्र | चर्च मिशन-हाईस्कूल जबलपुर | |
| ४५ | " | स्वरूपचन्द जैन | पं० शिखरचन्द्र जैन | प्यारेलाल कन्हैयालाल नईसड़क कानपुर | |
| १८ | " | रखबचन्द | बा० मन्नालाल | नायबमास्टर कुकड़ेश्वरहोल्करस्टेटइन्दौर | |
| ५४ | " | मर्यादसिंह | | | |
| १५६ | " | शिवदयाल | पं० कालिकाप्रसाद | सहायक-अध्यापक क़स्बाती-पाठशाला हरदोई | |
| ३ | " | बाबूलाल शर्मा | पं० शालग्राम पाठक | मोहल्ला जयगंज-अलीगढ़ | |
| १४८ | " | श्रीकृष्णस्वरूप श्रोत्रिय | पं० चण्डीबसन्तश्रोत्रिय | कोठी हरसामल मो० बैरूनी,खंदक होवेटरोड लखनऊ | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| २३ | तृतीया | श्रीनिवास मिश्र | पं० लालाराम मिश्र | हिन्दी-पुस्तकालय बेलनगंज आगरा |
| १५० | " | त्रिभुवनदत्त शुक्ल | पं० जीवनारायणशुक्ल | ग्रामटेरुआ तहसील व जिला गोंडा |
| १० | " | जयन्ती सहाय | बाबूरामनारायण | गवर्नमेंट हाई स्कूल एटा |
| ६ | " | जगराम गुप्त | ला० मनीराम गुप्त | मु० पो० बमरौली कटरा ज़ि० आगरा |
| ४३ | " | शिवशङ्कर दीक्षित | पं० रामस्वरूप दीक्षित | बादशाही नाका कानपुर |
| | " | राधाकृष्ण शुक्ल | पं० भगवतीप्रसाद शुक्ल | अभ्युदय पाठशाला-कानपुर |
| ६६ | " | गयाप्रसाद तिवारी | पं० परमेश्वरदासजी पुजारी | तेंदू खेड़ा जबलपूर |
| ४६ | " | हनुमानसिंह | बा० माड़नसिंह | हेडमास्टर स्कूल दलेलपुरवा कानपुर |
| ८८ | " | बनमाली शरण | | |
| ८३ | " | विश्वम्भरप्रसाद | पं० गदाधरप्रसाद गौतम | हितकारिणी हाई स्कूल जबलपुर |
| १४ | " | भजोरीलाल गुप्त | मुंशी गङ्गारामजी गुप्त | मुख्य अध्यापक पाठशाल नगरकोट |
| ८१ | ", | रामानुजप्रसाद पटैरया | पं० राधाकृष्ण पटैरया | पटैरया मोहल्ला नरसिंहपुर |
| ६१ | " | कमलादेवी | पं० श्रीकृष्णदास | नं० २ काउपर रोड इलाहाबाद |
| १०४ | " | यशोदादेवी | पं० कन्हैयालाल | आर्य्य-कन्या-पाठशाला मुट्ठीगंज प्रयाग |
| १५८ | ", | लालजी | बा० हजारीलाल | सहायक अध्यापक टाउन पाठशाला हरदोई |
| ११८ | " | श्यामसुन्दर त्रिपाठी | पं० रामसेवक त्रिपाठी | कनलो ज़ि० प्रयाग |
| १०६ | " | राधाकृष्ण झिंगरन | पं० बाँकेविहारीलाल | १२० कल्यानीदेवी लेन प्रयाग |

| क्रम संख्या | श्रेणी | परीक्षार्थी का नाम | पिता का नाम | ( निवासस्थान ) पता | विवरण |
|---|---|---|---|---|---|
| ११४ | " | **विद्यावती** | पं० कृष्णविहारी वाजपेयी | चक-प्रयाग | |
| १२६ | " | जगन्नाथप्रसाद शर्मा | पं० रामप्रसाद शर्मा | मोहम्मद पुर पो० संडीला ज़ि० हरदोई | |
| १०५ | " | रङ्गनाथ द्विवेदी | पं० जीवनारायण द्विवेदी | बुद्धिपुरी पो० सरायआकिल-प्रयाग | |
| १०६ | " | रामसुन्दर त्रिपाठी | पं० गुरुचरण त्रिपाठी | कनैली–ज़ि० प्रयाग | |
| ६४ | " | कुंजबिहारी लाल | बा० लक्ष्मीप्रसाद | चर्च मिशन हाईस्कूल जबलपुर | |
| १५२ | " | नरसिंह लाल गुप्त | बा० नाथूलाल गुप्त | नायब अध्यापक गरबत होलकर | |
| १०० | " | **पार्वतीदेवी** | बाबू हनुमान प्रसाद सेठ | नं० ७ साउथ रोड प्रयाग | |
| ३२ | " | दयाशङ्कर मिश्र | पं० सुन्दरलाल मिश्र | महेश अभ्युदय पाठशाला-कानपुर | |

पं० ओंकारनाथवाजपेयी के प्रबन्ध से ओङ्कार प्रेस प्रयाग में छपकर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से श्रीनरेन्द्रनारायणसिंह द्वारा प्रकाशित।

# सम्मेलन-पत्रिका के नियम

१—यह पत्रिका सम्मेलन कार्य्यालय प्रयाग से प्रतिमास प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य १) रु० इसलिये रक्खा गया है कि सर्वसाधारण इसके ग्राहक हो सकें।

२—अभी इस में प्रतिमास कुल २४ पृष्ठ ही रहा करेंगे। आवश्यकता होने पर पृष्ठ सङ्ख्या बढ़ा भी दी जाया करेगी। आगे चल कर यदि इसकी सेवा साहित्यिकों को रुचिकर हुई, और ग्राहकों की यथोचित सङ्ख्या हो गयी तो अधिकतर पृष्ठ-सङ्ख्याओं में और अधिकतर उन्नत दशा में प्रकाशित की जायगी।

३—प्रबन्ध-सम्बन्धी पत्र और रुपये आदि तथा सम्पादक सम्बन्धी पत्र, पुस्तकें परिवर्तन के पत्रादि सब "मन्त्री सम्मेलन कार्यालय, प्रयाग" के नाम आने चाहियें।

## विज्ञापनछपाई के नियम

६ मास अथवा उससे अधिक दिनों के लिये

| | १ पृष्ठ, | आधा पृष्ठ | और चौथाई पृष्ठ के लिये |
|---|---|---|---|
| कवर पेज पर | ५) | ३) | २) |
| साधारण पेज पर | ४) | २॥) | १॥) |

विशेष बातें जाननी हों तो मन्त्री जी से पूछिये।

## क्रोड़पत्र बटाई के नियम

आधा तोला तक अथवा इससे कम के लिये... १०)
१ तोला के विज्ञापन के लिये ... १२)

मन्त्री, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

---

नोट—विज्ञापन के ऊपर यह छपा होना चाहिये कि अमुक मास की "सम्मेलन-पत्रिका" का क्रोड़पत्र और उसमें यथोचित समाचार भी होने चाहिये।